रंमिली की मुस्कान

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

रंमिली की मुस्कान

रं बं तेरां

अनुवाद

नवारुण वर्मा

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-1880-2

पहला संस्करण : 1996 (*शक 1918*)
मूल © लेखकाधीन
अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
Original Title : Ranmillir Hanhi (*Assamese*)
Translation : Ranmilee kee Muskan (*Hindi*)

रु. 39.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

1

फागुन की मटमैली शाम !

कतारों में बगुलों के झुंड पहाड़ों की तराई से अपने घोंसलों की ओर उड़ते चले जा रहे थे। दूर के पहाड़ों पर आग जल रही थी। फागुनी हवा में उस जंगली आग के जलने की सोंधी-सोंधी गंध तिरती आ रही थी। वह जानी-पहचानी आदिम सोंधी गंध बड़ी मीठी लग रही थी जिसमें आरण्यक-सुवास सघन रूप से मिला हुआ था। जंगल, भोजन और आग – ये इंसान के सबसे पुराने परिचित दृश्य हैं, मानव-संस्कृति की बुनियाद हैं। शाम ढलते ही अरण्य में क्षणिक व्यस्तता फैल जाती है। वन-विहगों की तरह-तरह की बोलियों, चहचहाहट आदि से पहाड़ों की छाती गूंज उठती है। पेड़-पौधों के पत्ते-पत्ते पर शाम की सपनीली कोमलता छा जाती है।

इधर पहाड़ों की झाड़ियों, पेड़ों को काट-कूटकर आग से जलाने के बाद तरह-तरह के अनाजों के बीज बोकर 'झूम' खेती (पहाड़ी खेती) की जाती है। ऐसी ही 'झूम-तली' की उस टेढ़ी-मेढ़ी, घुमावदार, संकरी, ललछौंही पगडंडी की जमीन पर मजबूती से पैर टिकाए सारइक तेरां धीरे-धीरे पहाड़ पर से उतरता चला आ रहा था। उसके साथ ही 'बाखर' नाम का कुत्ता भी दुम हिलाता कभी आगे, कभी पीछे होता हुआ आ रहा था। कुत्ता आगे बढ़कर अचानक किसी चीज की बू पाकर रुक गया। सूखी पत्तियों में मुंह घुसेड़कर नाक से सूंघता हुआ वह मानो कोई गंध लेने लगा। सारइक कुछ सोच में डूबा चला आ रहा था। अचानक सामने कुत्ते के शरीर से उसे ठोकर लग गई। कुत्ते को लात मारकर वह बोल उठा – "रे मर, भुच्चड़ कुत्ते ! दिन भर तो सोता ही रहा ! सामने आई उस गोह को भी पकड़ न सका। अब जाकर तुझ पर शिकारी नशा चढ़ आया है, क्यों ? कम्बख्त कहीं का !"

बड़बड़ाता हुआ उसने 'थूः' कर कुत्ते पर थूक दिया। पगडंडी पर एक सूखा पेड़ पड़ा था। उसने दाब से उस पर दो-तीन चोटें कीं जिससे सूखे पेड़ से 'क्लुं' 'क्लुं' की आवाज उठी। जिस पहाड़ ने अभी-अभी सन्नाटा ओढ़ रखा था, वह अचानक चौंक पड़ा। पास ही झुरमुटों में दुबके-छिपे जंगली मुर्गे 'कक-कका' कर उड़ चले। जंगली मुर्गों की आवाजें सुनते ही बाखर भौंकता हुआ दौड़ पड़ा। उड़ते-भागते वनमुर्गों को देखकर सारइक ने भी उसे पुचकारकर ललकार दिया। मालिक का इशारा समझकर कुत्ता और ज्यादा भौंकने लगा और सूखी पत्तियों पर से सरपट दौड़कर उन्हें कुछ दूर खदेड़ ले गया। सारइक सोच रहा था – 'काश, उसके पास एक बंदूक होती !' बंदूक न होने का उसे अफसोस हुआ। पहाड़ों पर छाया सन्नाटा कुछ क्षण के लिए खो गया। तभी दुम हिलाता, कूं-कूं करता हुआ कुत्ता मालिक के

पास आ गया। सारइक ने पतझड़ के लुंडे पेड़ों की फांकों में से दूर धुंधले-से दिखनेवाले अपने गांव पर नजर डाली। गांव के उस दृश्य ने सारइक तेरां के मन पर फैली खोई-खोई भावनाओं को बिल्कुल पोंछ दिया।

सारइक तेरां का अत्यंत प्यारा गांव रंमिली बरापानी नदी के किनारे है। बरापानी नदी ने भी मानो बड़े प्यार से रंमिली को बांहों में भर लिया है। कतारों में फैले मचान-घरों से भरे अपने गांव को देखते ही उसे अपने बाप सारकिरी की याद आ गई। पचास साल पहले हामरेनउमतिलि की फैली हुई सूखी पहाड़ियों के अंचल को छोड़कर सारइक के पिता आदि इसलिए यहां आकर बस गए थे कि हामरेन की जमीन पर धान के पौधे साल-दर-साल छोटे होते जा रहे थे। सारकिरी और उसके परिजनों के सूखते-मुरझाते चेहरों पर बरापानी के शीतल जल से फिर नई हंसी खिल उठी थी। उनके साथ साथ रंमिली गांव भी हंसने लगा था।

सारइक तेरां सारकिरी के बाद गांव का मुखिया बना था। वही गांव का 'सारथे,' 'सारबासा' यानी प्रधान था। गांव के हास-रुदन का सारा बोझ उसी पर था। मुखिया बनने के बाद रंमिली की परंपरा का निर्वाह करते हुए उसके जीवन के लगभग चालीस साल निकल गए। पुष्ट शरीर वाले नाटे-से सारइक के चेहरे पर दो गुच्छेदार-पतली सी ललछौंही मूंछें थीं। सिर पर जूड़ा-सा बनाए लाख के रंग की एंडी की पगड़ी थी। दोनों कानों की नुरकियों के चौड़े छेदों में चांदी के 'नोरिक' यानी कर्णफूल थे। कारबी पहनावा बूटेदार 'रिकं' पहने, अपने हट्टे-कट्टे खुले शरीर पर कारबी थैला 'जांबरं' लटकाए, सारइक धीरे-धीरे पहाड़ से उतर कर, 'इंहिन' (पहाड़ी बांसों) के झुरमुट के पास की चट्टान पर बैठ गया।

बरापानी के शीतल जल से हाथ-मुंह धोकर 'लोरिंग' की पत्तियों में लपेटी तंबाकू-पत्ती उसने जला ली। बरापानी के अमृत-स्पर्श ने मानो उसकी दिन-भर की थकान और अवसन्नता मिटा दी। उसका मन प्रफुल्लित हो उठा। यह बरापानी है – कारबी लांपी – कारबी लोगों की जीवनदायिनी जलधारा! 'उमियाम' की अपनी चिर-चंचल, अशांत छांदिक गति को भूल कर कारबी 'लांपी', कारबी धरती पर वह मानो धीर-गंभीर हो गई हो। अपनी चिर-प्रवाहिनी गति के जरिये वह जैसे सृष्टि के अभिनव रहस्य की याद दिला रही हो! अपने दोनों ओर की भूमि को हरियाली से रंग देने का उसका कौशल अभिनव है। 'उमबासू', 'उमरासी' और 'उमतिली' के चिर-अशांत कल्लोलों-झरझराहटों में जो नहीं मिला था, सारइक आदि को मानो वह अभिनव अर्थ बरापानी के इस प्रवाह में मिल गया। उधर की जंगली लताओं की जकड़न, बेलों की झाड़ियों की कंटीली खरोंच, मानो यहां नहीं रही। बरापानी के प्यार-भरे स्पर्श से रंमिली के घर-घर में जग उठा है नई हंसी का रंग! कादम, कासां, अमफू आदि के घरों में ओखली की ढपढपाहट से एक नया स्वर उभर आया है। रंमिली के हर मचान-घर में 'हाच्छा' नृत्य-गीत के अपूर्व छंद जग उठे हैं। कारबी लोगों के युवा-निवास 'जिरसं' के युवकों की तुरही 'गगना' और बांसुरियों की स्वर-लहरियों से रंमिली के धरती-आसमान गूंज रहे हैं।

परंतु काल-प्रवाह से बरापानी ने रंमिली गांव की स्थिति को भी बदल दिया है। दिन बीतने पर फिर तरह-तरह के अभाव होने लगे। अफीम ने लोगों को काम करने लायक न

छोड़ा। साथ ही, काला ज्वर के प्रकोप ने कारबी गांवों को बिल्कुल झकझोर दिया। रंमिली गांव को भी इससे छुटकारा नहीं मिला। बरापानी की छाती पर से ही होकर अमृत और विष-मिश्रित ईसाई आए और रामधन व्यापारी की नावों पर नमक के बोरों में अफीम की पोटलियां भी आईं। रंमिली के घर-घर में हाहाकार होने लगा। गांव के सारबासा सारइक पर इन सभी अभिशापों ने मानो अकारण ही भयंकर बोझ का दबाव डाल दिया।

तंबाकू पीते हुए सारइक ने अपने 'आर' खेत यानी पहाड़ी खेत पर नजर डाली जो धुएं से धुंधुआरा हो गया था। वह सोच रहा था – आर खेती करते-करते ही तो उसके बाल सफेद हो गए। पर कहां ? आर्थिक स्थिति में तो कोई बदलाव उसे दिखाई नहीं पड़ा। खाने के लिए अनाज की कमी, अकाल दिन-ब-दिन गांव के चेहरे को कैसे बदले डाल रहा है, वह देखता आया है। कारबी समाज-व्यवस्था के प्रमुख 'हाबे-पिनपो' लोगों का कहना था कि टीका पहाड़ पर ईसाई मिशनरियों के आने की वजह से ही ऐसी दुर्दशा हो रही है। गांव के वयोवृद्ध 'लिंदक' लोग जब ऐसी चर्चा करते तो सारइक हंस पड़ता। बेसिर-पैर की ऐसी बातों पर वह कान नहीं देता। 'हाबे-पिनपो' लोग यह मांग करते कि गांव-गांव में कारबी लोगों का धार्मिक त्योहार 'जिरसं' मनाने का आयोजन करना चाहिए। उनके विचार से स्कूल में पढ़ने पर 'जिरसं' खत्म हो जाएगा और कारबी समाज की प्रगति रुक जाएगी। हाबे लोगों की यह पुरानी और पक्की धारणा है कि धार्मिक त्योहार जिरसं के जरिये ही आर्थिक प्रगति हो सकती है। मगर सारइक तेरां को ऐसी बातें बिल्कुल पसंद नहीं। वह समझाता कि यह जमाना जिरसं मनाने का नहीं है, पर प्रमुख 'हाबेसिको' समझते नहीं। जमाने के परिवर्तन के बारे में उनके विचार दकियानूसी और उदासीन-से थे।

सारइक सोचता – भला जिरसं से हमारे गांव की कौन-सी आर्थिक प्रगति हुई है ? उसे तो समाज में परिवर्तन की कोई निशानी ही दिखाई नहीं पड़ती। बल्कि पुराने हाहाकार का रूप ही ज्यादा प्रकट होता रहा है। लोग कहते हैं, टीका की ईसाई मिशनरियों के आने के कारण ही 'लोंरी' में हाहाकार मचा है। मगर उस व्यापारी रामधन का अफीम का धंधा इधर के गांवों को उजाड़ता जा रहा है, उसके बारे में किसी को खबर ही नहीं। उस चट्टान पर बैठा वह लोगों के अद्‌भुत युक्ति-तर्कों के बारे में सोचता रहा।

अचानक उसके पास ही बैठा, जीभ निकालकर हांफता हुआ बाखर भौंकने लगा। साथ ही, उसके चिंतन का सूत्र भी खो-सा गया। तभी उसने देखा कि 'इकरा' यानी सरकंडों की झाड़ियों में से एक भैंस निकली आ रही है। भैंस तो उसके ही गांव के रिसोबासा सारएत रंहां की है। उसने अंदाजा लगाया, शायद झुंड से अलग-थलग हो जाने के कारण वह इस ओर आ निकली है।

धीरे-धीरे शाम गहराने लगी। दूर के पुन्‌जा पहाड़ की ऊंची चोटियों की रेखाओं ने पश्चिमी क्षितिज के सूरज की लाल आभा को क्रमशः ढक लिया। बरापानी नदी के किनारे से भैंसों के झुंडों की घंटियों की आवाजें तिरती हुई आने लगीं। कीचड़ में सने भैंसों की बू नदी किनारे के गांजे के पौधों की गंध से मिलकर सारइक की नाक में घुसी। गांव के किसी नौजवान

की जबान से निकले एक प्रेम-गीत के बोल उसके कानों में आए –

बंओइ मिर तामपे
नांछनथत केमे
आवे दाक पिरथे।
इथाक आनाइके
दोलां आप्रिन प्रे;
बंता नांराजे के
आवे आप्रिन प्रे।
ई - हु - हु - हु।

(यानी – कब से हम तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। इंतजार में आंखें थक गईं। पर अब तक तुम्हारा आना नहीं हुआ। अब कितना इंतजार करें ?)

गीत सुनकर सारइक के मन से दुख-दर्द की दुश्चिंताएं तंबाकू के धुएं की भांति ही क्षण-भर के लिए मिट-सी गईं। एक अप्रत्याशित उत्तेजना से उसके होठों पर हंसी खिल आई। गीत सुनकर उसे लगा, जरूर वह तेरन की आवाज है। जरूर ! हां, वह तो ठीक ही गा रहा है। प्रियतमा के रूप-सौंदर्य को पीछे छोड़ सके, दुनिया में तो कोई वैसी दूसरी नहीं है। चांद भले ही सुंदर हो, पर उसके शरीर पर तो कलंक के धब्बे हैं। पर प्रियतमा के रूप में तो कोई धब्बा है ही नहीं। सिगार जैसे तंबाकू की लंबी-सी कश लेकर बचे हिस्से को उसने दूर फेंक दिया।

क्षण-भर के लिए अपने किशोर-काल की याद सारइक के मन में उभर आई। जिंदगी का वह एक अविस्मरणीय अध्याय है। वह एक ऐसी मीठी जिंदगी थी मानो रंगीन धरती की कल्पना के रंगों से रंगा कोई मुक्त विहग निर्बाध रूप से उड़ता फिरता हो ! अतीत की मधुर स्मृतियां उसके हृदय में लहरें जगाकर उसे परेशान-सी करने लगीं। भैंसों के झुंडों की जानी-पहचानी गंध के साथ उसके किशोर जीवन का गहरा संबंध रहा है। उसे लगा, सूरज की रंगीन आभा क्रमशः मटमैली होकर जैसे क्षितिज में विलीन होती जा रही है, वैसे ही उसके किशोर जीवन का वह समय भी क्रमशः हमेशा-हमेशा के लिए एक अनिश्चय में खो चुका है।

तरह-तरह की बातें सोचता हुआ, चलते-चलते सारइक लिंदक तेरन के बाहरी दरवाजे पर पहुंचा। टट्टियों के छेदों से उसे दिखाई पड़ा – लिंदक तेरन अलाव के पास बैठा है। उसने पुकारा –

"फू लिंदक, हो न !"

"हां, हूं ! कौन हो ? फू कांबुरा हो क्या ?"

"हां, यही अपने आर से आ रहा हूं। लेकिन अभी तो मैं बैठूंगा नहीं, तुम जरा कुछ देर बाद मेरे यहां आना ! तुमसे कुछ बात करनी है।"

"अच्छा, ठीक है।" बैठे-बैठे लिंदक तेरन ने हामी भर दी।

सारइक तेरां का घर गांव के बीचोंबीच था। पांच-छह फुट ऊंची मचान पर बनाया हुआ एक मचान-घर ! बड़ा घर – जिसे 'हेमपी' कहते हैं– पूर्वाभिमुख बनाया गया है। हेमपी के

बिल्कुल सामने बना है सारइक का बैठक-घर – 'हंफारला'। हेमपी और हंफारला के बीच एक चौड़ा,फैला हुआ मचान-आंगन है। मचान-आंगन की दाईं ओर किनारे ही मचान-घर पर चढ़ने की सीढ़ी 'दन्-दन्' है। सीढ़ी पर गंभीर भाव से कदम रखता हुआ सारइक बैठक-घर की ओर आगे बढ़ गया और अलाव के पास बिछाई हुई बेंत की चटाई 'पाटी' पर बैठ गया। थैले से कटोरी निकालकर 'बंथेर' (बड़ी लौकी की खोल के पानी रखने के पात्र) के पानी से धो लिया और अलाव पर की केतली से उसमें फीकी चाय उड़ेल ली और अरसे से पुरानी उस केतली को फिर से आग के पास रख दिया। केतली के गले तक कालिख की मोटी परत जमी हुई थी। हत्थे के एक ओर कोई कांटी न थी,उसे बेंत से बांध रखा था। उसकी पत्नी एक नई केतली ला देने के लिए बहुत दिनों से कहती आ रही थी। पत्नी के ताने और शिकायतें बढ़ जाने पर वह कहता – 'अरे यह कामपुर बाजार से खरीदी गई केतली है। ऐसी केतली भला आजकल कहां मिलेगी ?'

ज्यादा गर्म चाय में जरा-सा पानी डालकर उसने ठंडा कर लिया। चाय के कुछ घूंट पीकर उसने पत्नी को पुकारा,"री अमफू की मां !"

बड़े घर के अंदर से निकल आई अमफू की मां – कासां रंहांपी ! सीढ़ी की ओर एक बार नजर डालकर बेटी पर नाराज होती हुई वह बैठक-घर की ओर आई।

"शाम होते ही अमफू न जाने कहां चली जाती है ! मुर्गों-सूअरों को दड़बों में ले आने की कोई चिंता नहीं। दिन-भर इस घर से उस घर चक्कर लगाना ही उसका काम है। भला यह घर चलेगा कैसे ?"

"अरी रहने भी दे,क्या वह नामसझ लड़की है ? शायद कुछ काम होगा,तभी तो गई होगी।" सारइक ने चाय की कटोरी से चुस्की लेकर पत्नी की बात काटते हुए कहा।

"इसी तरह शह दे-देकर लड़की का सर्वनाश कर दिया आपने ! आप ही की वजह से मैं उसे कोई बात भी नहीं कह सकती। उसे कोई कामकाज करने के लिए भी कह नहीं पाती।" पति पर आरोप लगाकर वह अलाव के पास आ बैठी।

पास ही पड़ी दो-तीन लकड़ियां उसने अलाव में डाल दीं। आग के उजाले में कासां रंहांपी का चेहरा चमक उठा। हालांकि बढ़ती उम्र की छाप पड़ी है,फिर भी उम्र उसके साधारण स्वास्थ्य को मलीन नहीं कर सकी है। उसने जो गहने-कपड़े पहने थे,वे उसके मान-मर्यादा-संपन्न,संभ्रांत कारबी नारी के सौंदर्य-बोध का परिचय दे रहे थे। उसके दोनों हाथों में चांदी के कड़े 'रइ-पेंखारा' थे। कानों में थे चांदी के कर्णफूल – नोथेंपी। आग के उजाले में उसके कानों में पहने चांदी के 'थुरीया' चमक रहे थे। अंगूठे के सिवा और सभी उंगलियां चांदी और पीतल की अंगूठियों – आरनान – से भरी हुई थीं। कपाल के बिल्कुल बीचोंबीच नाक पर से ठुड्डी तक एक लंबी-सी काली रेखा 'दुक्' खिंची हुई है। इसी काले 'दुक्' की रेखा मानो कारबी नारियों की चिरंतन परंपरा,ऐतिह्य का हस्ताक्षर है। लपेटकर रखे जा सकने वाले छोटे-से बटुए 'सुइ' से पान-सुपारी निकालकर वह चबाने लगी। उस सुंदर बटुए की चेन भी बड़ी सुंदर, चांदी की थी। लाल-काले सूत से बूटेदार बने उस बटुए पर जगह-जगह चवत्रियां-अठत्रियां

जड़ी हुई थीं। उन सिक्कों पर महारानी विक्टोरिया की छाप चमक रही थी। ऐसे बटुए का हाथ में रहना संभ्रांत कारबी नारी की निशानी है।

गांव के मुखिया के पूरे परिवार का दबदबा समूचे गांव पर रहता है। गांव-भर की जितनी सारा समस्याओं का भार सारइक पर है, कामां रंहांपी पर उससे कम बोझ नहीं है ! वही गांव की मुखियानी 'बासापी' भी ठहरी ! उसी के सुझाव-मशविरे के मुताबिक गांव की औरतों को चलना होता है। 'बासापी' को भी गांव-भर की खबर रखनी पड़ती है। किसी गांव का स्वास्थ्य बासापी पर भी कम निर्भर नहीं होता।

छोटी-सी डिब्बी से जरा-सा चूना निकालकर उसने मुंह में डाला। चांदी की डिब्बी भी सुंदर थी। पान-सुपारी चबाते हुए उसने कहा – "कुछ देर पहले कारें रंफारपी धान मांगने आई थी। बता रही थी कि पिछले दो जून से बच्चों के मुंह में मुट्ठी-भर भी दाने नहीं दे सकी है। कह रही थी कि धान के मौसम में वापस कर देगी। इस गांव की हालत दिन-ब-दिन कैसी होती जा रही है !"

"धान के मौसम में वह वापस क्या करेगी ? फागुन का महीना निकला जा रहा है, अब तक आर काटा ही नहीं है। फिर लिंदक अफीम की चिंता करे या खाने के अनाज के बारे में सोचे-विचारे ? अरे, अब तो वह रामधन व्यापारी के हाथ खुद बिक न जाए तो वही काफी समझो !"

चाय खत्म कर कटोरी एक ओर रख, पत्नी के दिए हुए पान-सुपारी को मुंह में डाल, सारइक ने फिर से कहा – "आज हमने अपने 'आर' में आग लगा दी। एक ओर से बड़े अच्छे ढंग से आग ने सब को निगलकर साफ कर दिया है। जमीन की सफाई में, लगता है, इस साल कोई खास असुविधा नहीं होगी !"

"अगर एक बार बारिश हो जाती है, तो जाकर आलू-कच्चू ही रोप आऊंगी। पिछले साल की अपेक्षा इस साल की जमीन उपजाऊ है न ?"

"जमीन की मिट्टी तो देखने में बिल्कुल फरफरी और काली है। केंचुए की मिट्टी से भरी होने के कारण लगता है कि जमीन उपजाऊ होगी। लेकिन हां, अगोरने के लिए 'टं'[1] कहां बनाओगी ?"

" आर के बीचोबीच बनाना ही ठीक रहेगा।"

"टं बनाने के लिए फेरांके से मिलना होगा। लेकिन बात यह है, अमफू की मां, अब तो आर खेती करने के लिए भी जमीन घटती जा रही है। अगर हम लोगों ने भी घाटी में रहने वाले लोगों की तरह 'पानी खेती'[2] का इंतजाम न किया तो बड़ी मुसीबत होगी।"

"हां, ठीक कहते हो तुम ! अब लोगों को मिल-जुलकर खेती की जमीन का इंतजाम करना चाहिए। दिन-ब-दिन लोगों की हालत भी तो गिरती जा रही है। जंगली आलू खाते-खाते लोग बिल्कुल शक्तिहीन हो गए हैं।"

---

1. खेत अगोरने के लिये बनाई गई ऊंची-सी मचान।
2. घाटी की समतल भूमि पर की जाने वाली खेती।

"हां, इंतजाम तो जल्द ही करना होगा। रिसोबासा आदि से एकदिन चर्चा करनी होगी।" कहते-कहते सारइक कुछ चिंतित-सा हो उठा। पत्नी ने उसके बदलते हुए भाव को देखा। पति को बात का जवाब दिए बगैर उसने पूछा – "कुछ देर पहले रंफारपी आपके लिए एक बोतल शराब लेती आई थी। पीएंगे ?"

"अगर दें गई है, तो ले आओ ! उन बेचारों को तो अफीम ने खत्म कर डाला।" सारइक ने सहानुभूति से कहा।

"क्या सिर्फ उन्हें ही ? कारें, काक्रूं आदि का और क्या बचा है ? परिवार की होनहार किशोरी ! मगर घर पर पहनने की एक 'पीनी'[1] भी तो नहीं है। मैंने उसे अपनी पुरानी पीनी ही दे दी है। बाप तो अफीमची है ही, सुना है, मां भी पान-सुपारी के साथ अफीम खाया करती है।"

वह उठकर अंदर जाना चाहती थी तभी अमफू और हेमाइ को आते देख, उसने अमफू से कहा – 'सांरातिक' (चावल रखने के घड़े) के पास शराब की एक बोतल है। जरा ला दे तो, बेटी !"

अमफू घर के अंदर चली गई। हेमाइ तेरां सारइक का इकलौता बेटा है। वह बैठकखाने की ओर आगे बढ़ आया। साथियों के साथ 'घिला' या 'गेल्हा'[2] खेलने में रात हो गई। उसे वहां देखकर बहन साथ लेती आई है। उसने अपने हाथ का 'घिला' टट्टी पर लटकते थैले में डाल दिया। टट्टी पर झीमते-से अपने तोते को देखकर उसने मां से पूछा – "मां, मेरे तोते को कुछ खाना-वाना दिया है या नहीं ?"

"अरे, मैं तुम लोगों को देखूं या तेरे उस तोते को संभालूं ?"

हेमाइ ने तोते के शरीर को सहलाते हुए प्यार किया। तोता जग उठा और 'केक्-केक्' कर पुकारने लगा।

"हेमाइ, अब रात हो गई, उसे परेशान न कर !" बाप ने डांटते हुए कहा।

तोते को वहीं छोड़ वह मां के पास आ गया और लेटकर "मुझे बड़ी भूख लगी है मां" कहता हुए उसे परेशान करने लगा। दिन भर खेल-कूद करते हुए थके हेमाइ की ओर मां ने आग में भूना हुआ जंगली काठ-आलू का एक टुकड़ा बढ़ा दिया। हेमाइ उसे लेकर चबाने लगा।

बोतल को हाथों से सहलाती हुई अमफू आई और उसे बाप के सामने रख दिया। बाप की कटोरी को वह पानी से धोने लगी, तभी मां ने उससे कहा – "अरी बिटिया, भला बता तो, शाम को तू कहां चली जाती है ? घर में इतने सारे काम हैं ! 'सोजुन' पूजा भी नजदीक आ गई है। घर में मदिरा-पानी-चावल का इंतजाम भी तो पूरा-पूरा नहीं हुआ है। मैं भला किस-किस ओर ध्यान दूं ? बता तो !"

---

1. कारबी महिला की मेखला।
2. एक लता में लगने वाला चौड़ा-सा बीज, जिससे बच्चे खेलते हैं।

"नहीं मां, मैं अपनी नें[1] कादम के यहां गई थी। वह आमटेरें बाजार जाने वाली है या नहीं, इसका पता लगाने। जरा-सा इधर-उधर हुआ कि मां क्या-क्या...!" उसने मुंह फुलाते हुए कहा।

सारइक कुछ कहना ही चाहता था, तभी बाहरी दरवाजे पर किसी के खखारने की आवाज सुनकर बेटी से कहा – "कौन आया है, बेटी, जरा देख तो !" टट्टी के पास निश्चित-सा सोया हुआ कुत्ता भौंका, फिर सिकुड़ कर पड़ा रहा। अमफू उठ ही रही थी कि उधर से आवाज आई, "फू कांबुरा, घर में हैं ?"

"कौन ? ओ, लिंदक तुम ? आओ, आओ ! तुम्हारी बात तो भूल ही गया था। बढ़ी उम्र के कारण ही ऐसा हुआ है क्या; आजकल भूल जाना मेरा स्वभाव ही बन गया है।" हंसते हुए सारइक ने कहा।

"क्या किसी कामकाज का आयोजन कर रहे हो ?" मचान पर अपने लड़खड़ाते कदम रखते हुए लिंदक ने पूछा।

"नहीं, नहीं ! आजकल किसी तरह का आयोजन करने की स्थिति ही कहां है ? बेटी, वह चटाई बिछा दे।" उसने मां के पास ही बैठी अमफू से कहा।

अमफू ने उठकर चटाई बिछा दी। लिंदक उस पर पालथी मारकर बैठ गया। अमफू की मां ने अलाव की लकड़ियों को आगे कर दिया। बैठकखाने में कुछ ज्यादा उजाला हो गया। मदिरा की काले रंग की बोतल पर आग की लपटें प्रतिबिंबित हो मानो नाचने लगीं। झीनी-सी दाढ़ी, बिखरे बालों का जूड़ा और मुंदती-सी आंखों वाला लिंदक का चेहरा भी ज्यादा झलकने लगा। बोतल पर नाचती लपटों के साथ ही मानो उसकी आंखें भी नाचने लगीं। वह उसी के यहां की है, बोतल को देखते ही वह समझ गया। उसकी मुंदती-सी आंखें देखते ही यह बात समझ में आ जाती थी कि उस पर अफीम की पिनक अब तक चढ़ी है।

"यह तुम लोगों के यहां की मदिरा है। तुम आ गए, अच्छा ही हुआ। साथ-साथ मिल-बांट कर खाने-पीने में मजा आता है।" बोतल को सहलाते हुए सारइक बोला।

"हां, हा। आते समय सें की मां ने भी बताया था। तिस पर आपने भी बुला लिया। बिल्कुल वक्त पर पहुंचा।" लिंदक ने खांसते हुए कहा।

"हां, हां। कहावत है न 'आछे कपालत निये को ने ?' (यानी – जो किस्मत में है, उसे कौन ले जा सकता है ?) तुम्हारी भी किस्मत में है। बेटी, अपने दादा के लिए भी एक कटोरी ला दो।"

अमफू ने एक कटोरी ला दी और लिंदक को चिढ़ाया – " 'फू'[2] की आंखों में अफीम का नशा अब तक बना हुआ है। मदिरा के नशे से भला क्या होने वाला है ? इन्हें तो अफीम की टिकिया ही देनी चाहिए थी ? क्यों है न, फू ?"

---

1. सहेली।
2. दादा।

"हां, बिटिया ! अफीम के नशे में कोई मोहिनी शक्ति है जरूर !" लिंदक की बातों से सारइक के बैठकखाने में मृदुल हंसी की गूंज फैल गई ।

मदिरा कटोरियों में उड़ेल कर दोनों ने पहले देवता को समर्पित की । दाहिने हाथ की तर्जनी का सिरा मदिरा की कटोरियों में डुबोकर उसे बाएं हाथ के अंगूठे के जोड़ से छुआकर प्रार्थना की । प्रार्थना खत्म होने पर उंगली में लगी मदिरा की बूंद को छिड़ककर मचान पर फेंक दिया । फिर दोनों मदिरा पीने लगे । एक घूंट पीकर सारइक ने कहा – "बढ़िया मदिरा है । सचमुच तुम्हारी घरवाली बड़ी अच्छी मदिरा बना सकती है । अमफू की अम्मा, तुम भी एक घूंट पीकर देखो न !" कहकर एक कटोरी में जरा-सी मदिरा उड़ेलकर उसने पत्नी की ओर बढ़ा दी । एक घूंट पीकर उसने भी बखानते हुए कहा – "हां, सचमुच उसके हाथों में लछमी है । खुद भले ही न खाए-पीए, पर दूसरों को जरूर खिलाती-पिलाती है ।" बासापी की बात सुनकर लिंदक खिलखिलाकर हंस पड़ा । बोला – "अंह 'नी'[1] बासापी के कहने का भी जवाब नहीं । मगर वह ऐसी ही लछमी होती तो साल के शुरू में ही हमारे खाने-पीने के मुट्ठी-भर अनाज के लिए इतना हाहाकार क्यों होता भला ?"

"क्या खलिहान में धान का रहना ही सब कुछ है ? देखिए, वह खुद बगैर खाए-पीए भले ही रह जाती हो, पर आपको तो खिला रही है । खुद कपड़ा भले ही न पहने, आपको तो पहनाती है । क्या वह कोई कम है ? ऐसी औरतें गांव में भला हैं कितनी ?"

"बात तो सही है, मगर..." लिंदक आगे भी कुछ कहना चाहता था पर सारइक ने मजाक में कहा – "मगर तुम जानती हो या नहीं अमफू की अम्मा, कि फू लिंदक को आर के धुएं की अपेक्षा अफीम की टिकिया का धुआं ही ज्यादा अच्छा लगता है !"

सारइक की बातें सुनकर सब हंस पड़े । हंसी की आवाज सुन सोए हुए हेमाइ ने भी करवट बदली ।

"फू कांबुरा की बातों का भी जवाब नहीं ।" कहता हुआ लिंदक भी उस हंसी में सम्मिलित हो गया ।

सारइक के बैठकखाने में कुछ देर हंसी गूंजती रही । तब तक आंगन कोमल चांदनी से जगमगा उठा ।

चूल्हे के ऊपर के 'धोंवा-चां'[2] – जिसे कारबी लोग 'रापसो' कहते हैं – की ओर देखती हुई बासापी ने अमफू से कहा – "बेटी, तुम्हारे दादा खाली मदिरा ही पी रहे हैं । जरा देखो तो, उस चोंगे में सुखाकर रखी हुई मछली है या नहीं ? अगर हो, तो उसे जरा आग में सेंक कर दो न !"

अमफू एक लंबा-सा ललछौंहा बांस का चोंगा खींचकर निकाल लाई । चोंगे में कुछ सूखी मछलियां थीं । उन्हें आग में सेंककर केले के पत्ते पर नमक और कुछ फिरंगी मिर्च समेत

---

1. बड़ी बहन या सास । कभी-कभी मानसूचक संबोधन में भी आता है । यहां बडी दीदी के अर्थ में आया है ।
2. एक तरह का ताखा या मचान, जो धुएं से काला हो जाता है, जिस पर सामान रखने पर कीडे नहीं लगते ।

देकर, वह शाम की रसोई बनाने के लिए 'कुत' (बड़ा घर) में घुस गई।

बासापी ने लिंदक से कहा – "घर में कुछ है नहीं। उमरा गांव के लोगों ने 'लांपी'[2] में जहर डाला था। उसी से कुछ मछलियां लाकर हमें भी दी थीं। उन्हें ही सुखाकर रख दिया था। आजकल तो मछली-वछली मारने की भी फुर्सत नहीं मिलती।"

सूखी मछली के एक टुकड़े में नमक लगाकर चबाते हुए लिंदक बोला – "नी, होगा इसी से ! और क्या चाहिए ? मगर फू कांबुरा ने हमें क्यों बुलाया ?"

"सुनो, तुम्हें बुलाने के कई कारण हैं। अगले हफ्ते सोजुन पूजा के लिए दिन-वार तय कर लिया है। पूजा के सारे सामान लगभग जुटाए जा चुके हैं। खेती के कामों में लग जाने के पहले ही इन सब से निपट लेना चाहता हूं।"

"मुखिया ने सही सोचा है। आपके जरिये हम जैसे रंकों-गरीबों को भी मुक्ति मिले।"

"अगर देखा जाए तो यह पूजा-अनुष्ठान समाज के लोगों का ही है, सिर्फ सामान ही हमारी ओर से जुटा दिया गया है। लोगों का मंगल हो तो हमारा भी मंगल है। क्या कहते हो ?"

"आप का कहना ठीक ही है।" लिंदक ने हामी भरी।

परम संतोष से मदिरा पीते हुए दोनों ने तरह-तरह की चर्चाएं कीं। अपनी दुख-दुर्गति की चर्चा में लिंदक ने एक पूरा[2] धान देने को भी कहा।

"सारइक के रहते हुए भला लिंदक तेरन कभी भूखों मर सकता है !" बची हुई मदिरा दोनों ने आपस में बांट कर पी ली। इसके बाद सारइक ने कहा – "कल तुम भगिनी को भेज देना। एक 'दां'[3] धान ले जाए। पूजा के लिए मदिरा घट भी सकती है। उससे दस-पंद्रह बोतल मदिरा बनाने को कह देना। हां, रिसोबासा मुटियार से मिलकर कल उन्हें जरा हमारे यहां आने को कह देना। समझे न ?"

"ठीक है ! अब तो रात भी काफी हो गई। अब मैं उठ रहा हूं।"

"सुनो, रूखा-सूखा जैसा है, तुम खाना खाकर जाना।" बासापी ने लिंदक से अनुरोध किया।

"नी बासापी, रहने दो अभी। मैं तो खाना खाकर ही आया था।" लिंदक बोला।

बासापी ने ज्यादा कुछ नहीं पूछा। 'चावल कहां से मिला ?' यह पूछने की इच्छा होने के बावजूद वह चुप रही। सारइक से विदा लेकर लिंदक जाने के लिए उठ पड़ा। नवमी का चांद टीका पहाड़ की चोटी पर आ गया था। नशे के मारे लिंदक के पैर लड़खड़ा रहे थे। खांसता हुआ वह घर की ओर चल पड़ा।

इसी बीच अमफू ने खाना परोस दिया। खाने के बीच उसने बाप से पूछा – "बप्पा, कल आमतेरें का बाजार है। कादम आदि भी जाने वाली हैं। मैं भी जाऊं, बापू ? मैं एक जोड़ी

---

1. बरापानी की एक सहायक धारा।
2. लगभग एक पसेरी वजन करने का एक पात्र। 3. धान रखने का बड़ा टोकरा।

'नोथेंपी'[1] लेना चाहती हूं।"

"ठीक है, चली जाना ! मगर कर्णफूल अभी लेने की जरूरत नहीं। मेरा परिचित वह खासिया व्यापारी 'बोथात लांछो' बाजार में आया करता है। वहीं से मैं खरीद दूंगा।"

बाप की बात पर अमफू ने 'अच्छा' कहकर सहमति जताई। सारइक के मचान-घर में धीरे-धीरे सन्नाटा छाने लगा। रात का 'रंमिली' गांव भी आहिस्ता-आहिस्ता नीरव-निस्तब्ध हो आया। गांव में जगह-जगह कुत्तों के भौंकने की आवजें आने लगीं। जिरसंग के 'तेरां' के घर की बांसुरी और गगना-तुरही की धुनें भी मौन हो गईं। उल्लुओं की गूंजती बोली से रात क्रमशः भयानक-सी होती गई। बैठालांसो के चारों ओर चांदनी फैल गई। चांदनी के उजाले में झलमल-झलमल करती कारबी लांपी की शांत जलधारा मानो रंमिली गांव को बांहों में भरकर प्यार जताती नीरव-मौन बहती जा रही थी। शांत प्रकृति के वक्ष पर फैला चांदनी का उजाला और बरापानी नदी की बहती जलधारा निरंतर गति का, सचेतन गति का संदेश सुनाते जा रहे थे।

2

"रिसोबासा, घर में हो ?"

"कौन, फेरांके हो क्या ?"

"हां-हां, मैं ही हूं।"

"इतनी सुबह-सुबह ? क्या कोई जरूरत आ पड़ी है ?"

"जरूरत मेरी नहीं। सारबासा की है। आज शाम थोड़ी देर के लिए सारबासा के यहां जाना जरा ! यही बताने के लिए आया था।"

"ठीक है, ठीक है। क्या खैनी नहीं खाओगे ?"

"नहीं, अभी नहीं खाऊंगा। देर हो जाएगी। आर में जाने का वक्त हो गया है। जरा जल्दी से बुरतिमेन को भी बताता जाऊं। अच्छा, अब मैं चला !"

"अच्छा, ठीक है।" रिसोबासा ने हामी भर दी।

फेरांके ने सुबह-सुबह ही रंमिली के घर-घर में वह समाचार फैला दिया। सूरज निकलते ही गांव के सारे मर्द-औरत अपने-अपने कामकाज पर निकल गए। धनेश पक्षियों का झुंड रंमिली के आसमान से होकर उड़ता हुआ दूर की ओर निकल गया।

कां तिमुं, रंमिली गांव का 'फेरांको' यानी सामूहिक दान-चंदा-शुल्क आदि उगाहने-वाला और समाचार पहुंचाने वाला है। उसे लोग नाम लेकर नहीं बुलाते। उसका जाना-पहचाना

---

1. मक्के के दाने जैसा चांदी का कर्णफूल।

नाम है फेरांके । बड़ा ही फुर्तीला,रंगीन मिजाज का । उसके तन की पुष्ट मांसपेशियों से उसका सुंदर स्वास्थ्य झलकता है । लोरिं पत्ती में मुड़ी पत्ती-तंबाकू पीता हुआ फेरांके भी अपने आर की ओर निकला । उसके आगे-आगे थी उसकी पत्नी काजिर बेपी । उसकी पीठ पर थी एक बड़ी-सी 'खां'[1] । लौटते समय शायद लकड़ी लाने का उसका इरादा था । कां ति मुंने अपनी कमर में दाब लटकाने की म्यान बांध ली थी । म्यान लकड़ी की थी । उस पर 'भीमराज' पक्षी की तस्वीर खुदी हुई थी । उसके कदम चलाते वक्त कमर में लटकती दाब से 'खटक्-खटक्' की आवाज हो रही थी । मानो वह आवाज चुपचाप चलते दंपति की गति की ही सूचना दे रही हो ।

ठूंठ जैसे पेड़ों के जंगल को विभिन्न पक्षियों की चहचहाहट ने मानो सजीव कर डाला । आगे-आगे चल रही पत्नी से कां तिमुं ने कहा – "सुनती हो ?"

"क्या है ?"

"लग रहा है कि हमें आर खेती छोड़ ही देनी पड़ेगी ।"

"क्यों ? तो फिर गुजारा कैसे चलेगा ?" मुड़कर देखे बगैर उसने पति से पूछा ।

"कुछ और कर-धर कर गुजारा चलाना पड़ेगा । तुम्हीं बताओ न, अब आर काटने के लिए पहाड़ कहां है ? दिन-ब-दिन ये पहाड़ भुंडे होते जा रहे हैं । खेती भी साल-ब-साल बुरी ही होती जा रही है ।" सामने के पेड़-पौधेविहीन भुंडे पहाड़ों की ओर देखते हुए कां तिमुं ने कहा ।

"बात तो सही है । मगर चारा क्या है ?" सड़ाक से झाड़ी में से उड़कर जाती हुई चिड़ियों की ओर देखते हुए पत्नी ने पूछा – "है कोई उपाय ?"

"कोई-न-कोई उपाय तो निकलेगा ही । लोरि का वह सत राम और आमतेरें के जो खासिया परिवार हैं,वे तो आर खेती किए बिना ही आराम से गुजर-बसर कर रहे हैं ।"

"हमारे जैसे भोले-भाले लोगों के दिमाग में वे बातें समझ में नहीं आ सकतीं । हजारों जन्मों के बाद भी इस फूटी किस्मत में यही बात समझ में नहीं आएगी कि सुख है क्या चीज ?"

दोनों बातें करते हुए जूम या झूम खेती की जगह पर पहुंचे । झूम खेत की जमीन के पास खड़े होकर पत्नी की ओर देखते हुए कां तिमुं ने कहा – "लंकी की मां,तुम्हीं देखो,इस साल तो यहां खेती की है । अगले साल,भला किस ओर आर काटेंगे ? अगर सेकस पहाड़ की ओर जाते हैं तो वह घर से काफी दूर होगा । नतीजा यह होगा कि पूरे परिवार को वहीं जाकर रहना होगा ।"

"हां,बात तो सही है । मगर एक बात है,लंकी के बप्पा ! सेकस पहाड़ की ओर जाने का मन न बनाना,समझे ।" आतंक-भरी दृष्टि से देखती हुई काजिर बोली ।

---

1. लम्बी-सी पहाड़ी टोकरी ।

"मगर क्यों ?" पत्नी को दी हुई पान-सुपारी मुंह में डालकर उसने पूछा।

कुछ देर इधर-उधर नजर डालकर, काजिर ने धीरे-से कहा – "सुना है, वहां 'केलोंपो'[1] रहता है। उस दैत्य से मुझे बड़ा डर लगता है।"

"तुम्हें भी डर !" कां हंस पड़ा।

"क्या दक्षिण ओर के उस पहाड़ पर नहीं जा सकते ?" समस्या का हल निकालने के इरादे से उसने पति को सुझाव दिया।

"दक्षिण की ओर भला कहां जाओगी ? उधर वह टीका पहाड़ है। गोरे साहबों ने लोहे के खंभे गाड़कर वहां गिरजाघर बना लिया। तभी से टीका 'सारपो' नाराज हो उठा है। वहां आर काटकर देवता के गुस्से की आग में विध्वंस हो जाने के लिए मैं नहीं जाऊंगा। समझी न, लंकी की मां ?"

पति के मुंह से 'गोरे साहबों' का नाम सुनकर वह बेहद डर गई। कारवेल नाम के गोरे साहब ने – जिसे लोग 'किरबेन' कहते थे – गैर-ईसाई कारबी लोगों पर जो भारी जुल्म किए थे, उनकी कथाएं वह बचपन में सुन चुकी थी। दूसरी ओर, टीका पहाड़ के देवता टीका-सारपो की आतंक-भरी कहानियां भी उसने सुनी थीं। यह सब जान-सुनकर भी भला किस मुंह से उसने पति को उस ओर आर काटकर खेती का सुझाव दिया था ? खुद को धिक्कारकर उसने पति से कहा – "लंकी के बापू ! नहीं, नहीं। उधर जाने की जरूरत नहीं। चाहे अगले साल जंगली आलू ही क्यों न खाना पड़े। मेरी सौगंध, आप उस ओर न बढ़ना।" डरते हुए उसने पहाड़ी की ओर नजर डाली। उस 'धुंधुआरे'-से पहाड़ के साथ छेड़छाड़ की, ऐसा सोचकर उसने थूक निगल लिया।

आग से जलकर साफ हो चुकी पहाड़ी जमीन पर पेड़ों के मूढ़ों[2] के आस-पास उसने बड़े जतन से आलू-कच्चू के बीज रोपे। ढलान की खाई में पेड़ों की डालियां और झाड़ियां भरी हुई थीं। उस खाई के किनारे-किनारे कुंहड़े के बीज रोपती हुई वह बोली – "पिछली बार वोथात लांसो बाजार में जाने पर लासिंबार गांव के 'नीं कानं' लोग आपस में जो चर्चा कर रहे थे, मैंने भी वह सुनी थी। कह रहे थे कि हमारी तरफ इन गोरे साहबों के आने के कारण ही धान की खेती भी घट गई। लंरी में क्रिस्तान धर्म के आ घुसने की वजह से ही हेमफू देवता नाराज हैं। खेती बुरी होने की वजह भी वही है। लंकी के बापू, बात सही है क्या ?" कहती हुई आग से अधजली डालियों को एक ओर से चुन-चुनकर इकट्ठी भी करती गई। कां एक सूखे पेड़ की डाल को काटते हुए पत्नी की बातें सुनता रहा। पेड़ की डाल काटकर गिरा देने के बाद उसने कहा – "ऐसा हो भी सकता है। आज शाम को सारबासा के यहां समाज की बैठक होने वाली है। बैठक में मैं खेती की समस्या उठाऊंगा। देखूं, लोग क्या कहते हैं।"

---

1. बदर-जैसा एक जगली जानवर, जिसके हाथ-पैर में गांठें नहीं होतीं। दोनों पैरों के तलवे हाथी के जैसे गोल होते है, पर उनमें नाखून नही होते। यह बड़े हिसक स्वभाव का होता है।
2. पेड़ के तने का जड़ों वाला निचला हिस्सा।

"हां, यह तो अच्छा ही हुआ। आप यह गर्मागर्म यह बात ताऊ जी से बताना। हो सकता है, वे कोई सही राह सुझा दें !"

सूखे कूड़े-करकट की ढेरियों में कां तिमुं ने आग लगा दी। सफेद-नीले रंग का धुआं चक्कर-सा लगाता हुआ आसमान में उठने लगा। फागुन की तेज धूप और आग की गर्मी से उसका शरीर पसीने-पसीने हो उठा। राख लगे हाथों से उसने अपने लाल चेहरे पर से बहती पसीने की धारा को पोंछा। आग की लपटें तेज होने के साथ-साथ धुआं काला हो उठा। दूर ठूंठों की डालियों पर पंडुक चिड़ियों की विरक्तिदायक चिंहचिंहाहट गूंज उठी। इधर-उधर के कई पहाड़ों की आग के धुंए से आसमान भर गया। बैठा लांसो का आकाश धूम्र-धूसरित हो उठा। जंगल के आग की चिनगारियां चारों ओर उड़-उड़कर बिखरने लगीं। रंमिली गांव के ऊपर भी हवा में उड़ती चिनगारियां और राख फैलने लगीं।

हवा में नाच-नाचकर उड़ती हुई चिनगारियों और राख का अनुसरण कर लंकी, जिरसंग के लंबे मचान-घर रिसो-आतेरां तक आ पहुंची।

यह रंमिली गांव के युवकों का सामूहिक निवास 'डेका-चां' है जिसे वे लोग 'तेरां' कहते हैं। यह रंमिली गांव के जिरसं के नौजवानों की एक प्राचीन बुनियाद है। डेका-चां के सामने के पेड़ों की छाया में झुंड-भर बच्चे घिला खेल रहे थे। छोटे-छोटे कौपीन-जैसे कपड़े पहने उन घिला खेलने वाले लड़कों के बीच काजिरसो, सांएत, लारसिका और कई औरतें अपनी-अपनी पीठों पर बच्चों को लिए 'घिला' का खेल देखकर मनोरंजन कर रही थीं।

उस झुंड में हेमाइ लंकिरी को देखकर लंकी भी उनके बीच आ गई।

हेमाइ, लंकिरी, सारथे, लारसिका, सांएत, काजिरसो — ये रंमिली गांव की नई पीढ़ी के लड़के-लड़कियां हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी लड़के-लड़कियां यहीं घिला-लट्टू आदि के खेल खेलकर बड़े होते रहे हैं। किशोर होते ही ये 'डेका-चां' में जाकर 'जिरसं' यानी किशोर-मंडली बनाते हैं। कोई 'क्लेंदुन' यानी सहायक दल-नायक बनता है, तो कोई 'क्लेंसारपो' यानी मुख्य दल-नायक है। वे 'जिरसं' का संचालन करते हैं – नए ढंग से – पारंपरिक रूप से। जिरसं के खुले आकाश के तले गगना-तुरही और 'पंसी' ढोल की धुन बजाकर जीवन का दायित्व-बोध अपनाते हैं। 'जिरसं' खत्म होने पर वे ही गांव के सारबासो, रिसोबासा, फेरांके आदि बनते हैं। जिरसं ही कारबी समाज-जीवन की पहली सीढ़ी है। पेड़ों की ठंडी छाया, पास का डेका-चां और रंमिली – इन तीनों का ही अविखंडित रूप है रंमिली गांव। रंमिली का समाज। घिला-लट्टू के चक्करों में वे जीवन-शृंखला के नीति-नियम सीखते हैं, अनुशीलन करते हैं। झूम खेती के जरिये विकसित-विनिर्मित कारबी समाज के ग्राम-जीवन में शिक्षा प्राप्त करने का यही चिरंतन रूप है।

धूल से मैले-कुचैले खाली तन वाले लड़के घिला खेल रहे थे। लाल लाख के रंग की घिला की गोटियां हेमाइ आदि के हाथों में चमक रही थीं।

"जिरो कामे का...मे का...मे...ए" कहकर लंसीं ने घिला चलाया था, तभी हेमाइ कह उठा – "अरे लंसीं, भला तू क्या घिला खेलना नहीं जानता ? अभी तो 'सालोबात'[1] ही था।" और उसने पैर से लंसीं का फेंका घिला रोक लिया।

"ओ, हमने तो ध्यान ही नहीं दिया था। अभी तो सालोबात ही है।"

"हां, भला नए खेल की शुरुआत कैसे हुई ?" लंकिरी, सारथे, लांनिम आदि सब ने एक साथ हेमाइ की बात का समर्थन किया।

"अरे यहां तो लंकी भी है। लंकी, तू बता तो घिला के खेल का क्रम कैसा था ?" झुंड में लंकी को देखकर हेमाइ ने पूछा।

लंकी 'जिरोकामे'[2] से लेकर 'रं आप्' तक घिला खेलने के नियम और उनके क्रमों के बारे में कहता गया। लंकी ठहरा फेरांके कां तिमुं का लड़का। हेमाइ आदि से उम्र में कुछ बड़ा है। घिला, लट्टू आदि खेलों में कोई गड़बड़ी होती तो हेमाइ आदि लंकी की ही मदद लेते। लंसी, लांनिम आदि भी फेरांके का लड़का मानकर लंकी का मान करते।

धूल में लिथड़े हेमाइ आदि फिर घिला खेलने में जुट गए। कतारों में सजे घिलाओं को खट्प-खट्प कर पलक झपटकते ही हेमाइ ने उड़ा दिया। साथियों के हिस्से के अनेक गांवों पर उसने कब्जा कर लिया। उसके अचूक लक्ष्यभेध की सामर्थ्य देखकर शेष सभी लड़के दंग रह गए और मौन होकर देखते रहे। विपक्ष के लड़कों का मन क्रमशः शाम के सूरज की भांति मुरझाकर पीला पड़ने लगा।

आज के घिला खेल में लंसीं बुरी तरह से हार गया। काजिरसो, लारसिका आदि के सामने इस तरह से हार जाना उसे जरा भी अच्छा न लगा। अपमानित-सा मानकर वह फिर हठपूर्वक घिला खेलने में जुट गया। हेमाइ ने अपने घिला को आड़े-तिरछे सजा लिया। लंसीं ने बड़ी-बड़ी आंखों से साथियों पर नजर डाली, फिर हेमाइ के घिला की ओर निशाना साध कर अपना घिला फेंक मारा ! मगर वह हेमाइ के घिला में न लगकर पास ही खड़ी खेल देखने वाली लारसिका के पैर की पिंडली में जा लगा। चोट के मारे वह 'उफ्-आह्' कर उठी।

लंकी, हेमाइ आदि असफल लंसीं की ओर देखते हुए ठहाके लगाकर हंसते हुए कहने लगे – "देखा, लंसीं का घिला टेढ़ा है। जाकर लारसिका के पैर में लगा है।"

"अरे नहीं, घिला तो टेढ़ा नहीं है। असल में उसने लारसिका के पैरों की ओर ही निशाना साधा था। उसकी आंखें ही टेढ़ी हैं।" लंकी ने मजाक उड़ाते हुए कहा।

गुस्से और अपमान के मारे लंसीं हांफने लगा। आंखें लाल कर उसने लंकी की ओर देखकर कहा – "रहने दे टेढ़ा ! कुत्ते, तू चुप रह ! तू फेरांके का बेटा है तो इसी से मैं तुझसे डरता थोड़े हूं। समझा !"

लंसीं का बर्ताव देखकर हेमाइ को गुस्सा आ गया। बोला – "तू खेलना तो जानता

---

1. खेल के बीच का दांव।
2. गोटी फेंकने की शुरुआत।

नहीं। अब लंकी पर ही दोष मढ़ता है ?"

बात लगने पर उसने हेमाइ को भी 'कुत्ता' कहकर गाली दी। गाली सुनकर हेमाइ ने गुस्से के मारे उसके गाल पर एक चपत लगा दी। मार खाकर रोता हुआ लंसीं घर की ओर चला। वहां खड़े लड़के-लड़कियां उसे एक साथ चिढ़ाने लगे – "लंसीं पेटू हार गया ! हार गया।"

घर की ओर कदम बढ़ाते लंसीं को देखकर हेमाइ बोला – "अगर संगी-साथियों के साथ खेलना नहीं आता तो मत खेलना ! जबान से गाली क्यों देता है ?"

हेमाइ आदि भी घर को चल पड़े। राह के किनारे लहलहाती पत्तियों वाला एक 'मारथू'[1] का पेड़ देखकर हेमाइ एक बड़ी-सी डाली को हाथों से पकड़कर तोड लाया। लंकी ने पूछा, "हेमाइ, इसका क्या करेगा ?"

"सिंकाइ[2] कीड़ों को बुलाऊंगा। शाम को हमारे यहां आना। हम मिल-जुलकर 'सिंकाइ' कीड़े पकड़ेंगे।"

"हां, हां, वह गीत हमें याद है।" बड़े आग्रह से लंकी ने कहा।

"लेकिन भाई, मैं तो भूल गया हूं। कैसे था वह ?" हेमाइ के चेहरे पर एक निर्मल आनंद खिल उठा था।

"मैं गाकर सुनाता हूं, लेकिन तुम लोग भी साथ देना।" कहकर लंकी गाने लगा –

सिंकाइ सिंकाइ मादुराइ राइ
ओ..सिंकाइ...ए...आ...
मारथू आंजकसो सो
नांबन नां एत जो जा,
ओ..सिंकाइ...ए...आ...
आतिबुक तिबुकले वां...वां...
ओ..सिंकाइ...ए...आ...

(यानी — ओ साक्सन ! तुम्हें अगर कोई पकड़ना चाहे तो हमारी कोमल-कोमल इन मारथू पत्तियों में शरण लेना, झुंड बांधकर हमारे पास आ, अपने चमकीले रंगों से हमें मोहित कर देना।)

इसी तरह साक्सन-गीत का रियाज करते हुए हेमाइ और उसके साथी अपने-अपने घरों में जा घुसे। एक-एककर मैना, सारिका चिड़ियों ने भी अपने छोड़े हुए पेड़ों पर फिर से आकर शरण ली। अब तक जो पेड़ नीरव हो रहे थे, वन-विहगों के कलरवों से पुनः मुखरित होने लगे। शाम की क्षणिक व्यस्तता चारों ओर गूंज उठी !

---

1. जामुन के पेड़-जैसा एक छोटा पेड़। 'साक्सन' नाम का कीड़ा पकड़ने के लिए इसकी पत्तियां आग में जलाकर एक तरह की गंध पैदा की जाती है।
2. साक्सन नाम का कीड़ा।

3

शाम हो आई थी।

सारइक तेरां के बैठकखाने में कतारों में लोग बैठे हुए थे। बैठकखाना – 'हंफारला' – तीन ओर से टट्टी से घिरा हुआ था। टट्टियां 'इकरा' (यानी, सनई) की थीं। सामने की ओर टट्टी न थी। खुला था। बीचोंबीच अलाव था। धीमी लपटों में जलती हुई आग के उजाले से बैठकखाना दमक रहा था। सारइक तेरां के पास ही रिसोबासा और लिंदक, दोनों बैठे हुए थे। जिस सिरे पर सारइक बैठा था, वहीं फेरांके, बुरतिमेन, मुतियार भी आ बैठे। आंगन की ओर मुंह किए गांव के वयोवृद्ध लंकिरी इंति और उनके साथ गांव के कुछ और लोग बैठे हुए थे। दशमी के चांद ने अपनी सुकोमल चांदनी से सारइक के आंगन को प्लावित-सा कर दिया था। चांदनी के उजाले में जिरसं (युवा-निवास) के लड़के गृहस्थ की मदद करते हुए तरह-तरह के कामों में हाथ बंटा रहे थे।

सिर पर पगड़ी, बाएं कंधे पर अंगोछा डाल, फेरांके कां तिमुं सारबासा के पास आया। सारइक ने जो बोतल आगे बढ़ाई थी, उसे हाथ में लिए, उसके निर्देश की प्रतीक्षा करने लगा॥

लोगों के विचार समझने के इरादे से सारइक ने पूछा – "हमारे बीच वयोवृद्ध, ज्ञानी सज्जन फू इंति तो हैं ही। सम्मान-सामग्री उन्हें ही दें, यही ठीक रहेगा, क्यों ? रिसोबासा का क्या विचार है ?"

"अब पूछने को क्या है ? हमारे बीच जब फू इंति हैं ही, तो उन्हें ही देना ठीक रहेगा।" सिर खुजलाते हुए रंमिली गांव का रिसोबासा (मुखिया) सारएत रं हां ने सारबासा की बात पर सहमति जताई।

रिसोबासा के साथ दूसरे लोगों ने भी "ठीक है, ठीक है" कहकर सहमति प्रकट की। लोगों की सम्मति पाकर सारइक ने मदिरा की बोतल लंकिरी इंति को देने के लिए फेरांके को निर्देश दिया।

लंकिरी के सामने बोतल रख फेरांके ने दोनों हाथों से प्रणाम किया। लंकिरी ने भी प्रत्याभिवादन करते हुए बड़ी खुशी से सारबासा की सम्मान-सामग्री ग्रहण की। आग के उजाले में मदिरा की बोतल जगमगा उठी। मदिरा की जो बोतलें सारबासा के लिए लाई गई थीं, उन्हें एक-एक कर सारइक के सामने रखकर सम्मान प्रकट किया गया। सारइक ने रिसोबासा, बुरतिमेन को एक-एक बोतल तथा जिरसं के युवकों को एक बोतल देने का निर्देश दिया। सम्मान-सामग्री वितरण के बाद सभा बुलाने का कारण जानने के लिए सभी ने उत्सुकता प्रकट की। लंकिरी ने नियमानुसार सभा बुलाने का उद्देश्य जानने की भावना से सारइक से पूछा – "फू कांबुरा, आपने भला किस उद्देश्य से ऐसा राज-सम्मान, सोने-चांदी की बोतलें इस नाचीज

को अर्पित कीं ?"

"कोई वैसी खास बात नहीं है । हमारी सामूहिक रंकेर पूजा का काम चूंकि अच्छी तरह से पूरा हो गया, इसलिए मैं मन में सोच रहा हूं कि अगली पूर्णिमा के दिन सोजुन पूजा भी कर ली जाए । लोगों की सुविधा-असुविधा की भी तो बात है न ! यह सामान्य सम्मान-सामग्री देकर लोगों का विचार जानना चाहता हूं । आप लोगों को तकलीफ देने का उद्देश्य सिर्फ इतना ही है ।" सारइक ने उद्देश्य समझाते हुए कहा ।

"फू कांबुरा ने तो सत्कर्म की ही चिंता की है । देवता के काम में लोग जरूर हाथ बंटाएंगे, मदद भी पहुंचाएंगे ।" लंकिरी ने बड़ी प्रसन्नता से कहा ।

बुरतिमेन बोला – "खेती-बारी में लगने के पहले ही देवता का काम पूरा करने के लिए कदम उठाने पर हमें बहुत खुशी हुई है ।"

"दिन-वार तय हो गया हो तो सम्मान-सामग्री लोगों में बांट दी जाए !" लोगों की ओर देखते हुए रिसोबासा ने कहा ।

लोगों की सहमति मिल जाने पर रिसोबासा ने फेरांके की ओर देखते हुए कहा – "फेरांके, सम्मान-वितरण का समाचार लोगों को तुम्हीं दो ।"

फेरांके गंभीर होकर बैठ गया और लोगों को संबोधित करते हुए कहा – "हाबे-पिनपो, सारबासा, रिसोबासा, सरकारी मुतियार, 'बिखय-मुंटिरी'[1] समेत बारलोंरी के देवतागण और सज्जनो ! सोजुन पूजा के आयोजन की सूचना के रूप में अं कांबुरा की ओर से दी गई सोने-चांदी की सम्मान-सामग्री वितरण हेतु गृहस्थ की तरफ से मैं आप लोगों की अनुमति मांगता हूं ।"

"बड़ी अच्छी बात है । सम्मान-सामग्री वितरित की जाए ।" लंकिरी के साथ सभी ने एक स्वर से सहमति प्रदान की ।

अब तो सारइक तेरां के घर में एक उत्सव-मुखरित वातावरण छा गया । युवक बोतलों की डाट खोलकर मदिरा वितरण करने लगे । कुछ युवक केले की पत्तलों पर कच्चू और ढेंकीया साग उबालकर बनाई गई तरकारी परोसने लगे । मदिरा वितरण हो जाने पर वयोवृद्ध लंकिरी ने देवता के नाम पर मदिरा-तर्पण की सूचना दी । हर एक ने देवता की स्तुति कर उंगली के सिरे से कटोरी में से मदिरा ले-लेकर 'आराकलै' देवता को अर्पित की । सारइक के 'चां-घर' में मंत्रों की मधुर ध्वनि से एक पवित्र वातावरण फैल गया । उस ध्वनि, उस मंत्र के पवित्र छंद की मूर्च्छना में कारबी समाज-जीवन की जीवनी-शक्ति छिपी हुई है ।

अर्पण-तर्पण का कार्य समाप्त होने पर सभी लोग मदिरा पीने लगे । मदिरा और घरेलू 'लाओ पानी' से कारबी-संस्कृति का अटूट संबंध रहा है । जन्म, मृत्यु, विवाह – इन त्रीनों कार्यों में मदिरा और 'लाओ पानी' अनिवार्य है । कारबी जीवन के हास और आंसू मानो इस

---

1. पदवीधारी सम्मानित लोग ।

'लाओ पानी' के अपूर्व माया जाल में बंदी हैं। स्वप्न-लब्ध 'थाप' यानी मदिरा-मणि द्वारा सृजित यह 'हरलां' कारबी संस्कृति का एक संपुष्ट पौधा है।

मदिरा पीते हुए लोगों ने तरह-तरह की चर्चाएं छेड़ीं। खेती-बारी की चर्चा शुरू होने पर फेरांके बोला – "देखते हैं कि आर खेती करने लायक जमीन ही नहीं रही। पुरानी जमीन को तो 'टड़ा' के जंगल ने ग्रस लिया, 'आहू' यानी भदई धान की खेती के लिए वह योग्य जमीन नहीं है। क्या किसी ने इसका कोई उपाय सोचा है ?"

फेरांके की बात सुनकर लोगों में सन्नाटा छा गया। सभी ने सारइक के चेहरे की ओर देखा। जमीन-जायदाद की समस्याओं का हल सारइक के सिवा कोई और नहीं कर सकता। उनकी नजरों में मानो वही भावना खिल उठी थी। सिर झुकाकर 'ढेंकीया साग' चबाते हुए लिंदक बोला – "भला इस फैली हुई बड़ी दुनिया में आर खेती के लिए भी क्या इतना सोचने की जरूरत है ?" कहता हुआ वह हंस पड़ा। पर उसकी इस व्यंग्यात्मक रसिकता में किसी ने साथ न दिया।

मदिरा का एक घूंट निगलकर फेरांके बोला – "ऐसा कह देना तो आसान है, पर हमें अब सोचने की जरूरत आ पड़ी है। दक्षिण के उस टीका पहाड़ पर जाने में तो रुकावट ही डाल दी गई है। उधर का रास्ता ही बंद है। सेकरो पहाड़ भी गांव से काफी दूर है। अगर वहां आर काटना पड़े, खेती-बारी करनी हो, तो हमें अपने गांव को ही फूं आबी तक उठाकर ले जाना पड़ेगा।"

"हां, बात तो सच है। अब हमारी इस वृद्धावस्था में गांव को उठा ले जाना तो आसान नहीं है। उस एक ही समस्या के कारण उन दिनों हम 'हामरेन-उमतिलि' छोड़कर यहां आ बसे थे। अब चाहे जैसा भी हो, ईश्वर की कृपा से यह गांव आम-कटहल आदि से भरा-पूरा बन गया है। लहलहा उठा है। हमारे 'फू-फी' (बाप-दादाओं) की हड्डियां यहीं पड़ी हैं। अब हमसे तो इस गांव का मोह छूटेगा नहीं। हमें कुछ ऐसी व्यवस्था के बारे में सोच-विचार करना है जिससे कि गांव छोड़ना न पड़े।" मन में बसे अनगिनत जीवनानुभवों वाले बूढ़े लंकिरी ने सिर हिला-हिलाकर कहा।

बूढ़े लंकिरी की बातें सबके दिलों को छू गईं और लोगों ने सिर हिला-हिलाकर उसका समर्थन किया। अनेक लोगों के मन में खोई हुई अनुभूतियां जाग उठीं और उनका अंतर भी आलोड़ित हो उठा। सारइक की आंखों में उसके पिता सारकिरी की तस्वीर उभर आई ! उसकी आंखें भी छलछला आईं। अलाव की लकड़ियों को आगे बढ़ाने के बहाने अपनी भावनाओं को दबाकर वह स्वाभाविक स्थिति में आ गया और लंकिरी की बात पर हामी भरते हुए कहा, "फू इंति जी ने युक्तिसंगत बात कही है। इसी समस्या के बारे में तो मैं भी विचार कर रहा हूं। फेरांके ने बात छेड़कर अच्छा ही किया। आर काटते-काटते सारे पहाड़ भुंडे हो गए। साल-भर में जो धान होता है, वह भी पूरा नहीं पड़ता। खाने के लाले पड़ जाते हैं। बांस-बेंत तो इस बीच खत्म ही हो गए। अब तो जलावन की लकड़ी की भी कमी हो जाएगी।"

लोग तल्लीन होकर सारइक की बातें सुनते रहे। कुछ क्षण सोच-विचार कर उसने आगे कहा – "मैं तो एक बात सोच रहा हूं। इंहिन आबि से बोथात लांसो तक तराई में यह जो समतल जमीन है, इसे साफ कर हम सभी आपस में बांट लें। हर मकान पीछे जब तीन रुपए लगान के देने ही पड़ते हैं, तो कामपुर के हाकिम से कहकर कुछ और ज्यादा लगान देकर हम इस जमीन को साफ कर लें। जमीन के पट्टे के बारे में इंतजाम मैं करूंगा। इसके लिए और लोगों को चिंता करने की जरूरत नहीं है। 'पानी खेती' (यानी, समतल की खेती) करने पर ही हमारी समस्याएं हल हो सकती हैं। इसके सिवा और कोई दूसरा उपाय तो मुझे दिखाई नहीं देता।"

रिसोबासा समेत सभी ने सारइक की बात का समर्थन किया। दूसरे कोने में बैठा सिंनत तेरां ने आवाज दी – "मैं तो न लगान दूंगा और न जमीन लूंगा। हमारे पास न तो हल ही है, न भैंसा है। भला हम 'पानी खेती' कैसे करेंगे ? ऐसी बात मैं तो नहीं मान सकता।"

सिंनत की बात सुनकर सारइक तेरां कुछ चकित हुआ। उसे समझाने की मुद्रा में सारइक ने कहा – "अगर और सभी लोग कर सकते हैं, तो तुम न कर सको, इसकी कोई वजह नहीं। अगर लोगों के साथ मिलकर हाथ बंटाओगे, तो तुम्हारे पास भी हल, भैंस हुए बगैर नहीं रहेगा। और फिर, हमारे हाथ में साल-भर का समय भी तो है न ! फिर जरूरत हो तो मेरे भैंसों की जोड़ी को ही ले जाना।"

रिसोबासा ने कहा – "हां, फू कांबुरा ने तो लौकिकता का ज्ञान ही दिया है। सिंनत को अब इसमें कौन-सी आपत्ति है ?"

"आपत्ति है ! बी-हेनरू के लोगों के साथ मैं झगड़ा शुरू करना नहीं चाहता।" सिंनत तेरां ने रिसोबासा की ओर देखते हुए कहा।

सारइक ने कुछ अप्रस्तुत-सा होकर पूछा – "बी-हेनरू के लोगों के साथ भला कौन-सा झगड़ा होगा इससे ?"

सिंनत बोला – "जहां तक मुझे पता है, उस जमीन को 'हाबेसिको' ने नेपाली के हाथ बेच डाला है।"

उसकी बात सुनकर सारइक को अचरज हुआ। दूसरे लोग भी विस्मित होकर सारइक के चेहरे की ओर देखने लगे। लकड़ी खत्म हो जाने के कारण अलाव की आग भी बुझने-सी लगी थी जिससे बैठकखाने में अंधेरा-सा हो गया था। फेरांके ने कुछ लकड़ियां आग में डाल दीं। अंधेरे कमरे में फिर से उजाला हो उठा। धधककर जली आग से छिटककर निकली चिनगारियां उड़कर 'घोंवाचां' में लगकर तुरंत बुझ गईं। जलती हुई आग की ओर देखते हुए सारइक ने कुछ सोचकर कहा – "ऐसा तो हो नहीं सकता ! हमारी अपनी सुरक्षा के बारे में सोच-विचार किए बगैर भला 'हाबेसिको' नेपाली को जमीन क्यों देगा ? यह जमीन तो 'हाबेसिको' की है नहीं। यह हमारी है। जनता की है। 'सोलांदी' की है। हाबेसिको 'लोंरी' का न्यायाधीश है, पर उसे बाहरी लोगों को जमीन देने का क्या अधिकार है ? अपने रहते यहां

किसी बाहरी आदमी का प्रवेश मैं होने नहीं दूंगा। ठीक है, मैं इसकी व्यवस्था करूंगा।"

सारइक आवेश में आकर ये बातें कहता रहा। रंमिली के लोगों ने भी उसकी बातों का समर्थन किया।

"मगर मैं सारबासा की बात का समर्थन नहीं करता।" कहकर सिंनत खड़ा होकर सभा से निकल चला। तेजी से थप्-थप् कर सीढ़ी से उतरकर जाते हुए सिंनत की ओर सब अचरज से देखते रहे। बैठकखाने में कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया। रात की चांदनी में मिलकर सिंनत तेरां ओझल हो गया।

रात ज्यादा होने के कारण चर्चा भी वहीं स्थगित कर दी गई। मदिरा-पान समाप्त होने के बाद युवकों ने सबके सामने भोजन की पत्तलें लगा दीं। युवतियां हाथों में काठ की नावों जैसी करछुल – 'सोराक' – लिए भात परोसने लगीं। आगे होने वाली 'सोजुन-पूजा' सुचारु रूप से संपन्न हो जाए, इसके लिए भात की पत्तल पर से कुछ भात लेकर 'हेमफू' देवता के नाम प्रार्थना करते हुए तर्पण किया गया।

खाना-पीना खत्म होने पर लोगों ने पान-तांबूल खाया। अलाव की आग के उजाले में वृद्ध लोगों ने पूजा-पाठ के बारे में चर्चा शुरू की।

पूजा के लिए 'कुम्फी'[1] ढूंढ़ना, बांस के चोंगे बनाना और जंगली साग ढूंढ़ना, बटोरना, फंरं पेड़ की डालियां लाकर वेदी की स्थापना करना, हामरेन-सोजुन पूजा के उपलक्ष्य में 'हामरेन-कुंतरी-घर'[2] बनाना आदि विभिन्न कामों का भार लोगों को सौंपा गया। इसके बाद सभा खत्म हुई। लोग विदा ले अपने-अपने घर चले गए।

दशमी का चांद सिर पर पहुंच गया। गांव का सन्नाटा कुत्तों के भौंकने की आवाज से गूंज उठा मानो गांव जाग उठा हो। गृहस्थों के घर पहुंचने पर स्वामी-भक्त कुत्तों ने मानो उनका स्वागत किया। धीरे-धीरे गांव फिर सन्नाटे में डूब गया। साथ ही झींगुरों की झनकार भी पूरे गांव पर छा गई।

अलाव की आग के पीले उजाले में सारइक बैठा सोच रहा था – सिंनत तो मेरे लड़के-जैसा ठहरा। अपने परदादा के जमाने में तो हम एक ही घर के थे। सिंनत तो मेरे विरुद्ध कभी कुछ कहता न था। मगर अचानक उसमें यह बदलाव क्यों आया, कब से आया? भला वह इस तरह से सभा से निकल क्यों गया?

---

1. पानी में रहने वाला फतिंगा जैसा एक काला कीड़ा।
2. 'हामरेन' – सोजुन पूजा के उपलक्ष में बनाया जाने वाला एक छाजन वाला घर, जिसमें सम्मानित लोगों को बैठने के आसन दिए जाते हैं।
   कुंतिरी – चारों ओर टट्टियों से घिरा दो छाजन वाला घर, जिसमें औरतें आराम करती हैं।

4

सूरज की जगमगाती सुनहली किरणों-से टीका पहाड़ के पेड़-पौधे-लताएं मानो जाग उठे। पेड़ों की डालियों पर तरह-तरह की चिड़ियों की विचित्र चहचहाहटों से प्रकृति-जगत गूंज उठा। मानो प्रकृति-प्राण पुनः चंचल हो उठे। चिड़ियां झुंडों में उड़कर दूर प्रांतो में जाने लगीं। तोतों का एक झुंड रंमिली के ऊपर से उड़ता पश्चिम के पहाड़ों की ओर निकल गया।

रंमिली की अमफू, कादम, काछां, कानाम, बासापी और बहुत-सी किशोरियां अमफू के मचान-घर की सीढ़ियों से उतर आईं। उनकी पीठ पर 'हाकसो' नामक जंगली साग तोड़कर रखने की छोटी-छोटी टोकरियां – 'खां' – थीं। उनके कदम-कदम पर मानो आनंद और हंसी की खिलखिलाहट बिखर रही थी। रंगीला फागुन जैसे उनके चेहरों पर खिला हुआ था। उनकी वेश-भूषा में मानो सैकड़ों वसंत के रंग थे। शरीर के अंग-अंग में मानो अपार प्रेम की करुणा छलक रही थी। बात-बात पर हंसी ! उनका जीवन ही मानो हंसी हो। सिर्फ हंसी। यह मानो प्राणोच्छल रंमिली की ही हंसी हो।

किशोरियों की उस हंसी में रंमिली के किशोर लड़कों ने भी आकर योगदान दिया। लुम्जं, सें, लांबिरिक, लंकी आदि मचान-घरों से तेजी से नीचे उतर आए। उनके कंधों पर थैले थे, हाथों में दाब थीं और सिरों पर बूटेदार पगड़ियां। कदम-कदम पर मानो उनके नंगे पैरों की मांसपेशियां नाच उठती थीं। उनके कदम चलाने में आत्मगौरव की भावना प्रकट हो रही थी। किशोरियों की हंसी की मृदुल झंकार से किशोरों के मन में आनंद की सिहरन जग उठी। झुंड-भर किशोरियों को अपने साथ ले जाने के लिए तैयार युवकों के मन में आनंद और गौरव, दोनों भावों का उद्रेक होना तो स्वाभाविक ही है। लुम्जं, सें आदि भी उस दिन शरीर पर 'तेल-टेउन'[1] मलकर दूर के पहाड़ को जाने के लिए निकल आए थे।

किशोरियों के साथ तरह-तरह की बातें करते हुए नौजवान टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों से होकर पहाड़ की ओर चल पड़े। उन नौजवानों के विचार से तो वह गांव उनके लिए बंधन-जैसा है। फैले हुए लकड़ी वाले जंगल में घुसते ही गांव उनकी नजरों से ओझल हो गया। नौजवान खुशी के मारे चहक उठे। उन नौजवानों की चहकने की आवाज से निर्जन अरण्य मानो जाग उठा। एकांत में चरती हुई 'डंरिक' चिड़ियां उनकी आवाज से डरकर दूर उड़ गईं।

ठूंठ-जैसे पेड़ों के बीच से चलती हुई किशोर-किशोरियों की मंडली पहाड़ पर चढ़ गई। चारों ओर फैली हुई मुक्त प्रकृति पर उनकी नजरें पड़ीं। वे भी मानो प्रकृति की भांति ही उन्मुक्त होना चाह रहे थे। पहाड़ पर से उनका दूर का गांव अस्पष्ट-सा दिखाई दे रहा था। गांव का बंधन मानो उनके लिए असह्य है। जंगली साग-पत्ती ढूंढ़ने के बहाने आपस में अपने मन की दो-चार बातें कर लेने का यही तो मौका है उनका !

---

1. सरसों के तेल के साथ खटाई।

जंगली साग ढूंढ़कर ले आना भी सोजुन उत्सव का ही एक हिस्सा है। ताजा 'मेहेक-हानथू' साग, कच्चू-ढेकीया साग देवता के नाम चढ़ाने का एक अनिवार्य प्रसाद है। लेकिन पेड़-पौधों से रहित पहाड़ियों पर उस तरह का ताजा साग मिलता भी बड़ी मुश्किल से है। गांव के आस-पास तो मिलने की आशा ही नहीं की जा सकती। पहाड़ की ढलान पर जब मंडली उतर रही थी, उस समय लुमजं, लंकि आदि को उसकी चिंता ने कुछ परेशान कर दिया। उस क्षणिक आनंद के बीच सामाजिक उत्तरदायित्व-बोध ने लुमजं आदि को मानो खरोंच लगा दी। उनके आनंद में विघ्न पड़ गया। मंडली के आगे-आगे जाने वाले सें तेरन ने कहा – "हम तो बहुत दूर निकल आए। टीका पहाड़ तक पहुंच चुके हैं। 'मेहेक-हानथू' भला कहां मिलेगा ?"

"हां, भई ! देखो न, आजकल जंगली साग ढूंढ़ने के लिए भी इतनी दूर आना पड़ता है। पहले तो 'सोबाइलांछो' के आस-पास कितने साग होते थे।" पगडंडी को रोकने वाली एक पेड़ की डाली को दाब से काटता हुआ लुमजं बोला।

"अरे वे दिन अब लद गए। आजकल तो पर्व-त्योहारों में काम आने वाले बांस के चोंगे, लांथे और लांप काटने के लिए भी पूरे एक दिन की राह चलनी पड़ती है।" लां बिरी ने कहा।

मंडली कुछ देर रुकी रही। किशोरियां पास की चट्टान पर बैठ गईं। उनके चेहरे पर विरक्ति का भाव फैला हुआ था। उन्हें बैठे देख लंकी ने चिढ़ाते हुए कहा – "जब तुम लोग आराम से बैठ गईं, तो फिर अब साग-वाग ढूंढ़ना छोड़कर लौट चलना चाहिए।"

"मगर ऐसा क्यों ?" कादम ने लंकी की ओर देखते हुए पूछा।

"जब चट्टान पर बैठ गईं, तब तो तुम लोगों का शरीर भी भारी हो गया। अब जंगली साग-वाग क्या ढूंढोगी ?" हंसते हुए लंकी बोला।

"अरे पहले तू ऐसी जगह तो दिखा दे जहां जंगली साग-वाग लगे हों। इसके बाद कहना कि हम रंमिली की लड़कियां हैं या नहीं ?" अपने हाथ की छोटी कटारी से पास के पेड़ पर चोट करती हुई बाछापी बोली।

"हम मानो रंमिली के नौजवान नहीं, क्यों ?" लुमजं ने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए पूछा।

"अगर रंमिली के नौजवान हो, तो हमें वहां क्यों नहीं ले चलते जहां जंगली साग-वाग हों ?" कादम को बेकार बैठे रहने में ऊब हो रही थी।

कादम के इस ताने से नौजवानों की जवानी की उमंग को बड़ी ठेस लगी। बात तो सही है। इस जंगल में भला हंसी करने की फुर्सत कहां है ? दिन का उजाला रहते ही घर न पहुंच सकें तो मुसीबत का क्या कोई ठिकाना है ?

अब तक जो गांव अभिशप्त जैसा लग रहा था, अब वही अचानक सें तेरन को ऐसा लगा मानो बड़े प्यार के, शांति के और शरण देने वाले स्वस्थ परिवेश के सौरभ से भर उठा है। वह उठ गया और लांबिरिक आदि की ओर देखता हुआ बोल उठा – "हां, वैसी एक जगह के बारे में मुझे पता है। टीका पहाड़ी की तराई में बहुत 'मेहेक-हानथू' साग मिलेंगे। चलो, हम

वहीं चलें।"

सें तेरन की बात से मानो सब को एक बड़ी भारी समस्या का हल मिल गया। सबके मन में नई आशा जाग उठी। नए उत्साह के साथ मंडली टीका पहाड़ी की ओर चल पड़ी।

टीका पहाड़ की तराई का जंगल हरा-भरा था। लग रहा था जैसे फागुन यहां कदम रखना भूल गया हो। पतझड़ की कोई निशानी न थी। जंगली पेड़-पौधों की पत्ती-पत्ती पर ओस की बूंदें चमक रही थीं। इस दोपहर में भी सूरज की किरणों से वे ऐसी लग रही थीं मानो मोती की लड़ियां हों। और उधर वे हैं जंगली साग! चट्टानों की दरारों में ओस से भीगी उनकी पत्तियां जगमगा रही थीं। 'मेहेक-हानथू' साग की कोमल पत्तियां हवा के झोकों से हिल रही थीं। वहीं 'ढेंकीया' साग ऐसे बड़े-बड़े हैं, कि क्या कहने!

अमफू, कादम आदि सभी लड़कियां आनंद के मारे अधीर हो उठीं। सें, लुमजं आदि नौजवानों के होठों पर हंसी खिल आई। उन्हें सही जगह ले आने की खुशी में सें तेरन के चेहरे पर भी आत्मसंतोष की हंसी फैल गई।

नौजवानों की सीटियों, किशोरियों की खुले दिल की हंसी की लहरों और वन-विहगों के विचित्र कल-कूजन ने मिलकर मानो टीका पहाड़ी के उस वनांचल में वसंत-सा वातावरण कर दिया हो।

वे सभी अलग-अलग झुंडों में बंटकर प्रसन्नतापूर्वक जंगली साग चुनने में जुट गए। कादम आदि के पास जाकर सें तेरन ने पूछा – "नी कादम, क्या खाने के लिए कुछ नहीं लाई हो?"

"भला, इसका पेटू स्वभाव तो देखो। जाकर नें[1] अमफू से क्यों नहीं पूछते?" सें तेरन की ओर संकेतसूचक नजर डालकर कादम बोली।

सें तेरन शर्मिंदा-सा होकर उस मंडली से अलग हट आया। कुछ दूर हटकर 'हानथू' पौधे की डालियां काटते हुए उसने किशोरियों को सुनाकर कहा – "देखना, पैर ठीक रखकर कदम बढ़ाना। चट्टानें बड़ी फिसलनदार हैं।"

खड़ी चट्टानें ऐसी थीं कि देखते ही डर लगता था। मानो अभी-अभी पहाड़ से टूटकर वे गिरने ही वाली हैं। अमफू उन चट्टानों पर होशियारी से पैर रखकर धीरे-धीरे कदम बढ़ा रही थी। तभी नीचे से किसी चीज की सरसराहट सुनकर चौंक उठी और "ओ नें, मुझे मार डाला," कहती हुई दौड़ पड़ी। अचानक चट्टान पर पैर फिसल जाने के कारण 'मेहेक' पत्तियां तोड़ने में जुटे सें के शरीर पर जा गिरी और डर के मारे उससे लिपट गई। सभी लोग उस जगह की ओर देखने लगे। सबने देखा कि एक बड़ा-सा अजगर चक्कर लगाता हुआ निकला जा रहा है।

"ओ नें, देखो, अजगर!" आतंक के मारे चीखकर कादम बोली।

कादम की आवाज से अमफू को सुध आई। इतनी दे॰ वह सें तेरन को पकड़कर लिपटी

---

1. सहेली।

हुई थी, उसे पता ही न था। शर्मिंदा होकर वह तुरंत कादम के पास चली गई। लज्जा के मारे उसका चेहरा लाल हो उठा था।

"सांप तो भाग गया! पर होशियारी से साग तोड़ना, 'हां।" समझाने के लहजे में सें तेरन बोला।

सब लोग डरते-डरते फिर से साग चुनने में जुट गए।

अमफू और कादम भी आगे बढ़ गईं। मंडली से थोड़ी दूर हटकर दोनों अपनी-अपनी 'हाकसो' लिए 'ढेंकीया' साग चुन रही थीं। साग चुनते-चुनते कादम ने अमफू से पूछा – "ओ नें, खाओगी?"

ढेंकीया साग की कोमल पत्तियों को 'हाकसो' में भरकर अमफू ने पूछा – "क्या है?"

"लौंग।"

"लौंग? कहां मिली तुम्हें?"

"कल हाट में गई थी। कें सां[1] दुकान से ले आई थी। हां, लो।" हंसते हुए उसने अमफू के हाथ में दो-तीन लौंग थमा दिए।

"बड़ी तीती – ओ नें!" एक लौंग को मुंह में डालकर चबाती हुई, गालों पर हाथ रख अमफू बोली।

"खाओ, खाओ। पेट के लिए फायदेमंद है, जानती हो।" सहेली के प्यार और अपनेपन के लहजे में कादम बोली। तोड़े हुए ढेंकीया साग को उलट-पुलटकर देखती हुई अमफू की ओर देखकर उसने आगे कहा – "कल तुम आमतेरें हाट क्यों नहीं गईं? वहां कितने प्रकार की मणियां आई थीं, पता है?"

"सच?"

"सच नहीं तो क्या मैं झूठ कहती हूं? मैं तो दो ही लड़ियां ले पाई। मेरा तो अंजुरी-भर लेने का दिल हो रहा था।"

कादम ने एक बार यों ही इधर-उधर मुड़कर देखा। मंडली के बाकी लोग ढेंकीया, हान सां बी और मेहेक साग चुनने में जुटे थे। टीका पहाड़ी की तराई में इतना साग हो सकता है, कादम ने पहले सोचा भी न था। जंगली साग-पात चुनने के बहाने लुमजं, लंकी आदि लड़कों को कासां, बासापी आदि लड़कियों से छेड़खानी कर, उनकी मीठी-मीठी गालियां खाकर मौज मनाते देख वह मन-ही-मन हंस पड़ी। यह तो मनुष्य-जीवन की चिरंतन याचना की वही आदिम अनुभूति है।

लौंग चबाती कादम भी साग तोड़ने में फिर जुट गई।

"भला तुम हाट में क्यों नहीं गईं?" अनमनी-सी अमफू से कादम ने फिर पूछा।

"यों ही! तबीयत अच्छी नहीं लग रही थी।" अमफू ने संक्षेप में कहा।

"तबीयत अच्छी न थी, या मन अच्छा न था?" ढेंकीया की कोमल पत्तियां तोड़ती हुई

---

1. पंसारी की दुकान।

कादम ने तिरछी नजर डाल पूछा।

"ऊंह, तुम्हारी भी बात का जवाब नहीं। अरे, शरीर के साथ भला मन का कैसा संबंध ?"

"क्यों नहीं ? मन अच्छा रहे तो शरीर भी अच्छा रहता है।"

अपनी बात पर अमफू को ध्यान न देते देख कादम ने फिर कहा – "क्या तुम बुरा मान गई हो, नें ?"

"अरे, इसमें बुरा मानने की बात ही क्या है ? मैं तो सच ही कह रही हूं।" अमफू ने सहेली के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा।

"तुम्हारा मन आज मुरझाया-सा क्यों है, बताओ तो ?" बगल में झूलती हुई 'हाकसो' को बाएं हाथ से मजबूती से पकड़कर अपनी सहेली के चेहरे की ओर देखती हुई कादम ने पूछा।

"क्यों, भला क्या देखा है तुमने ?" मेहेक साग की लता को खींचती हुई अमफू बोली।

कादम बोली, "शायद तुम उस अजगर से बेहद डर गई थीं, क्यों ?"

सांप की बात सुनते ही अमफू जिस लता को खींच रही थी, उसे तुरंत छोड़ दिया। उसे वह बेल सांप जैसी लग रही थी। कादम समझ गई, अमफू डर गई है। वह बोली – "अरे, इसमें डरने की क्या बात है ? यह तो बेल ही है। लेकिन तुम्हारे मन में जो दुख है, उस का कारण मुझे मालूम है, पर अभी बताऊंगी नहीं। तुम्हें बुरा लग जाएगा। हां, आखिर मैं तुम्हारी होती भी कौन हूं ?" कहकर कादम नाराज होने का भाव दिखा, उस ओर आगे बढ़ गई जहां 'हानसांबी' साग बड़े पैमाने पर लहलहा रहे थे।

अमफू को लगा, सहेली जरूर बुरा मान गई। वह भी कादम के पास पहुंच गई और साग की पत्तियों को हाथों से उलटती-पुलटती हुई पूछने लगी – "क्या बात है, बताती क्यों नहीं, नें ?"

"अगर सुनकर तुम बुरा मान जाओ, तो ?" कादम बोली।

"अरे, नहीं, नहीं नें, कसम खाती हूं। मैं जरा भी बुरा नहीं मानूंगी। बताओ न, क्या बात है ?"

'हानसाबीं' साग की कोमल पत्तियां तोड़ते हुए कादम ने अमफू के परेशान चेहरे की ओर नजर डाली। पहाड़ी की ठंडी हवाओं का झोंका उन्हें छूकर निकल गया। अमफू के घने काले बालों की लटें मानो हवा में उड़ती हुई खेलने लगीं। चेहरे पर फैल आए बालों को हाथों से हटाती हुई अमफू ने पूछा – "आखिर क्या बात है, तुमने तो बताया ही नहीं।"

"ठीक है, बताऊंगी। चलो, उस चट्टान पर बैठ लेते हैं।" पास की एक समतल-सी चट्टान की ओर इशारा कर कादम बोली।

चट्टान पर पेड़ की छांह पड़ रही थी। उस पर बैठकर दोनों ने पान-सुपारी निकाल ली। अमफू के चेहरे पर भी परेशानी का भाव बना हुआ था। यह कादम जाने कौन-सी बात छेड़ बैठे ! उस के मन में तरह-तरह के सवाल उठने लगे जिनकी उलझन में उसका मन अचानक

भारी हो उठा। उधर डाली पर बैठी 'बं तं' चिड़िया 'बं-तं, बं-तं' आवाज में लगातार गीत गाने लगी। दूसरी ओर से सें आदि लड़कों की लगातार मीठी-मीठी सीटियां बजाने की और कासां-बासापी आदि लड़कियों की हंसी की फुहारों की आवाजें तिरती आ रही थीं।

"एक बात है, जानती हो ?" सन्नाटा तोड़ती हुई कादम बोली।

"कौन-सी बात ?" छोटी-सी कटारी से चट्टान पर टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं आंकती हुई सहेली के चेहरे की ओर देखती अमफू ने पूछा।

"सुना है, सें भैया तुमसे प्यार करते हैं।" कुछ दूर तंबाकू पीते हुए सें तेरन की ओर नजर डालकर कादम बोली।

सहेली के मुंह से सें तेरन का नाम सुनते ही अमफू ने उसकी ओर देखा और लजाकर मुंह घुमा लिया। अनजाने में उसकी नजरें हवा में हिलते अधफूले कपौ[1] के दो गुच्छों पर जाकर टिक गईं। सांप से डरकर उसने जिस ढंग से लपककर सें को पकड़ लिया था, उस स्थिति की याद आ जाते ही वह लजा गई। प्यार से उसने सहेली के शरीर को धकियाकर कहा – "हुंह, छोड़ भी उसकी बात ! चलो, अब हम उठें।" कहती हुई उठकर अपनी 'हाकसो' को पीठ पर ले अमफू बासापी आदि की ओर चलने को उद्यत हुई। हंसती हुई कादम भी सहेली के पीछे-पीछे चल पड़ी।

दूसरी ओर से लुमजं आदि भी पुकार रहे थे – "नी अमफू, कादम, आओ-आओ ! सूरज डूबने वाला है।"

अमफू-कादम ने ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की डालियों में से आकाश की ओर नजरें डालीं। हां, सूरज तो ढल ही चुका है। जल्दी-जल्दी साग चुनने का काम खत्म कर सभी घर लौटने को तैयार हुए। नौजवानों के पीछे-पीछे किशोरियां भी चल पड़ीं। खुशी के मारे नौजवानों ने ठहाके लगाए। उनके ठहाकों की आवाज टीका पहाड़ की गुफाओं में गूंजने लगी। समूचा वन-प्रदेश प्रतिध्वनित हो उठा। अरण्य छोड़ने के वे ठहाके मानो सफलता के ठहाके थे। लौटते हुए उन लोगों ने वोथात लांसो की धारा के ठंडे पानी से हाथ-मुंह धो-धोकर शरीर को ठंडा किया। एक-एक टोकरी भर क़र साग, दिल में भरा प्यार और आनंद लिए रंमिली की किशोर-किशोरियां घर लौटे। उनकी यह वापसी ऐसी परितृप्ति-भरी थी जिसे बतलाया नहीं जा सकता। उन्हें दिखाई पड़ा, दूर आकाश में तोतों का एक झुंड उड़ता चला जा रहा है। निचली ओर से उड़कर आते हुए तोतों का वह झुंड मानो शाम के उजाले को अपने पंखों पर लिए हुए था। धीरे-धीरे धुंधले पड़ते जा रहे टीका पहाड़ का वनांचल ही उनकी उस उड़ान की मंजिल था।

---

1. अप्रैल-मई के महीने में खिलने वाला एक तरह का लड़ीदार फूल, बिहू के अवसर पर जिससे लड़कियां जूड़े सजाती हैं।

5

फागुन के अंत की एक साफ सुबह।

मानो सूरज टीका पहाड़ की चोटियों पर से बड़ी कोमलता से सुनहले रंगों को ही बिखेर रहा था।

कारबी लांपी, जिसे बरापानी नदी कहा जाता है, के दोनों तटों पर उजाला छा गया।

साथ ही रंमिली गांव भी कुछ व्यस्तता लिए हुए जाग पड़ा।

गांव के आस-पास के मंदार और पलाश के जंगलों में वसंत का मधुर स्पर्श पड़ रहा था।

बिना पत्तियों वाले पलाश के पेड़ों पर टह-टह लाल अबीर-गुलाल का रंग खिलखिला उठा था।

मंदार पेड़ों पर भी अबीरी रंगों की वही बहार थी।

तरह-तरह की चिड़ियां सुबह की ओस में खिले पलाश के फूलों का मधु-पान कर रही थीं।

सारइक तेरां की बाड़ी के कोने के मंदार के पेड़ों पर भी मैना, सारिका, फेचुलुका[1] आदि पक्षी चहचहा रहे थे।

रंमिली गांव का 'सारथे' यानी प्रमुख है सारइक तेरां। उसके यहां आज 'सोजुन' यानी स्वर्ग लोक की पूजा है।

गांव के लड़के-लड़कियों, किशोर-किशोरियों, बूढ़े-बूढ़ियों – सबका तन-मन आज उत्सव से मुग्ध और मुखरित है।

दूर-दूर के गांवों से पुरुष-महिलाओं और लड़के-लड़कियों के झुंड पूजा में भाग लेने के लिए अमफू के यहां चले आ रहे थे।

रंग-बिरंगे कपड़े पहने बेटियां-बहुएं झुंडों में चली आ रही थीं। पलाश और मंदार फूलों के रंग भी मानो सारइक तेरां की पूजा-स्थली में आकर इकट्ठे हो गए।

पूजा-स्थली घर से कुछ हटकर बनाई गई थी।

पूजा की वेदी पूर्वाभिमुख बनाई गई थी।

'फं रं' पेड़ की चार डालियां चार कोनों में गाड़कर उनके ऊपर एक मचान बनाई गई थी। इस फं रं पेड़ की पत्तियों ने उस मचान को लगभग ढक रखा था। खंभों पर 'लोरू' पत्तियां बांधने के कारण वे हरे लग रहे थे। मचान के ऊपर तक एक सीढ़ी बनाई गई थी। मुख्य वेदी

1. एक तरह की छोटी, काले रंग की चिड़िया जिसकी दुम के निचले हिस्से में जरा-से लाल रंग के पर होते हैं। नर-पक्षी के सिर पर पंख की कलगी होती है।

पर 'कुमफी-कुमबं'[1] केंकड़ा, चेड़ा मछली आदि के साथ सहेलो बर सरलें आदि के पौधे सजा कर रखे गए थे।

यह थी 'बारिये' यानी स्वर्ग के देवता की वेदी ! पास की छोटी मचान की वेदी 'सार' देवता की थी ! मचान पर धान के पुआल से बनाई हुई एक प्रतिमूर्ति खड़ी की गई थी। उस मूर्ति के हाथों में धनुष-बाण थे। 'सार' देवता की उस वेदी से दक्षिणी ओर क्रम से जमीन पर लंबी कतार में छोटी-बड़ी वेदियां बनाई गई थीं। 'बिरने' की वेदी के पास ही 'हाराता' देवता की मूर्ति खड़ी की गई थी। आखिरी वेदी 'आरनि' यानी सूर्य देवता की थी। उस वेदी पर एक सफेद मुर्गा बांधकर रखा गया था। पुजारी वेदी पर पान-सुपारी, चावल, चावल का आटा आदि पूजा के नैवेद्य चढ़ा रहा था।

उस प्रौढ़ पुजारी ने सबसे पहले चावल का आटा छिड़क-छिड़ककर पूजा की बेदियों को मंत्रपूत कर लिया। जनता का आशीर्वाद ले, मंत्र पढ़ता हुआ 'पिबथात' यानी 'बारिथे' देवता का 'बोधन' आह्वान आरंभ किया –

"एहे – म हेम हेम आर्नाम
आर्नाम के थे आरनि केथे
बारिथे आसो बारि ए आसो
लोरू के थे, फं रं के थे
लो रू आर्नाम फं रं आर्नाम
केकिम आर्नाम केराक आर्नाम
ए-हेम ए हेन्म हेम आर्नाम।"

(यानी – ओ महान गृह देवता ! तुम्हीं सूर्य-सदृश श्रेष्ठतम देवता हो ! लोरू और फं रं वृक्षों के देवता तुम्हीं हो। तुम्हीं सृजन और पालन करने वाले देवताओं के भी देवता हो ! तुम्हें प्रणाम है।)

देवता की स्तुति-मंत्र-ध्वनि से चारों ओर एक पवित्र वातावरण जाग उठा। पुजारी के मुंह से लगातार उच्चरित होती मंत्र-ध्वनि की तरंगों से सारइक के मन-प्राण एक गहरे भाव में तल्लीन हो गए। ये मंत्र भी क्या कारबी-लांपी नदी जैसे ही प्राचीन नहीं हैं ? संसार के सृष्टि-रहस्य के साथ मानव-आत्मा के इन मंत्रों का कितना निविड़ संपर्क रहा है, आदि-आदि बातें सोचते-सोचते उसका छोटा-सा मन अचानक प्रफुल्लित हो उठा और वह उठकर देव-कार्य संपादन में पुजारी की मदद करने लगा।

प्रमुख देवता 'बारिथे' के नाम उत्सर्गित वराह (सूअर) मोटा-ताजा और बड़ा-सा था। सामूहिक प्रार्थना के बाद पुजारी ने मंत्र-पाठकर उस मोटे-ताजे बराह की बलि दी। पिरथात वराह की बलि देना 'सोजुन पूजा' का एक उल्लेखनीय पहलू है। उस बराह के कलेजे और फेफड़े की ओट में ही गृहस्थ का रहस्यमय भविष्य निहित होता है। उसका कलेजा और फेफड़ा

---

1. एक तरह का कीड़ा।

काट निकालने तक पुजारी दूसरे देवताओं के नाम पर मुर्गों की बलि दे-देकर पूजा का नैवेद्य चढ़ाता गया। 'हाराता' देवता को चढ़ाए गए पक्षी की मृत-अवस्थिति-चमत्कारिक थी। वह खेती अच्छी होने का संकेत दे रही थी। क्योंकि 'हाराता' खेती-बारी बर्बाद करने वाला, जमीन की उर्वरता नष्ट करने वाला अप-देवता है। उस देवता की संतुष्टि का मतलब ही, कारबी लोगों के जन-विश्वास के अनुसार, खेती-बारी अच्छी होने की सूचना है।

इस बीच 'पिरथात्-वराह' का कलेजा और फेफड़ा निकालकर पानी से साफ कर धोए गए। वेदी के पास ही सम्मानित अतिथियों के लिए 'जिरणि-पंजा' या 'विश्राम कुटिया,' जिसे 'सार् हामरेन' कहते हैं, बनाई गई थी। हाबे पिनपो समेत दूसरे अंचलों से आए सम्मानित अतिथि वहां बैठे पूजा-कार्य देख रहे थे। 'हाबे' की गैर-हाजिरी में आमतौर पर सोजुन पूजा का आयोजन नहीं होता। सारइक ने पहले से ही सूचना भिजवाकर 'लोंरी हाबे' को पूजा में आने का अनुरोध किया था। पूजा के दिन लोंरी हाबे जल्दी आकर अपने आसन पर बैठ गया था।

फेरांके ने ही वराह के कलेजे और फेफड़े को ले जाकर हाबे लोगों को दिखाया। उन्हें देखकर विभिन्न लोगों ने तरह-तरह के विचार प्रकट किए और भविष्यवाणियां कीं।

रंमिली गांव के वृद्ध लंकिरी ने कलेजे पर गहरे निशान देखकर कहा – "इस बार खेती-बारी अच्छी होने का संकेत मिलता है। लेकिन..." अचानक उसके चेहरे पर गहरे उद्वेग और दुश्चिंता का भाव प्रकट हो उठा।

"क्या हो गया, फू?" फेरांके ने बड़ी उत्कंठा से पूछा।

"यहां यह तो समूचे गांव में अशांति होने की निशानी है।" अपनी पतली उंगलियों से कलेजे के निशान दिखाते हुए लंकिरी ने कहा।

लंकिरी की बात सुनकर हाबेसिको खिलखिलाकर हंस पड़ा। उसकी खिलखिलाहट से 'सार हामरेन' कांप उठा। हाबेसिको की ओर सबकी आंखें मुड़ गईं। अनेक लोगों के बीच हाबेसिको के सिर पर की सफेद पगड़ी दमक रही थी। लंकिरी के साथ-साथ सारइक भी हाबेसिको की उस हंसी का मतलब समझ नहीं सका.।

"अरे, मुझ लोंरी हाबे के रहते दूसरा कोई भविष्यवाणी करने वाला कौन होता है? सूअर के कलेजे की गणना के बारे में वह क्या जानता है? क्या ये सब अमंगल के निशान हैं?" हाबेसिको ने उंगली से कलेजे को दबा-दबाकर लंकिरी को फटकारा।

"लोंरी हाबे जी! उम्र ज्यादा हो जाने की वजह से वह मेरा दृष्टिभ्रम भी हो सकता है। भूल-त्रुटि हुई हो तो माफ कर दें।" बूढ़े लंकिरी ने उससे माफी मांग ली।

आत्म-संतुष्टि की हंसी हंसकर हाबेसिको ने सारइक की ओर देखा। हंसते हुए उसने लोंरी हाबे की ओर से खुली घोषणा की – "घर-गृहस्थी के साथ, सारइक तेरां की किस्मत खुल गई है। अपार धन-सम्पदा के लक्षण हैं। अब तो हेमफू ईश्वर के चरणों में प्रार्थना कर लोगों को इन्हें आशीर्वाद ही देना चाहिए।"

प्रार्थना की मदिरा बांटी गई। पूजा-स्थली में इकट्ठे हुए बूढ़े, जवान जमीन पर मदिरा गिराकर प्रार्थना-मंत्र बोलने लगे। पूजा-स्थली में मंत्र-ध्वनि गूंज उठी। लड़के-लड़कियों की सामूहिक 'ए...त' ध्वनि से पूजा-मंडप मुखरित हो उठा।

पूजा-स्थली के उत्तरी ओर लंबाई में एक छोटा-सा 'हामरेन' बनाया गया था। वह 'आं-पहु' का विश्राम-घर था। आमतौर पर वहां मामा, ससुर आदि नाते वाले लोग ही बैठा करते हैं। दूर के उमतिली और रंमांदू से आए हेमाइ के मामा आदि आकर वहीं बैठे थे। 'सार-हामरेन' और 'अं निहु के हामरेन' – इन दोनों के बीच की खुली जगह में नौजवान लोग तरह-तरह के मांस के व्यंजन बनाने में जुटे थे। बीच की ऊंची-सी मचान पर पकाया मांस सलीके से रखा गया था। उसके साथ ही कच्चू, ढेंकीया, हानथू आदि सागों की तरह-तरह की तरकारियां भी सावधानी से रखी हुई थीं।

महिलाओं का विश्राम-घर 'कुंतिरी' पूजा-स्थली के पश्चिमी कोने में था। 'हाबेसिकोपी' समेत समाज की गण्य-मान्य महिलाएं उसी घर में अपने आसनों पर बैठी थीं। भोज के लिए मदिरा-भात आदि की व्यवस्था करने में वे किशोरियों का मार्गदर्शन कर रही थीं। 'कुंतिरी' के पास ही पानी-भंडार 'लांथेनुन' था। बांस के लंबे-लंबे चोंगों से कारबी-लांपी का निर्मल पानी ला-लाकर गांव की किशोरियां पूजा-स्थली में आए लोगों को अनथक रूप से वितरित कर रही थीं।

घरेलू 'लाओ पानी' और मदिरा के नशे में कुछ बूढ़ी महिलाएं आपस में हंसी-ठिठोली कर रही थीं। कोई-कोई एकांत में बहू चुनने के बारे में गुप्त बातचीत भी कर रही थीं और हंसती जा रही थीं। किशोरियां कतार बनाकर नदी-घाट से पानी ला रही थीं, जिनमें अमफू भी थी।

पानी-भरा मोटा-सा बांस का चोंगा 'लांथें' अपनी पीठ पर लिए अमफू बड़े धीमे कदमों से पूजा-स्थली में चली आ रही थी।

लांथे के बोझ से उसका सिर झुका हुआ था। दोपहर की धूप में उसके यौवन की अनिर्वचनीय कमनीयता उसके अंग-अंग से दमक रही थी। अमफू का रूप देखकर हाबेसिकोपी मोहित हो उठी थी। साथ बैठी अमफू की मां कासां रंहांपी से उसने पूछा – "नें बासापी, यह तुम्हारी बिटिया है न?"

"हां, हमारी ही है। देखते-देखते जवान हो गई।"

"देखती हूं, कामों में जुटी रहती है। बड़ी लक्ष्मी लड़की है। अगर इसे मैं अपनी बहू बना पाती तो!"

"हमारी बिटिया अगर आप लोगों की बहू बन सकती तो उसे हम अपना ही सौभाग्य मानते। पर उसे आप वैसा देख भर रही हैं। काम-वाम में कुछ भी नहीं है।"

"ऊंह नें, ऐसी बात न बोलो। लड़की अच्छी है या बुरी, यह तो उसके कदमों से ही पता चल जाता है!"

अमफू आदि लड़कियों के आंखों से ओझल होते ही समधिनों की बातचीत भी खत्म हो

गई। सभी ने दूसरी चर्चा छेड़कर हंसी-ठिठोली से कुंतिरी-घर में एक मधुर वातावरण उत्पन्न कर दिया।

पूजा-स्थली से निकलता झीना धुआं और लोगों की धीमी गुनगुनाहट फागुन के आकाश में मिलते जा रहे थे। सारइक पुजारी के तरह-तरह के कामों में मदद पहुंचाने के अलावा दूसरे कामों के बारे में भी सुझाव देता हुआ चक्कर लगा रहा था। बीच-बीच में मनौती के मांस के वितरण के बारे में भी 'हाबे-पिनपो' लोगों से चर्चा कर लेता था। वस्तुतः सारइक तेरां आज बड़ा ही व्यस्त था। समय की गति के साथ वह भी चक्कर लगाए जा रहा था। उसके साथ ही फेरांके, रिसोबासा, बुरतिमेन आदि भी उत्सव में सम्मिलित अतिथियों की सुविधा-असुविधाओं पर निरंतर नजर रखे हुए थे। रंमिली गांव के सम्मान पर कोई आंच न आए, वे जैसे इसी विषय को प्रमुखता दे रहे थे।

पूजा-स्थली लोगों से भर गई थी। उमाहा, हाबेपी, उमलांर आदि लोंरी मुहल्लों के अलारा आस-पास रहने वाले बी-हेनरू, फुं आबि, लांसिंबार, लोंरे, उमरू आदि गांवों के लोग भी आकर पूजा में सम्मिलित हुए थे। टीका पहाड़ का लारेंस हांसो भी आकर सारइक को सम्मान-सामग्री देकर पूजा में हाथ बंटा रहा था। लोगों की लाई हुई मदिरा की बोतलें सारइक तेरां के सामने जमा हो गईं।

सफेद, लाल और काले रंगों की मदिरा की बोतलों पर तरह-तरह के निशान लगाए गए थे। अपनी-अपनी बोतलों की पहचान आसानी से हो सके, इसीलिए ऐसी व्यवस्था की गई थी। समय की गति के अनुसार मदिरा के पात्रों में बदलाव आ गया है। पहले के लौकियों के पात्रों की अपेक्षा आजकल शीशे की बोतलों की कीमत बढ़ गई है। परंपरागत नीति-नियमों के अलावा अब शीशे की बोतलों से ही काम लिया जाने लगा है।

दूसरे, शीशे की बोतलें यों ही नहीं मिलतीं। तिल-कपास के बदले ही एक बोतल घर में आ सकती है। इसी कारण कारबी गृहिणियां शीशे की बोतल को बड़े जतन से रखती हैं। ऐसी बोतल अगर कभी खो जाए, तो गृहस्थ को गृहिणी के गुस्से की आग में जलना पड़ेगा। खोने की बात तो छोड़ ही दें, किसी दूसरे की बोतल से बदल भी जाए तो घर में छोटा-मोटा महाभारत ही छिड़ जाता है। ऐसी स्थिति से बचाव के उद्देश्य से ही गृहस्थ अपनी-अपनी बोतलों को इस ढंग से सजाकर रखने के तरीके अपनाते हैं।

धीरे-धीरे पूजा का काम समाप्त हो चला। देवता को अब आखिरी नैवेद्य 'थेकार' समर्पित करने के बाद लोग भोजन कर सकेंगे। इसी बीच पश्चिम का आकाश भी क्रमशः रंगीन होता हुआ मटमैला बनता जा रहा था। पुजारी के निर्देशानुसार फेरांके ने भोजन करने की घोषणा करने हेतु लोंरी-हाबे की अनुमति मांगी। लोंरी-हाबे की अनुमति मिलते ही फेरांके ने भोजन तैयार होने की घोषणा कर दी। घोषणा के साथ ही बच्चों की खुशियों-भरी चीख-पुकार के कोलाहल से पूजा-स्थली मुखरित हो उठी।

सारे नौजवानों में व्यस्तता छा गई। लोरा-पत्तों की पत्तलें, केले के पत्ते, बांस के चोंगे एक ओर से वितरण करने में वे जुट गए। सें तेरन, लुमजं, फानकू आदि मदिरा की बोतलें हाथों में

उठाकर व्यक्तियों के मान के अनुसार सम्मान-मदिरा वितरण करने लगे। सूअर की चर्बी वाली सख्त चमड़ी 'अकजर' के टुकड़े एक-एक कर सबको देने लगे। लंकिरी, लंकी आदि रंमिली के लड़के एक पंक्ति में बैठे हुए थे। अपनी पत्तल में पड़े अकजर के टुकड़ों पर नजरें डाल वे हंसने लगे। लंकी गरदन उठाकर हेमाइ को देखने लगा। पर हेमाइ बाप के साथ बैठा था, इसलिए उसे दिख नहीं पाया। लंकी सोच रहा था, अगर हेमाइ भी साथ रहता तो उसे अकजर का बड़ा टुकड़ा मिलता। दूसरे लड़कों की भांति उसने भी पत्तल के साथ अकजर को लपेटकर बांध लिया। घर जाकर सभी अपनी-अपनी मां को अकजर पाने की खुशियां दिखाएंगे। लंकी आदि लड़कों की भांति कुंतिरी के पास बैठी लारसिका आदि लड़कियों ने भी घर ले जाने के लिए अकजर के टुकड़ों को बांध लिया।

माननीय व्यक्तियों को मुर्गों के सिर, टांग समेत जांघ, सूअर के होंठ आदि दे-देकर सम्मानित किया गया। पकाए हुए मांस के तरह-तरह के व्यंजन भात की पत्तल पर परोसे जाने लगे। अमफू, कादम आदि दूसरे काम-काज से छुटकारा पाकर सामूहिक भात-व्यंजन आदि परोसने के कामों में जुट गईं। सुचारु रूप से भात परोसने का काम, किशोरी जीवन की एक अग्नि-परीक्षा-सी होती है। बड़ी सावधानी से कदम बढ़ाते हुए भोजन परोसने में कुमारी लड़कियों का सुंदर सुगढ़ रूप प्रकट होता है। ऐसे अवसरों पर ही किशोरियों को कर्म-निष्ठा, समान रूप से परोसने का गुण और अपना व्यक्तित्व-बोध प्रगट करने का संयोग मिलता है। परोसते समय अगर कोई चिढ़ाए या ठिठोली करे तो भी मन में हुई प्रतिक्रिया बाहर प्रकट करना उचित नहीं है। समाज के विचार से वैसी स्थिति में अपने को संयमित रख पाना ही लक्ष्मी लड़की का लक्षण है।

अमफू का परोसना देखकर 'सार-हामरेन' में बैठे 'हाबे' लोग उसके रूप और गुण की प्रशंसा करने लगे।

होबसिको बोला – "ऐसी लड़की तो कभी-कभी ही मिलती है। हजारों में एक।"

"हां, कदम रखने में, चाल-चलन में तो लड़की बड़ी प्यारी लगती है। किसकी है यह लड़की ?" नकबारे के हाबे ने पूछा।

उसके पास बैठे लिदक ने कहा – "और किसकी होगी ? हमारे सारबासा की ही लड़की है।"

हाबेसिको ने मुंह में मांस का टुकड़ा डालते हुए कहा – "वाह, वाह ! बड़ी लक्ष्मी लड़की है।"

अमफू आदि लड़कियों के वहां से जाते ही हाबे लोग दूसरी बातों की चर्चा में जुट गए।

कुंतिरी के सामने की कतार में बैठी गांव की औरतें मदिरा-भात खाती हुई खुशियां मना रही थीं। कई बूढ़ी औरतों के बीच बैठी लंकिरी की पत्नी काबान मांस का एक टुकड़ा मुंह में भरकर चबा-चबाकर खाने की कोशिश कर रही थी। दांत न रहने के कारण मुंह में ही चुभला

रही थी। यह देख सें तेरन ने बुढ़िया को चिढ़ाया – "फी, देखता हूं आप तो मांस खा नहीं पा रही हैं !"

काबान बोली – "क्या कहूं, बेटे, मांस के टुकड़े बड़े ही सख्त हैं न ! फिर पहले की तरह दांत भी तो नहीं रहे अब। किसी तरह से चाट-चुभला भर रही हूं।"

सें तेरन ने हंसकर कहा – "क्या थोड़ी हड्डी और दूं ?"

"क्या बात कर रहा है ? तुम लोगों की उम्र के जमाने में जब मेरे दांत थे – तो मैं एक ही हबक्के में बूढ़े सूअर की हड्डी को भी चूर-चूर कर डालती थी।" कहती हुई बूढ़ी हंस पड़ी। उसका पोपला मुंह मानो जीवन-रहस्य की बात ही कहना चाहता था। जीवन-हास की धारा में उसके दाड़िमदानों के-से दांत कभी के खो गए। सें तेरन बुढ़िया की पत्तल पर मांस के कुछ नरम टुकड़े डालकर हट गया। बुढ़िया की हंसी के मतलब के बारे में सोच-विचार करने की आज उसे फुर्सत ही कहां थी ?

सार-हामरेन की लंबी-सी झोंपड़ी में हाबेसिको, दूसरे गांवों के हाबे, गांव के रिसोबसा, बुरतिमेन, लिंदक, दूसरे गांवों के बासोपा आदि के अलावा और अनेक प्रौढ़ सज्जन मदिरा-भात खाते हुए विभिन्न विषयों पर चर्चा कर रहे थे। मदिरा की कटोरी हाथ में ले हाबेपी गांव के हाबे ने पूछा – "आरतुथेपी गांव के उस 'लाइसेनेम'[1] के मामले का जो फैसला किया गया था, उसकी रकम कहां गई ? लोंरी हाबे, आपको क्या कुछ पता है ?"

आग में सेंककर सिझाया हुआ मांस का एक टुकड़ा चबाते हुए हाबेसिको ने कहा – "क्यों, मौजादार ने तो उस रकम के वितरण का दायित्व लिया था न ?"

"हां, लेकिन हमें तो एक पैसा भी नहीं मिला। सारी रकम मौजादार ने अपनी जेब के हवाले कर ली। हमने तो यह भी सुना है कि मौजादार हाबे को मिलने वाला मान-धन भी खुद हड़प रहा हैं। सरकार से हाथ मिलाकर वह हमारी स्वतंत्रता की कोई परवाह ही नहीं करता। अब उस पर किस तरह से मामला चलाया जाए ?" उमाहा गांव के हाबे ने हाबेसिको से शिकायत की।

"हां, मामला तो कुछ पेचीदा है। मौजादार तो अंग्रेजों का अधिकारी है। और हम हाबे कारबी राजा के अधिकारी हैं। अब लोग किसकी बात मानेंगे ? इस विषय को 'सोचें रंपी' के सामने रखना होगा।" कुछ देर सोचने के बाद हाबेसिको ने राय दी।

"इस विषय का फैसला जल्द हो जाए तो अच्छा है। हमारी सुरक्षा की जरूरत हो गई है।" वहां बैठे हुए सभी हाबे लोगों ने सहमति जताई।

चर्चा के दौरान बुरतिमेन ने कहा – "गांव के मुखिया, काथार को एक खबर मिली है। आप लोगों को पता है ?"

सब ने लोंरे गांव के मुखिया, काथार की ओर देखा ! मांस का एक टुकड़ा मुंह में भरकर हाबेसिको ने भी अपनी पतली मूंछों पर हाथ फेरते हुए कुछ दूर बैठे काथार की ओर देखा, जो

---

1. एक ही गोत्र के लड़के-लड़कियों में होने वाला प्रणय। कारबी समाज में ऐसे प्रणय को महापाप माना जाता है।

अपने बाएं हाथ के सहारे टिका बैठा था। हाबेसिको के चेहरे और आंखों में मदिरा का नशा झलक रहा था। काथार की ओर देखती उसकी आंखों में परेशानी के निशान थे।

काथार, गांव का बूढ़ा सुंदर और स्वस्थ था। झक-झक सफेद धोती-कमीज पहने वह बड़ा खूबसूरत लग रहा था। एक घूंट मदिरा पीकर अपनी सुंदर-सी मूंछों पर हल्के से हाथ फेरता हुआ वह बोला – "वह खबर मैंने तो दूसरों की जबान से ही सुनी है। बंदूक के लाइसेंस के मामले में मैं पिछले हफ्ते नगांव गया था। करुण मिस्तरी की दुकान में डेन गांव, बकलीया की ओर के लोगों से मुलाकात हुई। स्कूल के बारे में चर्चा के दौरान करुण मिस्तरी ने बताया कि हाटन साहब ने हमारे यहां भी एक स्कूल खोलने का निश्चय किया है। उसने यह भी बताया कि सेमसन इंती ने भी एक स्कूल खोलने का उसे सुझाव दिया है। सुना है कि उसने 'बितुसो' या ऐसे ही किसी नाम की एक किताब भी लिखी है।"

"छोड़ो, छोड़ो। हाटन साहब, बेलें साहब लोगों को गोली मारो। मुझ हाबेसिको के रहते इस लोंरी में कोई इस्कूल-उस्कूल नहीं खुल सकता। उस टीका पहाड़ पर स्कूल खोलकर, गिरजाघर बनाकर उन लोगों ने क्या नहीं किया? मूर साहब और किरबेन (कारवेल) साहब ने किताबों की तस्वीरें दिखा-दिखाकर सारे कारबी लोगों को क्रिस्तान बना लिया। 'सिकुर'[1] बना लिया। 'बिरता' कागज निकालकर यीशू का धर्म-प्रचार किया। दूसरे लोग इस बात को भले ही भूल जाएं, मैं, हाबेसिको कभी नहीं भूल सकता। हाबे, आपका क्या विचार है?" बोतल की डाट खोलकर कटोरी में मदिरा उड़ेलते हुए अपने पास बैठे हाबे से उसने कहा।

"हां, हाबेसिको की बातें तो झूठी नहीं हैं। मिशनरियों के इधर आने के बाद से टीका अंचल के कारबी लोगों का कोई भी नियम, रीति-रिवाज बचा नहीं रहा। 'पें सोजुन' का तो नाम ही खो गया। यहां तक कि अपने गीतों-कथाओं के साथ मृतकों की अंत्येष्टि करने की प्रथा भी खत्म हो गई।" हाबे ने कहा।

सारइक ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा – "हां, बात तो महत्वपूर्ण है। हमें सोचना चाहिए, क्या उन मिशनरियों की मदद लिए बगैर हम खुद स्कूल नहीं चला सकते? अपने बच्चों को नगांव के स्कूलों में पढ़ाने की बात तो दूर, नजदीक के उस कामपुर या यमुनामुख के स्कूलों में भी पढ़ाने की हमारी सामर्थ्य नहीं है। धनेश्वर मास्टर से कहकर अगर हम यहीं एक स्कूल खोल लें, तो मुझे लगता है कि बुरा न होगा।" सारइक ने यह बात बड़े आग्रह से कही थी। पर इससे उसने हाबेसिको को नाराज ही कर दिया।

हाबेसिको ने एक घूंट मदिरा पीकर कटोरी को एक ओर रख दिया और गुस्से के स्वर में कहा – "ऐसी बात सोचना ही गलत है। क्या हम सब क-ख पढ़कर ही बड़े हुए हैं? गांव का बूढ़ा बासोपा ऐसी बेतुकी बातें क्यों कह रहा है? अपने इस लोंरी में तो हम इस्कूल-उस्कूल बनाने नहीं देंगे। यह मेरा, हाबेसिको का फैसला है। मेरा निर्देश मानना ही पड़ेगा।"

उसकी बात सुनकर पास के कुछ लोगों ने आवाज दी – "जरूर, जरूर, सोने-चांदी की

---

1. स्कूल शब्द का बिगडा रूप – स्कूल, इसकिलु, सिकुर, सिकुर यानी ईसाई।

जबान से निकली हाबेसिको की बातें सच हैं।" यह प्रशंसा सुनकर उसकी छाती फूल उठी। खिलखिलाकर हंसते हुए उसने हड्डी समेत मांस का एक टुकड़ा मुंह में डाल लिया और 'कुटुर-कुटुर' चबाता हुआ फिर कहने लगा – "अगर मेरी अनुमति न होती तो क्या सारइक लोगों में अकजर वितरित कर सकता था?" वह फिर हें-हें कर हंस पड़ा। उसके ठहाके से सार-हामरेन कांप उठा। सारइक तेरां हामरेन की छत की ओर नजर डालते हुए हाबेसिको की उस हंसी का मतलब ढूंढ़ने लगा।

इस पवित्र परिवेश में कहीं खलल न पड़ जाए, इसी विचार से उसने अधिक बहस करना उचित न समझा। उसके अपने सम्मान के साथ इस रंमिली गांव का सम्मान भी तो जुड़ा हुआ है। पुजारी को किसी विषय में मदद करने का बहाना बनाकर वह उठ पड़ा। भोज के बीच ही में दो-चार आदमी बांस की सींकें तोड़-तोड़कर लोगों की गिनती कर रहे थे। गिनती खत्म होने पर उन सबने सारइक को सूचित किया कि उपस्थित लोगों की संख्या पांच सौ अस्सी है। सारइक मन-ही-मन सोच रहा था, इतने लोगों की उपस्थिति विरले घरों में ही होती है। बड़े आनंद-मुखरित परिवेश में सोजुन पूजा के सभी काम पूरे हो गए। बगैर किसी त्रुटि के, शांतिपूर्ण ढंग से पूजा समाप्त होने के कारण सारइक ने चैन की सांस ली।

पूर्णिमा का चांद धीरे-धीरे चमकदार हो उठा। सारइक की पूजा-स्थली में भी उजाला फैल गया। चांदनी के चमकीले उजाले ने हामरेन के खंभों पर टंगी लालटेनों के उजाले को निष्प्रभ कर दिया। पूजा का भोज खाने का काम भी समाप्त हो आया। पूजा-स्थली का जन-कोलाहल भी धीरे-धीरे मौन हो आया। पूजा की समाप्ति के कार्य में सारइक को कुछ देर लग रही थी। हेमफू देवता को सारबासा के घर तक समारोहपूर्वक स्वागत कर ले जाने में फेरांके, रिसोबासा, बुरतिमेन आदि ने भी मदद की। क्रमशः शांत हो आई पूजा-स्थली से आ रही हाबेसिको के ठहाकों की आवाजें सारइक आदि के कानों में पड़ीं। उसके ठहाके सारइक के मन में रहस्यमय-से बने रहे। पूजा की वेदी और निर्जन खाली हामरेन चांदनी के उजाले में सन्नाटे में पड़े रहे।

6

पुजारी की विदाई के बाद ही तीन दिनों से चलती आ रही 'सोजुन पूजा' की भी समाप्ति हुई। अब सारइक का मन भी हल्का हो गया। उसके सिर पर चढ़ा पहाड़ मानो अचानक उतर गया। उसका तन-मन तंबाकू के उड़ते धुएं की भांति हल्का लगने लगा।

रंमिली के किशोर-किशोरियां सारबासा के यहां इकट्ठे हुए। पूजा की समाप्ति के बाद एक और भोज देने का नियम है। पूजा के कामों के अथक परिश्रम के बाद गांव के इन युवक-युवतियों को दायित्व-बोध की सारी पाबंदियों, बंधनों से छुटकारा मिला है। अब वे

उन्मुक्त हैं। आज वे, अलग कर रखे सूअर-मांस का जमकर प्रीति-भोज करेंगे।

पूजा करने वाले परिवार की ओर से 'क्लेंदुन, क्लेंसारपो' के नाम सम्मान-नैवेद्य के रूप में मदिरा की दो बोतलें देने की घोषणा हुई और किशोरियों की मंडली की ओर से सम्मान-नैवेद्य की बोतल लेने के लिए कादम से अनुरोध किया गया। घर के अंदर से एक बोतल लेकर हेमाइ निकल आया और कादम को देने लगा। नौजवानों ने उसे चिढ़ाया – "हां, हां, बोतल देकर प्रणाम कर। नहीं तो अब तेरी दुल्हन भाग जाएगी।"

शर्म के मारे हेमाइ लाल हो गया और तेजी से दौड़कर आंगन में चला गया।

हंसी-ठिठोली के बीच बड़ी खुशी से किशोर-किशोरियों की मंडली भोज खाने लगी। बड़े घर के बीचो बीच दरवाजे समेत एक टट्टी लगाकर उसे दो हिस्से में बांट दिया गया था। सामने के दरवाजे के बिल्कुल सीधे का हिस्सा 'काम'[1] था और बीच की टट्टी की दूसरी ओर का हिस्सा था कुत[2]। किशोर-नौजवान लंबे काम में कतारों में बैठे थे, किशोरियां भी 'कुत' के अंदर जाने के दरवाजे के पास ही कतारों में बैठी थीं।

गांव के किशोर-किशोरियों की देखभाल करने का दायित्व अमफू ने खुद अपने ऊपर ले लिया था। सीबू ने घास से बने रंग में रंगी काली मेखला के ऊपर बेल-बूटों वाली एक 'पेटीवानक्क' को अपनी कमर में बांध लिया था और अपने पतले-से शरीर पर 'पें जांफों'[3] लपेटकर वह खाना परोस रही थी। उसके चेहरे पर एक परम तृप्ति की भावना थी। खूबसूरती से बंधा उसका जूड़ा उसके शरीर का लावण्य और बढ़ा रहा था। उसके गले की लाल-नीले रंग की कांच की मणियां एक अपूर्व सुषमा प्रकट कर रही थीं।

सामने के खुले दरवाजे से उजाला निर्बाध रूप से घर में आ रहा था। बारलन के पास ही बैठे सें तेरन की पत्तल पर फिसलता-सा उजाला चमक रहा था। बड़े धीमे-से 'सोबाक' से निकालकर खाना परोसते वक्त अमफू की नजर सें तेरन की आंखों से मिली। दोनों को एक अनजाने सिहरन का अनुभव हुआ। अमफू ने सिर झुकाए भात परोस दिया। दूसरे सिरे से कादम उस पर नजर डाले हुए थी। ठिठोली करते हुए उसने कहा – "हां, अभी तो अच्छा लग रहा है। नें, जरा चेहरे की ओर भी तो देखो कि वह कौन है?"

कादम की बात सुनकर कासां, बासापी आदि भी खिलखिलाकर हंस पड़ीं और सें तेरन की ओर देखने लगीं। अमफू के गोरे गाल लाल हो आए। कोई जवाब दिए बगैर कादम पर प्यार-भरा गुस्सा दिखाती हुई वह रसोईघर के अंदर चली गई।

क्लेंसारपो ने बांस के चोंगे में दी गई मदिरा के कई घूंट तेजी से निगल कर तिरछी निगाह से सें तेरन की ओर देखा। उसकी नजर से मानो चिनगारी ही छिटक रही थी। कादम ने दूर से ही देख लिया।

भोजन को पत्तल पर बैठा सें तेरन अमफू की नजरों में बसे प्यार की अपार आकुलता के

---

1. कारबी लोगो के मचान घर का पहला कमरा।
2. कारबी बड़े घर का मुख्य कमरा।
3. लाल-पीले रगो के सूत मे बुनी हुई एक तरह की चादर जिसे कारबी औरतें शरीर पर लेती हैं।

बारे में सोच रहा था। उसके मन-प्राण आंदोलित हो उठे। उसका प्यार मानो अमफू के चेहरे, आंखों और घने काले बालों के बीच से रेंगता जा रहा था। भाव-विभोर सें तेरन को तल्लीन देख कादम ने छींटाकशी की – "भैया, पत्तल में अमफू की उंगलियां दिखाई पड़ रही हैं क्या ?"

कादम की आवाज सुनकर सें तेरन की तल्लीनता टूटी। उसे शर्म-सी आ गई। बोला – "नहीं री ! तुम लोग भी न जाने यह सब क्या अंट-संट सोच लेती हो ?"

'कुटुर-कुटुर' मांस चबाते हुए क्लेंसारपो की ओर देखते हुए सें तेरन ने मांस परोसने वाली फानकू से कहा – "क्लेंसारपो की पत्तल में क्या सिर्फ हड्डियां ही डाली हैं ? कुछ मांस देखकर दे दे न !"

"अरे, मैं तो मांस ही दे रही हूं। इनकी पत्तल में शायद हड्डियां ही आई हैं।" मांस के कुछ टुकड़े क्लेंसारपो की पत्तल में डालकर फानकू बोली।

"हां, हां।" नाराजी से क्लेंसारपो बोला – "हड्डी न आएगी तो क्या मांस आएगा इधर ?"

तभी नौजवानों के भोजन आदि की खोज-खबर लेने के लिए सारइक अंदर आ गया। वोफं, सें और कादम आदि की ओर देखते हुए उसने कहा, "मेरे बेटो, तुम लोग खाओ, पीओ। यह घर तो मेरा नहीं, तुम्हीं लोगों का है। इस रंमिली के मान-सम्मान पर तुम्हें ही नजर रखनी है।" फिर क्लेंसारपो की ओर देखते हुए उसने पूछा, "क्या तुम्हें और मदिरा चाहिए ?"

क्लेंसारपो के "नहीं चाहिए" कहने पर सारइक बैठकखाने की ओर चला गया।

शाम होने के पहले ही प्रीति-भोज का काम भी पूरा हो गया। सारबासा, बासापी और बैठकखाने में बैठे और भी दो-चार लोगों से विदा लेकर किशोर-किशोरियां अपने-अपने घर चले गए। राह में बारलन ने सें तेरन से कहा – "क्लेंसारपो को वह बात पसंद नहीं आई है। समझे न, 'साइदु'[1] भाई !"

"कौन-सी बात ?" सें तेरन ने पूछा।

"वही, कादम ने जो बात कही थी।"

"क्या तुम भी ऐसा ही सोचते हो ?" बात जानने के लहजे में उसने पूछा।

"मेरा सोचना या न सोचना कोई खास बात नहीं है। मैं तो सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि अमफू की वजह से क्लेंसारपो तुमसे जलने लगा है।"

"हूं, बात तो मेरी समझ में भी नहीं आई है।" सें तेरन ने ऐसे लहजे में कहा, मानो उसने कुछ समझा न हो।

घर के बाहरी दरवाजे पर पहुंचकर बारलन बोला – "ठीक है, अब तुम जाओ। 'जिरसं' में आना। वहीं बातें होंगी। समझे न !"

सें तेरन ने उसे धन्यवाद देते हुए अपने घर की ओर कदम बढ़ा दिए।

एक ही गांव के किशोर-किशोरियां ! आपस में मिलकर लट्टू-घिला खेलते हुए ही तो उनका बचपन बीता है ! एक ही जिरसं के बंधन में बंधे रहे हैं वे। इसके बावजूद मानो उनमें

---

1. साली का पति। यहां ठठोली के रूप में आया है।

आपसी परिचय की बाधा आ पड़ी है। एक-दूसरे को मानो वे समझ नहीं पा रहे हैं। संदेह के कोहरे से मानो हर एक का मन आच्छन्न हो गया है। जिरसं के मचान-घर में भी संदेह का विषैला सांप गुप्त रूप से बस गया है।

धीरे-धीरे शाम हो आई। फेरांके, रिसोबासा, मुटियार, बुरतिमेन, लिंदक और बूढ़े लंकिरी समेत गांव के अनेक बड़े-बूढ़े लोग सारइक के बैठक-घर में इकट्ठे हुए। सारइक ने अपनी झोली में से मुट्ठी-भर 'बंदर छाप बीड़ी' निकालकर लोगों में बांटने के लिए फेरांके के हाथ में दे दीं।

फेरांके हर आदमी को एक-एक बीड़ी देता गया। सब ने जल्दी से लकड़ी की आग से अपनी-अपनी बीड़ियां जला लीं और पीने लगे। बैठकखाना बीड़ी के धुएं से भर गया। बासापी इधर-उधर के अपने कामों में जुट गई। त्योहार की समाप्ति पर घर के बिखरे सामानों को सहेजना गृहिणी का ही काम होता है। इस बीच जरा आराम करने की फुर्सत भी नहीं निकाल सकी थी वह।

लोग बीड़ी पीते हुए सोजुन पूजा की चर्चा में जुट गए। गांव के दो-तीन लड़के अमफू और उसके परिवार के कामों में हाथ बंटा रहे थे। पूजा की बची हुई मदिरा को छान कर अमफू बैठकखाने में रख गई। बासापी ने 'आराक' की दो बोतलें लाकर पति सारइक के हाथ थमा दीं। आखिरी मदिरा के रूप में उसने एक बोतल लंकिरी को और दूसरी बोतल रिसोबासा को सम्मान के रूप मे दे दी। छानी हुई मदिरा को एक आदमी ने उठा लिया और लोगों में बांटने लगा। उसके आगे-आगे और एक आदमी तिल और नमक-सना, सिझाया हुआ सूअर-मांस उन्हें देता जा रहा था। सूअर-मांस का टुकड़ा चबाते हुए लिंदक बोला – "मांस का टुकड़ा बड़ा चर्बीदार है। ऐसा सूअर-मांस बहुत दिनों बाद खाने को मिला है।"

उसकी बात पर बूढ़ा मनबे खिलखिलाकर हंस पड़ा। बोला – "अरे, तुम क्या सोचते नहीं कि यह सोजुन त्योहार किस घर का है? क्या यह किसी ऐसे-वैसे घर का त्योहार है?"

जायका लेकर मांस का टुकड़ा चबाता हुआ फेरांके बोला – "यह सोजुन त्योहार सारबासा के घर का है। सूअर मोटा-ताजा तो होगा ही। पिरथात सूअर ठहरे। नी बासापी खुद उनकी कितनी देखभाल करती है। दिन में तीन-तीन बार भूसी खिलाती है, यह तो मैंने खुद देखा है। यह सूअर आमतेरें बाजार का थोड़े न है!"

फेरांके की बात सुनकर रिसोबासा भी अपनी हंसी रोक न सका। हंसते हुए वह बोला, "किसी बात को जायकेदार बनाकर कहने में हमारे फेरांके का तो कोई जवाब नहीं! इनकी बातें तो सूअर-मांस से भी अधिक जायकेदार होती हैं।"

"क्या खूब! क्या खूब!" मदिरा का एक घूंट पीकर लिंदक बोला – "खैर, फू-गांओ बूढ़े के कारण हमें भी एक वक्त ऐसा बढ़िया खाना मिला! साथ ही, हमारे गांव का सम्मान भी बढ़ा।"

दूसरे सिरे पर बैठे मुटियार ने पूछा – 'फेरांके, पूजा में कितने लोग आए थे, क्या तुम्हें याद है?"

"हां, छोटे-बड़े कुल मिलाकर पांच सौ अस्सी आदमी जुटे थे।"

"देखा, इतने लोग किसकी पूजा में हुए थे ? छह सौ ही मान लो। यह फू सारबासा की सद्भावना का ही फल है। फू आरनाम के साथ-साथ समझ लो कि हमारे रंमिली गांव का भी सम्मान बढ़ गया है।" रिसोबासा ने गर्व से कहा।

अलाव की आग बुझ-सी रही थी। अमफू ने कुछ लकड़ियां लाकर डाल दीं। आग धधक उठी। बैठक में उजाला छा गया।

"बिटिया, कुछ और मदिरा-वदिरा है क्या ? अगर हो, तो मां से कहकर थोड़ी और भिजवा देना।" बापू ने अमफू से कहा।

अमफू हामी भरकर अंदर चली गई। थोड़ी देर बाद बड़े घर से धीमे-धीमे कदम बढ़ाती बासापी आई और एक बोतल सामने रखकर बोली – "अगर चाहिए भी तो अब और नहीं है। एक बोतल बचाकर रख दी थी, वही निकालकर दे रही हूं।"

"इसीसे हो जाएगा, नी ! बहुत खाया-पीया। इससे और अधिक खाने पर तो उठा ही नहीं जाएगा।" मांस के एक टुकड़े पर नमक लगाते हुए रिसोबासा ने कहा।

फेरांके ने बोतल की मदिरा बांट दी। दूसरे सिरे पर बैठे बुरतिमेन ने मदिरा की एक घूंट लेकर कहा – "हाबेसिको की बातें मुझे जरा भी पसंद नहीं आई। क्या जबर्दस्ती कोई काम हो सकता है ? और उसकी हंसी में विषैला नाग छिपा हुआ था।"

लोगों की चर्चाएं सुनते हुए निश्चित मन से मांस चबाते हुए सारइक ने कहा – "हूं, हाबेसिको उस तरह से क्यों सोच रहा है, हमारी समझ में नहीं आया। मैं तो सोचता हूं कि एक स्कूल खोलना चाहिए। मिशनरियों का उद्देश्य भले ही अच्छा हो, पर उनमें कुछ अवगुण भी हैं। हम तो खुद भी एक स्कूल खोल सकते हैं। हम लोग तो अंधे हो ही चुके हैं, हमारी बाद की पीढ़ी के बच्चे भी अंधे रहें, मैं ऐसा बिल्कुल नहीं चाहता।"

"जरूर, जरूर ! लक कांबुरा ने ही सच बात कहां कही है ! नगांव-कामपुर की बात तो दूर, पास के उस शिड़िमारी चाय कारखाने को भी तो नहीं देखा। रेल की सीटी हम सुनते रहे हैं, पर वह गोरा है या काला, देखा तक नहीं। आंखें न रहने के कारण ही ऐसी हालत हुई है। हम लोग तो बड़े अभागे रहे।" बूढ़े मेनसिं तिमुं ने लंबी सांस लेकर कहा।

"तुम लोगों ने क्या देखा नहीं है, टीका अंचल के बच्चे किस तरह स्कूल में पढ़ रहे हैं ? हमारे पास के फूं आबी गांव की बात तो छोड़ भी दें, उस रंमांदु, उमवेरा-जैसे अंदरूनी अंचल के बच्चे भी कामपुर जाकर पढ़ रहे हैं। हाबेसिको के कहने-भर से ही क्या होगा ? अगर वे लोग अपने बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं चाहते तो न सही। हमें तो अपने बच्चों को जरूर पढ़ाना चाहिए। अब तो जमाना बदल चुका है।"

जलती लकड़ी से एक बीड़ी जलाकर सारइक फिर बोला – "अब तो न सोमां राजा[1] रहे, न जयंतीया राजा रहे, यहां तक कि आहोम राजा भी न रहे। अब तो देश पर गोरे लोगों का

---

1. सोमां राजा, जयंतीया राजा, आहोम राजा — असम के विभिन्न भूखंडों पर शासन करने वाले राजवंश के राजे।

शासन है। हम आरलें[2] लोग अगर बदले नहीं, तो क्या हुआ ? देश के सारे नियम-कानून तो बदल गए। अगर ऐसा न होता तो 'कलंगापार' का वह मौजादार हाबे का मान किस हिम्मत से खत्म कर खुद अपने हाथ में ले सकता था ?" देश की स्थिति समझकर उसने यह बात कही।

सारइक की बात सुनकर बूढ़े लंकिरी इंति ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा – "हां, तुमने सही बात कही है। जमाना अब बदल गया। 'सारमुं बासिको' ने जब से बाजार बसाया, तभी से दिन बदल गए। कहावत है न –

"केथे सारमुं बासिको
बाजार किबि वोथात् लांसो।"

(अर्थात – सारमुं बासिको ने ऐसा किया। वोथात लांसो में बाजार बसा दिया।)

"हमारे पहले का वह जमाना अब नहीं रहा। बाजार भी आया, पादरी और साहब भी आए, युद्ध भी हुआ, नमक के लिए भी हाहाकार मच गया। जमाना बदला नहीं तो क्या है ?"

मुतिया के साम रंहां ने आवेग-भरे शब्दों में कहा – "हां, हमें अब पुराने जमाने की बातों से चिपटे रहने से काम नहीं चलेगा। समय के साथ-साथ हमें समाज के नियमों को भी बदलने की जरूरत हो गई है। समाज के क्या नियम-धर्म हैं ? आप लोग यह न सोचें कि मैं मदिरा पीकर ही यह सब कहे जा रहा हूं।"

सिर हिला-हिलाकर लिंदक तेरन बोला – "हां, और सारे नियम भले ही बदल दो, पर मदिरा पीने का नियम न बदलना।"

लिंदक की बात पर फिर हंसी की लहर उठी। लड़के आखिरी मदिरा बांटने में जुट गए। अलाव में कुछ लकड़ियां डाल दी गई। धधकती आग के उजाले से बैठकखाना दमक उठा।

सारइक बोला – "समय नियमों को अपने-आप बदल डालेगा। हमारे बच्चे स्कूलों में पढ़ें या न पढ़ें, 'जिर केदाम' अनुष्ठान बना नहीं रह सकता। जरूर खत्म होगा। पहाड़ी जमीन की कमी के कारण आर काटने की सुविधा नहीं रहेगी तो लोग पानी-खेती करने के लिए विवश हो जाएंगे। अब तो जमीन भी घटती जा रही है। हम भला कहां जाएंगे ? पुराने रंमिली में ही हमें नया रंमिली बनाना होगा।"

सारइक की युक्तिसंगत बातें सुनकर हिसोबासा, फेरांके आदि ने सिर हिलाकर उसका समर्थन किया। कृष्ण पक्ष को दूज का चांद आकर सारइक के बैठकखाने के छप्पर की ओट में छिप गया। गांव में धीरे-धीरे सन्नाटा छा गया। रात अधिक हो आने के कारण चर्चा भी वहीं रुक गई। सारइक के यहां ही खाना खाकर सभी अपने-अपने घर चले गए। कुछ देर पहले शोरगुल से भरा सारइक का घर भी शांत हो गया। जलते हुए अलाव की मौन आग की ओर देखता हुआ सारइक तेरां अपनी भावनाओं में तल्लीन हो गया। सप्ताह-भर की थकान

1. मूल कास्बी लोग।
2. धार कल नदी का तटवर्ती इलाका।
3. पुरानी परपरा की संस्थाए – प्रथाए।

ने उसे मानो आज ही आकर जकड़ लिया। आग की गर्मी से निश्चिंत सोए अपने कुत्ते की ओर देखकर जैसे उसकी थकान और बढ़ गई। साथ ही बुरतिमेन ने हाबेसिको की जिस हंसी की बात छेड़ी थी, उसके अंदर के रहस्य का भी उसे अनुभव होने लगा। वह बिन्हेनरू का सारबासा है, उसके अलावा लोंरी का मुख्य न्यायकर्ता, हाबेसिको भी है। पर उसके कार्यकलाप में, मानोभावना में स्वेच्छाचारिता के ही लक्षण हैं। पर क्या गतिशील मानव-मन को वह अपनी क्षमता से बांधे रख सकता है? तब फिर हाबेसिको का सही विचार क्या है, उसकी बातों का मतलब क्या है, सारइक समझ न सका। वह पाटी पर लेट गया।

7

रंमिली के पेड़-पौधों पर वसंत का स्पर्श हो चुका था।

सुबह की उजली मीठी धूप पूरी बैठालांसो घाटी में फैल चुकी थी। सूरज की किरणों ने पहाड़ों की वनस्पतियों के हरे रंग को और अधिक गाढ़ा कर दिया था। कोयल की मधुर कूक और केतेकी पक्षी की मन जुड़ाने वाली मीठी बोली पास की पहाड़ियों से तिरती आ रही थी। तरह-तरह के पक्षी झुंडों में चहचहाते हुए रंमिली गांव के ऊपर से होकर दूर के पहाड़ो की ओर उड़ते चले जा रहे थे।

पीठ पर एक 'लांथे'[1] लिए अमफू सीढ़ियों से होकर घाट पर उतर गई। घाट पर जाने की पगडंडी बिल्कुल संकरी थी। पगडंडी के दोनों ओर पीले, बैंगनी, लाल रंगों के कांटेदार जंगली फूल गुच्छों में अपने-आप खिले हुए थे। दो-चार झींगुरों की झनकारें लगातार रुलाई-जैसी गूंज रही थी। झींगुरों की ऐसी झनकार से उसकी पहचान जिंदगी-भर की रही है। पर प्रकृति के इस परिवर्तन से उसके मानस में आज किसी तरह की लहर नहीं उठा पा रही है।

उसका मन भला किस चिंता में ऐसा भारी-भारी लग रहा है आज? वह धीरे-धीरे घाट पर उतरती चली गई। भीगी रेत पर उसे विचित्र रंगों वाली तितलियां दिखाई पड़ीं। अपने रंगीन पंख हिलाती-नचाती वे जहां-तहां झुंडों में बैठी हुई थीं। अमफू के रेत पर कदम रखते ही तितलियां मानो चौंककर उड़ने लगीं। कुछ देर उड़ते रहने के बाद फिर अपनी जगह आकर बैठ गईं।

बरापानी की मृदुल लहरों पर सूरज की किरणें जगमगा रही थीं। भीगी रेत पर खचक-खचक कदम रखती हुई उत्तर दिशा की ओर धीरे-धीरे बरापानी की चौड़ी फैली बहती धारा की ओर उसने नजर डाली। किसी अनजाने रोमांच से उसकी देह और मन नदी की लहरों-जैसे ही अशांत-से हो उठे। उसने पानी के चोंगों को घाट की ढलान से टिका कर रख दिया और एक-दो को हाथ से उठा-उठा नदी में डुबो-डुबो कर पानी भरने लगी। फिर पानी भरे लांथे को रस्सी से लपेट, बांधकर ढलान से टिका दिया और पास की चट्टान की ओर आगे बढ़ गई।

---

1. भरे हुए पानी रखने के लिए बास के पांच-छह फुट लंबे चोंगे।

सूरज की ओर पीठ किए धूप सेंकती वह चट्टान पर बैठ गई। नदी के बीच उभरे हुए 'इंहिन आबी' के पत्थरों पर उसने नजर डाली। खुले उभरे काले पत्थर मानो बरापानी के प्यार-भरे स्पर्श मे निमज्जित-से हो रहे थे। धूप पड़ती उस चट्टान पर कुछ देर उसे बैठे रहने की इच्छा हुई। उसने देखा, पास के पेड़ पर एक 'माछरौका' चिड़िया छप्प से झपट्टा मार पानी के अंदर से मछली पकड़ ले गई और खाने लगी। नदी की दूसरी ओर के घाट पर कोई औरत 'चिरिप-चिरिप' कर कपड़े धो रही थी। निर्जन नदी का वह वातावरण अनजाने ही उसे बड़ा मोहक लगने लगा।

उसने पास पड़ा हुआ एक चिकना-सा पत्थर उठा लिया और उससे अपनी पिंडलियों को घिस-घिसकर मैल छुड़ाने लगी। पैरों को घिसते-घिसते पानी के तले की रेत पर झिलमिलाती किरणों की विचित्र रेखाओं की आर उसने यों ही नजर डाली! उनकी ओर देखती हुई वह सोचने लगी – 'क्या सें तेरन सचमुच मुझे प्यार करता है? कहां, कभी उसने मुझसे इस बारे में कुछ कहा तो नहीं? कादम जब उसे चिढ़ा रही थी, तो क्लेंसारपो गुस्से-भरी आंखों से सें तेरन की ओर क्यों देखने लगा था। हो सकता है कि वह बात उसे बिल्कुल पसंद न आई हो। क्लेंसारपो की कमजोरी कहां है, मुझे पता है। उसकी वे छोटी-छोटी आंखें देखने में कैसी लगती हैं – हुंह!' सोचते-सोचते उसे आपने-आप हंसी छूट गई।

हाथ का पत्थर चट्टान पर रखकर वह कमर तक पानी में उतर गई। उसने उस निर्जन घाट पर खुलकर नहा लेना चाहा। पानी के नीचे खरखरी रेत पर उसने घुटने टेक दिए। कमर तक का पानी छाती तक आ गया। पानी मे डुबकी लगाकर उसने वक्ष-बंधनी 'जीस' धीरे-से खोल डाली। कपड़े को हाथ से जरा मसलकर नदी के पानी में फैला दिया। बरापानी के ठंडे पानी ने उसकी खुली छाती में सिहरन जगा दी। एक अनजानी अनुभूति से वह रोमांचित हो उठी। जीस के कोमल सिरे से उसने अपनी उभरी छाती को धीमे-धीमे घिसा। धूप-धुले निर्जन नदी-घाट, दोनों ओर के हरे जंगल, ऊपर के नीले-आकाश और बरापानी नदी के अमृत-स्पर्श से उसे एक सपनीली उत्तेजना का अनुभव हुआ। उसके गले में चांदी की चवन्नी-अठन्नियों से बनी माला धूप में दमकने लगी। 'सहेली क़ादम की दी हुई मणिमाला इतनी सुंदर है', अपनी खुली चिकनी छाती पर बिछलती माला को हाथ से मलते हुए उसने सोचा।

किनारे की फैली रेत पर एक 'बालीमाही'[1] चिड़िया उछल-उछलकर नाच रही थी। अचानक 'टित्-टरित् टित्-टरित्' आवाज करती हुई चिड़िया अमफू के ऊपर से उड़ती दूसरी ओर की रेत पर जा बैठी। जीस से देह को रगड़ते हुए उसने उड़ती चिड़िया पर नजर डाली। जरूर किसी चीज से डरकर ही वह चिड़िया उड़ गई है, उसे लगा। संदेहवश घाट की ओर मुड़कर नजर डाल वह सन्न-सी रह गई। क्लेंसारपो! जल्दी-जल्दी उसने जीस को छाती पर लपेट लिया। वह इतनी जल्दी घाट पर आएगा – अमफू ने सोचा तक न था। उसे इस बात का भी पता नहीं चला था कि वह अमफू के शरीर की ओर बेशर्मी से देख रहा है। उसे बड़ी

1. खजन पक्षी।

शर्म आई । लजाती हुई अपने हाथों से छाती को ढककर वह किनारे आ गई ।

शरमाती हुई किनारे आई अमफू का देह-लावण्य देखकर क्लेंसारपो और ज्यादा मोहित हो गया । यौवन-भरी उसकी देह के उभार ने मानो उसे मतवाला कर दिया । वह धीरे-धीरे अमफू की ओर बढ़ आया । उसकी नजरों में कामना की अग्निशिखा बसी हुई थी । क्लेंसारपो की एकटक निहारती आंखों से निकली हुई कामना की लपटें मानो उसके सद्यःस्नात सुकोमल शरीर को निर्मम रूप से चाटने लगीं । उसकी ओर पीठ किए अमफू चट्टान पर बैठ गई । उसकी इस स्थिति में वहां क्लेंसारपो की उपस्थिति उसकी मानवीय चेतना को अस्तव्यस्त करने लगी । इसी कारण क्लेंसारपो को देखने के बावजूद सौजन्य-सूचक कोई शब्द कहे बगैर वह अपने पैर धोने लगी ।

"अमफू !" क्लेंसारपो ने आवाज दी ।

अनसुने भाव से वह अपने हाथों से पैरों को रगड़ने लगी ।

"क्या बात है ? भला आप यहां किसलिए आए ?" उसके स्वर में नाराजगी थी ।

"तुम्हें ही ढूंढ़ता हुआ ।" क्लेंसारपो ने थूक निगलकर कहा ।

"मुझे ढूंढ़ते हुए ?" अमफू ने अचरज-भरी नजरों से क्लेंसारपो की ओर देखा ।

"हां, तुम्हें ही ढूंढ़ता हुआ आया । मैं तुमसे एक बात करना चाहता हूं ।"

"कौन-सी बात ?" अमफू ने सिर झुकाए हुए पूछा ।

उसकी खुली लटों से पानी की बूंदें सरकती हुई गालों पर से बहती टपक रही थीं । मानो क्लेंसारपो की कामातुर दृष्टि के ताप से पानी की वे बूंदें अपनी स्थिति खोकर संत्रस्त भाव से अमफू के गालों पर शरण लेना चाहती हों । इधर-उधर नजर डालकर क्लेंसारपो बोला – "मैं यही जानना चाहता हूं कि तुम्हें मुझसे प्यार है या नहीं ?"

क्लेंसारपो की बात सुनकर अमफू चौंक उठी । सिर झुकाए हुए ही उसने जवाब दिया – "मुझे पता नहीं ।"

"तुम्हें सें तेरन से प्यार है, क्या यह बात सच है ?" क्लेंसारपो की आंखों में दुष्टता के चिह्न थे ।

"यह मैं कैसे बताऊं ?" यह कहकर वह चट्टान पर से उठ पड़ी और कगार के पास जाकर पानी से भरे लांथे उठाने लगी ।

"अमफू, मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूं ! क्या तुम तैयार हो ?"

क्लेंसारपो की इस बात का कोई जवाब दिए बगैर उसने टोकरे की रस्सी 'सिनाम' को अपने सिर पर रख लिया और लांथे पीठ पर ले चलने को तैयार हुई । क्लेंसारपो उसके सामने आ खड़ा हुआ और अमफू जिस हाथ से सिनाम को पकड़े हुए थी, उसे ही मुट्ठी से पकड़कर अपनी कांपती हुई आवाज में बोला – "मेरी बात का जवाब दो, अमफू !"

क्लेंसारपो की इतनी ढिठाई देखकर उसे गुस्सा आ गया । उसने झिटककर हाथ छुड़ा

लिया और बोली – "आप गांव के क्लेंसारपो ठहरे। मुझे इस तरह से अपमानित क्यों कर रहे हैं ? आप बड़े नीच हैं। आपको अपने मान-सम्मान का ध्यान तो रखना चाहिए था।"

"अमफू, होशियारी से बात करो। कहे देता हूं, हालत बुरी हो जाएगी।" गुस्सा, नाराजगी और अपमान के मारे उसका पूरा शरीर कांपने लगा।

"शरीर में बल होने पर भी जबर्दस्ती किसी के मन को छीन-झपटकर ले जाने की व्यर्थ कोशिश न करना ही अच्छा है।" गंभीर स्वर में अमफू बोली।

"तुम्हारा उपदेश सुनने के लिए तो मैं यहां आया नहीं। तुम सें तेरन को होशियार कर देना। 'जिरसं' की ताली-कुंजी मेरे पास है। और तुम सें तेरन को छोड़ दो, नहीं तो उसे जिरसं के..." बात पूरी होने के पहले ही उसने देखा कि कुछ बहुएं घाट की ओर चली आ रही हैं। लाचार हो अपनी लाल-लाल आंखों से ही क्रोध प्रकट कर वह वहां से हट गया। तेज कदमों से जाते हुए क्लेंसारपो की ओर बहुओं ने मुड़कर देखा और अमफू के पास आ गईं। अमफू भी चलने को तैयार हुई। एक बहू ने उसे पुकारा – "अमफू !"

अमफू रुकी।

"वह क्लेंसारपो था न ?"

"हां।" उनकी ओर बगैर देखे अमफू बोली।

"वह हमारी बगल से होकर निकल गया, पर आवाज तक नहीं दी। शायद कुछ बुरा मान गया होगा।" बहू ने छींटाकशी की।

दूसरी ने अपनी पीठ से लाथे उतारकर कहा – "हूं। मगर सुबह-सुबह भला वह कहां से आ निकला ?"

"और कहां से आया होगा ? आया होगा 'डेकाचां' से, किशोरी लड़की की खबर लेने !" तीसरी ने भद्दा मंतव्य किया।

"मैं चल रही हूं। तुम लोग आते रहना।" कहकर अमफू ने कदम बढ़ा दिए। रेत पर कदम रखने के कारण 'खचक्-खचक्' की आवाज उठ रही थी। अमफू ने सुना, एक बहू क्लेंसारपो के बारे में कह रही थी – "वह क्लेंसारपो है तो क्या हुआ ? उसका स्वभाव, चरित्र अच्छा नहीं है। सुना है कि क्लेंसारपो का पद पाकर इन दिनों वह जिरसं की किशोरियों पर भी अत्याचार किया करता है।"

यह सुनकर तो क्लेंसारपो पर अमफू की नफरत दुगुनी हो गई। पीठ पर 'होरा'-भर पानी का बोझ और क्लेंसारपो के अशिष्ट व्यवहार की मानसिक वेदना से और अधिक आक्रांत हो, वह घर की ओर चल पडी। दक्षिणी ओर से उमड़ आए कुछ मेघ-खंडों ने सूरज को धीरे-धीरे ढक लिया।

8

दो दिन पैदल चलने के बाद सारइक और फेरांके, दोनों शाम को नगांव पहुंचे। रेल-मार्ग का क्रासिंग पारकर फेरांके को यकीन हो गया कि वह राह भूला नहीं है। चौड़ी सड़क के दोनों ओर उन्हें टिन की छतों वाले घर दिखाई पड़ने लगे। सड़क के किनारे बीच-बीच में बत्तियों के खंभे खड़े थे। इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए वे बड़े बाजार की ओर आगे बढ़ गए। उन्हें देखते ही दुकानदार आवाज देने लगे – "ओ ककाई[1]! इधर आना! अच्छे-अच्छे कपड़े हैं। आओ, कांबुरा[2]!"

दुकानदारों की ओर देखते हुए सारइक ने "कोई जरूरत नहीं" कहकर सिर हिलाया। शाम के समय सड़क पर लोगों का आवागमन बढ़ गया। विविध सामानों से सजी दुकानों पर नजर डालते हुए वे आगे बढ़ते रहे। किसकी खोज में वे निकले हैं आखिर? सारइक का मन बड़ा गंभीर था। दोनों ओर से दुकानों पर लगे साइनबोर्डों को वह अपनी उत्सुक, बेचैन आंखों से देखता चला जा रहा था।

"हम उसका घर पीछे तो छोड़ नहीं आए, फेरांके? इस शहर मे आए तो कितने ही साल हो गए। शायद भूल ही चुका हूं।" सारइक ने कुछ देर रुककर पास की दुकानों की ओर देखते हुए कहा।

"मुझे तो पता नहीं, अं[3]! मैं तो पहले कभी इधर आया नहीं।"

"नमस्कार, मुखिया जी! कैसे आना हुआ? आइए।"

सड़क की दक्षिणी ओर के टिन की छत वाले एक घर से एक प्रौढ़-से आदमी ने आवाज दी – "कहां के लोग हो? आ जाओ।"

लुंगी पहने, गंजी को पेट के ऊपर तक मोड़े, अपनी तरफ देखने वाले उस आदमी की ओर दोनों ने मुड़कर देखा। सारइक को लगा, मानो वह उस आदमी को पहचानता हो। हूं, यह तो वही आदमी है, जिसे वे ढूंढ़ रहे हैं। दोनों ओर बंदूक और बीच में बारूद के डिब्बे के चित्र के साथ लगाया गया साइनबोर्ड सारइक की आंखों के सामने आ गया। उस साइनबोर्ड की बगल में खड़ा करुण मिस्तरी उनकी ओर देख रहा था। सारइक तेरां ने चैन की सांस ली। वह पास पहुंच कर बोला – "आपका ही घर तलाश रहे थे। शहर में आए तो बहुत साल हो गए, आपका घर भूल ही गया था। आप अच्छे हैं न?"

---

1. बड़ा भाई।
2. गांव का बूढ़ा, मुखिया।
3. सबोधन।

"हां, आप लोगों के आशीर्वाद से अच्छा हूं ! आप लोग अंदर आ जाएं।" कहकर मिस्तरी ने खुली बेंच को पोंछकर बैठने का संकेत किया।

उस लंबी बेंच पर दोनों बैठ गए। करुणा मिस्तरी ने दोनों को बीड़ियां दीं। उसकी दी हुई बीड़ी पीते हुए सारइक, रात को कहां ठहरना है, यही सोच रहा था। उसे बीड़ी पीते हुए सोच में पड़ा देख करुणा मिस्तरी ने कहा – "माथा नांने[1] मुखिया जी ! मेरे यहां ही ठहर सकेंगे। होटल में बेकार पैसे नहीं भरना चाहिए। ठीक है, बातचीत बाद में होगी, अभी जरा चाय-वाय पी लें।"

करुणा ने पास की दुकान से तीन कप चाय और तीन जलेबियां मंगवाईं। उन दोनों को दो कप देकर एक उसने खुद रख लिया। दूध-चीनी मिली चाय पीकर कां तिमुं को बड़ी तृप्ति मिली। आमतौर पर अपने यहां जैसे पीता था, वैसे ही ज्यादा चाय मुंह में उड़ेल कर जैसे ही निगलने की कोशिश की, गर्म चाय से उसका मुंह जल गया। उसकी आंखों से आंसू निकल आए। देखकर करुणा बोला – "मुखिया जी, धीरे-धीरे पीजिए। चाय गर्म है।"

सारइक बोला, "चाय बड़ी अच्छी लगी।"

"और एक-एक कप पीजिए, मुखिया जी !" उसने दोनों के लिए एक-एक कप चाय और एक-एक जलेबी और मंगवा दी।

गोल जलेबी के बीच का मीठा रस कां तिमुं को बड़ा ही स्वादिष्ट लगा। हाथ में लगे रस को भी उसने चाट लिया।

चाय पीने के बाद मिस्तरी उन्हें दुकान के पिछवाड़े ले गया। पिछवाड़े के आंगन में टिन की छत वाला एक लंबा-सा घर था। घर के सामने 'पीच बेर' का एक पेड़ था।

कई कमरों वाले उस घर के एक कमरे में उन्हें ठहरने का सुझाव दे करुणा मिस्तरी बाहर निकल आया।

नगांव शहर धीरे-धीरे शाम के धुंधलके में डूब गया। करुणा मिस्तरी ने एक लालटेन लाकर सारइक ने कमरे में रखी। कमरे में उजाला फैल गया। एक अनजान वातावरण में कां तिमुं शाम के भोजन के प्रबंध में जुट गया।

करुणा मिस्तरी नगांव शहर के बंदूक-बारूद का पुराना व्यापारी है। अपने बंदूक के व्यापार को फैलाने-बढ़ाने के इरादे से उसने टूटी-फूटी कारबी बोली भी सीख ली थी। देख-सुनकर उसे कारबी लोगों के स्वभाव-चरित्र के बारे में भी पता चल गया है। उसके दयालु स्वभाव और आचरण से आकर्षित होकर दूर-दूर से आने वाले कारबी लोग उसके यहां टिक जाते हैं। कारबी लोगों में भी करुणा मिस्तरी का नाम काफी जाना-माना है। बंदूक का कुंदा बनाने में तो उसके जोड़ का मिस्तरी नगांव शहर में कोई भी नहीं है। त्रुटिहीन रूप से बंदूक का घोड़ा बनाने में तो करुणा मिस्तरी ही एकमात्र भरोसेमंद आदमी है – आदि, आदि धारणाएं बंदूक रखने वाले कारबी लोगों में फैली हुई हैं। रंखां मौजा के अलावा हाओड़ाघाट, बकुलीया,

---

1. चिंता न करें।

फुलि, यहां तक कि महंडिजुवा अंचल के कारबी लोग भी बंदूकें बनवाने, मरम्मत करवाने के लिए उसके यहां आया करते हैं। बंदूक संबंधी कामों के अलावा कोर्ट-कचहरी के कामों में भी वह लोगों की मदद कर देता है। सही माने में करुणा मिस्तरी का घर कारबी लोगों का मिलन-तीर्थ है।

दुकान का सारा कामकाज पूरा कर करुणा मिस्तरी सारइक, कां तिमुं आदि की खबर लेने आया। उनके नगांव आने का उद्देश्य जान लेने के बाद उन्हें लेकर वह दुकान के अंदर गया। उसने वहां लकड़ी की एक आलमारी खोली। बंदूकों से भरी आलमारी को देखकर सारइक की आंखें फैली रह गईं। बिजली-बत्ती के उजाले में वे बंदूकें दमक रही थीं। मिस्तरी ने एक एकनाली बंदूक निकालकर उसे दिखाई। पास की बेंच पर बैठकर सारइक ने उसकी पतली-सी चिकनी नली पर हाथ फेरा। कार्टिज बंदूक के बारे में सारइक को पता न था। बंदूक कैसे खोली जाती है, समझा देने के लिए उसने करुणा मिस्तरी से अनुरोध किया। पलक झपकते ही मिस्तरी ने बंदूक खोलकर 'खट्ट' से एक ही झपाटे में तुरंत बंद भी कर दिया। दोनों ने विस्मित होकर उसके चेहरे की ओर देखा। कार्टिज का कौशल सारइक के लिए दुर्बोध्य हो गया। चिकने कुंदे को हथेली से सहलाते हुए सारइक ने बंदूक की कीमत पूछी। 'तीन हजार' सुनकर उसने बंदूक करुणा मिस्तरी की ओर बढ़ाते हुए कहा – "कार्टिज बंदूक चलाने का तौर-तरीका हमारे जैसे लोगों के लिए नहीं है। मुझे देशी बंदूक दिखलाइए!"

"क्यों? ऐसी बंदूक कहां मिलेगी, मुखिया जी? यह विलायती चीज है। कीमत भी ज्यादा नहीं है।"

"इसे बुरा नहीं कह रहा हूं। पर ऐसी बंदूक से जंगली हाथी खदेड़ पाना मुश्किल है। इसकी ताकत देसी बंदूक जैसी नहीं हो सकती।"

करुणा मिस्तरी ने उस बंदूक को पहले की जगह रखकर एक देसी एकनाली बंदूक निकाल कर दिखाई। बंदूक को घुमाफिरा कर देखने के बाद सारइक हंस पड़ा। ऐसी बंदूक के साथ सारइक का संबंध पहले ही जुड़ चुका था। उसने बंदूक के घोड़े को धीमे-से उठाकर फिर उतार दिया। उसके पास बैठे कां तिमुं डरते-डरते बंदूक की ओर देख रहा था। कहीं बंदूक चल न जाए, इस डर के मारे वह हाथ-पैर सिकोड़कर बैठ गया। उसकी आंखों में भय की भावना भरी थी।

करुणा मिस्तरी ने देखा, बंदूक सारइक को पसंद आ गई है। उसके हाथ से बंदूक धीरे-से लेकर, चिथड़े से पोंछते हुए उसने कहा – "इसका लोहा भी बड़ा अच्छा है। बारूद ज्यादा भी हो जाए, तो भी इसके फटने का डर नहीं है। विलायती ठहरी।"

अंगुली के नाखून से उसने बंदूक की नली पर ठोकर मारकर 'टिं टिं' आवाज निकाल सारइक को समझाया कि 'यह विलायती लोहा' है। उसने हंसते हुए कहा – "इसकी आवाज सुनी? 'इंसिन मेसेन' – लोहा बिल्कुल मजबूत है। डरने की कोई बात नहीं है। यह करुणा मिस्तरी हमेशा अच्छी बंदूक ही बेचा करता है। समझे न, मुखिया जी! मैं धोखेबाजी या छल-कपट नहीं जानता। आरलें लोगों के साथ ही मेरा कारोबार है। है न, मुखिया जी।"

सारइक बोला – "बात तो सही है, महाजन !"

मोल-तोल कर हिसाब बैठ जाने पर उसने वह बंदूक खरीदना तय किया। दुकानदार मिस्तरी ने हंसते हुए बंदूक को फिर आलमारी में बंद कर दिया। फिर दोनों को एक-एक बीड़ी दी, खुद भी एक बीड़ी लेकर पीने लगा। बोला – "मैं सब कुछ ठीक कर दूंगा, मुखिया जी, आपको सोचने की कोई जरूरत नहीं। कल सुबह पादरी साहब के बंगले पर चलेंगे। अब खा-पीकर आराम करें। कल सारी बातों पर चर्चा करेंगे।"

सारइक और कां तिमुं मिस्तरी को नमस्कार कर विश्राम के कमरे में गए। शहर का शोर-गुल धीरे-धीरे कम हो गया। सड़क पर से आने-जाने वाली मोटरों की आवाजें और रिक्शों की घंटियों की आवाजें तब भी आ रही थीं। खाना खाकर दोनों चटाई पर लेट गए। थके-मांदे कां तिमुं को नींद आ गई। पर सारइक को नींद नहीं आई। देर रात तक वह करवटें बदलता रहा। वह सोच रहा था, अगर कारतूस वाली बंदूक ले सकता तो बड़ा अच्छा होता। दमकती हुई बंदूकें उसकी आंखों के सामने नाचने लगीं, उसे अपनी पसंद की एक नली बंदूक की याद आई, बंदूक तो अच्छी होगी ही। करुणा मिस्तरी कम-से-कम उससे झूठ नहीं बोलेगा। मगर पादरी साहब के बंगले पर उसे क्यों जाना है ? बात उसकी समझ में नहीं आई। भावनाओं की उलझन के मारे उसे नींद नहीं आ रही थी। रात के आखिरी पहर में उसे नींद आ गई।

पौ फटते ही कौओं की आवाजें गूंजने लगीं। मुंह-हाथ धो सारइक ने एक बीड़ी जला ली। फिर कां तिमुं की बनाई बगैर दूध-चीनी की चाय दोनों पीने लगे। चाय की कटोरी में चुस्की लेकर कां तिमुं ने पूछा – "अं कांबुरा, साहब के यहां जाने की क्या जरूरत है ?"

"पता नहीं। मुझे भी तो बात समझ में नहीं आई। कोई वजह हो सकती है। नहीं तो मिस्तरी ऐसा क्यों कहता ?"

"मामा, मुझे तो सचमुच बड़ा डर लग रहा है। बंदूक खरीदने आकर कहीं किसी फंदे में तो नहीं फंस जाएंगे ?"

"तुम्हारे डर का भी क्या कहना ! अरे कोई नियम-वियम होगा। हम तो बंदूक चुराने नहीं आए हैं न ! डरने को क्या है ?" सारइक ने साहस बंधाते हुए कहा।

चाय पीने के बाद दोनों बरामदे की ओर गए और वहां करुणा मिस्तरी की प्रतीक्षा करने लगे। बीड़ी का धुआं छोड़ते हुए यों ही सारइक ने शहर की दुकानों पर नजर डाली। निर्जन सड़क अब साफ होती जा रही थी। दोनों ओर की कतारों में बंद पड़े दुकान-घरों के बीच से निकली सड़क मानो कुछ दूर के मोड़ पर अदृश्य हो गई थी। शहरी लोग क्या देर तक सोया करते हैं ? सारइक के मन में अचानक एक सवाल खड़ा हो गया। वह सोच रहा था – इतने समय तक तो वह 'झूम-तली' पहुंचकर घास-पात साफ करने में जुट गया होता।

रात ही को तैयार कर रखे एक कागज को हाथों में लिए करुणा मिस्तरी आया और उन दोनों को उसने दुकान में बुलाया। वहां जाकर दोनों बेंच पर बैठ गए।

करुणा ने पूछा – "मुखिया जी, आपको सही करना आता है न ?"

"सही, मतलब ?"

"ओ, आपको अपना नाम लिखना है।"

"अरे, आखर-वाखर से तो हमारी जान-पहचान तक नहीं हुई। अब भला नाम लिखकर सही कैसे कर सकते हैं ?" हंसते हुए सारइक ने कहा।

हां, अंगूठे की निशानी लगाना उसे आता है। उसने अपने अंगूठे को करुणा मिस्तरी की ओर बढ़ा दिया। उसके अंगूठे को पकड़कर इंकपैड पर दबाते हुए मिस्तरी ने कहा – "मुखिया जी, समझते हैं, आजकल बंदूक का मिलना बड़ा मुश्किल हो गया है।"

"क्यों ?" सारइक कुछ समझ न पाकर विस्मित हो मिस्तरी के चेहरे की ओर देखता रहा।

"बड़े साहब ने लोगों को बंदूक देना बंद कर दिया है। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ गांधी आंदोलन चला रहे हैं न, इसी कारण।"

"तो महाजन बाबू, क्या हमारा यहां आना बेकार हुआ ?" मन में संदेह की भावना लिए सारइक ने पूछा। गांधी के उल्लेख से उसके दिल में कोई कौतूहल पैदा नहीं हुआ।

कागज पर सारइक के अंगूठे को सावधानी से दबाते हुए करुणा बोला – "डरने की कोई बात नहीं है, मुखिया जी ! मैं सब कुछ ठीक किए देता हूं। साहब के लिख देते ही काम का फैसला हो जाएगा। साहब अगर आप लोगों से कुछ पूछें तो उसका जवाब पूरे निडर भाव से देना, समझे न ? आपने पादरी साहब को देखा है न ?"

"जी नहीं ! मगर नाम सुना है।"

"ठीक है, चलिए।"

आवेदन-पत्र को जेब में डालकर तीनों निकले, मिस्तरी ने दुकान बंद कर 'मिशन-बंगले' की ओर कदम बढ़ाया। अब तक सन्नाटे का शहर फिर कर्म-मुखरित हो उठा।

आशा-निराशा की भावना लिए हुए सारइक तेरां ने करुणा के पीछे-पीछे कदम बढ़ाए। 'पादरी साहब' – यह नाम उसने सुना तो जरूर था, पर वह कैसा साहब है, उसे बिल्कुल पता न था। वह सोच रहा था – पहले समझा होता तो टीका के लारेंस से पूछताछ कर आ सकता था। फेरांके कां तिमुं तो शहर के सुंदर-सुंदर मकानों को देख-देखकर विस्मित हो रहा था। सड़क के मोड़ पर पहुंचते ही रिक्शे की संकेत-ध्वनि सुनकर फेरांके चौंक उठा और दौड़ता हुआ सड़क किनारे की एक नाली में उतर गया। यह देख करुणा मिस्तरी ने उससे कहा – "डरिए मत, मुखिया जी !" और उसे अपने पास खींच लिया। अचरज-भरी आंखों से फेरांके ने चलते हुए रिक्शे को देखा और कदम बढ़ा दिए।

"देखिए, मिशन आ गया।" सामने मिशन-परिसर को दिखाते हुए करुणा बोला।

'नाहर' यानी नागेश्वर के पेड़ों से घिरे परिसर की ओर दोनों ने नजर डाली। मिशन-परिसर में मानो एक तरह का एकांत गंभीर परिवेश छाया हुआ था।

"मुखिया जी, साहब को नमस्कार करना।" करुणा मिस्तरी की बात सुनकर सारइक मानो जग पड़ा।

"ठीक है, ठीक है !" उसकी बात मानकर सारइक कुछ सावधान हो उठा।

"साहब को कोई बख्शीश-वख्शीश दी जा सकती तो अच्छा होता।" सारइक को सुनाते हुए करुणा ने कहा।

उसकी बात सुनकर सारइक सोचने लगा – 'बड़े साहब को भेंट देने के लिए हाथी-दांत का हत्था लगा एक दाब वह लेता आया है। अगर उसे ही पादरी साहब को देकर एक बंदूक ले सके, तो जरूर बुरा न होगा। पादरी साहब को देना और बड़े साहब को देना एक ही बात है।' "अपना थैला खोलकर सारइक ने करुणा को वह 'दाब' दिखाया। करुणा ने हंसते हुए कहा – 'दाब तो बड़ा ही सुंदर है। तिसपर हत्था भी हाथी दांत का है। साहब को बड़ा पसंद आएगा।"

बड़ी सावधानी से करुणा ने मिशन-बंगले का गेट खोला। उसके पीछे-पीछे वे दोनो भी अंदर चले गए। गेट से अंदर जाते समय सारइक के दाहिने पैर में चोट लग गई। उसने सोचा, यह शुभ लक्षण है। उसका मुरझाया-सा चेहरा कुछ खिल उठा।

मिशन-परिसर लंबा-चौड़ा, साफ-सुथरा था। 'नाहर' के पेड़ों पर सफेद सुगंधित फूल लगे थे। सुगंध से पूरा परिसर गमगमा रहा था। तरह-तरह के पक्षी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलते हुए चहक रहे थे। पक्षियों की विचित्र ध्वनियों से मिशन की सुंदरता और ज्यादा बढ़ रही थी। सारइक को मिशन का वातावरण बड़ा अच्छा लगा।

बंगले की सीढ़ियों से होकर वे धीरे-धीरे ऊपर चढ़ गए। चौकीदार ने उन्हें क्षण-भर बैठने को कहा। वे तीनों पास की बेंच पर बैठ गए।

कुछ ही देर में पादरी साहब बाहर आए। साहब को देखते ही करुणा खड़ा हो गया। यह देखकर वे दोनों भी खड़े हो गए।

"गुड मार्निंग, साहब !" करुणा ने मृदुल हंसी से साहब को प्रणाम किया। सारइक ने भी डरते-डरते प्रणाम किया, "कारदम साहब !"

सारइक के साथ ही फेरांके ने भी जबान से कुछ कहे बगैर दोनों हाथों से 'नमस्कार' किया।

"कारदम, कारदम ! आर यू विलेज हैड-मैन ? आइ मीन, नां ली कांबुरा मां ? तो तो, इंनि नन, इंनि नन।" पादरी साहब ने हंसकर पहले अंग्रेजी में परिचय पूछा – "क्या तुम गांव के मुखिया हो ?" फिर कारबी भाषा में वही बात पूछकर बता दिया कि वे उन्हें जान गए हैं। फिर 'बैठो, बैठो' कहकर बेंच पर बैठने का इशारा किया।

"ठीक है, साहब" कहकर हंसते हुए वे दोनों बेंच पर बैठ गए।

साहब की जबान से कारबी बोली सुनकर सारइक के मन से भय की भावना जाती रही। करुणा मिस्तरी का दिया हुआ कागज साहब पढ़ने लगे। बड़ी तल्लीनता से उनके पढ़ते समय सारइक ने साहब को गौर से देखा। बगैर दाढ़ी-मूंछ के चिकने-से चेहरे का आदमी ! आधी बांह की कमीज और एक फैला हुआ हाफ-पैंट तथा घुटने तक ढके बूट-जूते। छाती पर लटकता

एक सलीब ! उन्हें देखकर उसे बहुत दिन पहले टीका पहाड़ पर गए मूर साहब का चेहरा याद आ गया। देखने में उससे ज्यादा मेल न होने पर भी उसे लगा कि इस साहब के चेहरे पर भी दयालु स्वभाव खिला हुआ है।

कागज पर से सिर उठाकर साहब ने सारइक की ओर अच्छी तरह दृष्टि डाली। पास की कुर्सी पर बैठ साहब ने उससे पूछा – "सो यू आर फ्राम रं खां – 'नांलि रं खां आछर ! वेल डु यू नो लारेंस हांसे ? आइ मिन, नांलि लारेंस हांसे अफान चिनि मा ?" (आप लोग रं खां में रहते हैं ? अच्छा, क्या लारेंस हांसे को आप लोग जानते हैं ?)

"जी हां, साहब, पहचानते हैं।" सारइक ने बड़ी खुशी से साहब के सामने प्रकट किया कि वह उन्हें पहचानता है।

कागज हाथ में लिए साहब उन्हें समझाने लगे – "समझे न, आजकल बंदूक मिलना बड़ा कठिन हो गया है। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलन चल रहा है। इसी कारण सरकार ने बंदूक का नया लाइसेंस देना बंद कर दिया है।" फिर भी एक सर्टीफिकेट लिख देने की स्वीकृति उन्होंने दे दी। अंदर जाकर राइटिंग पैड और पैन लाकर इस आशय का एक परिचय-पत्र लिख दिया कि सारइक तेरां और उसके उस अंचल के लोग सरकार के अनुगत हैं। कारबी लोग ईसा के अनुगामी हैं। जंगली हाथियों से उनका बचाव करना बड़ा जरूरी है। इसी कारण सारइक तेरां को नई बंदूक का लाइसेंस देना चाहिए।

इस सर्टीफिकेट के साथ उनका आवेदन-पत्र करुणा मिस्तरी के हाथ देते हुए साहब ने कहा – "आमि बर साहाबक फोन करिब। आइ विल रिक्वेस्ट द कमिश्नर आवर द फोन।" (मैं बड़े साहब को फोन कर दूंगा। फोन पर ही मैं कमिश्नर से भी अनुरोध करूंगा।)

"थैंक यू फादर, आप की कृपा के लिए धन्यवाद !" करुणा मिस्तरी ने धन्यवाद देकर सारे कागजात अपनी जेब में भर लिए।

सारइक की ओर देखते हुए साहब ने कारबी बोली में ईसा मसीह के महान गुणों का वर्णन करते हुए कहा – "चक् पो ! हिलेता लं पो। हेमफू मिसू आफानता मरम नांपो। यू एंड योर विलेज मैन शूड फालो द ख्राइस्ट। हेमफू यिसू अबेते हिलेता लंले। यिसूता इंलं आछर लो।" (ठीक है। बंदूक मिल जाएगी। तुम लोग महान ईसा मसीह को प्यार करना। बंदूक दिलाने में ईसा मसीह ने ही मदद की है। महान ईसू तो पहाड़ के ही हैं।)

मगर पादरी साहब की ईसा मसीह के बारे में कही हुई बातें सारइक के कानों में नहीं आईं। सिर्फ 'तुम्हें बंदूक मिल जाएगी', यही बात उसके कानों को अमृत-जैसी लगी। उसने अपने थैले से हाथी-दांत का हत्था वाला 'दाब' निकाला और पादरी साहब को उपहार के रूप में देते हुए कहा – "इंनार आसो आबे आनो पाक साहाब ! नांलि लाम नेलिनिं सिबि पो।" (साहब, यह हाथी दांत के हत्थे वाला दाब है। आप की बातें हमें हमेशा याद रहेंगी।) उसने साहब की बड़ी प्रशंसा की।

चिकने हाथी-दांत के हत्थे को उंगलियों से सहलाते हुए साहब ने कहा – "वेरी नाइस, आइवरी, मेसेन नोपाक लो। आइविल सेंड इट टु द कमिश्नर, आइ मीन - कमिश्नर साहाब आफान ला पि पो"। (यह बहुत ही सुंदर है। हाथी-दात का हत्था लगा है। मैं इसे कमिश्नर साहब को भेज दूंगा।) कहकर उन्होंने दाब को मेज पर रख दिया।

तीनों ने बड़े प्रसन्न मन से पादरी साहब को नमस्कार कर विदा ली। बंगले की सीढ़ियों से उतरते हुए सारइक सोचता रहा - ऐसे उदार साहब के प्रति हाबेसिको का मनोभाव बुरा क्यों है ?

साहब अपने बंगले से उनके जाने की ओर कुछ देर देखते रहे, फिर अपने माथे, बांहों और छाती का स्पर्श कर अंदर चले गए।

उस समय कचहरी के घंटे की आवाज सुबह दस बजने का संकेत दे रही थी।

9

बैशाख की एक शाम।

पश्चिम के लाल आकाश में कुछ मेघ-खंड तैर रहे थे, जिनके सिरों पर सूरज की जगमगाती किरणों की छटा फैली हुई थी। मचान-घर से नीचे उतरने के पहले अमफू ने पश्चिमी आकाश पर नजर डाली। डूबते हुए सूरज की छटा का वह क्षण उसे बड़ा अच्छा लगता है।

वह सीढ़ियों से होकर जमीन पर उतर गई। उसकी बगल में धान की एक छोटी-सी टोकरी थी। सामने के आंगन में उसने मुर्गियों के लिए कुछ धान बिखेर दिए। इधर-उधर से आकर मुर्गे-मुर्गियां वहां इकट्ठे हो गए। वह सोच रही थी – सोजुन पूजा के बाद मुर्गे-मुर्गियों की तादात बहुत घट गई है। उसने देखा कि धान चुगने वाले मुर्गे-मुर्गियों में बांग लगाने वाला मुर्गा नहीं है। उसने पुकारा – "हो, क्रूक्-क्रूक्-क्रूक्! हो-हो!" फिर भी मुर्गा नहीं आया। बैठकखाने में एंडी-सूत कातने में जुटी मां की ओर मुड़कर उसने पूछा – "मां, वह मुर्गा कहां गया ? क्या हो गया है उसे ?"

"यहीं होगा। जरा ठीक से देख तो सही, कहीं घुसा बैठा होगा।"

"मैं पुकार तो रही हूं, फिर भी आया नहीं। शायद उसे वनबिलाव उठा ले गया होगा।"

"दिन-भर तो मैं कहीं गई नहीं। अगर वनबिलाव ले जाता, तो मुझे जरूर पता चल जाता।"

सीढ़ी के सामने तक आकर अमफू की मां ने धान चुगते मुर्गे-मुर्गियों पर नजर डाली। पास के रंफार-घर से निकलकर आते उस मुर्गे को देखकर मां बोली – "वह निकला आ रहा है मुर्गा, देख!"

"ओ, शायद किसी दूसरे मुर्गे से झगड़ रहा था। सिर की कलंगी पर खून के धब्बे जम

गए हैं।" मुर्गे की खून-लगी कलंगी देखकर अमफू बोली।

उस झुंड से छोटे-छोटे, किंतु मोटे-ताजे तीन मुर्गे निकलकर अलग हो गए और अपनी गर्दन उठाकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। लगता था, कोई संकेत पाकर ही वे एक-दूसरे से बातें कर रहे हों।

"ये मुर्गे आज बहुत ज्यादा बतिया रहे हैं। तेरे बापू शायद आज आने वाले हैं।" तकली से सूत कातती हुई मां ने मुर्गों पर नजर डालकर कहा।

अमफू ने घाट की ओर जाने वाली राह की ओर देखते हुए कहा – "सचमुच मां, बापू के न रहने पर घर न जाने कैसा सूना-सूना लगता है!"

"हां, उनको गए तो आज पांच-छह दिन हो गए। आज तो उन्हें आ जाना चाहिए था।"

तभी बड़े घर की छत पर से छिपकली टिक्-टिक् कर उठी। अमफू की मां ने भी मुंह से 'ठीक-ठीक' कहकर छिपकली की आवाज से आवाज मिलाई और तकली में सूत लेपटते हुए सड़क की ओर यों ही एक बार मुड़कर देखा।

"मां, सूअरों को भी खोभाड़ में बांध आती हूं।" अमफू बोली।

"हां, हां, जा। हेमाइ भी तो भैंसों को लेकर अब तक लौटा नहीं। इन लड़कों से तो मैं उकता गई हूं। इनसे जरा भी शांति नहीं मिल रही।" कहती हुई मां बैठकखाने की ओर चली गई।

भूसी की टोकरी और पानी का लांथे लिए अमफू सूअर-खोभाड़ की ओर बढ़ गई।

सूअर-बाड़े की छोटी-सी नाद में उसने धीमे से भूसी डाल दी, फिर उसमें लांथे का पानी डालकर भूसी को लकड़ी से चला-चलाकर अच्छी तरह से मिलाया। बाड़े में जाने की राह को खोलकर उसने सूअरों को पुकारा – "छू - टुक् - टुक् - टुक्! छू दुक छो – दुक् - दुक् - दुक्!"

अमफू की आवाज सुनते ही सूअर पास की झाड़ियों से निकल आए। बाड़े में उनके घुसते ही दरवाजा बंद कर वह चली आई।

"अरी, सारे सूअर हैं या नहीं?" सीढ़ी पर से अमफू की मां कासां ने पूछा।

"हां, हां, हैं।" अमफू ने संक्षेप में जवाब दिया और खाली टोकरी और लांथे लिए वह घर के अंदर घुस गई।

रंमिली गांव के पेड़-पौधों पर तोता-मैना आदि पक्षियों की चहचहाहट बढ़ गई। पश्चिम की ओर से आते हुए भैंसों की घंटियों की आवाजें धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगीं। शाम की उस व्यस्तता ने मानो रात भर के लिए एक अभूतपूर्व अनाविल आनंद ला दिया। रंमिली गांव भी सजीव हो उठा। गुलेल को कंधे पर लटकाए हुए हेमाइ ने सारे भैंसों को खूंटे से बांध दिया और कीचड़ सने पैरों से ही वह मचान पर चढ़ गया। अमफू बैठकखाने में आ रही थी। हेमाइ के हाथ में एक तोता देखकर वह बोल उठी – "हां, देखूं, देखूं! कितना सुंदर तोता है! यह कहां मिला तुझे, हेमाइ?"

"बी-वोकेक के 'करै' के पेड़ में । इसके साथ का तोता पेड़ के कोटर से गिरकर मर गया ।"

"हाय री दैया ! मां, देख न कितना सुंदर तोता है !"

अमफू तोते को मां के पास ले गई । तोते को ले जाते देख हेमाइ भी बहन के पीछे-पीछे दौड़ गया । यह देख मां ने अमफू को डांटते हुए कहा – "अमफू, तेरा बचपना अभी गया नहीं । इस शाम को भला यह सब क्या मचा रखा है ? तेरे बापू आ गए, तो यह तोता देखकर कहीं गालियां न देने लगें !"

पिता का नाम सुनकर हेमाइ बोल उठा – "बापू आ गए हैं क्या, मां ?" उसके स्वर में बड़ा उत्साह था ।

"नहीं, अब तक नहीं आए हैं, रे ! हेमाइ, तू हाथ-मुंह धो ले । रात हो गई ।"

"मां, मुझे बड़ी भूख लगी है । खाने को क्या है, जल्दी दे दे ।"

"अमफू ! पानी डाला हुआ भात है न ! जा, इसे परोस दे । उसके पहले एक बर्तन में पानी दे दे ।"

बैठकखाने की छत के सिरे पर टंगे एक छोटे-से पिंजड़ेनुमा 'खां' में तोते को रखकर हेमाइ अमफू के पीछे-पीछे घर के अंदर चला गया । अमफू ने लांथे से एक कठौतेनुमा बर्तन 'चरिया' में पानी ढाला । बांस के उस चोंगे से निकलते पानी की 'कुलुरुं - कुलुरुं' आवाज से उस कारबी मचान-घर में एक मीठी झंकार उठ गई । बड़े घर के पिछवाड़े हेमाइ के हाथ-मुंह धोने की आवाज मां को सुनाई पड़ी ।

बैठकखाने में अलाव जलाती अमफू की मां को टट्टियों के छेदों से झांककर फेरांके की पत्नी काजिर बेपी ने आवाज दी – "काकी, क्या काका आ गए ?"

"ओ काजिर, वे तो अब तक नहीं आए । तू कहां गई थी ?" छेदों से देखती हुई अमफू की मां बोली ।

"कादम के यहां गई थी ।"

"तुम लोग अच्छे हो न ? इधर मैं तुम लोगों से मिलने की फुर्सत ही नहीं निकाल सकी ।"

"हां, ठीक है । लंकि के बापू तो इसके पहले कभी शहर गए ही नहीं थे । तिस पर उनको गए हुए कई दिन हो गए । मुझे तो चिंता हो रही है ।"

"हां, चिता किए बगैर रहा भी कैसे जा सकता है ? क्या बैठेगी नहीं तू ?"

"नहीं, घर में काम है । अच्छा, चलती हूं, काकी !"

"ठीक है, जा ! तेरे काका शायद आज-कल में पहुंच सकते हैं ।"

"पता नहीं ! पर जल्दी आ जाएं तो अच्छा ।" कहती हुई वह घर की ओर चल पड़ी ।

शाम घनी हो आई । पंचमी का चांद तिरछा-सा दिखाई देने लगा । आकाश में सैकड़ों तारे जगमगा रहे थे । खुले मचान-घर के आंगन में एक चटाई-जैसी 'पाटी' बिछा, उस पर लेटी हुई अमफू की मां आराम कर रही थी । पास ही लेटे हेमाइ ने मां से कोई किस्सा सुनाने को

कहा। कभी आकाश के चांद की ओर,तो कभी बाहरी दरवाजे पर नजर डालती मां उसे 'हिईपी' की कहानी सुनाने लगी। उस कहानी में कुमारी आरलेंपी को एक राक्षसी ने जादू से संतरा बना कर छिपा दिया था। आरलेंपो उसकी खोज में निकला था...।

राक्षसी का अंत जानने के लिए हेमाइ का बाल-मन उत्सुक हो रहा था। उसने पूछा – "मां,इसके बाद क्या हुआ ?"

"इसके बाद ? इसके बाद उस राक्षसी का गला काट डाला। उसके कटे सिर को नदी के ऊपरी ओर और धड़ को निचली ओर फेंक दिया। और संतरे का रूप लिए हुए आरलेंपी का उद्धार कर आरलेंपो ने विवाह किया।"

"उसके बाद क्या हुआ,मां ?" बड़ी व्यग्रता से हेमाइ ने पूछा।

"और होगा क्या ? तूने बी-वोकेक जलाशय का लाल रंग का पानी देखा है न ?"

"हां,देखा है। बहुत ही लाल है। वह लाल क्यों है,मां ?"

"कहते हैं कि वह उसी राक्षसी का खून है। समझा !"

"क्या वहां अब भी राक्षसी है,मां ?" डरकर हेमाइ मां से सट आया। मां समझ गई कि वह डर रहा है। उसे समझाते हुए कहा – "नहीं,नहीं,बेटे ! ये सब पुरानी बातें हैं। अब तू सो जा !" दिन-भर की थकान के मारे उसे झपकी-सी आ रही थी। सिकुड़कर मां के शरीर से चेहरे को लगाकर उसने सोने की कोशिश की। मां ने उसके सिर को हाथ से सहलाते हुए नींद आने में मदद की।

अमफू अलाव के पास बैठी कुछ सिझा रही थी। "लगता है,तेरे बापू आज भी नहीं आएंगे।" मां ने उससे कहा,"रात भी काफी हो गई। अब रसोई का इंतजाम कर...।"

उसकी बात खत्म भी नहीं हुई थी,तभी दीवार के कोने में लेटा 'बाखर' किसी के आने की आहट पा, भौंकता हुआ नीचे उतर गया। 'कूं-उ-क्' आवाज कर खुशी के मारे छलांग भरकर परेशान करने वाले बाखर को सारइक ने 'च्छे-इत्' कहकर डांटते हुए रोका। बाहर बापू की बोली सुन खुशी के मारे अधीर होकर अमफू बोल उठी – "मां,मां,बापू आ गए। ओ रे हेमाइ ! बापू आ गए। उठ-उठ।"

सोए हुए हेमाइ के शरीर को झकझोरकर अमफू ने उसे जगाया। फिर बापू की ओर देखते हुए पूछा – "इतनी देर क्यों हुई,बप्पा,हमें कितनी चिंता हो रही थी !"

सारइक ने मुंह से कुछ कहे बगैर हाथ की बंदूक को दीवार से टिका दिया और खुद पाटी पर बैठ गया। बंदूक देखते ही अमफू की आंखें उसी पर जा टिकीं। फिर पुकारकर बोली – "मां,मां,बंदूक ! बप्पा बंदूक ले आए हैं।"

आंखें मलता हुआ हेमाइ भी उठकर पिता के पास आ गया। उसने भी बंदूक पर नजर डाली। बंदूक को छूकर देखने की उसकी इच्छा हो रही थी,पर डर के मारे उसने छुआ नहीं। बापू ने थैले से एक रंगीन कमीज निकालकर हेमाइ को दी। खुशी के मारे हेमाइ लपककर

कमीज ले मां के पास दौड़ गया और नई कमीज को सूंघने लगा और बोला – "कितनी बढ़िया कमीज है। 'बाइदेउ' के लिए क्या लाए हो, बप्पा ?"

नीले रंग का कपड़ा देकर सारइक बोला – "हूं, ले। अपनी बाइदेउ को दे।"

अमफू ने लपककर हेमाइ के हाथ से कपड़ा ले लिया। "आ, कितने सुंदर रंग का कपड़ा है ! मां, मैं तो इससे चादर बना लूंगी। हां !" उसने कपड़ा मां को दिखाते हुए कहा।

"अरे, तेरे बप्पा कितने थककर आ रहे हैं। तुम सब अभी इन्हें तंग न करो। हां। अमफू, तू जाकर इनके लिए चाय बना ला ! कटोरी-भर मुझे भी देना।"

10

सुबह होते ही रंमिली गांव में शोर मच गया कि सारबासा ने नई बंदूक खरीदी है। गांव के इस सिरे से उस सिरे तक के लोग आकर सारइक के यहां इकट्ठे हो गए। बड़े-बूढ़ों के अलावा छोटे-छोटे बच्चों ने भी सारइक को घेर लिया। एक चिथड़े से बंदूक की नली को पोंछने में जुटे सारइक की ओर सभी अचरज से देखते रहे ! उनके चेहरे-मोहरे से यही भाव प्रकट हो रहा था कि भला बंदूक को वह हाथ से कैसे छुए हुए है ? दो-एक लोग सिर हिला-हिलाकर हंस रहे थे। रिसोबासा आदि के चेहरों पर गर्व की हंसी फैली थी, क्योंकि अब लोगों के सामने वे भी कह सकते हैं कि उनके गांव में बंदूक है। सारइक से कुछ हटकर बैठा फेरांके कां तिमुं लोगों से अपने शहर के अनुभवों के बारे में बड़े गर्व से बता रहा था। रेल, मोटरगाड़ी, घोड़ागाड़ी, रिक्शे और रंग-बिरंगी अनेक दुकानों के उसके वर्णन से सब लोग अवाक रह गए। बीड़ी का धुआं मुंह से छोड़ते हुए फेरांके बोला – "अरे, हमारे मामा, साहब से कितनी हिम्मत से बात कर रहे थे। और साहब क्या कह रहा था ? 'कूत मुर निं', है न मामा !"

बंदूक को दीवार से टिकाकर सारइक बोला – "मैंने जब साहब को 'कारदम' कहा था, तो पता नहीं, वह क्या-क्या कह रहा था। वैसे हम साहब की बात समझ भी तो नहीं पाते न ! मगर वह साहब तो हमारी बोली भी बोल सकता है।"

"हां, भला साहब होकर हमारी बोली वह कैसे जान गया ? यह तो वही साहब है न, जो हमारे इधर वोथातलांसों में स्कूल खोलने की बात कह रहा था।"

"हां, वही है। बड़ा अच्छा है साहब ! अगर वह एक कागज न लिख देता तो हमें तो बंदूक ही नहीं मिलती – अपने थैले से लाल रंग की एक सुंदर-सी चपटी डिब्बी निकालकर सारइक ने पादरी साहब व. प्रशंसा की।"

उस चपटी-सी डिब्बी में क्या है, जानने के लिए रिसोबासा, लिंदक, लंकिरी बड़ी व्यग्रता से देखने लगे। सारइक ने डिब्बी का ढक्कन खोलकर एक कागज पर जरा-सी बारूद निकालकर रख दी। महीन और चमकीले काले रंग की बारूद देखकर लिंदक ने पूछा – "यह

क्या है, फू ? तिल है क्या ?"

लिंदक की बात सुन सारइक जोर से हंस पड़ा। बोला – "नहीं, यह तिल नहीं, बारूद है। इसके अंदर आग है। इसी के बल से तो बंदूक चलती है।"

"ऐं, तुमने इसे सूखी अफीम का चूरन नहीं बताया, यह अच्छा ही हुआ।" ठिठोली के इरादे से रिसोबासा बोल उठा।

रिसोबासा की बात पर सारबासा का बैठकखाना हंसी से फट पड़ा। रिसोबासा खुद भी हंसता हुआ बोला – "बगैर हड्डी की यह भोली-भाली जीभ भला तिल का पुराना जायका कहां भूल सकती है ?"

बारूद की जांच करने के लिए सारइक ने थोड़ी-सी बारूद हाथ में ली और जलते अंगारों पर कुछ ऊपर से छोड़ दी। बारूद अचानक भभककर जैसे ही जल उठी, वहां इकट्ठे तल्लीन होकर देखनेवाले लड़के चौंककर भागने लगे। बारूद का गुण देख सारइक बोला – "फेरांके, बारूद तो अच्छी है। लगता है, करुणा मिस्तरी का कहना झूठ नहीं है।"

"हां, वह आदमी तो कोई बुरा नहीं मालूम होता। असल में उसी की युक्ति से तो हमें बंदूक मिल सकी है।" फेरांके ने भी करुणा मिस्तरी के गुण की प्रशंसा की।

एक नन्ही-सी डिब्बी की एक डिब्बी बारूद सारइक ने बंदूक में डाल दी। एक चिथड़े से अच्छी तरह बंदूक का मुंह बंदकर पतली-सी डंडी से दबा-दबाकर उसे बंदूक के अंदर घुसेड़ दिया। इसके बाद नली के बाहर निकली डंडी को उसने उंगलियों से नापा। चार उंगली। उसी डंडी से कई बार जोर-जोर से दबाकर बारूद को ठीक से समो दिया और फिर से नाप ली। एक उंगली घटी। बस, अब हो जाएगा – सोचकर उसने सिर हिलाया। 'फायरिंग होल' तक बारूद आ चुकी है या नहीं, उसने एक बार खोलकर देखा। वहां बारूद जमी हुई है, देखकर उसने वहां एक 'फायरिंग कैप' लगा दिया। तांबे के रंग की वह चमकीली कैप सुबह की धूप में जगमगा उठी। चिथड़े से बंदूक की नली का मुंह बंद कर डंडी से दबा-दबाकर बारूद भरना, बंदूक के घोड़े को सलीके से उठाना, तांबे के रंग के कैप को फायरिंग होल में लगाना आदि जटिल कामों को सारइक ने जिस खूबी से किया, उसे देख लिंदक चकित रह गया। लिंदक के साथ दूसरे लोग भी बड़े अचरज से वह सब काम देखते रहे।

कैप फायरिंग होल में बिल्कुल सही-सही बैठ गया, देखकर लिंदक ने मुस्कराते हुए कहा, "सरकार के कामों का भी भला क्या कहना ! देखा, कैसे सही नाप से बनाया है ?"

"हां, सरकार के काम ही ऐसे होते हैं। सिर्फ हमें ही मालूम नहीं है।"

"हां, हां, हमारे कच्चे दिमाग में तो ऐसी बातें आती ही नहीं।" रिसोबासा की बात से सहमति जताते हुए लिंदक ने कहा।

लिंदक आदि की बातें सुनता हुआ सारइक ने बंदूक में लगे कैप को एक चिथड़े से ढक कर घोड़े को धीमे-से उतार दिया और बंदूक को खंभे के कोने में सावधानी से टिका दिया। फिर एक बीड़ी जलाकर एक कश ले धीरे से धुआं छोड़ा। पास बैठे हेमाइ से उसने कहा –

"जाकर मां से जरा-सा 'लाओ पानी' लाने को कह दे।"

सुनते ही हेमाइ अंदर दौड़ गया। सारइक ने पास खड़े लड़के-लड़कियों से एक ओर बैठ जाने को कहा। फिर लोगों से कहने लगा – "बहुत कुछ सोचकर ही मैंने बंदूक खरीदी है। यह रंमिली हमारा गांव है। बड़े ही दुख-कष्टों के बीच यह गांव बसा-बढ़ा है। अपनी आंखों के सामने मैं यह बात सहन नहीं कर सकता कि इस गांव के लोगों को खाना न मिले। हर साल जंगली हाथियों के उपद्रव से अपने धान को हम बचा नहीं पाते। बंदूक पास रहे तो मन में हिम्मत आती है। तिस पर यह जंगल के पास का गांव है। गांव में एक बंदूक की जरूरत तो है ही। बात सही है या नहीं, रिसोबासा?"

"हां, हां। गांव में एक बंदूक रहना तो बड़ा जरूरी है। आपने उचित बात ही सोची है। आपके हाथ बंदूक रहने का मतलब है रंमिली गांव का सम्मान थोड़ा और ऊपर उठ गया।" रिसोबसा ने सारइक को बधाई देते हुए कहा।

उनकी बातें सुनकर बूढ़े लंकिरी के होठों पर हंसी खिल उठी। अनजाने ही उसकी आंखों की कोर भीग आई। रंमिली के खोए हुए पुराने लोगों के चेहरे उसकी आंखों के सामने उभर आए। आंखें पोंछते हुए वह कहने लगा – "हां, सारइक बप्पा ने सच्ची बात ही कही है। यह रंमिली गांव बड़े दुख-कष्टों के बीच पला-बढ़ा है। बप्पा की सदचिंता के कारण मुझे सचमुच बड़ी खुशी हुई है। तुम लोग इस गांव के प्यार-मुहब्बत को भूले न हो, यह सचमुच महान गुण है। सुनकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है और गौरव भी हो रहा है।"

बूढ़े की बात पर सबने सिर हिलाया। बासापी एक हांड़ी 'लाओ पानी' ले आई। 'डेका चां' के क्लेंदुन ने प्रौढ़ लोगों में 'लाओ पानी' वितरित कर दी। पीले रंग की 'लाओ पानी' ने कांसे की कटोरियों की शोभा और बढ़ा दी। सब ने सारबासा की मंगलकामना करते हुए हेमफू देवता के नाम 'लाओ पानी' समर्पित किया। तर्पण के बाद दो-एक घूंट पीकर सारइक बोला, "बंदूक तो खरीद ली। अब यह चलती है या नहीं, एक बार जांच कर देखना चाहता हूं। आप लोगों का क्या विचार है?"

"ठीक है, ठीक है! हम सभी एक बार देख तो लें।" रिसोबासा बोला – "इसके पहले तो, बंदूक कैसे चलती है, हमने देखा ही नहीं। क्यों, मैं सही कहता हूं न!"

मदिरा का कटोरा खाली कर लिंदक बोला उठा – "अब जाकर हमारा गांव गंभीर-गंभीर-सा, वजनदार-सा लगने लगा है।"

फेरांके ने हंसते हुए कहा – "अगली बार फू लिंदक भी एक बंदूक खरीद लाएं! क्यों?"

"उंह, रहने भी दो। बंदूक खरीदूंगा। चिलम की पाइप में भरने के लिए अफीम की गोली तक जुटा नहीं पाता। अगले जनम में भी बंदूक ले पाना संभव न होगा।" कहता हुआ लिंदक 'हः हः' कर हंस पड़ा। उसकी बात पर सब लोग हंस पड़े।

तब तक बैशाख महीने का सूरज टीका पहाड़ के ऊपर आ गया था। नीचे के पानी से जो कुहरा उठ रहा था, सूरज की गरमी से पहाड़ी की तराई से वह हट गया।

मदिरा-वदिरा पीने के बाद सभी खुले आंगन में जमा हो गए। सारइक ने धीरे-से बंदूक

को अपने हाथ में उठा लिया। आसमान की ओर निशाना साधकर वह बोला – "बच्चो, उंगलियों से कान अच्छी तरह बंद कर लेना !" और धीरे-से घोड़े को उंगली से खींच लिया। साथ ही बंदूक से 'धुम्म' से प्रचंड आवाज हुई। बच्चे, लड़के-लड़कियां आदि डर के मारे चीखकर भागने लगे। जो औरतें 'हंकूप' में झुंड बांधे खड़ी थीं, उन्होंने 'नांपो आफू' यानी 'अपने बापू का सिर' कहते हुए जोर से कान बंद कर लिए। 'बाखर' के साथ ही गांव के दूसरे कुत्ते भी डर के मारे भौंकने लगे। 'का - का' करते हुए कौओं का झुंड रंमिली के आसमान पर कुछ देर चीख-पुकार मचाकर फिर चुप हो गया। गांव-भर में आवाज गूंज उठी। बंदूक से निकला सफेद धुआं धीरे-धीरे आकाश में मिल गया। जली बारूद की बू सारइक के आंगन में फैल गई।

सफलता की गौरवोज्ज्वल आभा सारइक के चेहरे पर साफ झलक उठी। पूरब के पहाड़ों की ओर देखते हुए सारइक बैठकखाने में आ गया। सारइक की बंदूक की प्रशंसा करते हुए रिसोबासा आदि अपने-अपने घर चले गए।

11

रंमिली के आम-कटहल के पेड़ों पर सुबह की धूप पड़ने लगी थी। धूप बड़ी आरामदेह, प्यारी, और कोमल-सी थी।

'डेका-चां' के फैले आंगन को भी धूप ने बांहों में भर लिया था। बरसात से भीगे पेड़-पौधों, लताओं की कोमल हरी-पत्तियों पर सूरज की किरणें मानो फिसल-फिसल जा रही थीं। पास के जंगलों में केतेकी चिड़िया की चिर-वेदना की, प्रेरणा की वह पुकार गूंजने लगी थी, जिससे कारबी किसान को झूम खेत की कच्ची मिट्टी का सुवास मिलता रहा है, जिससे उनकी प्रसुप्त-सी बांहों में कर्म-प्रेरणा के नए अंकुर संजीवित हो उठते हैं, देह की नस-नस में अनजान सिहरन जाग उठती है। कारबी किसानों के साथ पुराने जमाने से ही केतेकी चिड़िया का घनिष्ठ संबंध रहा है। नए धान के पौधों के साथ-साथ उनकी नई आशाओं के सपने भी पंख खोलने लगते हैं। उपजाऊ जमीन वाले उनके झूम के खेत उनके लिए अपार संपत्ति जुटाते रहे हैं। आश्विन की नई धूप में कारबी लोगों के मचान-घर पुनः नए ढंग से हंसना सीखते हैं। उस हंसी की लहरों में मानो केतेकी चिड़िया के अमृत बरसाने वाले कंठ-स्वर की लहरियां भी आ मिलती हैं।

प्रकृति-संसार कारबी लोगों का बड़ा ही आत्मीय है। प्रकृति-परिवर्तन के हर संकेत में वे अपने कर्ममय जीवन को नए रूपों में तौला करते हैं। परिवर्तित होती प्रकृति के रूपों के अनुसार वे उलझनदार समय की नाप को भी मिला लिया करते हैं।

नए साल की संदेशवाहिका केतेकी चिड़िया को कारबी लोग 'वोथों कांको' कहते हैं।

यह बड़ा ही प्यारा-प्यारा नाम है। कुछ लोग केतेकी चिड़िया का परिचय 'बोसोबिपो' के नाम से देते हैं। केतेकी चिड़िया के सुर से सुर मिलाकर कारबी किसान स्वतः गा उठते हैं –

'ओ थं कांको
रित नं मेलो
बतर देरपो।'

(यानी – मैं 'वोथों कां को' कहती हूं, आहू धान (भदई धान) बुआई का समय आ गया है। 'वतर' (मौसम) रुकता नहीं। अब उठ जाओ।)

सचमुच मौसम तो किसी के लिए रुका नहीं रहता। कारबी-लांपी की धारा की भांति अविराम गति से 'बतर' (मौसम) देवी अनजाने देहा की ओर उड़ती चली जा रही है। रंमिली के किशोर-किशोरियों के प्राणों में भी कर्म का आह्वान गूंजने लगा। डेका-चां के बाहरी दरवाजे के पास आकर गांव के किशोर कतारों में इकट्ठे हो गए। सें बुरुपकेथे और सें बुरुपसो, इन दो किशोरों पर ढोल बजाने का दायित्व सौंपा गया था। दोनों कतारों के आगे रहकर 'कृषि यात्रा' की प्रारंभिक धुन बजाने लगे। उन दोनों के ठीक पीछे जमीन नापने का लंबा डंडा 'बारलन' हाथ में ले एक किशोर उसे ढोल के ताल-ताल पर नचा रहा था। वह किशोर ही जिरसं का 'बारलन' है। जिरसं का दलपति क्लेंसारपो मचान-घर के आंगन से ही तरह-तरह के निर्देश दे रहा था। उस मंडली में आज फानकू बड़ा व्यस्त किशोर है। क्लेंसारपो के कामों की देखभाल करने के अलावा क्लेंसारपो के निर्देशानुसार जिरसं के दूसरे काम भी उसे करने पड़ रहे हैं।

क्लेंसारपो बड़े उद्विग्न मन से मचान के ऊपर चहलकदमी कर रहा था। वैसे उसका नाम वोफंइंति था। सारबासा के घर की ओर नजर डाले वह फानकू को कामों का निर्देश देता जा रहा था। उसने बहुत देर पहले सें तेरन को सारबासा के यहां भेजा था। अब तक उसके न लौटने पर उसे आश्चर्य हो रहा था। उसने सूरज की ओर नजर डाली। हां, देर तो काफी हो चुकी है। उसने सोचा, सें तेरन को वहां भेजना उसकी गलती थी। क्लेंदुन जरूर अपना कर्तव्य भूलकर अमफू के रूप पर मुग्ध हो, उससे प्रेमालाप करने में जुटा है। क्लेंसारपो की आंखों के सामने अमफू की छटा खिल उठी। प्रतिहिंसा की तेज जलन से वह छटपटाने लगा। गुस्से के मारे अनजाने ही उसने अपने मदिरा के खाली चोंगे को लात मार दी। बांस का वह चोंगा छिटककर कादम के हाथ में जा लगा। कादम और कासां दोनों ही लड़कों के लिए फावड़े, दाब आदि 'खां' में भर रही थीं। उन्हीं दोनों किशोरियों पर जिरसं का दायित्व सौंपा गया था। कादम के हाथ में चोंगे से चोट पहुंची थी, पर उसने जबान से कुछ नहीं कहा। बोझ-भरे खां उठाकर वे दोनों डेका चां से उतर गईं और कतार के अंत में खड़ी हो गईं। उन्हें ही जिरसं के 'सिन हाक केथे' और 'सिन हाकसो' बनाया गया था।

जिरसं के किशोरों को फानकू पान-तांबुल बांट रहा था। मचान-घर से क्लेंसारपों नें गुस्से में फानकू को बुलाया।

"फानकू, इधर आ।"

"क्यों, क्या हो गया, क्लेंसारपो ?" पान-तांबुल बांटना छोड़ वह क्लेंसारपो के पास दौड़ा आया।

"क्लेंदुन को गए कितनी देर हुई ?"

"हां, देर तो कुछ हुई है। तीन तांबुल खाने के बराबर का समय हुआ है।" कुछ क्षण सोचकर फानकू बोला।

"क्या बासापो को वह खबर देकर लौटने में इतनी देर लग सकती है ?" सारबासा के घर की ओर नजर डाल, सबको सुनाते हुए क्लेंसारपो बोला – "नहीं, नहीं, इस तरह की हरकत और नहीं सही जा सकती। उसे जिरसं से निकालना ही पड़ेगा। क्लेंदुन पद के लिए वह नितांत अयोग्य है।"

क्लेंसारपों की बातें सुनकर जिरसंग के लड़के आपस में 'भु-भु-भा-भा' करते हुए बातें करने लगे। सेंबरुप[1] ढोल के ताल में भी गड़बड़ी होने लगी। क्लेंसारपो की गुस्से-भरी आवाज के कारण सेंबुरुप की धुन भी धीरे-धीरे रुक गई।

"क्लेंसारपो, भला आप गुस्सा क्यों कर रहे हैं ? बासापो के यहां हो सकता है कि कोई असुविधा भी हुई हो। हमने सुना है, बासापो की तबीयत कुछ ठीक नहीं है।" कतार में खड़े लड़कों में से बारलन ने कहा।

"कौन-सी असुविधा हो सकती है ? अरे, यह सब उसकी चालाकी है। बेशर्म कहीं का !"

क्लेंसारपो के इस कटु विचार से जिरसं के नौजवानों को अफसोस हुआ। कोई विरोध किए बगैर वे चुपचाप क्लेंसारपो के चेहरे की ओर देखते रहे। फानकू हक्का-बक्का सा सूने डेका-चां के अंदर की ओर देखने लगा।

"फानकू, सुन, तू तुरंत जाकर वह खबर ले आ।" क्लेंसारपो ने आदेश दिया।

"ठीक है।" कहकर फानकू जैसे ही सीढ़ियों से उतर रहा था, उसने देखा, क्लेंदुन आ रहा है। उसने क्लेंसारपो से कहा – "वह देखिए, क्लेंदुन आ गया।"

सबने मुड़कर क्लेंदुन की ओर नजर डाली। उन्हें लगा, क्लेंदुन का चेहरा कुछ गंभीर है।

"बासापो की तबीयत अच्छी नहीं है। वे आ नहीं सकते। रिसोबासा भी बासापो के यहां हैं। कोई पूजा कर रहे हैं। रिसोबासा की खोज में मुझे 'रंफू' जाना पड़ा। यहां-वहां पूछते, खबर लेते देर हो गई। बसापो और रिसोबासा ने 'जिरसं' शुरू करने की अनुमति दे दी है।" सें तेरन ने क्लेंसारपो को पूरा विवरण कह सुनाया। क्लेंसारपो के होठों पर मुस्कान आ गई। यह मानो इसी बात का संकेत था कि सें तेरन की उन बातों से उसके मन का संदेह मिटा नहीं है।

सेंबुरुप फिर बज उठा। 'क्लर्-क-दं, क्-क-दं, क्लर्-क-दं ! लेकिन सेंबुरुप की ये प्रेरणा-भरी धुनें आज क्लेंसारपो के मन में किसी तरह की प्रेरणा नहीं जगा पा रही थीं। गुस्से और विरक्ति की भावनाएं मानो उसके चेहरे पर से जा नहीं रही थीं। संदेह के कुहरे ने उसके

---

1. खोलइ के आकार का एक तरह का ढोल, जिसे कारबी 'डेका-चां' में बजाया जाता है।

मन को ढक लिया। इसी कारण उसका अंतस् भूसे की आग-जैसा सुलग उठा। ईर्ष्या, विरक्ति और संदेह की भावना उसके चेहरे पर उभर आई। उसने बड़े रूखे स्वर में जिरसं मंडली को आगे बढ़ने का आदेश दिया।

सेंबुरुप के ताल-ताल पर 'जिरसं-मंडली' झूम खेती की जगह की ओर बढ़ चली। घुमावदार, टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी से चलती हुई वह मंडली बड़े-बड़े पेड़ों वाले घने जंगल में छिप गई। ढोल के ताल की आवाजों का सुनाई देना भी धीरे-धीरे बंद हो गया। वियोग-वेदना दिल में लिए रंमिली गांव का डेका-चां सन्नाटे में उनकी बाट जोहता रहा। दक्षिणी ओर आसमान में जो बादलों के टुकड़े तैर रहे थे, वे भी धीमी गति से उड़ने लगे।

उनकी झूम की खेती की जगह थी ऊंचे पहाड़ पर की ढलान! झूम खेती की जगह पहुंचकर 'जिरसं-मंडली' पास के एक पेड़ के साए में बैठ गई। बांस की लंबी मापनी से बारलन ने जमीन को नापा। जमीन की सीमा सूचित करने वाले लंबे-लंबे लट्ठनुमा बांस के टुकड़े 'पुनसेफ' गाड़-गाड़कर बारलन ने जमीन को बराबर-बराबर बांटा। जमीन-बंटाई का काम खत्म होने पर फानकू ने सबको पान-तांबुल बांटा। का सां और कादम ने हर किशोर के हाथ में दाब और छोटे फावड़े थमा दिए। हाथों में फावड़ा और दाब लेकर जिरसं के किशोर जमीन के अपने-अपने हिस्से पर खड़े हो गए। झूम खेती की जगह की दाहिनी ओर 'मोतान आर ए'[1] और बाईं ओर 'मोतान आरबी'[2] ने जैसे ही स्थान ग्रहण किया, वैसे ही जिरसं की पूरी शक्ति प्रकट हो गई।

पहले दिन हुई बारिश ने जमीन को गीला कर दिया था। धूप की गरमी से जमीन में से उठ रही सोंधी-सोंधी गंध किशोरों की नाक में आ रही थी। नाराजगी के भाव में रुका हुआ क्लेंसारपो ने रेक फानकू को निर्देश दिया – "लच्छमी-बीजों को बिखेर दो।"

क्लेंसारपो का निर्देश पाकर रेक फानकू ने भदई धन के बीज बिखेर दिए। फुरफुरी काली मिट्टी में सुनहले धान सूरज की किरणों-से चमक उठे।

सेंबुरुप की मांगलिक धुन बज उठी। साथ-साथ किशोर 'कृषि-कर्षण' के गीत सामूहिक स्वर में गा उठे। क्लेंसारपो का फावड़ा भी क्रुद्ध भाव से नाच उठा। जिरसं के सारे फावड़े क्लेंसारपो के साथ ही 'कृषि-कर्षण' में जुट पड़े। सन्नाटा-भरा पहाड़ जिरसं के समूह-गीत से जाग उठा। वन-विहगों के कलरव, काम में जुटे उन किशोरों को अनुप्रेरित करने लगे।

धूप क्रमशः तेज होती गई। सें तेरन का माथा पसीने की बूंदों से चमकने लगा। लग रहा था कि उसके फावड़े जिरसं त्योहार की आनंद-लहरी अभी नहीं उठा पा रहे हैं। लगा कि उसके फावड़े ने प्राण चंचल करने वाली नृत्य-भंगिमा से भी अपनी असमर्थता प्रकट की। दूसरे किशोरों के उल्लास-हास उसके कलेजे में शूलों जैसे चुभ रहे थे। उसे लग रहा था, झूम-तली की कोमल मिट्टी भी मानो चट्टान हो।

उसके मानस को अनेक सवालों ने दबोच लिया था। वह सोच रहा था, आखिर

1,2. डेका-चां की ओर से जिस जमीन पर खेती की जाती है, उस जमीन के दाहिनी ओर रहने वाले अधिकारी को, 'मातान आर ए' और बाईं ओर रहने वाले को 'मोतान आरबी' कहते हैं।

क्लेंसारपो मुझसे विद्वेष की भावना क्यों रखता है ? उसने अब तक मुझसे एक बार भी बात क्यों नहीं की ? मुझसे किसी तरह का सुझाव-परामर्श भी क्यों नहीं करता ? क्या मैं जिरसं का दायित्व समझने वाला किशोर नहीं हूं ? क्लेंदुन का उत्तरदायित्व इस जिरसं से कब हटा दिया गया ?

ये बातें सोच-सोचकर सें तेरन अपने को बड़ा अपमानित अनुभव करने लगा। भले ही क्लेंसारपो जबान से कुछ न कहे, उसकी अपनी आंखों और चेहरे पर हिंसा की जो क्रोधाग्नि प्रकट हो रही थी, उसे वह ढक नहीं सका है। प्रीति-भोज खाने के दिन जो घटना हुई थी, वह सें तेरन के सामने आ खड़ी हुई। अमफू को उसके साथ जोड़कर कादम ने जो ठिठोली की थी, उसका समर्थन कर पाना उसके लिए मुश्किल हो रहा था। पर उस घटना का जिरसं से क्या संबंध हो सकता है ? भले ही कादम ने ठिठोली की हो, पर उससे क्लेंसारपो के नाराज होने को क्या है ? सें तेरन सोच रहा था – उसके साथ क्लेंसारपो का सौहार्द्र खत्म हो जाने का क्या यही कारण है ? उस ठिठोली के दिन क्लेंसारपो ने कादम पर जो क्रूर दृष्टि डाली थी, उसकी वजह भी क्या वही था ?

ये बातें सोचता हुआ सें तेरन फावड़ा चला रहा था। पेड़ की जड़ में फावड़ा लगकर अचानक छिटक गया और उसका सिरा उसके दाहिने पैर पर आ लगा। सें तेरन का पैर खून से लथपथ हो उठा। हाथ का फावड़ा रखकर वह बैठ गया। बारलन थोड़ी ही दूरी पर था। उसने आकर पूछा – "क्लेंदुन, क्या हो गया तुम्हें ?"

"फावड़ा छिटककर पैर में आ लगा है। थोड़ा-सा कट गया है।"

"देखूं, देखूं ! अस्, बहुत ज्यादा कट गया। किस्मत अच्छी थी। नस बच गई।"

बारलन तुरंत पास के जंगल से कुछ लता-पत्तियां तोड़ लाया। पत्तियों को मसलकर उसका रस कटी जगह पर लगा उसे एक फटे कपड़े से बांध दिया। अस-अस करता हुआ सें तेरन पास की चट्टान पर आराम करने लगा।

'क्लेंदुन को क्या हो गया' सोचकर कुछ किशोर जैसे ही आने लगे, क्लेंसारपो ने उन सब को गुस्से से कहा, "तुम लोग अपना-अपना काम करो, यह आराम करने का समय नहीं है। और अगर काम नहीं करते तो जिरसं छोड़कर अपने-अपने घर जाकर सो रहो।"

जिरसं के किशोरों को क्लेंसारपो का रुख अच्छा नहीं लगा। क्लेंसारपो ने वह बात किस उद्देश्य से कही, सें तेरन की समझ में नहीं आई। वह सोचने लगा, जिरसं में एक-दूसरे से सहानुभूति की कमी हो जाए तो वह मुसीबत की ही बात है।

सें तेरन ने लांबंसो को पानी देने के लिए पुकारा। सहकारी पानी-वितरक लांबंसो ने आकर उसे पानी दिया। पर उसके पानी देने का परिणाम बुरा हुआ। जिरसं की नीति का उल्लंघन कर असमय में पानी देना क्लेंसारपो की दृष्टि में घोर अपराध बन गया।

क्लेंसारपो का हुक्म लिए बगैर पानी देने के कारण अचानक लांबंसो के गाल पर एक थप्पड़ आ लगा। क्लेंदुन पर उसका गुस्सा मानो लांबंसो के गाल पर ही आ पड़ा। लांबंसो ने दुख और अपमान से सिर झुका लिया। क्लेंसारपो से ऐसे व्यवहार की उम्मीद किसी को

नहीं थी। जिरसं के फावड़े एक-एक कर जमीन पर गिरने लगे। गुस्से और ईर्ष्या के मारे क्लेंसारपो का चेहरा लाल हो उठा। जिरसं की स्थिति अचानक बिगड़ गई। सारे किशोर झूम खेती की जगह छोड़कर लांबंसो के पीछे-पीछे चल पड़े। जिरसं टूट गया। सिर झुकाए अकेले खड़े क्लेंसारपो की आंखों में असहायता उभर आई। वह सामने के ठूंठे पेड़ की भांति खड़ा रह गया। 'झूम खेती' की जमीन के पास के पहाड़ पर बिना दुम वाले काले रंग के 'हलौ बंदर' हयदु-हयदु केक्-आवाज करते हुए चीख-पुकार रहे थे। हलौ बंदरों की आवाज सुनकर सें तेरन को 'सेलें पहाड़' की करुण-कहानी याद आ गई। इसी तरह के अत्याचारों, मूर्खताओं के कारण ही वहां एक करुण स्थिति पैदा हुई थी। कहा जाता है कि किसी गांव के 'सारथे' के अमानवीय अत्याचारों के विरोध में जिरसं के किशोर-किशोरियों ने ऊंचे पहाड़ पर से एक-एक कर नीचे कूदकर खुदकुशी कर ली थी। यह कथा प्रचलित है कि खुदकुशी करने वाले वे किशोर-किशोरियां ही आगे चलकर 'हलौ बंदर' बन गए। क्लेंसारपो की ओर देखते हुए सें तेरन सोचने लगा – 'तो क्या रंमिली का यह क्लेंसारपो ही उन दिनों का वह अत्याचारी सारथे है?'

तभी – "भैया, कितनी चोट आई है? अस, बुरी तरह कट गया है।" कादम की यह आवाज सुनकर मानो सें तेरन की चेतना लौट आई। कादम की ओर देखते हुए उसने कहा – "नहीं, नहीं, ज्यादा नहीं कटा है।"

"क्या घर तक पैदल चल सकोगे?"

"जरूर चल सकूंगा। कादम, खून निकलना तो बंद हो ही चुका है।"

कादम को यह कहने की इच्छा हुई थी कि 'रवाना होने के तुरंत बाद ही से आज अवांछनीय घटनाएं घट रही थीं।' पर बगैर कुछ कहे वह चुप रही। उसने एक असहनीय वेदना का अनुभव किया।

"तो उठिए, भैया!" कहती हुई कादम ने बैठे हुए सें तेरन का हाथ पकड़कर उठाया।

अनजाने ही सें तेरन की आंखें तर हो आईं। बरापानी नदी के उद्गम का खड़ी कगारों वाला वह सेलें पहाड़ उसकी आंखों के सामने फिर उभर आया। बड़ी वेदना-भरी दृष्टि से उसने बी-स्किरी पहाड़ की ओर देखा। झूम खेती की जगह से एक केतेकी चिड़िया बहुत ही करुण गीत-गाती उड़ती नीचे घाटी की ओर चली गई।

12

"जिरसं के बीच झगड़ा हो, मैं उसका समर्थन नहीं करता। जिरसं तो हमने भी किया था। जिरसं में छोटी-मोटी घटनाएं हो जाना अस्वाभाविक नहीं है। जहां तक हो सके, उनसे बचे रहना चाहिए। हमारे विचार से तो हमारा गांव इस अंचल का एक आदर्श-गांव होना चाहिए।

क्लें, है न, रिसोबासा ?"

उदास बैठे हुए जिरसं के किशोर, सारइक की बातें सुन रहे थे। हाथ से शरीर टिकाए अकेले बैठे क्लेंसारपो के चेहरे पर पछतावे की वेदना थी। सारबासा की बात सुनकर रिसोबासा ने कहा – "बात सही है। हमारा गांव पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिलसिलेवार ढंग से चलता आया है। हमारे आस-पास के गांवों में कितने जिरसं टूटे, अलग-अलग संप्रदाय बन गए, मुहल्ले बन गए, क्या कोई लेखा-जोखा है ? हमारे इस गांव में वैसी घटना अब तक नहीं हुई, और होना उचित भी नहीं है। तुम नौजवान जिरसं के हर्षोल्लास और श्रम – इन दोनों को बराबर-बराबर अपनाकर अगर गांव की प्रगति में जुट सको तभी अच्छी बात होगी। क्यों, लांबंसो, तुम्हारा क्या विचार है ?" रिसोबासा ने किशोरों के बीच बैठे लांबंसो की ओर देखते हुए पूछा।

"जी, इसमें मेरा दूसरा विचार क्या होगा ? हम तो मिल-जुलकर ही काम करना चाहते हैं। क्लेंदुन को अगर पानी देने के कारण ही क्लेंसारपो की मार खानी पड़े, तो भला जिरसं कैसे चल सकता है ?" दुखी मन से बैठा लांबिरिक तेरन बोला।

कुछ देर सोचकर सारइक बोला – "हां, क्लेंसारपो से गलती हो गई है। जिरसं के नीति-नियमों का अगर कोई उल्लंघन करे, तो सारबासा या रिसोबासा से शिकायत करना उचित था। क्लेंसारपो को खुद तुरंत फैसला कर डालना नहीं चाहिए था। खैर, अब तुम लोग एक काम करो।" सब लोग सारइक के चेहरे की ओर देखते हुए आखिरी निर्देश की प्रतीक्षा करने लगे। सारइक ने कहा – "क्लेंसारपो के पद पर अभी वफं इंति ही रहे। अभी किसी तरह का फेर-बदल करना उचित नहीं होगा। जितने दिन हो सके जिरसं को हमें जिंदा बनाए रखना होगा। किशोर लड़के से कोई गलती हो जाना तो स्वाभाविक है। पर जो हो गया, आज से उन बातों को तुम लोग भुला देना। अब वोफं को सामूहिक तौर पर जिरसं के सामने माफी मांगनी होगी।"

दुख-अफसोस से वोफं इंति खुद पछता रहा था। उसने सारबासा की बात पर कोई एतराज नहीं किया। सारबासा के सामने पान-तांबूल रखकर उसने नमस्कार किया और जिरसं के किशोरों की ओर देखते हुए माफी मांगी। जिरसं के किशोरों ने भी प्रति-नमस्कार करते हुए वोफं इंति को क्लेंसारपो का सम्मान दिया।

जिरसं के प्रांगण से काले बादल धीरे-धीरे छंट गए। बारलन और फानकू ने न्याय-निर्णय के लिए रखा पान-तांबूल बांट दिया। किशोरों में फिर हंसी और आनंद वापस आ गया। नौजवानों ने न्याय-निर्णय के लिए जो मदिरा प्रस्तुत की थी, उसे सारबासा ने लोगों में बांट दिया गया। 'रसो' देवता के नाम मदिरा समर्पित कर सारइक ने अपने मुंह में डाली। मदिरा पीते हुए सारइक कहने लगा – "प्यारे बच्चो ! अब जमाना बदल गया है। जिरसं करने के लिए भी जमीन घट रही है। इस साल तुम लोग जिरसं के नियम मान कर खेती-बारी करो। अगले साल से हम 'बी-वोकेक' की सनई वाली जमीन पर खेती करेंगे। जिरसं के पुराने नीति-नियमों का आज के जमाने के साथ मेल नहीं बैठता। हमारे इस अनुष्ठान को बनाए रखा जाए या तोड़ डाला जाए, इसके बारे में हम अगले साल ही विचार करेंगे।"

कटोरे में बची मदिरा को खत्म कर क्लेंसारपो की ओर देखते हुए सारइक ने फिर कहा, "क्लेंसारपो, तुम्हें अफसोस करने की अब जरूरत नहीं। जिरसं का दलपति होने के कारण तुम पर दायित्व भी बहुत अधिक है। तुम्हारे स्वस्थ दृष्टिकोण पर ही जिरसं के कामकाज भी रचनात्मक होंगे। जिरसं के साथ हमारे गांव की प्रतिष्ठा भी जुड़ी हुई है। तुम लोग आपस में मेल-जोल से रहते हुए जिरसं के नीति-नियम पालन करना। और सुनो, अगर कोई अड़चन आए तो हमें सूचित करना। तुम लोगों को लेकर ही तो हमारा गौरव है, गांव का भी गौरव है। यहां तक कि लोंरी का भी गौरव तुम लोगों के कार्यकलाप में ही छुपा हुआ है।"

जिरसं का फैसला करने के बाद सारइक और दूसरे लोग सीढ़ियों से उतर आए। फैसला आसानी से कर पाने के कारण सारइक का मन बड़ा हल्का हो आया। रिसोबासा, फेरांके, मुतियार आदि के साथ गांव की परिस्थिति के बारे में विचार-विमर्श करते हुए सारइक ने घर की ओर कदम बढ़ा दिए।

"फू, समझते हैं न ! भले ही यह सब देखने में छोटी बातें लगें, पर इनसे गांव की शांति विनष्ट हो सकती है। तुरंत फैसला कर अच्छा ही किया। और एक बात है न ! नई पीढ़ी के लड़के-बच्चे जब स्कूल जाने लगेंगे, तब तो जिरसं करने वाले लड़के रहेंगे ही नहीं। और उन्हें स्कूल में न पढ़ाना भी उनके प्रति अन्याय ही करना होगा। इन बातों पर सोच-विचार कर अगले साल से 'जिर केदाम' अनुष्ठान की समाप्ति घोषित कर देना ही शायद अच्छा रहेगा !"

"आप सही सोच रहे हैं। इस पुराने अनुष्ठान को जिंदा रख पाना मुश्किल हो चला है। गड़बड़ी होने के पहले ही इसे खत्म कर देना बुरा नहीं होगा।" रिसोबासा ने सहमति जताते हुए कहा।

फेरांके चुपचाप चला आ रहा था। बोला – "मामा के अनुग्रह से इस बार जाकर नगांव शहर देख आया। शहर में हमने देखा कि वहां के लड़के-लड़कियां झुंडों में स्कूल जा रहे हैं। उन्हें देखकर इतना अच्छा लगता था कि क्या बताऊं ? हमें भी यहां एक स्कूल खोलना चाहिए। मामा जी, आपके क्या विचार हैं ?"

"यह बात तो मैं भी सोच रहा हूं। पर एक ही गांव के लड़के-लड़कियों को लेकर एक स्कूल नहीं खोला जा सकता। तुम्हें तो हाबेसिको के मन की बात का पता है ही। उस आदमी की वजह से यहां कोई अच्छा काम करना असंभव-सा हो गया है।"

यों बातें करते हुए वे सारइक के घर के बाहरी दरवाजे तक पहुंच गए। सारइक ने रिसोबासा से पूछा – "रिसोबासा, बैठेंगे ?"

"नहीं, अब नहीं बैठना है। देर हो जाएगी !"

जब उसने 'नहीं बैठना है' कह दिया, तो सारइक ने उस पर बैठने के लिए दबाव भी नहीं डाला। उन्हें विदा कर वह अपने घर लौट गया। तभी उसने सुना, डेका-चां पर 'सेंबुरुप' की धुन बज रही है। उसके गंभीर चेहरे पर हंसी उभर आई। सामने के पहाड़ों की ओर एक बार नजर डालकर वह अपने बैठक-घर में घुस गया।

13

टीका पहाड़ की संकरी पगडंडी से ऊपर जाते हुए सारइक के मन में लगभग पचास साल पहले की बात याद आ गई ।

उन दिनों सारइक तेरां दस-ग्यारह साल का रहा होगा ।

वह था सन् 1896 ।

शरद काल के मेघ-खंड क्षितिज पर इकट्ठे थे ।

नीला आकाश और ज्यादा गहरा हो उठा था ।

दूर का उबका पहाड़ भी काजल-सा काला हो उठा था ।

टीका पहाड़ के पेड़-पौधों, लताओं की पत्तियां भी गहरे हरे रंग की बन गई थीं ।

बरापानी नदी भी टीका पहाड़ के समीप से टेढ़ी-मेढ़ी गति से रंमिली गांव का प्यार सहेजे आज जैसी ही बहती जा रही थी । बरापानी की जल-धारा में भी आश्विन की छटा थी । बिल्कुल निर्मल धारा में पानी के नीचे की मछलियां भी दिखाई पड़ रही थीं । प्रशांत नदी की गति में उस समय वर्षा का उन्माद नहीं था । अपनी विमुक्ति के अथक संघर्ष की चिरंतन कल-कल, झर-झर छनियां बरापानी युगों पहले हरे-हरे चीड़ के पेड़ों से भरे उमियाम की छाती पर ही छोड़ आई थी । कारबी लोंरी के प्यार-भरे स्पर्श ने उसकी अशांत गति को मुक्त और प्रशांत बना दिया । उमियाम कारबी लोगों की जानी-पहचानी कारबी लांपी बन गई ।

नदी के दोनों ओर फूले हुए कांस के सफेद फूल लहरा रहे थे । नदी की लहरें भी सूरज की किरणों से चमक रही थीं । कारबी लांपी की छाती पर से होकर एक नाव बैठालांसो की ओर आ रही थी । चप्पू की छप-छप और नदी की भयार्त नन्ही लहरें कगार से टकराती हुई मानो शरण मांग रही थीं । सनई के जंगल की ओट में छिपी दो एक 'कणा-मुचरि' चिड़िया डरकर उड़ी जा रही थीं ।

नाव आकर बैठालांसो के डुम्मर पेड़ के पास लग गई । नाव पर सवार एक आदमी ने ऊंचे पहाड़ की चोटी की ओर उंगली से संकेत कर दिखाया । 'गुड गॉड' कहते हुए एक गोरे साहब ने दूरबीन से पूरब के टीका पहाड़ की ऊंचाई का अंदाजा लगाया ।

"फाइन ! टू थाउजेंड फीट हाई । इट वुड मेक ए नाइस प्लेस फार आवर मिशन । ह्वाट डू यू थिंक, मि. कारवेल ?"[1] दूरबीन से देखता हुए गोरा साहब बोला ।

---

1. सुंदर ! दो हजार फुट ऊंचा है । इस पर हमारे मिशन के लिए बढ़िया जगह होगी । मि. कारवेल ! आपका क्या विचार है ?

"ब्यूटीफुल प्लेस ! रेवरेंड फादर ! एट लास्ट गाड हैज हेल्पड अस । प्रेज्ड बी द लार्ड ।"[1] दूसरे साहब ने हथेली से आंखों पर छाया कर सीधे खड़े पहाड़ की ओर देखते हुए कहा ।

"लैट अस मूव[2] ।"

दोनों साहब नाव पर से किनारे उतर पड़े । नाव चलाने वाले को संबोधित करते हुए प्रौढ़ साहब ने कहा – "होय मैन, चीज सब आनिब लागे ।" (ओ लोगो ! सारे सामान आने चाहिए ।)

वह साहब था पी ई. मूर । किसी जमाने का विख्यात अमेरिकन बैप्टिस्ट मिशनरी का पादरी साहब । कारबी आलं में सैकड़ों मील भ्रमण करने के बाद मिशन के उद्देश्य से वह बैठालांसो के टीका पहाड़ तक आ पहुंचा था । उसके साथ सहयोगी था कारवेल साहब । उस घने जंगल में हो सकता है कि किसी दुभाषिए की जरूरत पड़ जाए, यह सोचकर मूर साहब अपने साथ 'देओबार' नाम के ईसाई धर्म में दीक्षित एक कारबी आदमी को भी लेता आया था । वही 'देओबार' उन दोनों साहबों को टीका पहाड़ की राह दिखाता ले आया था ।

ऊंचे कद के, लाल जैसे रंग के बालों वाले मूर साहब की आंखें दमक रही थीं । धीमी गति से बहती हुई कारबी लांपी की छाती पर उद्भाषित अनिर्वचनीय प्राकृतिक सौंदर्य ने मूर साइब को सम्मोहित कर लिया था । जब तक नाव पर से सामान उतारा जा रहा था, नदी के तट पर बैठे वे दोनों बैठालांसो के परिवेश के बारे में चर्चा करते रहे । वहां का साप्ताहिक हाट-बाजार देखकर उनका मन खुशी से भर उठा । उन लोगों ने सोच लिया, प्रभु ईसा मसीह के का संदेश प्रचार करने में यह हाट-बाजार उन्हें जरूर मदद पहुंचाएगा ।

नदी-घाट पर अप्रत्याशित गोरे साहबों को देखकर पास के गांवों के लड़के-लड़कियां और कुछ बड़ी उम्र वाले भी वहां आकर इकट्ठे हो गए । उन लड़के-लड़कियों में सारइक भी घुसा हुआ था । अचरज से साहबों की ओर देखते हुए वह सोच रहा था – भला ये किस तरह के लोग हैं ? ऐसे लोगों को तो उसने कभी देखा ही नहीं है । क्या ये ही देवता हैं ? कुछ तो डर से और कुछ शर्म से अपनी ओर देखने वाले अधनंगे-से लड़के-लड़कियों को देख मूर साहब ने देओबार से कहा – "होय, देओजार । बाच्चा सबके मातिबि । हाव पूअर दिज किड्स आर ।[3] ओसोमार वांथा, वांथा । कांबुरा वांपो (बच्चो, इधर आ जाओ । मुखिया तुम भी आ जाओ) ।"

टकटकी लगाए देखनेवाले लोगों को मूर साहब ने पास बुलाया। देओबार लड़के-लड़कियों को समझा-बुझाकर पास बुला लाया । सकुचाते-शरमाते वे साहब के पास आ गए । कारवेल साहब ने पेटी से बिस्कुट के पैकेट निकाल मूर साहब को दे दिया । बिस्कुट

---

1. बड़ी खूबसूरत जगह है । रेवरेंड फादर ! आखिर ईश्वर ने हमारी मदद की । प्रभु का शुक्रिया ।
2. अब हम आगे बढ़ें ।
3. अरे देवबार ! तू बच्चों को बुला । ये नन्हे बच्चे बच्चे कितने गरीब हैं !

के पैकेट खोल, 'कम् कम्, फेरे नांने'[1] कहकर हंसते हुए मूर साहब ने लड़के-लड़कियों में बिस्कुट बांट दिए। बड़ी संतुष्टि से बिस्कुट चबाता हुआ सारइक साहब की ओर देख रहा था। निस्संकोच रूप से बिस्कुट खाते सारइक की पीठ ठोंक-ठोंककर साहब प्यार जता रहा था।

सामान सहेजकर साहब की मंडली टीका पहाड़ की ओर आगे बढ़ी। पतझड़ के उस गूलर के पेड़ की जड़ पर एक छोटी-सी नोट-बुक पड़े देख सारइक ने उसे उठा लिया और दौड़ता हुआ जाकर साहब को थमा आया। सारइक की हिम्मत देख उसके साथी लड़कों को अचरज हुआ था।

मूर साहब बहुत ही संतुष्ट हुआ और सारइक से प्यार से पूछा, "नां मेन कोपि लो ?" (तुम्हारा नाम क्या है ?)

"सारइक तेरां।" उसने कुछ शर्म और कुछ डर मिश्रित स्वर में कहा।

"मेसेन आमेन लो (यानी – बड़ा सुंदर नाम है)।" कहकर उससे प्यार जता वे सभी आगे बढ़ गए।

उन पुराने दिनों की वह तस्वीर सारइक के मन के पर्दे पर उभर आई थी। टीका पहाड़ की ऊंची चोटी पर से उसने नीचे नजर डाली। ऊंचे-नीचे, हरे-हरे रंगों वाले पहाड़ क्रमशः उभर आए। नीचे टेढ़ी-मेढ़ी गति से चक्कर लगाती बहती कारबी लांपी नदी पतली-सी दिखाई दे रही थी। नीचे फैली हुई घाटी के दृश्य देखकर उसका थका शरीर कुछ शीतल हो आया।

ये गोरे साहब कैसे दुर्दांत, कितने दुस्साहसी होने के साथ-साथ कितने दयालु होते हैं – सोचकर सारइक को अचरज हो रहा था। कितना भयावना था यह टीका पहाड़। प्राण कंपा देने वाली पहाड़ी चोटियों और भयावनी चट्टानों के ढेर के बारे में कारबी लोगों का यह विश्वास रहा है कि ये विभिन्न देवी-देवताओं की लीला-भूमि हैं। ऊंचे पेड़ों की डालियों पर झूलती लताओं-जैसे कारबी लोगों के मानस में वे वन-देवतागण आज भी बसे हुए हैं। उनके विचार से किसी भी क्षण ये देवता नाराज होकर मार्ग भ्रष्ट कर सकते हैं। लगातार बहते पवन की सनसनाहट में उन्हें ऐसा महसूस होता था मानो वे देवताओं की सांसें हों। उन देवताओं की ऐसी कहानियां, जिन्हें सुनकर शरीर के रोएं खड़े हो जाते हैं, कलेजे का खून जम-सा जाता है, आज भी कारबी लोगों के मन में आतंक की ही सृष्टि करती हैं।

सुदूर पहाड़ी अंचल से घाटी में उतर आने का एकमात्र मुख्य रास्ता यह टीका पहाड़ ही है। जिन कारबी लोगों को घाटी में जाना होता, लौटते समय राह भूल न जाएं, इस इरादे से वे अपने दाब से पेड़ों पर गुंणा की निशानी (×) बनाते जाते। कुछ पत्तियों को उन पेड़ों की जड़ों पर चढ़ा, देवता 'टीका सारपो' को नमस्कार करते। भय-भक्ति से वे देवता टीका सारपो को सिर झुकाते। उस घने जंगल के अंचल में उन देवता के सिवा और ऐसा कौन है जो आरलें लोगों की रक्षा कर सके ? चढ़ावे के रूप में वे लोग प्रकृति के सामान्य पत्ते-लत्ते चढ़ाकर प्रार्थना किया करते हैं, 'ओ महान देवता टीका सारपो ! घर वापस आ जाने की राह तुम्हीं हमें

---

1. आओ आओ, प्यारे लड़के, लड़कियां !

दिखलाना।'

कंधे पर बंदूक लिए सारइक इन्हीं बातों को सोचता-विचारता चला जा रहा था। बचपन में बड़े-बूढ़ों की कही हुई एक बात उसे याद आ गई। पेड़ों के तनों पर निशान लगाने के कारण ही कारबी लोगों में इस पहाड़ का नाम 'टीका पहाड़' पड़ गया था।

इस भयावने पहाड़ पर उन दो पादरी साहबों ने आकर 'गिरजाघर' बनाया, कारबी गांव बसाया और स्कूल बनाकर बच्चों को शिक्षा देने की व्यवस्था की। मूर आदि इस पहाड़ की छाती पर लगभग तीस साल रहकर मिशन की स्थापना कर 'बिरता' अखबार के जरिये ईसा मसीह के संदशों का प्रचार करते रहे। हेमफू ईसा के अमर संदेशों के जरिये कारबी लोगों को 'सिनीं आतोवार' (स्वर्ग का मार्ग) दिखाया। नगांव के बड़े साहब भी मूर और कारवेल साहबों की मदद करते रहते थे। अतीत की ये घटनाएं सारइक के मन को झकझोरने लगीं। खोई हुई स्मृतियों को मन में दुहराते हुए चलते-चलते वह कब 'गिरजाघर' पार कर आया, पता ही न चला। अचानक लारेंस हांसे की आवाज से उसकी तल्लीनता टूटी।

"नमस्कार! कांबुरा, कहां जा रहे हैं?"

"ओ, अंहेइ (मामा), आप हैं!" उसने लारेंस के चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

"आइए, जरा बैठकर जाइए। ओह, कितने दिनों बाद मुलाकात हुई। कैसे हैं? अच्छे हैं न?"

"हां, अच्छा ही हूं। दुनियादारी के झमेले हैं न, मिलने-जुलने के लिए फुर्सत ही नहीं निकाल पाता। आप लोग सकुशल हैं न?" कंधे पर से बंदूक उतारते हुए सारइक ने पूछा।

"हां, हम तो सकुशल हैं। आइए!" कहता हुआ लारेंस उसे अपने यहां ले गया।"

लारेंस हांसे का घर छोटा-सा होने पर भी सिलसिलेवार सजा हुआ था। दरवाजे-खिड़की लगे घर के सामने की ओर एक चौड़ा-सा बरामदा था। बरामदे की एक पुरानी कुर्सी आगे बढ़ाकर लारेंस ने सारइक को बैठने को कहा। हाथ की बंदूक दीवार से टिकाकर वह कुर्सी पर बैठ गया। बंदूक की ओर नजर डाल लारेंस ने पूछा – "यह तो नई बंदूक है। कब खरीदी आपने?"

"लगभग महीना-भर हो गया।"

"कीमत कितनी देनी पड़ी?" लारेंस ने पास की कुर्सी पर बैठते हुए पूछा।

कुछ देर सोचकर सारइक ने कहा – "खर्च-वर्च मिलाकर पांच सौ रुपए से ज्यादा ही पड़ा है।"

"खैर, कोई बात नहीं। जंगली जगह में आखिर एक बंदूक की जरूरत भी तो है!"

"और कोई बात न होने पर भी जंगली हाथियों से धान को बचाने के लिए जमा की हुई रकम खर्च कर खरीद ही ली। पर इसके लिए भी काफी मेहनत करनी पड़ी, बंदूक मिल ही नहीं रही थी। पादरी साहब ने एक कागज बना कर दिया, तभी बड़े साहब ने बंदूक का लाइसेंस दिया! अरे हां, मैं तो भूल ही गया था। पादरी साहब आपके बारे में पूछ रहे थे!"

"ऐसी बात है ? क्या उन्होंने कोई खबर भेजी थी ?" बड़े आग्रह से लारेंस ने पूछा।

"वैसी कोई खबर तो नहीं दी। सिर्फ आपके बारे में ही पूछा था। अब तक तो उनका नाम ही सुनता आया था, लेकिन इस बार तो वहां जाकर उनके बंगले में बैठकर बातें भी कर आया। साहब बड़े अच्छे हैं।"

"हूं ! उन्होंने मिशन का दायित्व अपने ऊपर ले लिया है, तभी तो मुझे सांस लेने की फुर्सत मिल सकी है। मूर साहब के बाद कारवेल पर ही 'टीका-मिशन' का दायित्व-भार सौंपा गया था। कारवेल सपरिवार रहते थे। पत्नी के देहांत के बाद सन् 1925 में उनका देहांत भी यहीं हुआ। अचानक बिजली गिरने के कारण मिशन-बंगले का कुछ नुकसान होने के अलावा जंगल की आग से जलकर मिशन की बची-खुची सम्पत्ति भी जलकर खाक हो गई। ओह, कितना बड़ा संकट आ पड़ा था !" लंबी सांस लेते हुए लारेंस कहता गया। हमउम्र लारेंस के मन में टीका पहाड़ के मिशन की अनेक घटनाएं चक्कर काटने लगीं। पुराने मित्र सारइक से मिलने पर बीते इतिहास की कई घटनाएं खुलकर कह डालने को उसकी बड़ी इच्छा हो आई। वह कहने लगा – "मेहेइ, समझते हैं न ! कारवेल जरूर अत्याचारी थे। कारवेल ने जो बदनामी का काम किया, उसे इन्हीं साहब ने मिटाया। इन पंद्रह-बीस सालों से वे ही हमारे स्कूल को चलाते आए हैं। 'बितुसो', 'ओसोमार आकिताप' आदि कारबी भाषा की किताबें लिखवाकर कारबी बच्चों को लिखा-पढ़ा रहे हैं। दूसरे लोग चाहे जो भी कहें, हम लोगों से उनका स्नेह अब भी बना हुआ है। अरे हां, मैं तो सिर्फ बातें ही करता रहा। आप जरा बैठिए, मैं चाय के लिए कह आऊं।" कहकर लारेंस घर के अंदर चला गया।

एकांत में बैठे सारइक ने इधर-उधर नजर डाली। उसने देखा, सलीब पर टंगे हुए ईसा मसीह की एक मढ़ी हुई तस्वीर दीवार पर टंगी है। सामने उसे एक और तस्वीर दिखाई पड़ी, जिसमें ईसा मसीह भेड़ों के झुंड के साथ थे। खून से सने ईसा मसीह की तस्वीर की ओर देखता हुआ सारइक सोचने लगा – 'अगर ये ईश्वर थे, तो फिर लोग ईसा मसीह को किस तरह मार सके ?' मगर उसका कोई जवाब न पाकर वह विमूढ़-सा तस्वीर की ओर देखता रह गया। तभी लारेंस बाहर आकर बोला – "आजकल तो मुझे भी कहीं निकल पाना कठिन हो गया है। यहां तक कि हाट-बाजार जाने की भी फुर्सत नहीं मिलती। 'कारबी दरबार' का गठन करने के लिए सैमसन इंति के यहां आने की बात सुनी थी। उसका क्या हुआ, कोई खबर नहीं मिली। मिशन के कामों में गए बगैर भी तो काम नहीं चलता। क्या करूं, मेहेइ, लाचार हो गया हूं।"

"बात तो सही है। मगर अंहेइ, एक बात है, यह 'कारबी दरबार' किसके लिए है ? वे इंति कौन हैं ? हमें तो इन सब बातों की कोई खबर ही नहीं मिलती।" बड़ी व्यग्रता से उसने लारेंस से पूछा।

"चालना के पास के कठालगुरी में कारबी लोगों ने मिलकर 'कारबी दरबार' का गठन किया था, क्या आपको यह पता नहीं है ?"

"बिल्कुल नहीं। बात क्या है, बताइए न, मैं सुनना चाहता हूं।"

तभी अंदर से दो कप चाय लिए लारेंस की पत्नी बाहर आई। सारइक की ओर एक कप बढ़ाते हुए उसने कहा – "अरे, भैया, आप हैं ! आज क्या सोचकर इधर का मुंह किया ?"

"चला था लांसिंबार की तरफ ! राह में तुम लोगों के यहां भी चला आया। सकुशल हो न ?"

"जी हां, हैं ! ठीक है, और कुछ तो है नहीं, एक कप चाय ही पी लीजिए।"

"ठीक है, ठीक है, यही काफी है।" कहते हुए सारइक ने चाय की चुस्की ली।

दोनों को चाय देकर वह फिर अंदर चली गई।

लारेंस ने बात फिर शुरू की। चाय की चुस्की लेते हुए सारइक उसकी बातें सुनता रहा :

"समझे न ! सेमसन इंति नगांव का रहने वाला था। गोलाघाट के थेंकुर इंति का लड़का बी. ए. पास करने वाला एकमात्र कारबी आदमी है। आजकल वह स्कूल सब-इंसपेक्टर का काम कर रहा है। उसी ने कुछ लोगों को लेकर 'दरबार' का गठन किया है। उस दरबार का उद्देश्य है, एक अलग कारबी जिले का गठन करना। आजकल ब्रिटिश सरकार के खिलाफ देश भर में आंदोलन चल रहा है। इसी का फायदा उठाकर उसने 'दरबार' के जरिये साहब को समझा-बुझाकर अलग कारबी जिला बनवाने की बात सोची है। हमारे बीच शिक्षा की कमी है, ऐसी स्थिति में हमारे 'आरलें' लोगों के दिल की बातें भला ब्रिटिश-सिंह के सामने जबान खोलकर कौन कह सकता है ! मौजादार खरसिंह तेरां हमारे एकमात्र मेंबर हैं।[1] पर वे सरकार के खिलाफ यों ही आवाज नहीं उठा सकते। जनता की ओर से ही आवाज उठानी होगी। जनता का बल साथ रहे तो मेंबर तेरां भी वहां इस बात का जिक्र कर सकते हैं। समझे न, मेहेइ ?"

"हां, बात तो सही है। मगर अंहेइ, ये खरसिंह तेरां हैं कौन ?"

"अरे वही, जो हमारे नेता हैं। शिलांग असेंबली के जो मेंबर हैं।"

"हां, अब याद आ रहा है। वही न, जिन्होंने जाफं में या वैसी ही किसी जगह सभा बुलाकर गवर्नर साहब का अभिनंदन किया था। वे ही हैं न ?"

"हां, वे ही ! सन् 1939 के दिसंबर में गवर्नर सर नेइल रीड साहब से मिलकर उन्होंने कारबी लोगों के दुख-दर्द की बातें बताई थीं। अब हमारे लोग अगर एकजुट होकर रहें तो काम बन जाएगा।"

"हां, लोग एकजुट होकर रहें तो उन्हें भी बल मिलेगा और हमें भी फायदा पहुंचेगा।"

"ऐसे ही कुछ उद्देश्य लेकर इंति महोदय के हमारे यहां आने की बात है। दान-चंदे आदि के साथ-साथ इस अंचल की जनता का मनोभाव जानने के उद्देश्य से भी वे इस अंचल में आने वाले हैं।"

"हां, ब्रिटिश शासन के खिलाफ आंदोलन चल रहा है, पादरी साहब ने यह बात तो मुझसे कही थी। पर दरबार के बारे में ही कोई पता नहीं चला था। खैर, खबर बड़ी खुशी की है।

---

1. स्व. खरसिंह तेरां असम लेजिस्लेटिव कौंसिल में सन् 1937 से ही कारबी जनगोष्ठी के एकमात्र सदस्य थे।

अपना एक जिला बन जाए तो अच्छी ही बात है। हमें भी उसकी सूचना-ऊचना देते रहना। हो सकता है कि अपनी ओर से भी हम कोई मदद पहुंचा सकें। ऐसे कामों में तो सब को एकजुट होना ही अच्छा है। है न?"

"जरूर, जरूर! इन कामों में भला हिंदू या ईसाई का क्या अंतर हो सकता है? ठीक है, इंति महोदय आएंगे, तो हम भी आपको खबर जरूर देंगे।"

"ठीक है।" चाय का कप एक छोटे-से स्टूल पर रखकर सारइक ने सहमति प्रकट की।

पान-तांबूल लेकर लारेंस की श्रीमती अंदर से निकल आई। उसके दिए एक तांबूल को मुंह में डालकर सारइक ने पूछा – "आप लोगों के परिवार का समाचार कैसा है?"

"परिवार का समाचार क्या बताएं? बच्चे तो पांच हैं। तीन लड़के, दो लड़कियां। बड़ा लड़का विवाह करने के बाद आजकल डंका में रह रहा है। बड़ी लड़की नगांव के मिशन स्कूल में पढ़ती है। दो छोटे बच्चे शिलांग में पढ़ रहे हैं। हमारे साथ तो बस छोटी लड़की ही रहती है।"

"खैर, कोई बात नहीं। ईश्वर सबको सकुशल रखे।"

"जी हां, भैया! बड़ी खींचतान के बीच लड़के-लड़कियों को पढ़ा रही हूं!" पास के पीढ़े पर बैठी लारेंस की श्रीमती ने कहा।

"और आपका परिवार?" लारेंस ने पूछा।

"लड़कियां तीन, लड़का एक है। दो लड़कियों का विवाह तो कर दिया। घर में जो लड़की है, उसकी भी शादी की उम्र हो आई है। लड़का तो अभी बहुत छोटा है। स्कूल में जा सकने लायक भी नहीं हुआ है।"

"हां, समझते हैं न, उसे स्कूल जरूर भेजिए। आजकल जमाना बदल चुका है। आप तो उसे पढ़ने के लिए हमारे यहां भी भेज सकते हैं।"

तभी फ्राक पहने नन्ही लड़की स्लेट-किताब लिए दौड़ती हुई आकर घर में घुस गई। लारेंस ने बताया – "यह मेरी छोटी लड़की एलिजा है। नगांव में रहने वाली का नाम है थेरेसा।"

"हां, आप लोग तो कम-से-कम अपने लड़के-लड़कियों को नए ढंग से सोचना-समझना सिखा रहे हैं। हमसे तो उतना भी हो नहीं पा रहा।"

तांबूल चबाते हुए सारइक ने लारेंस की बड़ाई की, फिर सूरज की ओर नजर डाली। उसने देखा, सूरज ढलने लगा है। लारेंस की ओर देखते हुए वह बोला – "काफी देर हो चुकी। अब ज्यादा देर नहीं कर सकता। दिन रहते लांसिंबार पहुंच जाएं तो अच्छा हो।"

लारेंस ने पूछा – "लांसिंबार क्यों जा रहे हो?"

"सुना है, मेरी मंझली बिटिया कुछ बीमार है, जरा खबर लेता आऊं।" दीवार से लगी अपनी बंदूक को हाथ में उठाकर सारइक बोला।

"ठीक है, ठीक है।" लारेंस ने विदा देते हुए कहा – "आप बीच-बीच में आते रहें।"

लारेंस की श्रीमती की ओर देखते हुए सारइक ने आवाज दी – "नी मैन, मैं अब चल रहा हूं।" लारेंस और उसकी श्रीमती ने हंसते हुए उसे विदा किया। एलिजा घर के अंदर दरवाजे के पास से झांकती हुई जाते हुए सारइक की ओर देखती रही।

लांसिंबार की दिशा में सारइक नीचे उतर गया। तंबाकू की पत्ती को लपेटकर बनाई गई सिगार पीते हुए वह यह बात सोचता हुआ चला जा रहा था कि इस लारेंस का बाप कारबी नीति-नियम को कट्टरता से मानने वाला अगुआ आदमी था। लेकिन बेटे ने ईसाई होने के बाद अपना नाम बदलकर लारेंस रख लिया है। इसके लड़के-लड़कियों के नाम भी कैसे अजीब ढंग के हैं। कावे, कादम, हुनमिली – ये नाम कितने सुंदर हैं। भला धर्म बदल लेने से क्या नाम भी बदल लेना चाहिए? हम तो देख रहे हैं कि इन मिशनरियों के आने पर हमारे समाज में अमृत के साथ-साथ विष भी पैदा हो रहा है।

सारइक ये बातें सोचता हुआ संकरी-सी पगडंडी से आगे बढ़ता गया।

14

सारइक अलाव के पास बैठा हुआ एक अधूरे 'दोण'[1] के ऊपरी सिरे पर बांस की खपच्ची बांध रहा था। खींच-खींचकर बांधते-बांधते अचानक बेंत टूट गई। टूटी बेंत को फेंककर उसने पत्नी को पुकारा – "अमफू की मां, एक बेंत ले आना। 'होंकुप'[2] की दीवार पर बेंत टंगी है।"

पत्नी ने अंदर से हेमाइ को पुकारा! सुनकर सारइक ने कहा – "उसे मैंने रिसोबासा के यहां भेजा है। वह अब तक नहीं आया।"

पत्नी ने एक बेंत लाकर उसके हाथ में थमा दी और पास ही बैठ गई। बेंत चीरते हुए सारइक बोला – "आजकल जमाना बदल रहा है। अब अपने लड़के-लड़कियों पर ध्यान दिए बगैर काम नहीं चलेगा। हेमाइ भी इधर बड़ा हो आया। देश-भर में लड़के स्कूलों में पढ़ रहे हैं। हेमाइ को भी पढ़ाना-लिखाना है। मैं सोच रहा हूं, उसे कामपुर के धनेश्वर मास्टर के यहां रख आऊं। वहां रहकर ही वह पढ़े-लिखे।"

हेमाइ को कामपुर में रख आने की बात सुनते ही कासां रंहांपी चौंक पड़ी। आंखें फाड़कर पति की ओर देखते हुए वह बोली – "हेमाइ को आप कहां रखेंगे? कामपुर में? ओ ईश्वर! इतनी दूर क्यों रखना? यह नन्हा बच्चा भला वहां कैसे रहेगा? जरूरत नहीं स्कूल में पढ़ने-वढ़ने की। और भी एक बात है न, अगर वह स्कूल में पढ़ेगा तो हमारी भैंस को कौन चराएगा?" कारण दिखाते हुए उसने पति की बात का विरोध किया।

"अरे, तुम समझतीं क्यों नहीं? क्या भैंस चराते रहने से ही उसका जीवन चलेगा? हम

---

1. बांस की पतली सिरकी से बुना हुआ बड़े टोकरे-जैसा पात्र।
2. बड़े घर के सामने के कमरे का नाम। इसके सामने की ओर दीवार नहीं होती।

लोग खुद तो अंधे ही रह गए। अब सब कुछ समझने-बूझने के बाद मैं उसे भी अंधा बनाए रखना नहीं चाहता। लड़कियों की किस्मत में तो जो होना था, हुआ। अब तो आंखों से दिन-दुनिया को देखे बगैर पहले की भांति 'सारथे' का दायित्व पाने में भी खींचातानी होने लगी है। गांव के लोगों को समझाने-बुझाने से कोई फायदा नहीं। बच्चों को पढ़ाने की बात पर जबान से तो 'हां' कह देते हैं, पर उन्हें स्कूल भेजने के नाम पर पीछे हट जाते हैं। लेकिन अब हमारे गांव के लड़के बाहर जाकर पढ़ें-लिखें।" बेंत की गांठों को खींच-खींचकर मजबूती से बांधते हुए उसने पत्नी को समझाने की कोशिश की।

"मैं तो कुछ भी समझ नहीं पा रही हूं, आप अपने मन में क्या सोच रहे हैं। ईश्वर ही जाने कि उसकी किस्मत में क्या बदा है?" लंबी सांस लेकर उसने कहा।

"यह बेंत भी, लगता है कच्ची है। आजकल तो इधर पुष्ट बेंत मिलना भी मुश्किल हो गया है। न जाने कैसा जमाना आ गया।" टूटी बेंत को कटारी से खुरचते हुए वह पहले के प्रसंग से हट आया।

पत्नी ने उसकी बात पर अपनी राय दी – "इन विधर्मी लोगों के इधर आने के कारण ही लोंरी में अभाव, दुख-कष्ट आदि बढ़ गए हैं, ऐसा हमारे हाबेसिको ने बताया था।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता। मेरे विचार से तो जमाना ही बदल गया है। लारेंस अपने लड़के-लड़कियों को पढ़ा-लिखा रहा है, अच्छा ही कर रहा है। विधर्मियों के आने पर ही तो उसकी आंखें भी खुली हैं।"

"कौन लारेंस? ओ, वही विधर्मी क्रिस्तान न? छिः!"

"हां, क्रिस्तान होने पर भी वह आदमी अच्छा है। हाबेसिको-जैसा शराबी, अधिकार-लोभी आदमी वह नहीं है।"

"विधर्मी-कुजात के लिए अच्छे-बुरे की क्या बात है, सभी एक जैसे होते हैं।"

"अमफू की मां! तुम्हारी धारणा गलत है।" कहकर सारइक ने 'लोरीं' पत्ते में लपेटी तंबाकू-पत्ती को जलाकर कश ली और काफी धुआं मुंह से निकालकर छोड़ दिया। पत्नी के मन में बसी गलत धारणाओं के विरुद्ध उसका मन विद्रोह कर उठा। अंदर से अनायास छोड़े हुए धुएं ने मानो मन की उस बेचैनी से उसे कुछ हद तक छुटकारा दिला दिया। जलती हुई तंबाकू-पत्ती को अलाव से बंधे काठ पर रख वह फिर 'दोण' बांधने में जुट गया। दांतों से खींचकर गांठ को मजबूत कर रहा था, तभी बाहर से किसी की आवाज आई – "मुखिया दादा, घर में हो?"

सोया हुआ कुत्ता भौंक उठा। सारइक ने 'सि-इत बाखर' कहकर उसे डांटा। डांट सुनकर कुत्ता फिर शांत गया और आंखों के सफेद कोण निकाले संत्रस्त-भाव से सीढ़ी की ओर देखता रहा।

सारइक ने पत्नी से कहा – "जरा देखो, कौन है।"

"कोई आदमी आया है।" कहकर वह उठी और घर के अंदर चली गई।

एक प्रौढ़-सा आदमी मचान-घर पर चढ़ आया। वह आदमी एक सफेद धोती और लंबी बांह की कमीज पहने हुए था। सिर के झीने बालों को लाईं ओर से कंघी किए, लंबोतरे चेहरे वाला आदमी। मंझोली कद-काठी वाले उस आदमी ने छतरी बंद की और बैठकखाने में आ गया।

वह था धनेश्वर बड़ा। कामपुर का पुराना व्यापारी। मास्टरी न करने पर भी लोग उसे मास्टर बाबू ही कहा करते थे। बैठालांसो के लोगों में भी वह 'मास्टर बाबू' के नाम से ही जाना जाता था। बैठालांसों के आस-पास जो कारबी लोग रहते हैं, उन्हीं के साथ उसका कारोबार चलता था। बेंत की गांठ को आधा खींचकर सारइक कुछ क्षण उसकी ओर देखता रहा और हंसते हुए कहा – "ओ, मास्टर बाबू ! आप हैं ? ठीक से देख नहीं पा रहा था। बैठिए, बैठिए।" एक छोटी-सी पाटी को झाड़-झूड़कर कर उसने धनेश्वर को बैठने के लिए दिया। वह अपने पैरों के जूते उतारकर बैठ गया।

"मैं तो सोच में पड़ गया था कि इतनी सुबह-सुबह कौन आ गया। हम तो पहले से ही आपकी चर्चा कर रहे थे।" बेंत के छिलके बटोरकर उसने अलाव में डालते हुए कहा।

"चर्चा ? मेरे बारे में ?" धनेश्वर ने अचरज से पूछा।

"हां, आप ही के बारे में। अपने लड़के हेमाइ को लेकर हम एक उलझन में पड़े हैं।"

"कैसी समस्या ?"

"उसे पढ़ाने-लिखाने की। मैं तो सोच रहा था कि उसे आपके ही यहां रख आऊं। अब तो आप खुद आ गए, अच्छा ही हुआ।"

"हां, यह तो बड़ी अच्छी बात है। किसी तरह की असुविधा नहीं होगी मेरे यहां। रहने और खाने-पीने के बारे में आप सोच क्यों रहे हैं ? हमारे मणिराम, चन्द्र आदि तो हैं ही। उन्हीं के साथ रहकर पढ़-लिख सकेगा। 'हेड पंडित'[1] तो हमारे घर के ही हैं। यह भी वहां अपने ही घर-जैसा रह सकेगा।"

सारइक अपने थैले को टटोलकर कुछ खोजने लगा। पर उसमें कुछ न पाकर उसने पत्नी को आवाज दी – "अमफू की मां, मेरे कोट की जेब में शायद बीड़ी का मुट्ठा है, जरा दे जाना, हमारे मास्टर बाबू आए हुए हैं।"

बीड़ी की बात सुनते ही धनेश्वर ने जेब में हाथ डालकर कहा – "बीड़ी मेरे पास है, मुखिया दादा !"

उसने बीड़ी और दियासलाई सारइक की ओर बढ़ा दी। खुद भी एक बीड़ी जला ली। पत्नी बीड़ी लेकर बाहर आ गई, उसकी ओर देखते हुए सारइक बोला – "मास्टर बाबू की बात करते ही ये हमारे यहां खुद पहुंच गए। हमारी किस्मत की ही बात है !"

पति के हाथ में बीड़ी थमा कर वह धनेश्वर की ओर भौंचक-सी देखती रही। उसे इस तरह देखते देख धनेश्वर बोला – "मुखियाइन, आप बड़े गौर से देख रही हैं। क्या पहचान

---

1. मुख्य भाषा-शिक्षक।

नहीं सकीं ? आपके यहां बेचने के लिए 'एरी-बाह'[1] है या नहीं ?"

"ओ, मास्टर बाबू हैं। धीरे-धीरे अब आंख से कम दिखाई पड़ने लगा है। अभी एरी बांह कहां से आएगा ? नया 'एरा' गाछ होने पर ही होगा। आपका घर-परिवार अच्छा है न ?"

"जी, मैं तो अच्छा ही हूं मगर कारोबार ही आजकल अच्छा नहीं चल रहा है।" मुखिया सारइक की ओर देखते हुए वह फिर कहने लगा – "मुखिया दादा, आप से क्या बताएं। इन मारवाड़ियों के मारे तो कारोबार चलाना ही मुश्किल हो गया है। चापर मुख से अफीम लाकर इधर सबको अफीमची बना डाला। कपास, तिल, लाख आदि व्यापार पर एकाधिकार कर वे बैठालांसो में गद्दी जमाकर बैठ गए। और अफीम के व्यापार के जरिये मिकिर भाइयों का खून चूस रहे हैं। इसको रोकने की कोई व्यवस्था कीजिए न !"

"हां, आप सच कह रहे हैं, मास्टर बाबू ! हम सब अंधे हो गए हैं। हममें न ज्ञान रहा है, न बुद्धि है। 'सारभु बासिको' ने तो आरलें लोगों की भलाई के लिए बोथातलांसो में हाट बाजार बसाया, पर बात उल्टी हो गई। हमारे बीच 'सारमुं बासिको' का नाम-भर रह गया है, वे अब नहीं रहे हैं। दिनों-दिन मिकिर लोगों की छाती की हड्डियां ऐसी उभर आ रही हैं कि उन्हें गिना जा सकता है। ऐसी हालत में वे शायद आकाश देखकर ही लंबी सांसें भर रहे हैं।" बीड़ी का ढेर-सा धुआं छोड़ते हुए बड़े अफसोस के साथ सारइक ने कहा।

"मुखिया, आप समझ लीजिए कि मिकिर लोगों के खून से मारवाड़ी लोग ऊंचे-ऊंचे भवन बना रहे हैं। आप, लोगों की ओर से आवाज उठाकर कोई व्यवस्था हाथ में नहीं लेते तो नतीजा और बुरा होगा। अफीम का व्यापार बंद करने की व्यवस्था आप लोग हाथ में लीजिए।"

"दोष तो हमारा ही है। हाबेसिको के कारण कोई भी कदम उठाना मुश्किल हो गया है। मारवाड़ियों को खदेड़ने की बात तो दूर, उसने तो बोथातलांसो की उपजाऊ जमीन पर झुंड-के-झुंड नेपाली लोगों को लाकर बसा दिया है। न्यायसंगत बात कहने पर तो उलटे हमीं को 'हाबे' के पंचायत-विचार में दोषी ठहराया जाता है। हमने सोचा था कि हमारे इस गांव में एक स्कूल खोला जाए, पर उसी की अड़ंगाबाजी के चलते स्कूल खुलवा नहीं सका। लाचार होकर हमने सोचा है कि अपने लड़के को आप ही के यहां रख आएं।"

"क्या कहें, अपने लोग ही बुरे ठहरे। अंग्रेजों के खिलाफ स्वदेशी आंदोलन करने भर से क्या होगा जबकि हमारे अपने देश में ही दुश्मन छिपे बैठे हैं ? अगर नई पीढ़ी के बच्चों को हम शिक्षा दिला सकें तो ये दुर्नीति-भ्रष्टाचार अपने-आप मिट जाएंगे। यहां अगर आप लोग स्कूल खोलना चाहें तो पढ़ाने के लिए मैं नंदेश्वर के बेटे को भेजने की व्यवस्था कर दूंगा।"

"मैं तो काफी समझाने-बुझाने के बावजूद स्कूल खोलने के बारे में हाबेसिको का मन बदल नहीं सका। अब हम करें क्या, मास्टर बाबू ?"

तभी चाय ले अमकू बाहर आई। सीधा-सादा, मगर कोई खास जतन के बगैर उसकी

---

1. असम में एरी (एरंड) खाकर पलने वाले रेशम-कीड़े का कोया जिससे धागा निकाला जाता है।

देह का रूप देखकर धनेश्वर विमुग्ध हो उठा। 'कारबी चांग' में भी ऐसी रूपवती लड़की हो सकती है, उसने इसकी कल्पना भी नहीं की थी। कुछ क्षण उसे देखते रहने के बाद धनेश्वर ने पूछा – "क्या यह लड़की आपकी है ?"

"हां, यह मेरी छोटी लड़की अमफू है। अब तो यह भी बड़ी हो आई है।"

कुछ शरमाती-सी अमफू ने चाय की कटोरी धनेश्वर मास्टर के लिए आगे बढ़ा दी। अमफू की ओर देखते हुए धनेश्वर ने पूछा – "बिटिया, क्या तू मुझे पहचानती है ?" जवाब में अमफू ने 'नहीं' के लहजे में अपना सिर हिलाया।

"क्या तू कपड़ा बुनना जानती है ?"

'जानती हूं' के लहजे में अमफू ने सिर हिलाया।

"मेरी लड़की के लिए तू अपने पहनने जैसी एक चेलें कपड़ा बुन दे सकती है ?" शरमाती हुई अमफू से उसने पूछ लिया।

"मुझे पता नहीं।" कहकर वह अंदर चली गई।

"हां, आप चाय पीजिए, मास्टर बाबू ! लाल चाय के सिवा हम जैसे गरीबों के मचान-घर में और भला मिलेगा ही क्या ?" अब तक चुपचाप बातें सुनती बैठी हुई अमफू की मां ने कहा।

"अरे मुखियाइन, इसी से काम चल जाएगा। आप लोगों की ओर काफी दिनों से आने मौका नहीं मिला था। सबसे मिलकर अच्छा ही लग रहा है। लोंरि में हमारे बड़े भाई आदि रहते हैं न, उनकी खबर लेने इधर आ गया था।"

"हूं, वे लोग अच्छे हैं न ?" सारइक ने पूछा।

"हां, हां, वे लोग अच्छे ही हैं।"

बातें करते हुए वे चाय पी रहे थे, तभी कहीं से हेमाइ दौड़ा हुआ आया। अचानक एक अनजान आदमी को अपने बैठकखाने में देख वह सहमकर कुछ देर आंगन में ही ठहर गया, फिर धीरे-धीरे बापू के पास पहुंच गया।

धनेश्वर की ओर देखते हुए सारइक बोला – "यही मेरा लड़का हेमाइ है। इसी के बारे में आपसे कह रहा था।"

"अस् देखता हूं, तू तो बड़ा हो गया है। तुझे तो मेरे साथ चलना होगा न, हेमाइ !" उसे पास बुलाकर धनेश्वर ने कहा।

हेमाइ दोनों बांहों में पिता को भरकर कह उठा – "मैं नहीं जाऊंगा, बापू !"

धनेश्वर ने उसे समझाते हुए कहा "हेमाइ, वहां रेल देखेगा, मोटर देखेगा। स्कूल में पढ़कर ही बड़ा आदमी बन सकेगा।"

पिता के पास से हटकर वह 'हंकुप' चला गया। दीवार पर टंगे तोते को कुछ देकर प्यार जताने लगा। धनेश्वर हेमाइ के मन की भावना समझ गया। वह सोचने लगा, प्रकृति के स्नेह-प्यार की अपेक्षा रेल, मोटर आदि न आनंद दे सकती हैं और न आकर्षित ही कर सकती

हैं। उसे बहुत दिन पहले पढ़ी हुई लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा की कहानी 'मुक्ति' याद आ गई। उसने चाय की कटोरी रखकर एक बीड़ी जला ली। एक बीड़ी सारइक को दी।

"मुखिया दादा, हेमाइ को पढ़ाइए। ज्यादा देर न करें। इसी साल इसे पहुंचा आइए। इसके चेहरे से झलक रहा है कि यह पढ़ सकता है। यह जरूर पढ़-लिख सकेगा।" बीड़ी पीते हुए धनेश्वर बोला।

"हां, इस साल बरसात शुरू होने के पहले ही आपके यहां छोड़ आने की बात सोच रहा हूं।" सारइक ने कहा।

"अच्छी बात है। इसका दायित्व मैं जरूर लूंगा। अगर इसके जरिये इस अंचल में उजाला फैले तो उससे हमारा ही नाम होगा।"

पान-तांबूल सामने कर कासां बोली– "ए- ह बाबू ! मुखिया क्या सोच रहा है, पता नहीं।"

तांबूल मुंह में डालकर धनेश्वर बोला– "नहीं, नहीं, मुखियाइन ! मुखिया सही बात ही सोच रहे हैं। हां, अब मैं यहां ज्यादा देर नहीं बैठूंगा। हो सके तो आज ही घर पहुंच जाना है।"

उनसे विदा लेकर धनेश्वर जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। जूते पहनते हुए उसने सारइक से कहा – "हो सके तो इसी सप्ताह उसे भेज दीजिए। मैं भी इन दिनों घर पर ही रहूंगा।"

"ठीक है।" सारइक ने हामी भरी।

तोते को लेकर खड़े हेमाइ की ओर देखते हुए धनेश्वर ने आवाज दी – "हेमाइ बेटे, मैं चल रहा हूं। पढ़-लिखकर तुझे अपने बाप-दादों के नाम को जगमग करना होगा – हां !"

धनेश्वर सीढ़ी से होकर उतर गया। हेमाइ आंखें फाड़े उसकी ओर देखता रहा ! धनेश्वर के ओझल हो जाने पर वह पिता के पास आया और पूछा – "वह कौन है, बप्पा ?"

"मास्टर बाबू हैं ! उन्हीं के यहां रहकर तुझे स्कूल में पढ़ाई करनी होगी। समझा ?"

यह सुनकर हेमाइ मां के पास आया। मां चाय की कटोरियों को सहेज रही थी। हेमाइ की छलछलाई आंखें देखकर बोली – "अरे, तेरे बापू तो ठिठोली ही कर रहे हैं। तू तो बिल्कुल दुखी हो गया।"

सारइक ने पूछा – "हेमाइ, रिसोबासा घर में है या नहीं ?"

"नहीं हैं ! सुना है, खेत में गए हैं !" हेमाइ ने भरे गले से जवाब दिया।

अधूरे दोण की किनारी बांधने के काम में सारइक फिर जुट पड़ा। दोपहर हो आई। मां के पीछे-पीछे हेमाइ भी घर के अंदर चला गया। किनारी बांधते हुए सारइक सोच रहा था – रिसोबासा से हेमफू देव की पूजा करवाकर हेमाइ को जल्द ही कामपुर रख आना होगा। कौन जाने, देर होने पर फिर कौन-सी अड़चन आ जाए ?

15

सारइक के घर के बाहरी दरवाजे के पास रिसोबासा पूजा कर रहा था । हेमफू देवता की पूजा ।

'राहि-चोवा' पूजा (राशि-गणना की पूजा)।

हेमाइ को पढ़ाई के लिए कामपुर जाना है ।

सारइक की इच्छा थी कि यात्रा से पहले उसकी राशि-गणना द्वारा सगुन-विचार कर लिया जाय ।

इसके लिए सारइक अच्छा दिन-वार, शुभ-लग्न देखकर बेटे की मंगल-कामना करते हुए हेमफू देव को नैवेद्य चढ़ा देना चाहता था ।

आज मंगलवार है ।

शुक्लपक्ष की सप्तमी तिथि ।

चंद्रमा की ऊर्ध्वमुखी गति !

दिन भी अच्छा है । आकाश नीला है, मेघ-मुक्त ।

दिन-वार, तिथि आदि अच्छी तरह देख-भालकर ही सारइक ने रिसोबासा को पूजा करने के लिए बुलवाया है ।

हां, आज की यही पूजा हेमाइ के पूरे भावी जीवन की रूप-रेखा तय करेगी । हेमाइ के दो-एक दोस्त भी आंगन में आ पहुंचे थे ।

रिसोबासा ने अपने बंधे जूड़े में तुलसी की डाली लगा रखी थी । केले के दो कोमल पत्ते बिछाकर पूजा की वेदी सजाई थी । मंत्र पढ़ता हुआ चावल, चावल के आटे, तुलसी आदि वे देवता को चढ़ाते जा रहे थे । वेदी के सामने बांस से बना एक त्रिशूल गाड़ा हुआ था । त्रिशूल के पास ही लौकी का छोटा-सा पात्र 'हरबं' रखा था । रिसोबासा ने मंत्र पढ़ते हुए तुलसी की एक डाली केले के पत्ते में लपेटकर उससे 'हरबं' के मुंह को बंद किया । वेदी के बीचोंबीच पीतल की एक अंगूठी और चांदी के एक पुराने सिक्के की स्थापना की । उस स्थापना के ऊपर पवित्र हाथ से एक अंडा रख दिया । वेदी के नीचे लकड़ी के जलते अंगारों से धूप का धुआं निकल रहा था ।

वहां बांग देने वाले एक लाल मुर्गे को नैवेद्य के रूप में बलि चढ़ाने हेतु रखा गया था । धूप के उस धुएं से मुर्गा परेशान हो रहा था ।

हेमाइ की सकुशल यात्रा और उसके उद्देश्य की सफलता हेतु मंगलकामना करते हुए रिसोबासा बड़े भक्ति-भाव से मंत्र पढ़ने लगे –

"एहेम-एहेम हेम आरनाम
जोपे दाप आरनि

जो पेदाप आदाप
सूरि आलाम कालि
जो-ओसा आप्राण इसि
ओ सा आमुइ इसि
दरबार दुन उन पुते
दरबार खें उन पुते
वोमुत नांथान मेसेन
वो कान नांथाम मेसेन
वो मुत नांपारए फ्रात
वोकान नांपारए फ्राभ
निहां पाफु मेसेन
निजां पाफु मेसेन
सेदिप नांथान पनरि
सेनाप नांथान पनरि
एहेम एहेम हेम आरनाम !"

(यानी – ओ गृहदेवता, हेमफू ! आज के इस पवित्र प्रभात में ओसा (नाती) के समूचे जीवन में इसकी बाहर की यह यात्रा यदि तुम्हारे विचार से शुभ हो, तो हे ईश्वर, इस पवित्र पक्षी को सादर ग्रहण करो । कृपा करो ।)

बड़े विनम्र भाव से रिसोबासा ने हेमफू देवता की वंदना की । हेमाइ भी अपने दोस्तों के साथ वेदी के पास बैठा बड़ी तल्लीनता से पूजा देख रहा था । सारइक केले के पत्ते, बांस के कोमल तने से बने 'खरिसा' नाम के खाद्य-पदार्थ तथा दूसरी सामग्रियां लाने, जुटाने में लगा था । स्तुति-मंत्र पढ़ना समाप्त होने पर रिसोबासा ने उस मुर्गे के दो पंख उखाड़ लिए और मंत्र पढ़ते हुए बड़े जतन से उन्हें वेदी पर प्रतिष्ठापित किया । मुर्गे की बलि देने का समय आ गया, यह समझकर सारइक पुजारी के पास आ गया । मुर्गे के गले पर कुछ चावल रख, कटारी से गर्दन काट डाली । और मुर्गे का कुछ खून वेदी पर छिड़क दिया । हरबं पर भी कुछ खून लगाकर उखाड़े हुए पंख उस पर लगा दिए और मुर्गे को धीरे से खुले आंगन की ओर फेंक दिया । इसके बाद वेदी के पास रखे चावल में से कुछ चावल हाथ में ले रिसोबासा छटपटाते, लुढ़कते मुर्गे की ओर फेंकते हुए प्रार्थना करने लगे –

"हो...
सांतेत नांलो,
सांति नांलो !
ला ओसा आप्राम इसि
ओसा आमुइ इसि
दरबार दुनउनपो

दरबार सेंउनपो पुते,
नांकान नांपाबए फ्रात
नां चिक्लो केवान आसो
नां आरनि केवान आसो,
चिक्लो एलांफ्रं आरनि एलांफ्रं
हिथि आरनि बरवा आरनि
काम बाहा काम बाता
ओसा आप्राण इसि
ओसा आमुइ इसि
येकदुन रेदुनपो पुते
आरबुं-आरफे नां पांनो पामे था।"

(यानी – ओ चांद और सूरज की संतान, आज की इस पवित्र तिथि में, तुम्हें हमने हेमफू देवता के लिए उत्सर्गित किया। अगर तुम्हारा विचार है कि हमारे इस नाती के समूचे जीवन में उन्नति होगी, तो ओ देवता की संतान, तुम सादर विनम्र भाव से देवता के चरणों में उपविष्ट हो जाओ

सभी उछलते हुए मुर्गे की ओर नजर लगाए हुए थे। वेदी के पास बैठा सारइक भी बड़ी उद्विग्नता से मुर्गे की ओर देख रहा था। मचान के ऊपर से अमफू की मां, अमफू और कुछ औरतें भी उद्विग्नता-भरे उस चरम क्षण की प्रतीक्षा बड़े ही आग्रह से कर रही थीं। कुछ देर तक उछलकर पूरब की ओर सिर किए मुर्गा दाहिनी करवट पड़ गया और शांत हो गया। रिसोबासा ने उस शांत मुर्गे के शरीर को हाथ से थपथपाकर जांच की कि वह जिंदा है या नहीं ? फिर हंसते हुए मृत मुर्गे को उठाकर वेदी के पास ले आया। सारइक की ओर देखते हुए उसने कहा – "हमारे ओसा (नाती) की किस्मत अच्छी है। मेरी धारणा है, आगे चलकर यह साहब बन सकेगा। अच्छा, अब हम जरा देखते हैं कि इसके पेट का भीतरी हिस्सा कौन-सा संकेत देता है ?"

उसने नन्ही कटारी से मुर्गे का पेट चीरकर उसकी उसकी आंतें निकालीं। आंत को पानी से धो-धाकर जांचा और बोला – "आज पत्ता बिछाते ही समझ गया था। इसकी आंतें भी वही बात बता रही हैं। 'ओसा' जिंदगी में जरूर प्रगति कर सकेगा।"

"यह तो ईश्वर ही जानें। मैं तो कारबी नियम का पालन कर रहा हूं।" कहकर मुर्गे को काट-कूटकर साफ करने के लिए सारइक अंदर ले गया। अमफू की मां भी मांस रांधने का इंतजाम करने के लिए अंदर चली गई।

वेदी पर स्थापित अंडे को काटने के बाद रिसोबासा एक-एक कर सारे सामान सहेजकर स्थापना हटाने लगा। अंगूठी को उठाकर पानी से धोया और अपने छोटे-से थैले में डाल लिया। सिक्के को हाथ से उठाकर कटारी से चोट कर नौ बार आवाज निकाली। आवाज

निकालते समय वह कहता गया –

"इसि, हिनि केथम, फिल, फो,
थेरक, थ्रकसि, नेरकेप, सेरकेप,
साखि आवे बादि आवे पुना – सेरकेप;
निहां, निजां, सिक्लो - आरनि, थेकदुन द
रेदुनदे पुना सेरकेप, सेरकेप।"

(यानी – आज की इस पवित्र पूजा में प्रदर्शित सत्य के साक्षी स्वरूप सूर्य को अपने बीच में लिए दसों दिशाएं प्रकाशमान हो रही हैं। इस सत्य का कोई उल्लंघन न करे।)

पूजा-कर्म की समाप्ति करने वाले 'सेरकेप' अर्थात नौ संख्या वाले शब्द गहरे तात्पर्य के बारे में साइरक बैठकखाने में ही बैठकर सोच रहा था– सचमुच, दसों दिशाओं में से नौ दिशाएं तो पुजारी से दूर ही रहती हैं। शेष एक दिशा 'अधः' की अवस्थिति ही पूजा-वेदी को धारण किए रहती है। दूर रहने वाली नौ दिशाओं को सुनाकर उन्हें 'अधः' की स्थिति में केंद्रित करने के गहरे तात्पर्य पर सारइक सोच-विचार करता रहा। तो क्या, यह ऐक्य-शक्ति ही ईश्वर है? कारबी लोगों की विचारधारा में जिज्ञासा जीवित है कि इस महान मंत्र का स्रष्टा भला कौन रहा होगा?

तभी, रिसोबासा के मचान पर चढ़ते ही सारइक का भावना-प्रवाह रुक गया। उसने आंगन की ओर नजर डाली – हां, सूरज अब तेज हो आया है।

16

सुबह होते ही हेमाइ का तोता 'ओ-को', 'ओ-को' आवाज करता चीखने लगा। पलाश के फूल-जैसी टह-टह लाल, टेढ़ी चोंच और घने हरे पंखों वाला तोता हंफारला की दीवार पर चढ़ता-उतरता टहलता रहता था। मगर आज तो वह अशांत हो उठा था। उसकी नन्ही आंखों में भी बेचैनी के निशान थे। वह दीवार को नोच-नोचकर तोड़ रहा था। भला उसके मन में ऐसा विक्षोभ क्यों है? मानो खुले आकाश में उन्मुक्त विचरण पसंद करने वाले विहग का चिरंतन विद्रोह-भाव हो। भला पक्षी भी कहीं बंधन का जीवन पसंद करते हैं?

अंदर से निकलते हेमाइ को देखकर वह तोता ज्यादा बेचैन हो उठा। कई बार 'ओ हेमाइ', 'ओ हेमाइ' कहकर पुकारा। पर हेमाइ न जाने क्यों आज उसकी आवाज सुनकर भी दूसरे दिनों की भांति उसकी ओर नजर न डाल पा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो तोते को सहलाकर प्यार जताने की इच्छा भी न रही हो। उसके मन के आनंद को जैसे कोई जबरन छीन ले गया हो।

आंखें फैलाए हेमाइ ने तोते की ओर नजर डाली। उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह चली।

ये किसके आंसू हैं ?

तोते से बिछुड़ने की वेदना के या किसी और के ?

हां, उसकी वेदना भी तो आज उस तोते-जैसी ही है। रंमिली का हेमाइ ! आज से ही बंधन में पड़ जाना पड़ेगा। उसे एक अलग ही परिवेश में रहना पड़ेगा जो उसका सर्वथा अनजाना है। तरह-तरह की शंकाओं से उसका मन भर उठा। उसी परिवेश में रहते हुए उसे अपने मन और जीवन को एक नए रूप में गढ़ना होगा। हेमाइ के लिए वह जीवन बिल्कुल नया होगा।

रंमिली का खुला आकाश, बरापानी की चिर-प्रवाहित धारा, भैंस की पीठ पर चढ़ने का उन्मुक्त आनंद – सब आज से ही हेमाइ को खोना पड़ेगा। लंकिरी-लारसिका आदि के साथ घिला का खेल खेलकर मिलने वाला आनंद भी गंवाना पड़ेगा। हेमाइ एक नया ही हेमाइ बन जाएगा। उस तोते की भांति हेमाइ को भी नई बोली सीखनी होगी, नया लहजा सीखना पड़ेगा।

तोते को देखकर वेदना से बोझिल उसका मन और ज्यादा गंभीर हो गया। वह सोचने लगा कि 'बि-वोकक' के उस 'करै' के पेड़ से इस तोते को पकड़कर न लाता तो वही अच्छा हुआ होता। तोते की बात सोचकर उसे पछतावा होने लगा। उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। तभी तोतों का एक झुंड शोर करता हुआ उनके गांव के ऊपर से निकल गया। हेमाइ का तोता अपना सिर टेढ़ा कर आकाश की ओर बड़ी लाचारी से देखने लगा, पर घर की छत ने उसे फैला आकाश भी देखने में रुकावट खड़ी कर दी। तोते की लाचारी ने हेमाइ के मन को भी झकझोर दिया। उसका मन हाहाकार कर उठा। तोते की पीठ को सहलाते हुए उसने कहा – "केकसो, तू न रोना ! मैं तो फिर लौट आऊंगा न !"

उसकी आवाज टूटती-सी निकल रही थी। वियोग की वेदना उसे शोकाकुल कर रही थी। जहां-तहां पड़े हुए 'घिलाओं' को चुनकर उसने एक छोटी-सी झोली में भर लिया। फिर एक-एक कर अपने खेल के सामानों को सहेजने लगा। लट्टू की रस्सी को घुमाते-घुमाते उसे पिता की कही हुई बात याद आ गई। पिता ने समझाया था – 'अब जमाना बदल रहा है। लिखे-पढ़े बगैर अब इंसान को खाना-पीना जुटा पाना भी मुश्किल हो गया है। हमारे दिन तो अब बीत गए ! आगे भयावह दिन आ रहे हैं। अगर पढ़ेगा-लिखेगा नहीं तो खाना कहां से जुटा पाएगा ? सुख-शांति तो तकलीफों के जरिये ही मिलती है।' इन बातों का हेमाइ के मन पर भी बड़ा प्रभाव पड़ा। उसके छोटे-से मन में नया उत्तरदायित्व-बोध जग उठा। अपने घर से दूर जाने की आशंका से उसके मन में जो वेदना हो रही थी, उससे कुछ हद तक उसे छुटकारा मिल गया। एक नई जिंदगी की आशा-अकांक्षाओं ने उसके मन में नया आलोड़न उत्पन्न कर दिया। मां ने उसे खाना खाने के लिए बुलाया। खेल के सामान सहेज कर वह अंदर गया और थाली के पास बैठ गया। उसे अनमने भाव से खाना खाते हुए देख मां ने कहा – "खा, मेरे लाल ! तू अफसोस न कर। अच्छी तरह से पढ़ना-लिखना। हमारे दुख-कष्ट का तो पार है ही

नहीं। तुम लोगों को आदमी बना सकें तो हमें भी शांति मिलेगी। मैंने तेरे लिए एक बूटेदार 'पोहो'[1] और एक जाम्बरं'[2] बुनने के लिए दिया है। जब वे तैयार हो जाएंगे तो तेरे पास भिजवा दूंगी। अपने संगी-साथियों से मिल-जुलकर रहना। मास्टर बाबू की बात मानना। हमारे न रहने पर वे ही तेरे मां-बाप हैं।"

हेमाइ की आंखें भर आईं। मां की बातें सुनते हुए उसने खाना मुंह में डाला। उसकी थाली की ओर देखते हुए मां ने पूछा – "हेमाइ बेटे, क्या और जरा-सा भात दूं? कच्चू और बांस के 'गाज'[3] के साथ बनाई तरकारी है, जरा-सी सब्जी देती हूं, खा लो। बेटे को जाते समय मछली का एक टुकड़ा भी खिलाकर भेज न सकी। अमफू के बप्पा, क्या आपको थोड़ा-सा भात दूं?" जरा-सी तरकारी हेमाइ की थाली में डालते हुए उसने पति से पूछा।

थाली आगे बढ़ाकर सारइक ने परिस्थिति के बारे में पत्नी को समझाते हुए कहा – "काम के दबाव के मारे मछली पकड़ने का समय भी नहीं निकाल सका। वैसे भी लांपी नदी में क्या अब पहले जैसी मछली-वछली रह गई है? देश में ये बाहरी 'बाल'[4] जबसे आए हैं, यहां मछली-वछली की भी कमी हो गई है।"

खाना खाकर हेमाइ बाहर निकल आया। बहन उसके जरूरी कपड़ों को सहेज कर थैले में भर रही थी। बहन की ओर देखते हुए उसने कहा – "नी अमफू, मेरे उस 'केकसो' की देखभाल तू अच्छी तरह से करना।"

"तू भला उस तोते के लिए इतना सोच-विचार क्यों कर रहा है? नई मकई हो जाने पर उसे अच्छी तरह से खिलाऊंगी। समझा!"

"हां, अच्छी तरह से देखभाल करना! कहीं जो वह बेचारा तड़प-तड़प कर मर जाए तो मुझे बड़ा दुख होगा।"

"अरे, हां मैं उसका ठीक से ध्यान रखूंगी। तू वहां सिर्फ अच्छी तरह से पढ़ना-लिखना।" थैले को बांधते हुए उसने भाई को आश्वासन दिया।

खाना खाकर सारइक भी बैठकखाने में आ गया। एक बीड़ी पीते हुए उसने पत्नी से कहा – "लौटने में दो-एक दिन देर भी हो सकती है। हेमाइ का सारा इंतजाम करने के बाद ही लौटूंगा। लिंदक के लड़के से कह दिया है, भैंसों पर जरा नजर रखे। लौटकर मैं अलग इंतजाम करूंगा। तुम भी खबर लेती रहना।"

"घर-बार के लिए आपको सोचने की जरूरत नहीं। लड़के का इंतजाम अच्छी तरह करके ही आप आएं।" पत्नी ने हेमाइ की सुरक्षा की बात सोचकर पति से कहा।

"जब धनेश्वर मास्टर हैं, डरने की कोई बात नहीं है। फिर भी सभी इंतजाम पूरा करके ही मैं आऊंगा। बंदूक को अच्छी तरह से रख देना। परेशानी में डालने वाली कोई चीज मैं साथ ले जाना नहीं चाहता।"

1.,2. पोहो, जाम्बरं – कारबी लोगों का पहनावा।

3. बांस का कोमल तना।

4. विदेशी, बहिरागत।

सारइक ने थैले को कंधे पर लटका लिया।

"अमफू ! 'सांदह'[1] की पोटली दे दी है या नहीं ?" मां ने पूछा।

कुछ भाव-विह्वल होकर अमफू ने जवाब दिया – "हां, दे दी है। बापू की झोली में ही है।"

गंभीर होकर सारइक ने कहा – "काफी दूर का रास्ता है। सूरज डूबने के पहले ही वहां पहुंच जाना अच्छा रहेगा। हेमाइ, चल !"

दमकता हुआ सूरज टीका पहाड़ के ऊपर पहुंच गया था। सारइक के सिर पर वही जानी-पहचानी पगड़ी थी। वह एक पुराना काला कोट और घुटने तक की सफेद धोती पहने हुए था। कोट के नीचे की सफेद कमीज कुछ लंबी थी। वह धीरे-धीरे सीढ़ी के नीचे उतर गया। शहर से लाई गई कमीज और पुराना हाफ-पैंट पहने हेमाइ भी बाप के पीछे-पीछे कदम बढ़ाए जा रहा था ! उसकी आंखें भर आई थीं। टट्टी पर बैठा हुआ तोता 'ओ क हेमाइ' पुकार उठा। तोते की आवाज सुनकर उसे लगा मानो उसकी छाती फट जाएगी ! उसके कोमल मन में तीव्र हाहाकार मच गया। आंगन में गड़े लंबे बांस के सिरे पर टंगा 'नोरे'[1] हवा में चंचल होकर नाच रहा था। मां और बहन अमफू दोनों, नदी-घाट तक आगे बढ़ आईं। उनका कुत्ता बाखर भी हेमाइ के पीछे-पीछे उतरकर सारइक के पास पहुंच गया। हेमाइ चला जा रहा है, देखकर गांव के लड़कों का मन मुरझा गया था। कहां जाएगा हेमाइ ?

कामपुर ?

उनके मन में हलचल जग उठी ! भला हेमाइ वहां तक कैसे जा सकेगा, वहां वह किसलिए जा रहा है ? आदि तरह-तरह के सवाल उन्हें बेचैन कर रहे थे। गांव के बूढ़े-बूढ़ियां, बेटियां-बहुएं – सभी हेमाइ की यात्रा की मंगलकामना कर रही थीं। लंकी, बोंए, लंकिरिस आदि बाहरी दरवाजे के पास खड़े थे। उनकी ओर देखते हुए हेमाइ "अब चलूं, फिर मिलेंगे" कहता हुआ, भरे गले से उनसे विदा ले चल पड़ा।

सारइक ने नाव को ठीक-ठाक कर लिया। शांत बहती नदी के घाट पर हेमाइ आदि आकर इकट्ठे हुए। नाव पर चढ़ने के पहले दौड़ती हुई आकर कादम हेमाइ से मिली और उसके हाथ एक छोटी-सी पोटली देकर बोली – "इसमें थोड़ा-सा चिउड़ा रख दिया है। लेकिन हां, तू हमारे लिए क्या लाएगा, बता !"

कादम की दी हुई पोटली की ओर सकुचाते हुए हेमाइ ने देखा। उसे संकोच में पड़कर सोचते देख कादम हंसकर बोली – "नकलां ! कामपुर की मिठाई। समझा न।" और हेमाइ की ठुड्डी पकड़कर प्यार जताया।

उदास-से हेमाइ के चेहरे पर हंसी खिल उठी। बाप नाव पर रुका था, उसने हेमाइ को

---

1. कोमल चावल का आटा, जिसे सत्तू की तरह भिगोकर खाते हैं।
2. कारबी लोगों के मचान-घर के सामने लंबे बांस के सिरे पर बांस की फट्टियों से बनी एक चौकोर पत्ती टंगी रहती है, जो हवा में नाचती रहती है। इससे पवन की गतिविधि, दिशा आदि का अनुमान किया जाता है।

नाव पर चढ़ने को कहा। धीरे-धीरे हेमाइ नाव पर चढ़ गया।

धारा की गति के साथ नाव बह चली। तट पर मां, अमफू, कादम, दो-तीन वयोवृद्ध जन और संगी-साथी हेमाइ को विदा देकर जैसे ही वहां से हटे, हेमाइ की आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। तट पर 'कूं-कूं' करता हुआ बाखर हेमाइ की ओर देखता बेचैन-सा कूद-फांद कर रहा था। धीरे-धीरे दूर होता हुआ गांव, उसकी आंखों में आंसू भर आने के कारण अस्पष्ट-सा दीखने लगा। नदी के घुमाव पर जाकर नाव भी उनसे ओझल हो गई। हेमाइ ने चुपचाप अपने आंसू पोंछ लिए।

धीरे-धीरे नाव की गति तेज हो आई। दोपहर की धूप में नदी की लहरें दमक रही थीं। चलते-चलते नाव 'आरही केलक' पहुंची। सेनार गांव के किरी पंडित के घाट पर सारइक ने नांव बांधी। दोनों पंडित के घर की ओर चल पड़े। पंडित के घर तक पहुंचकर सारइक ने आवाज दी – "फू पंडित घर में हैं क्या?"

"कौन है?" बैठकखाने में बैठी बुढ़िया ने पूछा।

"मैं हूं!" सारइक बोला, और दोनों बैठकखाने की ओर बढ़ गए।

"ओ, कांबुरा? आइए, अस, मैं तो अंदाजा ही नहीं लगा सकी थी।" कहती हुई बुढ़िया ने एक पाटी बिछा दी! क्षण भर विश्राम कर लेने के इरादे से दोनों पाटी पर बैठ गए! पंडित की खबर लेने के इरादे से सारइक ने पूछा – "क्या वे नहीं है?"

"नहीं! इसकुर करने गए हैं। उनके आते-आते शाम हो जाएगी।" कहती हुई बुढ़िया ने खड़े हेमाइ की ओर देखते हुए कहा – "बैठ जा, बेटे! तू किसका लड़का है?"

सारइक बोला, "मेरा ही है! इसे कामपुर के स्कूल में छोड़ आने के इरादे से निकला हूं!"

"अच्छा ही किया है! क्या, कुछ खाएगा, बेटा?" कहती हुई बुढ़िया अंदर चली गई और केले की एक छीमी लाकर हेमाइ को दी! चूल्हे पर चाय रखी थी। उसी में से कटोरी-भर चाय उड़ेलकर, लोटे-भर पानी के साथ चाय की कटोरी उनके सामने रखकर बुढ़िया बोली – "आजकल बच्चों को स्कूल में न भेजा जाए तो बेकार है। दिन-ब-दिन हमारे यहां जमीन भी घटती जा रही है। विदेशी मियां आकर चारों ओर छा गए हैं! हमारे ये लिखना-पढ़ना जानते हैं, इसलिए हमारा गांव अभी बचा हुआ है। पास का इंही गांव तो मियां लोगों से भर ही चुका है। लाचार होकर हमारे लोगों को अब पास के शिड़िमारी चाय-बागान में जाकर दिहाड़ी पर मजदूरी कर गुजारा करना पड़ रहा है। क्या किया जाए? पहले का वह लोंरी तो अब रहा नहीं।"

"आप सच कह रही हैं, नी! हमारी तरफ भी यही समस्या खड़ी हो रही है।" चाय की चुस्की लेते हुए सारइक बोला।

सुख-दुख की तरह-तरह की बातें करते हुए सारइक ने चाय पीना खत्म किया। फिर बोला – "अच्छा, अब हमें और देर नहीं करनी चाहिए। हम उठते हैं! पंडित लौटें तो बता दें! लौटने में हमें दो-एक दिन लग सकते हैं।"

"अच्छी बात है ! जब हम हैं, डर की कोई बात नहीं।" उसने हेमाइ की ओर देखते हुए कहा, "जा, बेटे ! तू अच्छी तरह से पढ़ना !"

सारइक और हेमाइ कामपुर की ओर चल पड़े। मूल्यवान काठ के जंगल वाले माधवपारा पहाड़ के किनारे से होकर कामपुर जाने वाली पगडंडी लुटुमारी तक गई है। खल्वाट-जैसे दिखने वाले माधवपारा पहाड़ के सिवा इस अंचल में और कोई पहाड़ नहीं है। पहाड़ की तराई से लेकर कपिली नदी तक फैले 'बरत' नाम की झाड़ियों के विशाल जंगल के साथ ही सरकंडे, सनई आदि से भरी लंबी-चौड़ी घाटी फैली है। कुछ ही दूर से रेल की सीटी सुनकर हेमाइ ने बाप से पूछा – "बापू, यह कैसी आवाज है ?"

"यह रेलगाड़ी की सीटी है। हम अब कामपुर पहुंचने ही वाले हैं।"

रेल का नाम सुनते ही हेमाइ के कदम तेज हो गए। 'बरत' की झाड़ियों पर से हरियाली से ढका डबका पहाड़ साफ दिखाई दे रहा था। हेमाइ की उत्सुक आंखें, पहाड़ी की छाती पर रेलगाड़ी, कामपुर आदि कहां हैं, इसकी खोज-बीन में लग गईं। कुछ दूर आगे बढ़ने पर वह जगह उसे खुली-खुली-सी महसूस हुई। सामने बड़ी नदी देखकर हेमाइ ने पूछा – "बापू, यह कौन-सी नदी है ?"

सारइक ने बताया – "कपिली नदी।"

"इसे पार कैसे करेंगे, बापू ?"

"नाव है न ! वह नाव दिखाई पड़ रही है या नहीं ?"

"ओ, यह नाव तो हमारी नाव से बड़ी है।"

"कपिली नदी भी तो बड़ी है न !"

"और पश्चिम में जाने पर इससे भी चौड़ी नदी दिखाई पड़ेगी, है न बापू !"

हेमाइ की उत्सुकता देखकर बाप को बड़ा अच्छा लगा। बोला – "हां, हां, शायद दिखाई पड़ेगी। सुना है, उन नदियों में बड़े-बड़े जहाज चलते हैं।"

जहाज का रूप-रंग कैसा होगा, समझ में न आने पर हेमाइ ने उस पार के नारियल, सुपारी आदि के पेड़ों की ओर नजर डाली। उधर की परछाइयां नदी की छाती पर पड़कर कपिली की छटा और बढ़ा रही थी। वह सब देखकर हेमाइ का मन खुशी से झूम उठा। नाव वाले ने उस पार से अपनी नाव लाकर घाट पर लगा दी और पूछा – "कहां जाना है, दादा ?"

"उस पार !" कहता हुआ सारइक नाव पर चढ़ गया। हेमाइ का हाथ पकड़कर उसे भी नाव पर चढ़ा लिया।

नाव वाला नाव को कुछ दूर धारा की उल्टी दिशा में चला ले गया और फिर उसे बहाव की दिशा में धारा के साथ छोड़ दिया। नदी के बीचोंबीच पहुंचने पर हेमाइ कुछ आतंक-भरी नजरों से दोनों तटों को देखने लगा। नदी के बीच उसे ऐसा लग रहा था, मानो उनकी नाव बिल्कुल नन्ही-सी है। उसे कुछ डर-सा लगने लगा। पर नाव के धीरे-धीरे घाट पर आ लगने से उसका डर भी दूर हो गया।

तट पर उतरकर सारइक ने पूछा – "किराया कितना है ?"

"फी आदमी एक-एक पैसे ! दो पैसे दो !" नाव वाले ने कहा ।

सारइक ने कोट की जेब से तांबे के दो पैसे निकालकर नाव वाले को दिए । दोनों गांव के बीच से आगे बढ़ने लगे । कुछ दूर जाकर बाप ने उंगली से दिखाते हुए कहा – "वह रेल की पटरी है । और वह है रेलवे स्टेशन ।"

कौतूहल-भरी दृष्टि से हेमाइ ने स्टेशन की ओर देखा ।

कामपुर रेलवे स्टेशन के बीच से जाकर वे प्लेटफार्म पर पहुंचे । अब सारइक ने अपने कदम धीमे कर लिए । पिता का हाथ पकड़ हेमाइ भी डरते-डरते कदम बढ़ाने लगा । सारइक को लग रहा था, कहीं कुछ त्रुटि हो न जाए । स्टेशन पार करने के बाद उसने चैन की सांस ली । रेलवे सड़क के किनारे-किनारे होकर वे आगे बढ़ गए । हेमाइ ने देखा, रेल-मार्ग पर छोटे-छोटे पत्थर पड़े हैं जिन पर काठ के बड़े-बड़े टुकड़े सिलसिलेवार ढंग से लगाए गए हैं । उन काठों पर लोहे के दो लंबे-लंबे फट्टे सीधे लगाए गए हैं जो पूरब की ओर चले गए हैं । उन लोहे के फट्टों का आखिरी छोर कहां है ? इस विचार से दूर की ओर नजर डालने पर हेमाइ को दिखाई पड़ा कि स्टेशन के दूसरे सिरे पर लाल-सफेद धारी वाले खंभे खड़े हैं । उसने पूछा – "वह क्या है, बापू ?"

"सिगनल है । सिगनल नीचे झुकने पर ही रेलगाड़ी आती है । इसे तू बाद में देख सकेगा । अब आ जा ।"

हेमाइ का हाथ पकड़कर सारइक ने रेलवे सड़क पार करने में मदद की । रेल की पटरी पार करते समय एक चपट्टा-गोल पत्थर उठाकर हेमाइ ने सोचा – यह कितना सुंदर है । इससे बोंए आदि के घिलाओं को मारने में आसानी होगी ।

उसने उस पत्थर को पैंट की जेब में भर लिया । रेलवे के किनारे-किनारे कतारों में खंभों को देखकर अचरज से उसने पूछा – "वह सब क्या है, बप्पा ? वह जो सफेद कटोरियां लगी हैं ?"

उसके सवालों का जैसे कोई अंत ही न था ।

"वे फोन के खंभे हैं । चल, अब हम बाजार में पहुंच गए हैं ।" पिता ने कहा ।

रेलवे सड़क पार कर दोनों बाजार की ओर बढ़ गए । मारवाड़ियों के दो-एक पक्के मकान देखकर हेमाइ को आश्चर्य हुआ । उनकी ओर विस्मय से देखता हुआ पिता के साथ कठियातली की ओर जाने वाली राह से वह कुछ दूर गया । राह की दाहिनी ओर धुआं निकलती 'धान-कल' की लंबी चिमनी की ओर देखते हुए दोनों आगे बढ़ते रहे । हेमाइ की अबोध विस्मय-विजड़ित भावनाएं चिमनी के काले धुएं-जैसी ही बाहर निकलने लगीं ।

कोलतार वाली चिकनी सड़क पर कदम घिसते हुए वह सोचने लगा – कितनी चिकनी और साफ है यह सड़क ! हमारे गांव में यदि ऐसी ही सड़क होती, तो उस पर घिला खेलने में कितना मजा आता !

धनेश्वर मास्टर के घर तक पहुंचने में शाम हो आई। मास्टर के घर के पिछवाड़े बांस की झाड़ियों में मैना चिड़ियां चहचहा उठीं। उजाले से दमकते बांस के सिरे की टहनियां अंधेरे में धीरे-धीरे धुंधली-सी हो आईं।

रंमिली गांव के सारइक-हेमाइ, दोनों बेधड़क मास्टर धनेश्वर बड़ा के घर जा पहुंचे।

17

बैशाख महीने का एक दिन। सूरज ढल रहा था। धूप-धुली बरापानी की चौड़ी घाटी में दूर-दूर कुछेक सेमल के पेड़ खड़े थे। नदी किनारे की कोमल दलदली जमीन पर एक झुंड में भैंसें चर रही थीं।

वे भैंसें रंमिली गांव की थीं।

सें तेरन और लांबिरिक दोनों चरा रहे थे। लांबिरिक कुछ हट कर था। अमफू के परिवार की भैंसों को भी सें तेरन ही चरा रहा था।

भैंस की पीठ पर बैठे-बैठे उड़ते हुए बगुलों के झुंड को देखता हुआ में तेरन एक कोमल चेहरे और प्यारी-प्यारी एक जोड़ी आंखों के बारे में सोच रहा था।

सें तेरन जब अमफू की भैंसों को खोल रहा था, उस समय वह उसकी ओर एकटक देख रही थी! उसके चेहरे पर सुबह की धूप चमक रही थी। अपनी ओर देखने वाली अमफू के प्रति उसका प्यार उमड़ आया था। वह सोच रहा था, उसकी उन खूबसूरत आंखों में वह किस चीज की निशानी है? प्यारी-प्यारी-सी उसकी आंखों में मानो ऐसी भाषा का स्पंदन था, जिसे बतलाया नहीं जा सकता। पर वह अव्यक्त भाषा सें तेरन को जैसे समझ में आ गई? न जाने कैसी एक अनजानी अनुभूति ने उसके हृदय-मन दोनों को ही स्पंदित कर दिया, जिसे वह समझा नहीं सकता। सुबह के उस अनिर्वचनीय आनंद की मस्ती की याद आते ही उसका मन पहाड़ी झरने की भांति चंचल हो उठा। उसे अमफू की वह मृदुल मुस्कान याद आई। जब सें तेरन मुग्ध दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था, तब वह मंद-मंद मुस्कराती हुई अंदर चली गई थी। हाथ से भैंस की पीठ सहलाता हुआ वह कुछ देर तक अमफू के सूने मचान-घर की ओर देखता रहा।

अमफू के छलकते हुए देह-सौंदर्य के बारे में सोचते-सोचते सें तेरन को टीका पहाड़ की तराई में जंगली साग खोजते-तोड़ते समय की वह घटना याद आ गई। उसी दिन उसे युवती-शरीर के कोमल स्पर्श की ऊष्मा की पहली अनुभूति हुई थी। सांप से डरकर फिसल पड़ी अमफू ने उस दिन उसे दोनों हाथों से मजबूती से कैसे पकड़ लिया था! अमफू का वह स्पर्श कितना मधुर था! यह सोचकर सें तेरन आज भी रोमांचित हो जाता है।

जानी-पहचानी वह अमफू आज भला ऐसी छुई-मुई-सी क्यों हो गई थी? सुबह की धूप

में दमकते उसके चेहरे पर कौन-सा अनिर्वचनीय सौंदर्य देखकर वह विमुग्ध हो गया था ? खुले काले बालों में वह क्यों उतनी प्यारी-प्यारी-सी लग रही थी, सोचकर सें तेरन को अचरज लग रहा था। उसे लगा, उस दिन की उस अमफू से आज की यह अमफू मानो बहुत अलग है।

अचानक हवा का एक झोंका आया और पास के सेमल के पेड़ की रूई को उनके गांव की ओर उड़ा ले गया। हवा में उड़ती रूई को देखकर सें तेरन का मन भी नाच उठा। उड़ती हुई रूई की भांति उड़ते हुए बगुलों के झुंड, दलदल में घास चरती भैंसों के झुंड, फैले हुए हरे-भरे पहाड़ और बरापानी नदी की एकांत-प्रशांत घाटी – ये उसके कितने अपने और जाने-पहचाने हैं। मन-प्राण को उड़ा ले जाने वाले इस परिवेश ने सें तेरन को विकल कर डाला। भैंस की नकेल पकड़े, उड़ती हुई सेमल-रूई की ओर देखता हुआ मन के उन्मुक्त आवेग के मारे वह गा उठा –

"बंओइ मिर लोरि
नां पेन ने इलि –
चिरेन लं आरणि
ने सोसे लुखिमी।"

(अर्थात – मन तो मानत नहीं। तेरे पीछे-पीछे उड़ता रहता है। मैं तड़प रहा हूं। अब क्या करूं ?)

उसका गीत सुनकर तंबाकू का धुआं छोड़ते हुए लांबिरिक बोल उठा – "अरे ओ सें, तू कैसा गाना गा रहा है रे ? सुनते ही दिल पिघल जाता है। तू क्या सोचता है, मुझे पता नहीं, पर मैं सच कहता हूं, प्रियतमा से मिलन के दिन तो मैं खाना-पीना तक छोड़ दूंगा, समझा !"

"बात तो सही है रे, पर हमारी फूटी किस्मत में यह सब आशा-भरोसा न रखना ही अच्छा है।" भैंसों की ओर देखते हुए सें तेरन बोला।

"ऐसा लगता है, तू किसी के प्रेम में पड़ गया है। हां !" भैंसों को पास लाकर लांबिरिक बोला।

"नहीं रे, प्रेम क्या करूंगा ? भला मुझ जैसे भिखमंगे के प्रेम में कौन लड़की पड़ेगी ? हां, जरा अपना जलता हुआ तंबाकू देना, मैं भी अपना जला लूं।"

लांबिरिक ने अपना तंबाकू आगे बढ़ाते हुए कहा – "अरे, प्रेम तो बस प्रेम है। प्रेम में तो धनी-गरीब की बात नहीं आती। क्या तूने हमारे उन 'हाई' और 'लों तेरन' की कहानी नहीं सुनी है ? हाई की अपेक्षा लों तेरन तो गरीब था !" सें तेरन से अपना तंबाकू लेते हुए उसने कहा।

"और इसी कारण तो उनमें विवाह-विच्छेद भी हुआ। समझा ! क्या तू कह सकता है कि ऐसी बात नहीं है ? उनकी वह बात सोचने पर तो मन रो उठता है।" सें पश्चिमी आकाश पर फैले काले बादलों की ओर देखते हुए बोला।

"बात तो सही है। मगर उस रणसांतां खासिया की दुष्ट बुद्धि के कारण ही तो उनमें

विच्छेद हुआ। नहीं तो क्या लंदिली जैसा गंवार हाई को छीन ले जाता ?" उदास भाव से टीका पहाड़ की ओर देखते हुए लांबिरिक बोला।

"पर एक बात है, लंदिली अपने रूप के कारण ही बात को समझते हुए भी नासमझ बनी रही। रणसांतां जैसे लोग हमारे समाज में तो अब भी हैं। समझा !"

"क्या मालूम ? पता नहीं, तू किस अर्थ में यह बात कह रहा है। हाई-लों के गीत गाने पर तो आज भी आंखों में आंसू उमड़ आते हैं। उमरासी की रेतीली जमीन पर मौन पड़े हाई के पैरों के निशान देखकर लां तेरन के रोने का दृश्य कितना मार्मिक है ! अभिव्यक्ति की भाषा ही खो जाती है। रेतीली जमीन पर सन्नाटे में पड़े हाई के पैरों के निशानों से अपनी कांपती हुई उंगलियों से रेत को उठा-उठाकर लं तेरन ने अपनी छाती पर मलते हुए अपने को धीरज बंधाया था। कितना मर्मस्पर्शी है वह गीत ! क्या तुझे याद है 'साइदू' ? हां, ठहर, कुछ-कुछ याद आ रहा है —

"उमरासि आपाम
जंहे वो लुकां।
हाई आंके काम।
उमरासि आंहान
आसे सिहि पान
आसें सिपांसाम।"

(यानी – उमरासि की रेतीली जमीन पर पड़े हाई के पदचिह्नों पर उंगली डालकर रेत और कीचड़ उठा-उठा अपनी छाती पर मलते हुए लं तेरन अपने मन को सांत्वना देने का प्रयास कर रहा था।) गीत की कड़ी सुनाकर लांबिरिक ने पूछा – "क्यों, ऐसा ही है न वह गीत ?"

"हां, हां, तुझे तो अच्छी तरह याद है। समय आने पर तू अच्छा 'लुंसे'[1] बन सकेगा।" अपनी भैंस की नकेल पकड़कर उसे घुमाते हुए सें तेरन बोला। भैंस को लांबिरिक के पास लाकर तंबाकू का मुंह-भर धुआं ऊपर की ओर छोड़ते हुए वह फिर कहने लगा – "जरा पश्चिम आकाश की ओर तो नज़र डाल। काले-काले बादल कैसे उमड़ते चले आ रहे हैं ! तेरे कंठ से लं तेरन की वेदना सुनकर वर्षा देवी का रूप धरे हाई किस तरह से धरती पर उतरी चली आ रही है। वर्षा के बादल और पृथ्वी का यह मिलन चिरंतन प्रेम का उदाहरण है। इसकी याद आते ही दिल खुश हो जाता है।"

लांबिरिक ने पश्चिम की ओर मुड़कर देखा। पुनजा पहाड़ के आकाश को ढके हुए काले-काले बादलों में कौंधती हुई बिजली की चमक उसकी आंखों में आई। प्रथम वर्षा का वह सौंदर्य अपने मन में अनुभव करते हुए उसने कहा – "बादलों की हंसी देख रहा है न ? बैशाख के ये बादल मुझे बड़े अच्छे लगते हैं। उनमें बारिश और बिजली होती है, शायद इसीलिए तो नहीं ? कहीं वह हाई और लं के मिलन की पहली सूचना तो नहीं ? उनके उस

---

1. गायक, लोकगीत गायक।

पवित्र मिलन से हमारे जिरसं की झूम-खेती के धान के खेत हरे-भरे हो उठेंगे, सुनहले हो उठेंगे ! नए धान-कटाई के त्योहार में तभी तो हमारे प्राण भी नाच उठेंगे । साइदू, इस बार लेकिन हम जिरसं की मदिरा छककर पीएंगे, समझा न ?"

जिरसं की बात सुनते ही सें तेरन ने उसकी आंखों में आंखें डाल अर्थ-भरे लहजे में हंसते हुए कहा – "जिरसं के धान-खेत और कितने दिन हरे-भरे रह सकेंगे, पता नहीं । हमारे जिरसं में तो अनिष्टकारी कीड़े बस गए हैं ।"

"वह कैसे ?" लांबिरिक ने अचरज से सें के चेहरे की ओर देखा ।

"क्यों ? तूने क्या उस दिन की वह घटना नहीं देखी, किस तरह से तेरे गाल पर थप्पड़ मार दिया ?"

"हूं ! क्लेंसारपो का उस दिन का बर्ताव देखकर मुझे अचरज हुआ था । उसे यह संदेह है कि अमफू से तेरा कोई संबंध है । इसी कारण वह तुझसे ईर्ष्या करता है । समझा न !"

"ऐसा भी हो सकता है । मुझे अब लग रहा है, शक्ति शायद आदमी को अंधा बना देती है ।" सें तेरन ने पहाड़ के पास से कतारों में उड़कर जाते बगूलों के झुंड की ओर देखते हुए कहा ।

बारिश आने की संभावना देखकर दोनों ने भैंसों को गांव की ओर मोड़ दिया । सें तेरन का मन विषाद से मुरझाया हुआ था । भैंसों के झुंड के पीछे-पीछे भैंस पर चढ़ा आता लांबिरिक अपने-आप गीत गाने लगा —

"लंसकसो देंलिम
सामि मेत डालिम
जिपु सक आदिम
डालिम नांइंक्रिन
विरउनए क्लानजिन । इ-हुन्हु ।"

(यानी – ओ प्रिया, कपड़े धोने के उस घाट पर की छोटी-सी चट्टान में लगी तुम्हारे युवा-शरीर की सुगंध अब तक मिटी नहीं है । ओ प्रिया !)

यह गीत सुनकर वेदना-विकल सें तेरन को भी हंसी आ गई ! रंमिली के प्यारे घाट पर 'छरप-छरप' कपड़े धोती अमफू का चेहरा उसके सामने खिल उठा । भैंस की पीठ पर बैठे-बैठे जैसे घाट की चट्टान में लगी यौवनपूर्ण प्रेयसी की सुगंध उसकी नाक में आने लगी । बिजली की चमक-जैसे ही उसके शरीर-मन बेचैन हो उठे ।

भैंसों के मैदान से गांव तक आते-आते शाम हो चुकी थी । पश्चिम के आकाश में बादल छाए रहने के कारण लगा कि दूसरे दिनों की अपेक्षा अंधेरा जल्द ही उतर आया है । भैंसों को बांधकर सें तेरन ने अमफू के घर की ओर नजर डाली ।

सीढ़ी के सिरे पर कुत्ता अकेला बैठा था । सें को वह बड़ा प्यारा लगा । अमफू के घर के समूचे परिवेश से ही उसे प्यार हो आया । सारा प्यार भला यहीं क्यों इकट्ठा हो गया है ? उसे

अपने दोस्त की कही वह बात याद आ गई – 'प्रेम में पड़ने पर प्रेयसी के घर का सामान्य कूड़ा-करकट भी अपरूप और प्यारा-प्यारा लगने लगता है।' तो क्या मुझे भी वही हो गया है ? वह सोचने लगा।

भैंसों की सूचना दे आने के लिए वह मचान-घर पर चढ़ गया और कुत्ते को सहलाते हुए बासापी को पुकारा – "नी, घर में हो ?"

"ओ, सें हो ? आओ !" बासापी ने अंदर से ही कहा।

"नी, मैं अभी नहीं बैठूंगा ! भैंसों को बांध दिया है। क्या अमफू नहीं है ?"

"नहीं है ! तुम्हारी तरफ ही गई है। मिल जाए तो भेज देना !"

"अच्छा ! अब चला !" बासापी के कुछ कहने के पहले ही वह खप-खप करता सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

उसने देखा, पश्चिम का आकाश घना काला हो उठा है। वह जाते-जाते सोच रहा था – 'भला किसके यहां हो सकती है अमफू ? शायद कादम के यहां ही गई होगी।' उसे संवाद कह आने के इरादे से वह कुछ तेजी से चल पड़ा।

उधर से अमफू सिर झुकाए चली आ रही थी। सें को झाड़ियों ने ओझल कर रखा था। राह की मोड़ पर अचानक दोनों आमने-सामने हो गए। सें को देखते ही वह चौंक पड़ी। वह भी तो सें के ही बारे में सोचती आ रही थी। अचानक उसे देखते ही सुबह की बात याद आ गई जिससे उसके चेहरे पर सर्र-से शर्म उतर आई ! 'सें' कहकर पुकारने में भी उसे लाज लगने लगी। दुविधा में पड़ी खड़ी अमफू को देखकर सें तेरन भी अवाक रह गया और उसकी ओर देखता रह गया।

वह सोचने लगा – 'यह अमफू कैसी अपरूपा है ! दिन भर की स्मृतियां आकर मानो उसके मन के कक्ष में भर गईं। उसने सोचा था, अगर अमफू कादम के यहां मिल जाए, तो उससे अपने मन की सारी बातें खोलकर कह देगा।' पर अब अमफू को सामने पाकर जैसे कोई भी बात उसके मन के अंदर से निकल ही नहीं पा रही थी।

यह शर्म भला कहां से उमड़ आई ?

उसकी नजर कभी उसकी ओर तो कभी जमीन की ओर देखती हुई अमफू की चंचल आंखों पर गई।

उसकी नजरों में तो बिजली की चंचलता है।

राह से एक ओर हटकर उसने सें के लिए रास्ता छोड़ दिया। सें तेरन ने दो कदम आगे बढ़कर पुकारा – "अमफू !"

सें तेरन की आवाज से वह रुक गई !

"अमफू ! तुम्हें नी ढूंढ़ रही थीं।"

"किसलिए ?"

"शायद शाम हो गई, इसीलिए।"

"हूं ! चलती हूं !" कहकर उसने जाना चाहा ।

"अमफू !" सें की आवाज कांप रही थी ! एक आवेग-भरी भावना के कारण मानो उसका गला रुंध आया था । अमफू के कदम फिर रुक गए ! उसका मन ही मानो एक हाहाकार में डूबने लगा । सें की ओर देखते हुए वह जमीन पर पैरों की उंगलियों से टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं बनाने लगी । खुले बाल हवा में उड़-उड़कर मानो उसे परेशान करने लगे । आवेग-विह्वल होकर वह बोल उठा – "अमफू, मैं बड़ा गरीब हूं...!"

सें की इस बात ने अमफू के विवेक पर चोट की वह सें के करीब आ गई, पूछा – "गरीब हो ? किस बात में ?"

"चूंकि गरीब के मन की बातें मन में ही गल जाया करती हैं । इसीलिए ।"

"मैं तो समझी नहीं, सें !"

"धन ही आदमी के मन को संपन्न बनाता है ।"

"नहीं, नहीं । मन आदमी को संपन्न बनाता है ।" विकल-से हो उठे सें की ओर देखते हुए अमफू बोली ।

"तो क्या मेरे मन की बातें भी सफल होंगी ?"

"क्यों ? कौन-सी बात, सें ?"

सें की जबान को फिर शर्म ने दबोच लिया । एकटक देखती हुई अमफू की आंखों की ओर वह उद्विग्न भाव से देखता रह गया ।

"बात क्या है ? तुम बताते क्यों नहीं ?"

"क्या तुम मेरी बनोगी ?" शरीर की पूरी शक्ति समेटकर सें तेरन ने पूछा ।

सें की बात सुनते ही शर्म के मारे वह पानी-पानी हो गई ! शरमाती हुई, जबान से कुछ कहे बगैर, वह जमीन पर लगातार पैरों से टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं बनाती रही । मानो उन टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं से ही वह मन की बातें कह देना चाहती हो ! उसने सें की ओर देखकर कहा – "यह तो मुझे पता नहीं, सें ! हां, तुम्हें तो मैं मनप्राण से प्यार करती हूं । अगर ईश्वर मिला दे, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं ।"

अमफू की बातों से सें तेरन के मन में एक अपूर्व आनंद की सिहरन जगी । अमफू के चेहरे की ओर देखते हुए उसे परम संतोष हुआ ।

इस बीच हवा तेज हो आई । रंमिली के पेड़-पौधे आनंद से अधीर हो नाचने लगे । सें तेरन ने अमफू से कहा – "अमफू, अब जाओ । बारिश आने वाली है ।"

अमफू ने धीरे-धीरे कदम बढ़ा दिए । उसका स्पर्श-कातर हृदय भी मानो सें की निकटता चाहता था । सें ने देखा, हवा मानो अमफू के शरीर के कपड़े उड़ा ले जाना चाहती है । कुछ देर अमफू की ओर देखते रहकर वह भी घर की ओर चल पड़ा । आंखों में चकाचौंध जगाती बिजली के उजाले और बादलों के गुरु-गंभीर गर्जन से रंमिली की धरती और आकाश बेचैन हो उठे ।

18

कामपुर !

कपिली नदी के तट का एक रेलवे स्टेशन !

नगांव जिले के दक्षिणी अंचल का एक प्रमुख शिक्षण-केंद्र !

यह कामपुर विस्तृत मिकिर पहाड़ में प्रकाश-वितरण का केंद्र रहा है। इसके विभिन्न शिक्षण-संस्थान सुदूर के रं खां मौजा के दुर्गम पहाड़ी अंचलों में शिक्षा का प्रकाश फैलाते रहे हैं। पूर्वांचल के पहाड़ों में भी प्रकाश की उन लहरों ने एक आलोड़न जगा दिया था। ऐसे नव-जन्म के आलोड़न से अनुप्राणित होकर मिकिर पहाड़ के पूरब और पश्चिम से अनेक लड़के यहां आए थे और अपने बोर्डिंग-घर बनाकर शिक्षा प्राप्त करते थे। इस छोटे-से, कोलाहल से दूर एकांत शहर में वे नए युग की तैयारी और उसके अनुशीलन में जुटे हुए थे।

कामपुर माध्यमिक स्कूल छोटे-छोटे बच्चों तक नई शिक्षा पहुंचा रहा था। उस स्कूल का आदर्श उभरते हुए किशोर-किशोरियों के प्राणों में एक नई दुनिया की प्रेरणा जगा रहा था। रेल-मार्ग के उत्तर में स्थित हाई स्कूल भी सैकड़ों लड़के-लड़कियों के संग नए समाज के स्वरूप-निर्माण एवं नेतृत्व-संगठन में हाथ बांट रहा था। कामपुर हाई स्कूल अपनी गरिमा और आदर्श की ज्योति से बहुत प्रसिद्ध था।

सारइक तेरां भी उसी ज्योति पर मुग्ध हुआ था। उसने अपने इकलौते बेटे हेमाइ को कामपुर लाकर धनेश्वर मास्टर के यहां रख दिया था। सारइक चाहता था कि अपने गांव में भी स्कूल खोला जाए। लेकिन बैठालांसो के आस-पास के गांवों के लोगों को समझाने की बड़ी कोशिश करने पर भी वह सफल नहीं हुआ था, और थक-सा गया था। अपने प्रयास के कारण सारइक तेरां लोगों की आलोचना का पात्र भी बना था। हाबेसिको की तेज क्रोधाग्नि से, उपहास के निर्मम डंक से मानो वहां उसका आंख खोलना भी कठिन हो गया। नए दिन, नई आशा का आलोक-संधानी सारइक चुपचाप सब कुछ सहता रहा। धीर-प्रवाहित बरापानी की भांति ही मुक्त निरवच्छिन्न गति-सत्य पर सारइक का विश्वास रहा है। जड़, स्थविर गति के विरुद्ध सारइक आजीवन संग्राम करता रहा है।

धनेश्वर मास्टर के यहां हेमाइ को रखकर वह घर की ओर चल पड़ा। धारा के विपरीत दिशा में नाव आगे बढ़ाते हुए उसने माव पर से ही कपिली नदी की धारा में एक पान और एक तांबूल समर्पित कर कपिली की चिरंतन गति को श्रद्धा-निवेदन किया। मन-ही-मन उसने प्रार्थना की – 'बरापानी की अपेक्षा कपिली की धारा जिस प्रकार बड़ी और चौड़ी है, हेमाइ का मन भी उसी प्रकार बड़ा, प्रशांत और गतिशील बने।'

कपिली की धारा में पान की पत्ती बह चली। सारइक का मन भी तरोताजा हो आया।

"भैया, यह क्या कर रहे हो ?" पान-तांबूल चढ़ाकर नदी को प्रणाम करते देख नाव वाले ने उससे पूछा।

"प्रणाम कर रहा हूं, भाई ! नदी मैया को।" सारइक ने जवाब दिया।

"मगर क्यों ?"

"हमारी रीति है। कपिली मैया को पान-तांबूल चढ़ा रहा हूं। यही कपिली तो हमें जिंदा रखे हुई है। समझे, भैया !"

"अरे हां, तुम सच कहते हो, भैया !" नाव को घाट की ओर मोड़ते हुए नाव वाले ने कहा। फिर चप्पू को पकड़कर उसने सारइक से पूछा – "और हां, भैया, तुम्हारे साथ उस दिन जो लड़का आया था, वह कहां गया ?"

"वह ? उसे स्कूल में डाल आया।"

"अच्छा किया। लेकिन तुम लोगों की तरफ स्कूल नहीं है क्या ?"

"नहीं है, भैया ! इसी कारण तो लड़के को यहां लाना पड़ा। टाउन के स्कूल में ही उसे डाल दिया। स्कूल तो अच्छा है न, भैया ?" स्कूल के बारे में जानकारी पाने के लिए सारइक ने नाव वाले से पूछा।

"हां, बड़ा अच्छा स्कूल है वह। गगै सर बड़े अच्छे मास्टर हैं। उस स्कूल को हर साल चार-पांच वजीफे मिल रहे हैं। भला कामपुर में ऐसा कौन है जिसे गगै सर के बारे में पता न हो ? उस स्कूल में लड़के का नाम लिखवाकर तुमने अच्छा ही किया।" चप्पू से धकेलकर नाव को किनारे लगाते हुए नाव वाले ने स्कूल के बारे में सारइक को समझाया। नाव वाले की जबानी स्कूल के बारे में जानकारी पाकर सारइक निश्चिंत हो गया। नाव से उतरकर उसने नाव वाले को एक पैसा दे दिया। पैसा लेकर नाव वाले ने पूछा – "भैया का घर कहां है ?"

"वोथातलांसो में।"

"ओ, बैठालांसो में। क्या मैं भी तुम लोगों के उस पहाड़ पर जा सकता हूं ?"

"अहं, भला जा क्यों नहीं सकते ? मंगलवार को हमारे यहां एक हाट-बाजार लगता है। बाजार में जाने वाले लोगों के साथ ही आ सकते हो। अच्छा, अब चलूं।"

"हां, ठीक है। जा भैया !"

खुले घाट से ऊपर आकर सारइक ने पगडंडी पकड़ ली। कजले रंग वाले रं खां पहाड़ की कतारों को 'बरत' की झाड़ियों ने ढक लिया।

कामपुर के निम्नमाध्यमिक स्कूल में प्रवेश लेकर हेमाइ तेरां ने अपनी जिंदगी की नई बुनियाद रखने का संकल्प कर लिया। एक झोली में कापी-किताब लेकर वह पहले की ही भांति स्कूल गया। पिता ने जो नए कपड़े खरीद दिए थे, उन्हें पहनकर उसे बड़ी खुशी हुई थी। सुबह की ठंडी हवा में पेड़ों की पत्तियां हर-हर करती झूम-नाच रही थीं। पत्ती-पत्ती पर सूरज की किरणें जगमगा रही थीं। धीरे-धीरे वह रेलवे सड़क के पार आ गया। पहले दिन उसके मन में जो भय, जो आतंक था, वह मिट गया।

स्कूल के अपने वर्ग के कमरे में जाकर अपनी निश्चित जगह पर साथ लाया हुआ बोरा बिछाकर वह बैठ गया। पेंसिल निकालकर अपनी स्लेट पर स्केल के सहारे रेखा खींची।

इस तरह स्कूल में उसका एक सप्ताह बीत गया। साथ के लड़के-लड़कियां भी अब उससे हिल-मिलकर बातें करने लगे। उस दिन पास बैठे सोमेश्वर ने उससे पूछा – "ओ हेमाइ!"

"एं?"

"अपना घर कहां बताया था?"

"रं खां।"

"रं खां? रं खां क्या है रे?"

वे बच्चे असमिया में पूछ रहे थे। हेमाइ भी उनकी बातों का जवाब टूटी-फूटी असमिया में ही दे रहा था। इससे साथी हंस पड़ते थे।

वह बोला – "मइ ना जाने" (मुझे पता नहीं?)

उसकी बोली सुनकर दूसरे लड़के-लड़कियां हंस पड़े। इससे हेमाइ नाराज हो उठा। बोला – "कि तोमार हाड़ि से?" (तुम क्यों हंस रहे हो?)

उसकी इस बात पर वे और ज्यादा हंस पड़े। उसके दाहिनी ओर बैठी आधोणी ने पूछा, "ऐ हेमाइ, तोर कान दुखन फुटा किय?" (ओ हेमाइ, तेरे कानों में छेद क्यों हैं?)

हेमाइ के चेहरे पर विरक्ति का भाव था। बोला – "आमार निजम आसे ओ।" (हमारा नियम है।)

सोमेश्वर, माधेश्वर, आधोणी, रूपेश्वरी आदि संगी-साथियों ने तरह-तरह के सवाल कर हेमाइ को परेशान करना शुरू कर दिया। अपने सहपाठियों की अपेक्षा हेमाइ की उम्र कुछ ज्यादा थी। स्कूल के उस परिवेश में आकर उसे कुछ अजीब-अजीब-सा लगने लगा था। स्कूल की चारदीवारी में रहने के खिलाफ उसका मन विद्रोह भी करने लगा। अचानक उसका मन अपने घर की ओर चला गया। घर का हर दृश्य उसके मन की आंखों के सामने नाचने लगा। वह प्यारा-प्यारा-सा तोता केकसो बेचारा! उसका मन मानो हाहाकार कर उठा। वह सोचने लगा – शायद लंकिरि, लारसिका आदि पेड़-तले घिला खेल रहे होंगे। उसकी आंखें भर आईं। उसने उमड़ते आंसुओं को छिपाकर पोंछ डाला।

सफेद धोती और कमीज पहने प्रधान शिक्षक यज्ञोराम गगै कमरे में आए। सभी लड़के-लड़कियां उन्हें देखते ही खड़े हो गए। घर की बातें सोचते-सोचते हेमाइ खड़ा होना भी भूल गया। बैठे हुए हेमाइ की ओर देखकर प्रधान शिक्षक ने पुकारकर कहा – "हेमाइ तेरां!"

प्रधान शिक्षक की आवाज से हेमाइ चौंक पड़ा। अचानक वह उलझन में पड़ गया। दुविधा में पड़े हेमाइ को अपने पास बुलाकर गगै ने समझाया – "हेमाइ, कमरे में शिक्षक के आने पर खड़ा हो जाना चाहिए। समझा न?"

जबान से कुछ कहे बगैर हेमाइ पैरों से धरती पर टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं बनाने लगा। तब गगै ने फिर पूछा – "तइ मोर कथा बुजिछ ?" (क्या तू मेरी बात समझ रहा है ?)

"बुजिछे, छार !" (समझता हूं, सर !) उसने रुक-रुककर कहा।

"तइ कांदिछ नेकि ?" (क्या तू रो रहा है ?)

उसने सिर हिलाकर बताया कि 'नहीं रो रहा है।' शिक्षक ने उसके पास बैठने वाले सोमेश्वर को पुकारा – "सोमेश्वर !"

"जी, सर !" उसने खड़े होकर प्रधान शिक्षक की ओर देखा।

"क्या तुम लोगों ने हेमाइ से मजाक किया था ?"

"जी, हमने तो उससे ठिठोली नहीं की, सर !" सोमेश्वर ने डरते-डरते जवाब दिया।

हेमाइ को उसकी अपनी जगह बैठने को कहकर यज्ञोराम गगै ने कहा – "हां, कोई इससे ठिठोली न करना, इसकी खिल्ली न उड़ाना। क्या तुम्हें पता है कि यह कितनी दूर के पहाड़ से यहां पढ़ने आया है ? घर-बार छोड़कर। सब इसे प्यार करना। तुम सभी हमारी असम-जननी के नए प्यारे मुन्ने-मुन्नी हो। यहां हम सभी एक ही घर के लड़के-लड़कियां हैं।"

माधेश्वर, आधोणी आदि ने भी प्रधान शिक्षक की आवेग-भरी बातें बड़े ध्यान से सुनीं। जेब-घड़ी निकालकर उन्होंने समय देखा। घड़ी को जेब में रखते हुए बोले – "अब तुम लोग उस आंगन में चले जाओ। और सोमेश्वर, सुन। तू इन्हें सौ तक गिनती रटा। समझा न ?"

"समझा, सर !" सोमेश्वर बोला।

पहाड़े और गिनती का चार्ट हाथ में ले सोमेश्वर निकल गया ! उसके पीछे-पीछे हेमाइ, माधेश्वर, आधोणी आदि भी गए। सभी आंगन में पंक्ति में खड़े हो गए। सिखाने वाला विद्यार्थी सोमेश्वर असमिया में गिनती बोलता गया और उसके पीछे-पीछे सभी दुहराते गए। एक, दुइ, तिनि, चारि – एकत शून्ये दह, एक दह, एकत एके एधारे, एक दह एक... आदि...।

दूसरे बच्चों के साथ-साथ हेमाइ भी गिनती दुहराता गया। उसे लगा – यह कैसा स्वर वह सुन रहा है ? समवेत स्वर से गिनती-पहाड़े की उस आवाज ने हेमाइ के अंतर में एक नया स्वर, नया भाव जगा दिया। यह स्वर तो एकता का है, आनंद का है। एक नई अनुभूति ने उसे आनंदित कर डाला।

पास के नारियल पेड़ की हवा में कांपती पत्तियों की भांति, हेमाइ को लगा, उसके अपने अंतर में भी एक नए स्वर का स्पंदन होने लगा है। डाक-घर की सुबह वाली गाड़ी स्कूल-घर के सामने से गुजर गई। घर से अलग होने की हेमाइ के मन की वेदना भी उसी गाड़ी की तरह धीरे-धीरे दूर होने लगी। स्कूल-घर उसे बिल्कुल अपना-सा लगने लगा। लगा, मानो यह एक नया जिरसं हो, नया डेका-चां हो।

19

रंमिली गांव का एक पुराना जीर्ण-शीर्ण मचान-घर। उसके छप्पर की सनई सड़ गई थी और बांस के फट्टे निकल आए थे। मचान के बांस के फट्टे भी सड़ गए थे। पैर रखते ही डर लगने लगता है, कहीं मचान पर से नीचे न गिर पड़ें। घर की टट्टियों में भी कई-कई पैबंद लगाए गए हैं। बाहरी दरवाजे के पास का हिस्सा भी गंदगी-भरा है। मचान के नीचे भी बदबूदार वातावरण है जिससे लिथड़े सूअरों ने उसे और ज्यादा गंदा और दुर्गंध से भरा बना दिया है। घर को चारों ओर से जंगल ने घेर लिया है। उस मचान-घर ने सांस घुटने के उस माहौल में मानो विद्रोह-घोषणा ही कर डाली हो।

परंतु लिंदक तेरन ?

क्या यह उसी का घर है ?

हां, यह तो उसी का घर है। ममता से भरा, प्यार और आश्रय देने वाला उसका अपना घर।

परंतु वह इन सबसे निर्विकार और उदासीन है। उसकी दृष्टि निस्तेज है।

अफीम के नशे में धुत्त रहता है वह। उसकी आंखों पर हमेशा नींद छाई रहती है। वह नींद अफीम की टिकिया से निकले धुएं जैसी ही धुंधलाई, सपनीली और कोमल है। अफीम के माया-जाल में फंसे लिंदक तेरन के शरीर पर पहले के लिंदक की छाया-भर रह गई है।

पहले का यह लिंदक तेरन कर्मठ और बलवान था। दूर पहाड़ से कई-कई मन धान ढो-ढोकर ले आता था। उसका खलिहान धान से भरा रहता था। 'हाच्छा' नृत्य के हरेक ताल पर मानो उसका मचान-घर भी नाचता रहता था। 'लाओ पानी' और देशी मदिरा पीकर वह हंसता-गाता रहता था। उसकी पत्नी कारें रंहांपी भी दिल खोलकर हंसती रहती। उनके साथ उनका घर भी जी खोलकर हंसता रहता। मनों सरसों, लाख, तिल आदि मारवाड़ी महाजन के यहां जमा हो जाते। लिंदक तेरन के सिर के पसीने से पैदा हुए सुनहले अनाज पाकर महाजन अपने सोने-मढ़े दांत निकालकर हंसता। अफीम के बदले में अनायास सोने के ये टुकड़े बटोरे जा सकते हैं, यह देखकर मारवाड़ी महाजन की आखें और ज्यादा चमकने लगती थीं।

समय बीतता गया। अफीम का काला रंग लिंदक को दिनों-दिन ग्रस्ता गया। पत्नी कारें के रूप-रंग, यौवन को अफीम के काले रंग ने बिल्कुल पिघला डाला। उसकी खिलखिलाती हंसी क्रमशः चिड़चड़ेपन में तब्दील हो गई। सें, काक्रूं, बोंए आदि के धरती पर कदम रखते ही कारें मानो हंसना ही भूल गई। उसकी मधुर हंसी अफीम के धुएं में उड़कर खो गई। उसके कपाल पर की गांठें एक ही जगह इकट्ठी हो गईं। सुंदर कजरारे बाल बिखरे रहकर बदरंग हो गए। पहनने की 'पीनी' का रंग भी बदलकर मटमैला हो गया। कर्णफूल की जगह बांस के

चोंगे ने कानों में स्थान ले लिया। अफीम के लिए गिरवी रखने में घर की चीजें भी एक-एक कर हवा होती गईं। लिंदक तेरन का घर कालिख से भर गया। पर वह अफीम के धुएं में ही मस्त रहा। अफीम के सिवा उसे और कोई चिंता नहीं रह गई।

आषाढ़ महीने की दोपहरी !

बाहर धधकती आग-सी तेज धूप !

लिंदक कुछ पुष्ट पान की पत्तियां हाथ में लिए उनकी धारियां निकाल रहा था। धारियां निकालकर पत्तियों को कटारी से महीन बनाकर काटा। कटी पत्तियों को कान-टूटी एक कड़ाही में डालकर तब तक भूनता रहा, जब तक कि पत्तियां सूख न गईं। फिर घोल कर रखी अफीम को उन भूनी पान-पत्तियों में मिला दिया। अफीम मिली पान-पत्तियों को जलते कोयले के ताप पर बांस की दो खपच्चियों के साथ सेंक दिया। सेंकी हुई पान-पत्ती का रंग भी लाल-सा हो गया। उसने उस पान की छोटी-छोटी टिकिया बनाई। पके केले और आग में भुने आलू को सावधानी से लेकर एक कटोरे में बिना दूध की चाय उड़ेल ली। अफीम की टिकिया पीने के लिए बनाए गए बांस के चोंगे में एक टिकिया सावधानी से रख दी और उसे जलते अंगारे में बड़े जतन से जलाया। फिर कश लेते ही टिकिया खुद जल उठी।

जलती हुई टिकिया की लाल आग उसकी छोटी-छोटी आंखों में चमक उठी। यह लिंदक तेरन की सुबह की तैयारी थी। उसने धीरे-धीरे धुआं छोड़ दिया। अफीम-टिकिया का वह धुआं निकलते ही उसकी पलकें-भौंहे भी नाचने लगीं। वह भी मानो टिकिया जलने के आनंद का मोहिनी नृत्य ही हो।

उसने 'उंह' की आवाज की। क्षण भर में टिकिया के जलकर राख होने की वेदना मानो उस 'उंह' की आवाज में प्रकट हो उठी। उसने एक टुकड़ा आलू चबाते हुए पत्नी को पुकारा, "काक्रूं की मां, ओ काक्रूं की मां !"

"मां घर में नहीं है। धान मांगने के लिए बासापी के यहां गई है। अब तक आई नहीं।" बेटी ने अंदर से कहा।

"खाना तैयार हो गया है या नहीं ?"

"खाना बनाने के लिए तो चावल ही नहीं है। मां के आने पर खाना बनेगा।"

"तेरा भैया कहां गया ?"

"पता नहीं। वह तो सुबह ही निकल गया था।"

"अच्छा ही हुआ। मैं खाना-दाना की बात सोचूं या अफीम की टिकिया जुटाने की बात सोचूं ?"

बाप की इस बात का कोई जवाब दिए बगैर वह अंदर ही बैठी रही।

कुछ ही देर बाद कार्रे रंहांपी पसीने-पसीने होकर आ पहुंची। पीठ पर धान की गठरी थी और गोद में नन्हा बच्चा था। धूप में परेशान होकर बच्चा सो गया था। उसकी 'लुधुमा पीनी' में जगह-जगह पैबंद लगे थे। गठरी उतारकर उसने लंबी सांस ली। सिर से बहते पसीने को

उसने कपड़े से पोंछकर बेटी को पुकारा – "काक्रूं, जरा एक कटोरा पानी तो दे जा। ओह, कितनी तेज धूप है, क्या कहें !"

पत्नी को देखकर लिंदक ने कोई बात किए बगैर एक और टिकिया जला दी। मुंह से धुआं छोड़ने के बाद कुछ देर 'कुहुर-कुहुर' कर खांसता रहा। जलकर राख हो गई टिकिया को फूंक मारकर फेंक दिया और पत्नी से पूछा – "धान मिला क्या ?"

"हां, सिर्फ एक पूरा ही मिला है।" काक्रूं का दिया पानी पीते हुए उसने कहा। फिर काक्रूं की ओर मुड़कर बोली – "काक्रूं, झूलना लगा दे जरा। इसे सुला दूं।"

पत्नी की ओर देखते हुए लिंदक ने पूछा – "क्या कहा ? कितना मिला ?" अपनी थकी-मांदी पत्नी पर जरा भी सहानुभूति उसकी नजर से प्रकट नहीं हो रही थी।

"एक पूरा।" उसने विरक्ति से कहा।

"ए-ह। हो जाएगा। लिंदक तेरन के दिन अब भी बीते नहीं, देखता हूं।" कहता हुआ वह खिलखिलाकर हंस पड़ा।

लिंदक की उस हंसी का कोई मतलब कारें रंहांपी की समझ में आया ही नहीं। गोद के बच्चे को झूलने में डालकर उसने काक्रूं से कहा – "बेटी, धान को धूप में डाल दे।" फिर आसमान की ओर देखते हुए उसने कहा – "बारिश भी आ सकती है।"

काक्रूं 'अच्छा' कहकर उठ गई और धान को धूप में पसार दिया। वह लिंदक तेरन की जवान बेटी है। पर उसके चेहरे पर भूखे रहने की उदासी साफ झलक रही थी।

चेहरे पर से जवानी की हंसी खो गई थी। उसकी आंखें भी उदास थीं, उनकी चमक भी गायब हो गई थी। सोलह साल की किशोरी देह का सारा रस सूख गया। वह लावण्य-विहीन हो गई, कांटा हो गई। धान धूप में पसार कर वह घर के अंदर घुस गई।

अधखुली आंखों से पत्नी की ओर देखते हुए लिंदक बोला – "अफीम तो सिर्फ एक रत्ती-भर ही बची है। कल के लिए भला कहां मिलेगी ? और कोई उपाय न रहे तो उस मारवाड़ी महाजन से ही उधार लेकर अफीम लानी पड़ेगी।"

"उधार ? मगर उधार लेने के लिए भला धान कहां है ? तिल कहां है ? वह महाजन भला क्या देखकर आपको रुपए उधार देगा ?" पति की उलटी सोच के कारण कारें को गुस्सा आ गया।

"तो फिर जमीन का एक टुकड़ा ही नेपाली के पास गिरवी रख देता हूं। नहीं तो एक भैंस ही बेच दूं। भला अफीम के बगैर मैं चल कैसे सकता हूं, काक्रूं की मां ?"

"अरे, अफीम के लिए तो आपने एक-एक कर घर की सारी चीजें खत्म कर डालीं। अब आप भैंस भी बेचने चले हैं ? अपना तो कुछ रहा ही नहीं, अब बच्चों का भी भविष्य नाश करने चले हैं। हाय रे मेरी किस्मत !" दुख और विरक्ति से वह बोल उठी।

पत्नी की बात सुनकर लिंदक हंसता हुआ बोला – "अरे, लिंदक की जबान ही धन है। उस मारवाड़ी महाजन के रहते लिंदक की मौत है ही नहीं। फिर हमारी किस्मत बुरी है, यह

तुमने कहां देखा ? अगले साल हमारा फू कांबुरा बि-वोकेक की तराई में खेती करने वाला है। हम भी वहां मन लगाकर खेती करेंगे। क्यों, क्या कहती हो तुम ?"

"अरे जाइए, जाइए। हुंह, आप अगर खेती करेंगे तो पूरब का सूरज पच्छिम में उगेगा। हमारी किस्मत में तो घर का सफेद भात खाना लिखा ही नहीं है। घर चलाना ही मुश्किल हो गया है। कितना मांगती-खोजती फिरूं अब ? अब तो लोगों के सामने चेहरा दिखाने में ही लज्जा आने लगी है।"

"हम तो सादा भात ही खा रहे हैं।" आलू का एक टुकड़ा मुंह में भरते हुए लिंदक बोला।

"अरे हां। भला आपको सादा भात खाने को क्यों नहीं मिलेगा ? मैं तो बैठी हूं न ! आप तो खुद अफीमची बन ही गए, लड़के-लड़कियों को भी अफीमखोर बना दिया।" झूलने में एक डोरी बांधती हुई पत्नी बोली।

"अरी, मैं अफीमची ठहरा तो तुम भी अफीमचीयनी हुई। जाओ, अब भात का इंतजाम करो।" वह फिर जोर से हंस पड़ा।

"आपके लिए तो हर बात आसान है। जरा भी गंभीर होकर सोचते नहीं। भात बनाने के लिए चावल है क्या ?"

झूलने की डोरी पति के हाथ में थमाकर वह बोली – "हां, अब डोरी से इसे हिलाते रहिए।"

डोरी पकड़े या न पकड़े, इसी उधेड़बुन में डोरी को पकड़कर वह बोला – "उंह, यह सब खींचने-खांचने में मुझे बड़ा आलस लगता है, सें की मां ! अरे, तुम क्या थोड़ा-सा चावल भी मांगकर नहीं ला सकी ?"

"बस, इतना कहने भर से हो गया। सुबह से शाम तक मुट्ठी-भर भात की चिंता के सिवा हमारा और है ही क्या काम ?" कहती हुई कारें अंदर जाने लगी। 'हं कुप' के टूटी मचान से ठोकर लगी तो वह बोल उठी – "कभी पैर भी टूटेगा। हाय री किस्मत !"

बैठकखाने में बैठे लिंदक ने अफीम का कश लेने की मस्ती में आंखें फैलाकर ठोकर से कराहती पत्नी की ओर देखा। कुंडली बनाकर उड़ते हुए धुएं के बीच उसे एक नए घर की तस्वीर दिखाई पड़ी।

आत्मसंतोष की हंसी उसके होठों पर खिल उठी।

20

बरसात के काले बादल इकट्ठे हो, धीरे-धीरे कपास के ढेर-जैसे बन आए। ऊबा देने वाली बारिश की बूंदें ओस-कण बन गईं। धान की पत्तियों पर ओस-कण धूप में चमकने लगे। आश्विन का महीना आ गया।

सारइक के झूम-खेत ने भी रंग बदला। धान की बालियां भी सुनहली हो उठीं। 'सुमफो-सुबक' धान की सुनहली बालियां देख वह आनंदित हो उठा। अपने पसीने की बूंदों के एवज में उसे मुट्ठी-भर सुनहला अनाज मिलेगा, लछमी मैया उसके घर में आ बसेंगी। सारइक मेहनत की सार्थकता समझता है। और युग की गति के बारे में, बदलते हुए जमाने की उभरती हुई चेतना के बारे में भी उसे जानकारी रही है।

मचान के सामने की ओर सुबह की मीठी धूप पड़ रही थी। धूप में पीठ सेंकता हुआ सारइक बंदूक की नली की सफाई कर रहा था। एक चिथड़े से नली को घिसते हुए वह सोच रहा था – 'कोई अच्छा काम करने जो निकलता है उसे ही मुसीबत में पड़ना पड़ता है। मैंने बंदूक खरीदी, इससे हाबेसिको की आंखों में जलन हो रही है। उसकी नींद हराम हो गई है। मैंने यह विचार प्रकट किया कि हम सब मिलकर यहां एक स्कूल खोलें, तो इससे मुझे समाज-द्रोही कहा गया। मैं कारबी नियम-परंपरा के विरुद्ध आचरण करता हूं – ऐसा प्रचार कर लोग मुझे ही अपराधी बताने की कोशिश करते हैं। हेमाइ को स्कूल में भेजा, तो उसके लिए हाबेसिको के व्यंग्य-बाणों से मेरे कान के पर्दे फटने लगे हैं। लारेंस से मैं बात करता हूं, तो यह भी मेरा अपराध है। सिकुर यानी विधर्मी से भी भला कोई बात करता है ? हाबेसिको का बदलते जमाने से कोई संबंध ही नहीं है। हाबेसिको युगगति पर विश्वास ही नहीं करता।

उसने सूरज पर नजर डाली। अब तक जो धूप मीठी लग रही थी, अब मानो वह पीठ जलाने लगी। वह साए की ओर खिसक गया। हमेशा जिसे देखते हैं, वह सूरज तो कभी पुराना नहीं होता। उसके निरंतर बदलते हुए रूप ही क्या उसे नया बनाए नहीं रखते ? इस चिरंतन सत्य पर भी हाबेसिको क्यों विश्वास नहीं करता ?

मदिरा की हर बूंद में हाबेसिको की दुरभिसंधि छिपी रहती है और वह 'बर हाबे' की क्षमता के बल पर अपनी स्वेच्छाचारी मनोवृत्ति को ही जिंदा रखे हुए है। लोंरि के 'सारथे' लोगों को वह जो भेंड़ें समझता है, उसकी वजह भी वही है। और 'सोलांदों ?' क्या सोलांदो की कोई ताकत है ? सोलांदो की ताकत को तो वह धूल-कण के बराबर भी नहीं मानता। मगर क्या शाश्वत सत्य को वह ढके रख सकेगा ? वह तो सोचता है कि अब भी उसी पुराने 'रें बंहम' का जमाना है। मगर कहां ? आंखों के सामने ही तो अब मौजादार ही जमीन का लगान वसूल कर रहे हैं। उसके साथ ही हाबे लोगों का मान-धन भी मौजादार ही खा रहे हैं। उन मौजादारों के खिलाफ हमारे ये हाबे लोग तो कुछ भी कर नहीं पा रहे हैं। शायद उसे यह पता ही नहीं की देश का शासन अब बदल चुका है। और पता न चल पाना भी तो स्वाभाविक ही है।

कोने के जंगल से अचानक किसी के 'हाय' कर तालियां बजाते हुए धान के खेत में उतरी चिड़ियों को भगाने की आवाज सुनाई पड़ी। अवाज सुनते ही सारइक के मन का द्वंद्व तुरंत हट गया। धान के खेत से तोतों का एक झुंड 'केंक-केंक' करता हुआ उसकी मचान पर से होकर पहाड़ों की ओर उड़ गया। बंदूक रखकर उसने भी जोर से 'हाय' कहकर उड़ जाते हुए तोतों को खदेड़ा। उसने देखा, धान के खेत से होकर पत्नी आ रही है। धान के खेत के एक हिस्से को जंगली हाथी कुचल गए थे। उसकी बुरी हालत देख कर वह बड़बड़ाती हुई पति से बोली, "अमफू के बापू को तो इधर हाथी आने का पता ही नहीं चला होगा। एक ओर का धान तो

खत्म ही हो गया। अस-अस इतना बढ़िया धान कुचल-कुचलकर बरबाद कर दिया।"

सारइक बंदूक के केप होल्डर को चिथड़े से घिसते हुए पत्नी की बातें सुनता रहा। पीठ पर 'खां' लिए वह मचान के ऊपर चढ़ आई। पत्नी की ओर देखे बगैर सारइक बोला – "झूम खेती कर अब साल-भर सिर्फ मुट्ठी-भर भात मिल पाना भी मुश्किल होगा। दिन में कीड़े-मकोड़े, चिड़िया-चिरगुन के उपद्रव, और रात होते ही जंगली हाथियों का उपद्रव। मैं अकेला आदमी। मुझे तो कोई चारा ही नहीं दिखता।"

'खां' से पान-सुपारी की 'सुइ' (थैली) निकालकर वह पति के पास बैठ गई। पान-तांबूल पति की ओर बढ़ाकर उसने एक अपने मुंह में भी भर लिया। पान-सुपारी चबाते हुए पत्नी बोली – मैं कुछ भी कहती हूं तो बुरा लगता है। भला हेमाइ को स्कूल न भेजते तो कौन-सा नुकसान होता? खेती-बारी के दिनों में लोग नहीं मिलते, भैंस चराने के लिए चरवाहे भी नहीं। घर में भी अमफू अकेली रहती है। उसे अकेले छोड़ आना भी अच्छा नहीं लगता। जवान लड़की ठहरी। इस बार कामपुर जाइए तो हेमाइ को लेते आइए।"

बंदूक को टट्टी से टिकाकर, एक बीड़ी जला, सारइक बोला – "अब हेमाइ की चर्चा मत करो। क्या घर वापस लाने के लिए ही उसे कामपुर रख आया हूं? क्या उसे घर वापस लाने-भर से घर की समस्याओं का हल हो जाएगा? उस दिन हेडमास्टर कह रहे थे – 'वह पढ़ने-लिखने में अच्छा कर रहा है। झुंड-भर लड़के-लड़कियों के साथ उसे स्कूल जाते देख मेरे मन को भी अच्छा लगता है। अमफू की मां, वह पढ़े। अगर इंसान बनता है तो बनने दो। मैट्रिक भी पास कर ले तो उतना ही हमारे इस समाज के लिए काफी होगा।"

उसकी ये बातें पत्नी की समझ में नहीं आईं। उसने झूम-खेती के धान के टुकड़े की ओर नज़र डाली। सारइक ने जरा-सा चूना मुंह में डालकर कहा – "ये हाथी भी आजकल बड़े सयाने हो गए हैं। आग दिखाकर खदेड़ने पर भी भागते नहीं, उल्टे शरीर पर हमला करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। पिछली रात को न जाने कहां से हाथियों का झुंड आ घुसा। खदेड़ने पर भी भागा नहीं। गुंडा-हाथी के चूतड़ पर गोली मारने के बाद ही हाथियों का झुंड जंगल की तरफ भागा।"

पति की बातें सुनती हुई कासां ने 'खां' से मदिरा की बोतल निकाल आगे बढ़ा दी। सारइक ने दो कटोरों को पानी से धोकर उनमें मदिरा उड़ेल ली। एक घूंट मदिरा पीकर सारइक बोला – "समझती हो, अमफू की मां! इस बार धान तो बुरा नहीं हुआ। कितने घने शीश (बाल) हैं, देखती हो?"

"ईश्वर की नजर रहे तो अच्छा ही होगा। धान-चावल हो जाए तो अमफू के विवाह का भी इंतजाम करना होगा। जवान लड़की ठहरी। जल्द किसी के हाथ में दे देना ही अच्छा है। जमाना भी तो पहले जैसा नहीं रहा है।"

"हां, मगर उसके विवाह के लिए भला लड़का कहां है?"

"क्यों, उस हाबेसिको का लड़का क्या बुरा है?" पति के चेहरे की ओर देखते हुए उसने कहा।

"तुम भी बड़ी अच्छी बात कहती हो। हाबेसिको तो हमें फूटी आंख भी नहीं देखना चाहता। क्या तुम्हें इस बात का पता नहीं ?"

"हूं, मुझे तो पता नहीं। मगर ऐसा क्यों ?" उद्विग्न भाव से उसने पति से पूछा।

मदिरा का घूंट लेकर सारइक ने कहा – "अपने गांव लोंरि की भलाई के लिए कोई सोच-विचार करना वह 'लाइसेनेम' जैसा बड़ा पाप मानता है। मैंने जो उससे बताया कि 'बि-वोकेक' की जमीन पर हम खेती करेंगे, उसी कारण वह मुझे बुरा मानता है। यहां हमें एक स्कूल खोलना चाहिए – मेरी जबान से यह बात निकली ही थी कि बस, मैं लोंरि का महापापी हो गया।"

तभी किसी के खखारने की आवाज सुनकर दोनों ने मचान के नीचे झांककर देखा।

"फेरांके आ रहा है।" सारइक बोला।

सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर आते फेरांके की ओर देखते हुए सारइक ने पूछा – "ओ फेरांके, तुम ! आओ, आओ। कहां आए हो ?"

"यहीं, आपसे मिलने आया हूं।"

"बैठो, बैठो। मदिरा तो खत्म ही हो गई।"

"ठीक है, ठीक है। उसकी जरूरत नहीं।" कहता हुआ वह मचान पर ही बैठ गया।

"नी बासापी, आप कब आईं ?"

"ज्यादा देर नहीं हुई। तुम्हारे मामा को यह खाना देने आ गई। अगर मुझे पता होता कि तुम यहां आ रहे हो तो तुम्हारे हाथ ही देकर भेज देती।" एक कटोरा उसकी ओर आगे बढ़ाकर बासापी बोली।

"हां, मुझे भी पता होता तो आपको यह तकलीफ क्यों उठानी पड़ती ?"

सारइक ने बोतल की मदिरा फेरांके के कटोरे में उड़ेल दी। बोला – "हां, पीओ, मैं तो पी ही रहा हूं।"

एक घूंट मदिरा पीकर सिर हिलाए हुए फेरांके ने कहा – "काफी तेज मदिरा है।"

"यह रंमिली की मदिरा है। आम तेरें बाजार की मदिरा थोड़े है ! समझे, फेरांके ?"

"हां, हां, आज भी हमारे गांव की मदिरा 'लाओ पानी' का नाम है।"

"यह तो लोगों के प्यार-मुहब्बत का नतीजा है।"

"हां, लेकिन यह सब तो आपके और नी बासापी के सद्‌गुणों के कारण है। हमारे पास भला क्या है ? लेकिन हां, मैं एक खबर देने के लिए आया हूं।"

"कैसी खबर ?" गंभीरता से सारइक ने पूछा।

"कल बोथातलांसो में एक मीटिंग बुलाई गई है। चाहे जैसे भी हो, आप को मीटिंग में जरूर उपस्थित रहने को कहा गया है।"

मदिरा का कटोरा कुछ देर तक पकड़े रहकर सारइक सोचता रहा। मीटिंग बुलाने का कारण समझ न पाने के कारण उसने फेरांके से पूछा – "मीटिंग किस बात के लिए बुलाई गई

है, तुम्हें पता है ?"

"मैंने सुना है, दरबार या ऐसा ही कुछ होगा। कोई सेमसन इंति भी आयी है।"

"हां, हां, मुझे याद आ गई। बड़ी अच्छी खबर है।"

दोनों बड़े संतोष से मदिरा पीने लगे।

दोपहर हो आई। कासां पुष्ट एरी कीड़ों के कोयों की जांच कर रही थी। पुष्ट कोयों को अलग रखती जा रही थी; दो-एक कोयों को उंगली से घिसकर, पुष्ट हुए हैं या नहीं, परख रही थी। तभी कई हवाईजहाज पूरब की ओर से आसमान की बड़ी ऊंचाई पर आवाज करते निकल गए। हवाईजहाज की आवाज सुनकर सारइक आदि सिर उठाकर आसमान की ओर देखने लगे। पश्चिम दिशा में कतारों में जाते हवाईजहाजों की ओर देखते हुए सारइक बोला – "लगता है, जापानी हवाईजहाज हैं। सुना है, कोहिमा पर जापान का कब्जा हो गया। यह भी सुना है कि डिमापुर पर भी बमबारी की गई है।"

"बड़ा डर लग रहा है।"

बाहर आकर कासां ने भी डरते-डरते आसमान की ओर देखा। क्रमशः क्षितिज में ओझल होते हवाईजहाजों को देखकर उसने कहा – "ये तो चिड़ियों-जैसे ही हैं। उनकी आवाज सुनकर मुझे तो लगा था कि भूकंप आ गया है।"

फेरांके चलने को तैयार हुआ। सारइक बोला – "तुम भी तैयार रहना। रिसोबासा से भी कहना। हम सभी साथ चलेंगे। दरबार में किस बात की चर्चा होती है, सुनेंगे।"

"अच्छी बात।" कहकर फेरांके उतर गया।

फेंराके को सीढ़ियों से उतरते देखकर सारइक को लारेंस की बातें याद आ गईं। तो लारेंस उन बातों को भूला नहीं है। कारबी लोगों का अपना लौंरि, अपना अंचल जरूर बनेगा। यह तो हमारे लिए खुशी की खबर है। तब तो लगता है, कारबी लोगों में चेतना जग रही है। मुझे अब सेमसन से मिलना ही होगा।

सोच में डूबे पति की ओर देखते हुए कासां बोली – "अगर आप बाजार जाएं, तो कुछ काले और सफेद सूत के मुट्ठे लेते आएं। हेमाइ के लिए मैं कमीज बुन देना चाहती हूं।"

"अच्छा मगर सूत की कीमत तो आग हो गई है, लड़ाई का समय है न!"

सारइक धान के खेत की ओर उतर गया। उसके खेत में जाते ही 'टुनी' चिड़ियों का झुंड 'हुर्र-हुर्र' कर खेत से उड़ चला और पास के जंगल की ओर चला गया। पास के पहाड़ में 'हलौ' बंदरों के झुंड में चीख-पुकार होने लगी और झूम-खेत का वातावरण गर्म हो उठा।

21

सारएत रंहां की बिटिया है – कादम!

रंमिली के रिसोबासा की लड़की, अमफू की परमप्रिय सहेली!

गांव के पूर्वी सिरे पर उसका घर है।

वह बड़ी मिलनसार और खुशमिजाज है। बात-बात पर उसकी हंसी छलकती रहती है। दुख-विषाद को भी वह हंसते-हंसते सह सकती है।

छलकती हंसी वाली उसकी आंखें सरल मन वाली किशोरी की निष्कलुष तस्वीर प्रकट करती है। गोल चेहरे वाले छरहरे शरीर में पहाड़ी फूलों वाला सुकोमल लावण्य है। गर्दन न ज्यादा ऊंची है और न ज्यादा नीची। पूरे गले में लाल-पीली-नीली कांच-मणियों की मालाएं भरी हैं। जूड़े के ऊपरी ओर सामने के बाल निकालकर बड़े जतन से उसने जूड़ा बांध रखा है। चूंकि वह किशोरी ठहरी, इसलिए सामने के बालों को तो ऊपर उठाकर बांधना ही है! सुंदर-से कानों में चांदी के दो 'थूरिया' (कर्णफूल) हैं। दोनों हाथों में चांदी के कड़े। 'पे जांफं'[1] शरीर पर बांध कर वह अमफू के यहां जाने के लिए निकल आई।

सन्नाटा-भरे सारइक के घर में अमफू 'हंकुप'[2] में अकेली बैठी कपड़ा बुन रही थी। बड़ी तल्लीनता से कपड़े पर बेल-बूटे बनाते हुए उसे सें तेरन की याद आ गई। हंसते हुए जैसे आवेग भरे होठों से 'अमफू' कहकर पुकारने के बावजूद वह कुछ भी बता क्यों नहीं सका था?

एकटक वह उसकी ओर क्यों देखता रह गया था? उस शाम की याद कर उस क्षण उसे शर्म आ गई। 'केटेला-पहु'[3] के कांटे से कपड़े पर बेल-बूटे बनाते-बनाते वह उस घटना को याद कर रही थी।

मचान पर किसी के चढ़ आने की आवाज पाकर उसने मुड़कर देखा। हंसती हुई कादम चली आ रही थी।

"अरे नें, आओ, आओ। तू आ गई, अच्छा ही हुआ। मेरी किस्मत!"

"नें, क्या कर रही हो?" कादम ने पूछा।

"एक कपड़े पर बेल-बूटे बना रही हूं।"

"कैसे बूटे बना रही हो?"

कमर से करघे की 'थेहू'[4] खोलने की कोशिश करते देख कादम ने उसे रोक दिया और कहा – "खोलने की जरूरत नहीं, नें! देखूं जरा, तुम कौन-सा फूल बना रही हो।"

अमफू के पास ही बैठ वह अमफू के कपड़े पर बनाए बूटे देखने लगी। अमफू की मां उससे हमेशा कहा करती है कि कादम बड़े खूबसूरत बेल-बूटे बना सकती है। अमफू के बनाए बेल-बूटे देखकर कादम बोली – "अरी नें, तुम यह कौन-सा फूल बना रही हो? मुझे बड़ा सुंदर लग रहा है। इतना खूबसूरत! यह तो 'फंरं आंसू'[5] है। वाह! कौन-सा कपड़ा बुन रही हो?"

---

1. कारबी नारियों का शरीर पर बांधकर पहना जाने वाला एकतरह का बूटेदार कपड़ा।
2. कारबी बड़े घर के सामने का बरामदा।
3. शरीर पर लबे-लंबे घने कांटों वाला एक जानवर— साही।
4. हथकरघे की कमर से बांधी जाने वाली डोरी!
5. एक तरह का फूल।

" 'पोहो'[1] बुन रही हूं। पर यहीं आकर उलझन लग गई है। देर से सिर खपा रही हूं। जरा तुम देखो न, कहां उलझ गई है ?"

बुनी जाने वाली पगड़ी के बेल-बूटे कादम ने ध्यान से देखे। कुछ देर तक देखते हुए उसने कहा – "जरा दो धागे गिराकर बूटे बुनो।"

कादम के कहे मुताबिक अमफू ने बूटे बुने। 'फंरं आंसू' (फूल) कपड़े पर चमक उठे। खुशी से भरकर वह कह उठी – "नें, जैसा कि मेरे मन में था, अब जाकर वैसे फूल बन सके हैं। तुम आईं, इसीलिए ऐसा हो सका। क्या बताऊं, कभी-कभी मेरे मन में भी ऐसी ही उलझन लग जाती है।"

उसने तेज हाथों से ताना-बाना चलाकर एक अंगुल कपड़ा बुन लिया। ताने-बाने में जैसे मनपसंद फूल खो न जाएं, इस तरीके से उसने कपड़े को सहेज कर रख दिया। अब निश्चिंत होकर उसने सहेली की खबर ली।

"तुम कैसी हो, नें ?"

"अच्छी हूं। आज तो हवाईजहाजों ने हमें बहुत डरा दिया। आवाज सुनते ही ऐसा लगने लगा था कि कहां जाएं, क्या करें ?"

"हां, मुझे भी तो बड़ा डर लग रहा था। जानती हो, मैंने डरते-डरते उन्हें देखा था। लग रहा था, सिर पर से उड़ते-उड़ते कहीं गिर न पड़ें। ओह, कैसी अजीब चीज है हवाईजहाज !"

"सुना है कि इन गोरे साहबों या कंपनी के आने के बाद से ही यह सब हमारे देश में आए हैं। शायद वहां हेमाइ ने भी हवाईजाहजों को देखा होगा। है न, नें ?"

"हां, जरूर देखा होगा। उसके न रहने पर घर बड़ा सूना-सूना लग रहा है। मां भी आज खेत में गई हैं। इसलिए इस अधूरी पोहो को ही पूरा करने में जुट गई थी।"

"सच कहती हो !, नें, हेमाइ के न रहने पर गांव ही न जाने कैसा खाली-खाली लग रहा है ! कामपुर में न जाने वह कैसा होगा !"

"पता तो नहीं, सुना है कि हमारे इधर के बहुत से लड़के कामपुर में पढ़ा करते हैं। रंमांदु, उमचेरा आद्रि के लड़के तो इसी ओर से आते-जाते दिखाई पड़ते हैं।"

"हूं, वे बड़े सुंदर-सुंदर कपड़े पहना करते हैं। उन्हें देखने पर देखते ही रहने की इच्छा होती है।" उत्साह से भरकर कादम बोली।

घुंडी घुसेड़कर सूत को सहेजती हुई अमफू ने ताने को अपने शरीर की ओर खींच लिया और सहेली की ओर टेढ़ी नजर से देखती हुई बोली – "रंमांदु के किसी लड़के के प्रेम में तो नहीं पड़ी हो न ?"

"धत नें, तुम भी न जाने कैसी-कैसी बातें सोच लेती हो।" शरमाती हुई कादम बोली।

"अरे, उनसे तुम्हारे प्यार का अंदाजा लगाने पर ही तो पूछती हूं।"

"सच कहती हो, नें ! पिछले साल रंमांदु की तरफ रहने वाला एक लड़का हमारे यहां एक

---

1. कारबी पगड़ी।

रात रहा था। चेहरे पर वह कौन-सी एक चीज मलता था; आटे जैसी महीन। दूर से ही खुशबू आती है। उसे क्या कहते हैं, जानती हो, नें ?"

"हूं, शायद पाउडर होगा।" अमफू बोली।

"हां, हां, पाउडर-पाउडर। मैं तो उसका नाम ही भूल गई थी। उसकी डिब्बी भी बड़ी सुंदर थी। छिपाकर रख लेने की इच्छा हो रही थी। कितना चिकना था वह पाउडर ! कितना कोमल !"

"देखना नें, उस लड़के का दिल पाउडर जैसा कोमल नहीं भी हो सकता है।" घुंडी के टूटे धागे को जोड़ती हुई अमफू ने मजाक में सावधान किया।

"सच कहती हो, भई। लेकिन इंसान का मन भला वैसा क्यों है ? जिरसं में हुए झगड़े का कारण क्या तुम जानती हो ?" अफसोस के साथ उसने पूछा।

"हां, कुछ तो सुना था। कहते हैं कि क्लेंसारपो ने सें तेरन पर अत्याचार किया था। बात सच है क्या ?"

"हूं। असल में बात क्या है, जानती हो ?" अमफू की ओर देखते हुए कादम ने सवाल किया।

"उहूं।"

"सें भैया तुम्हें प्यार करता है, कारण यही है।" कादम ने गंभीर होकर कहा।

"उफ, बेचारा ! भला इसमें उसका क्या दोषं ?"

अमफू की बातों में सहानुभूति का भाव था। सें तेरन की वे आंखें फिर उसके सामने तिर गईं। नदी-घाट पर क्लेंसारपो ने खुद उसका जो अपमान किया था, जो निर्मम बर्ताव किया था, उसका दृश्य भी उसकी आंखों के सामने आ गया।

"क्या हो गया है, नें ? देखती हूं कि तुम कुछ सोच में पड़ गई हो ?"

कादम की आवाज से मानो वह जाग उठी। तकुवे को जोर से चलाकर वह प्रकृतिस्थ हो गई। सहेली की मनोभावना समझकर उसने फिर कहा – "सच कहती हूं, नें, सें भैया तुमसे प्यार करते हैं ! समझी। कल नदी-तट पर वह जो गीत गा रहा था – उसकी याद से मुझे बार-बार हंसी आ जाती है।"

"कौन-सा गीत था वह ?" अमफू ने पूछा।

"प्रेम का गीत। तुमसे मुहब्बत का गीत।" कादम हंसती हुई बोली।

"धत !" शर्म के मारे अमफू का चेहरा लाल हो उठा। उसे लगा, मानो उसके पास सें तेरन ही आ बैठा हो।

आश्विन महीने का सूरज धीरे-धीरे ढलने लगा। हथकरघे को लपेटकर अमफू ने उसी दीवार पर टांग दिया। फिर कादम की ओर देखते हुए उसने कहा – "दिन ज्यादा नहीं है। घर के सारे काम भी पड़े हैं। अगर तुम अभी न आ जातीं तो बूटे बनाने का काम भी आज खत्म न होता।"

"मेरी भी एक पीनी बुनने को अधूरी पड़ी है। 'सीबू'[1] कहां मिलेगा पता नहीं। नी काकुक[2] से ही पूछना पड़ेगा।" उठते हुए कादम ने कहा।

"अपनी पीनी रंगते वक्त मेरी पीनी को भी उसमें डाल देना, नें !"

"हूं, जरूर। अब चलती हूं।"

कादम धीरे-धीरे मचान पर से उतर गई। सीढ़ी के सिरे पर अमफू को खड़ा देख उसने आंगन से आवाज दी – "कल सरसों साग की खोज में चलोगी क्या, नें ?"

"नहीं, कल नहीं जाना है। किसी दूसरे दिन चलूंगी। हम एक साथ चलेंगी, समझी न ?"

"हां, हां, जरूर।" कादम हामी भरकर घर की ओर चल पड़ी।

सीढ़ी के खंभे को पकड़कर अमफू ने पहाड़ के जंगल की ओर नजर डाली। दिन-ढले की धूप पड़ने से जंगल कजरारे लग रहे थे। तराई से होकर उड़ते जा रहे बगुलों की कतारों पर उसकी नजर पड़ी। अव्यक्त वेदना से उसका दिल तड़प उठा। यह तो मिलन की एक तेज आकांक्षा का आकर्षण है। प्रेम और मिलन, यही तो इंसान की सच्ची जिंदगी है। इंसान का सच्चा चिरंतन रूप है।

आंगन में दाने चुगता मुर्गा 'क्रक्, क्रक्' आवाज करता हुआ अपने मुंह का दाना एक बार जमीन पर डालता, फिर एक बार चोंच से उठाता, थोड़ी दूर दाना चुगने वाली मुर्गी को अपने पास बुला रहा था। मुर्गी दौड़ती हुई मुर्गे के पास आई और उसके दिए दाने को अपनी चोंच से उठा लिया। मुर्गे-मुर्गी के मन का आदान-प्रदान देखकर अमफू के मन में एक तरह का मोह-भरा हाहाकार जग उठा। मुर्गे-मुर्गी पर से नजर हटाकर वह उदास भाव से क्षितिज में इकट्ठे बादलों की ओर देखने लगी।

22

रंमिली गांव से कुछ हटकर एक और कारबी गांव है – बी-हेनरू। उस गांव को चारों ओर से टड़ा नाम की जंगली झाड़ियों ने बिल्कुल ढक-सा लिया था। दूर से कल्पना ही नहीं की जा सकती कि वहां कोई गांव भी है। बी-हेनरू 'हाबे' का गांव है। हाबे भी ऐसा-वैसा नहीं, बड़ा हाबे है – हाबेसिको। रंहारंबं की राजसत्ता द्वारा पदाभिषिक्त वही लोंरी का मुख्य न्यायाधीश भी है। हाबेसिको की जबान से निकली बात ही राजा की बात होती है। उसका न्याय ही राजा का न्याय होता है। लोंरी के 'छोलांदो' को हाबेसिको की बात पूरी तरह माननी पड़ती है। उसका इधर-उधर होना बड़ा भारी अपराध है। उस अपराध का फैसला कारबी राजा रंहां लिंदक

---

1. एक तरह की लता, जिसकी पत्तियों के अर्क से कारबी 'पीनी' (मेखला) आदि कपड़े काले रंग में रंगे जाते हैं।
2. चाची।

जगह आ बैठे। मदिरा पीते हुए, वे दोनों भी लुञ्चेपो का गीत सुनने लगे –

"ए वान देत मिर सेंलं,
इरु कासेन आसिफं
कप्लि पालांहे कलं,
सिफं दन-छुरि प्लेंचें
सिफं किमपेत लां दुथम।"

कासेन दादा के जमाने में कारबी लोग कपिली और कलं नदियों के तटों पर रहते थे। उस विशाल गांव के साथ हाच्छा नृत्य का गहरा संपर्क रहा है। दादा कासेन भी नृत्य करते, नृत्य-गीतों से लच्छमी का आह्वान, स्वागत करते। लुञ्चेपो का गीत तो मानो उस खोए अतीत को ही लौटा लाया हो। उसके गीत के शब्द और धुन ने सारइक के आंगन को गंभीर बना दिया।

कासेन दादा के यहां भी गांव के बड़े-बूढ़े कतारों में बैठे आज की ही भांति हाच्छा नृत्य की मदिरा पाने की बाट जोहते रहते। नृत्य की मदिरा वितरित करने हेतु किशोरों का आह्वान करते। लुञ्चेपो अपने मधुर स्वर से गीत गाता रहा –

"काथि संमी पाथिर क्लं
सार सार संमेइ पांकांबं
सार बार सेर हारलुं देंरण
थारे जरलां नांले नन !"

गीत सुनकर रंमिली के बड़े-बूढ़े खुशी से भरकर मुस्कराने-हंसने लगे। लिंदक भी सर झुकाए उसका तात्पर्य अनुभव करने की कोशिश करता रहा। उमंग से भरकर कटोरी की मदिरा एक ही बार में उसने निगल ली। लिंदक को लगा, मानो वह दादा कासेन के बैठकखाने में ही बैठा हुआ हो।

कासेन के जमाने में भी जिरसं और हाच्छा नृत्य का समादर था। सोदार केथे, बारलोन गादि कासेन के आंगन में तीन-तीन चक्कर लगाते हुए नृत्य करते थे। नृत्य के मृदुल छंद में की रंगीन बेल-बूटेदार कमीजों के बूटों के सूत भी मानो नाच रहे थे। लुञ्चेपो के गीत के जे में वही तस्वीर साफ खिल उठी –

"थुरदुन सोदार पेन बार लोन !
हाच्छा कान आचर आरन;
हाच्छा काननन क्लं पाकथम,
जेंकि आप्रे पांतेन बं !
हाच्छा कानरा पांदुकजन।"

रंमिली के लुञ्चेपो ने हाच्छा नृत्य-गीत के नीति-नियम संबंधी ये गीत गाकर किशोरों को उद्‌बोधित कर दिया। इसके ऐतिह्य-परंपरा और संदर्य की याद दिलाकर नौजवानों के मन-प्राण को विभोर कर दिया। ऐसे नृत्य-गीत के अपार आनंद का भला कहीं अंत है ? कासेन के आंगन में भी किशोर समय, भूख-प्यास आदि सब कुछ भूल-से गए थे। कासेन के जमाने में भी तो बड़े-बूढ़ों को समय की याद किशोरों को दिलानी पड़ती थी –

"मिर कासात सेंलें
पानिं बेहेमपि सकसन;
निंबे हाच्छा पादेरजन !
निंसं वोसक तालिरं
थारे लो आनि ति नन !
आंदें नांरत लंथम थम
हेमतुन तिफलाकछि आरन
सकसेते आदाय दो लासन
आदाय दुमा क क थम-थम।"

हाच्छा नृत्य में तल्लीन किशोर समय की बात भूल गए थे। आसमान में कालपुरुष नक्षत्र ढलने लगा था। यह देखकर उन लोगों ने नृत्य-समाप्ति की घोषणा की। केले के पौधे के सिरे पर के कोमल पत्ते के डंठल पर तीन जगह कटारी से निशान बनाकर नृत्य-समाप्ति की घोषणा की जाती थी। अगर कहीं सूरज निकल आए तो तंबाकू की तीन साबुत पत्तियां चढ़ाकर अपराध का दोष-भंजन करना पड़ेगा।

इसी तरह सारइक के यहां मदिरा-भात खाते-पीते हुए 'नई लच्छमी' का नृत्य-गीत के जरिये स्वागत किया गया। हाच्छा नृत्य की समाप्ति के साथ-साथ चांद की चांदनी भी अगहन के कुहरे में सफेद हो गई। पुरानी परंपरा के अनुसार सारइक ने हाच्छा-नृत्य समाप्ति की घोषणा करने के लिए रिसोबासा से अनुरोध किया।

नृत्य-समाप्ति के बाद सब लोग मदिरा-भात खा-पीकर अपने-अपने घर चले गए। अब तक सन्नाटे में पड़ा गांव कुत्तों के भौंकने की आवाज से अचानक जग कर फिर धीरे-धीरे शांत-नीरव होने लगा। शोर-गुल से भरा सारइक का घर भी अब बुझते अलाव की भांति तापहीन, निस्तेज-सा हो गया।

26

हाच्छा-नृत्य हुए तीन दिन हो गए। झूम खेती का धान घर आ जाने पर अमफू आदि के कामकाज कुछ कम हो गए। अब सरसों का साग की खोज में जाने का तय कर अमफू कादम से मिली।

कादम, कासां और अमफू।

छोटी-छोटी खां लिए तीनों वहां पहुंचीं, जहां सरसों उगी हुई थी।

शाम की मीठी धूप सरसों के खेत को और ज्यादा मोहक बना रही थी। नदी किनारे खड़े होकर अमफू ने फूली हुई सरसों के फैले खेत पर नजर डाली। विचित्र रंगों वाली उड़ती हुई तितलियों और गुन-गुन गुंजन करती, फूलों के रस और पराग बटोरती मधुमक्खियों को देखकर अमफू सोचने लगी – कितना खूबसूरत है यह सरसों का खेत!

टेढ़ी-मेढ़ी बहती जाती बरापानी नदी भी अमफू की आंखों में अपूर्व सौंदर्यमयी बनकर लहरा उठी। हवा में लहराते सरसों के फूल देखकर अमफू खुशी के मारे मानो अधीर हो उठी। उसका वह आनंद मानो ऊपर छाए शांत आकाश की भांति ही विस्तृत और असीम था।

बिन फूले सरसों के पौधों की कोमल-कोमल पत्तियां वे तीनों चुनने लगीं। मुट्ठी-भर साग खां में डालती हुई कादम बोली – "नें, देखती हो न, ये सरसों के फूल कितने सुंदर हैं!"

अमफू और कासां चुपचाप साग चुन रही थीं। फूले हुए सरसों के फूलों पर सिर उठाकर नजर डालती हुई अमफू बोली – "सचमुच, नें, सरसों के ये फूल बहुत ही सुंदर हैं। देखकर मुझे कितना आनंद आ रहा है, क्या बताऊं? जानती हो, इनके बीच आने पर मन के दुखों की बातें विस्तृत हो जांती हैं। सोचती हूं, आदमी के मन भी इनके जैसे सुंदर होते!"

"हां, तब तो हम हमेशा हंसती ही रहतीं। है न, नें?" कादम बोली।

"हां, क्यों नहीं?" कहकर अमफू फिर साग चुनने में जुट गई।

कासां साग चुनती हुई इनकी बातें सुनती जा रही थी। उसे कादम की हंसी और आनंद आज मानो परेशान करने लगे थे। हाच्छा-नृत्य की उस रात को किशोर लड़के कादम की प्रशंसा कर रहे थे, इससे उसके मन के गुप्त कोने में ईर्ष्या की भावना जग उठी थी। बात छेड़ने के बहाने उसने पूछा – "भला हाच्छा-नृत्य के आनंद से बढ़कर भी ये सरसों के फूल ज्यादा मधुर और सुंदर हैं क्या, नें?"

"अस नें, कासां की बात तो सुनो। भला सरसों के फूलों के साथ हाच्छा-नृत्य का मिलान कहां से हो गया?"

यह कहकर कादम खिलखिलाकर हंस पड़ी। उसकी हंसी की लहरें फैलती हुई मानो दूर की पहाड़ियों में खो गईं।

"अरे नें, कादम तो बात-बात पर हंसती ही रहती है। अपने मन के आनंद की बात ही मैं

कह रही थी, नें ने तो शायद कुछ और ही समझ लिया।" कासां बोली।

"भला मैंने और क्या समझ लिया ?" हंसी रोककर कादम गंभीर हो गई।

अमफू ने देखा, दोनों की बातों में नाराजगी का भाव आ गया है। उसने स्थिति को संभालने के इरादे से कहा – "नहीं, नें कादम, कासां जो कह रही है उसे मैं समझ रही हूं।"

"तुमने भला किस ढंग से सोचा-समझा है ?" कादम ने मान-भरे स्वर में पूछा।

"नें कासां जो सोच रही है, वह सच है। हाच्छा-नृत्य के आनंद की अपेक्षा सरसों के फूलों से मिलने वाला आनंद श्रेष्ठ नहीं हो सकता।"

"मगर क्यों ?" पत्तियां तोड़ना छोड़ अचरज से कादम ने पूछा।

"सरसों के फूलों से मिलने वाला आनंद इन फूलों जैसा ही क्षणिक है। परंतु रंग-भरे हाच्छा-नृत्य का आनंद तो स्थायी है।" अमफू कादम को ऐसे समझा रही थी मानो किसी नन्ही बच्ची को समझा रही हो। कुछ समझ न पाकर कादम सहेली के चेहरे की ओर अबोध-जैसी देखती रही।

"क्या तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आई है, नें ?"

"ऊहूं। तुम लोगों की बात मुझे बिल्कुल समझ में नहीं आई है।"

कादम के पास आकर अमफू ने कहा – "तुम्हें मालूम होना चाहिए कि जिरसं में जो कटुता फैल गई थी, उसे हाच्छा-नृत्य ने मिटाकर मधुर बना दिया है। क्लेंदुन-क्लेंसारपो के बीच छाया काला बादल छंट गया। लोगों के अंतर को आपस में मिला सके, उसके जैसा आनंद भला इस दुनिया में और क्या हो सकता है ? नें कासां की बात का मतलब भी वही है।"

"अरी अम्मा ! नें कासां ने भला ऐसी-ऐसी बातें कहां से सीख लीं ? यह बात तो मुझ मूरख के दिमाग में आ ही नहीं रही थी।" कहती हुई कादम फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी। वह हंसी बिल्कुल निश्छल थी। वह पास बहती धारा के पानी जैसा ही निर्मल और स्वतःस्फूर्त थी।

"कुछ कहने के लिए कहूं, ऐसा तो मैंने भी कुछ सोचा न था। अब अमफू नें के समझाने पर मेरा मन भी खुला-खुला और हल्का हो गया है।" कासां बोली।

अमफू ने कासां से पूछा – "अच्छा, हमारा क्लेंसारपो आदमी कैसा है ?"

"क्लेंसारपो के बारे में पूछती हो ? वह कुछ निर्मम और स्वेच्छाचारी स्वभाव का आदमी है।"

"सिर्फ इतना ही नहीं, वह कामुक और प्रतिशोध-प्रिय नौजवान है।" क्लेंसारपो की समालोचना करते हुए कादम ने कहा। फिर उसने अमफू से पूछा – "खैर, तुम भला क्लेंसारपो के बारे में किसलिए सोच रही हो ?"

"यूं ही। चूंकि जिरसं से तुम्हारा घनिष्ठ संबंध है, इसीलिए तुमसे पूछ रही हूं। क्या क्लेंदुन के साथ उसका समझौता हो सकेगा ?"

"तुमने तो बड़ा ही जटिल सवाल कर डाला। नें, आदमी का स्वभाव समझ पाना तो बड़ा कठिन है।"

"हूं। अगर क्लेंदुन और क्लेंसारपो, दोनों में मेल हो जाता तो हमेशा हमारे गांव की हंसी-खुशी बनी ही रहती।" अमफू चिंतित स्वर में बोली।

अचानक अमफू का मन दुविधा की भावना में डूब गया। उसे लगा, इस रंमिली गाव की हंसी हमेशा खिली रहे, इसके लिए उसे बहुत कुछ त्याग करने की आवश्यकता है।

नदी के दूसरे किनारे से भैसों का झुंड चला आ रहा था। उसकी ओर देखती हुई अमफू सोच में डूबी रही। साग तोड़ना छोड़कर उसे दूर नजर गड़ाए सोच में पड़े देख कादम ने पूछा, "क्या हो गया तुम्हें, ट्रें ? उधर क्या देख रही हो ?"

"वे भैंसें हमारे गांव की ही हैं या नहीं ?" कुछ देर भैंसों की ओर देखकर कासां बोली, "नहीं, वे हमारे गांव की नहीं हैं। वे बी-हेनरू गांव की हैं।"

"तुम्हें कैसे पता चला ?" कादम ने पूछा।

"सफेद रंग की भैंसें हमारे गांव में नहीं हैं। बी-हेनरू गांव में ही ऐसी भैंसें देखी थीं।" कासां ने बताया। यों बातें करती हुई तीनों ने साग चुना।

कुछ देर बाद, साग चुनना खत्म हो जाने पर तीनों नदी किनारे की खुली जगह में बैठकर आराम करने लगीं। अपने शरीर में लगे सरसों के फूलों को अमफू ने छुड़ाया। खां के अंदर के साग से सरसों के फूलने वाले दो-चार डंठल कासां ने चुनकर निकाल लिए। दूसरी ओर के सरसों के फूलों पर नजर डालते हुए कादम बोली – "भले ही ये फूल क्षणिक हों, पर सरसों के ये फूल देखने में बड़े ही अच्छे लगते हैं।"

"लगता है, तुम भी इन्द्र-कन्या की भांति सरसों के इन फूलों पर ही मुग्ध होना चाहती हो।" कासां ने ठिठोली करते हुए कहा।

"इन्द्र-कन्या ?" कादम ने अचरज से पूछा।

अमफू भी मुड़कर कासां के चेहरे की ओर देखने लगी।

"क्यों, अरे उस बेचारी मयूरी का किस्सा तुम्हें याद नहीं, जिसे श्राप मिला था ?"

"ओ, दादी मां का वह किस्सा ! तुम्हें तो आज भी खूब याद है !"

तीनों बातों में खो-सी गई थीं। बी-हेनरू की भैंसें उस किनारे के सरसों के खेत तक आ पहुंची थीं। उनके साथ कुछ चरवाहे भी थे। शाम की धूप में पीठ सेंकती अमफू और उसकी सहेलियों को बैठे देख दो-तीन चरवाहों ने उन्हें छेड़ने के इरादे से कहा – "अरे, वे कहां की लड़किया हैं ? रंमिली की हैं क्या ?"

उनकी बातें सुनकर अमफू और सहेलियों ने मुड़कर उनकी ओर देखा। सूरज की किरणों से झिलमलाते पानी ने मानो उनकी आंखों को चकाचौंध कर दिया। आंखों को हथेली से आड़ कर कादम बोली – "हां, हां, रंमिली की हैं।"

"ओ, जहां कोई सारबासा नहीं, उस भिखारी गांव की लड़कियां हो।" कहकर लड़के

ठहाके लगाकर हंस पड़े। अमफू और सहेलियों ने अपने को अपमानित महसूस किया और खड़ी हो गईं।

कादम ने ऊंची आवाज में डांटते हुए कहा – "रे, मुंह संभालकर बात कर, खबरदार!"

साग-भरा खां पीठ पर ले अमफू ने कदम बढ़ाए। उसे जाते देख कादम और कासां भी चल पड़ीं। उन्हें जाते देख चरवाहों का हौसला बढ़ गया, वे और ज्यादा हंसी करने लगे। बी-हेनरू के उन लड़कों की परिहास और व्यंग्य से भरी बातों पर अमफू और सहेलियों ने ध्यान न देना ही अच्छा समझा। धीरे-धीरे सरसों के खेत से वे दूर हट गईं। लड़कों के ठहाकों-ठिठोलियों की आवाजें भी धीरे-धीरे दूर होती गईं।

चलते-चलते कादम ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा – "बी-हेनरू के वे लड़के बड़े घमंडी हैं। ढंग से बातें करना भी नहीं जानते।"

"हूं, हाबेसिको के गांव के लड़के हैं न! जरा भी भद्रता-सभ्यता नहीं जानते। मान-सम्मान भी नहीं समझते।"

"जैसा पेड़ वैसा ही बीज। अगर हाबेसिको भला आदमी होता तो उसके गांव के लड़के-बच्चे भी अच्छे-भले होते।" अमफू ने कासां की बात का समर्थन किया।

"नें, मेरी कसम है, इन बातों को बढ़ाकर कोई लड़ाई न लगवाना। बापू को सारबासा के पद से हटाने के कारण लोग यो हीं गुस्से से जल रहे हैं। उस पर यह बात सुनते ही वे और ज्यादा भड़क उठेंगे। इन चरवाहों की बातें तो हमें जरा भी छू नहीं सकतीं। बी-हेनरू की खुजली तो खुद उनके ही शरीर में लगेगी।" अमफू ने कादम को समझाया।

अमफू, कादम, कासां – तीनों गांव पहुंची। उनके चेहरों पर विषाद की घनी छाया थी। हमेशा हंसमुख रहने वाली रंगिली कादम का चेहरा भी मुर्झाया हुआ था। उनके लिए यह ऐसी वेदना थी जिसका वर्णन नहीं हो सकता। मचान-घर की सीढ़ी पर चढ़कर अमफू ने दूर की पहाड़ियों की ओर नजर डाली। उसने देखा, पहाड़ियां धीरे-धीरे धुंधली होती जा रही हैं। उसे लगा, डूबता हुआ सूरज मानो किसी अव्यक्त वेदना से विक्षुब्ध-सा हो उठा है।

27

बैठालांसो!

यह नया नाम है। आजकल का जाना-पहचाना नाम। बरापानी नदी की धारा जिसे छूती हुई बहती जा रही है, वही एक छोटी-सी जगह है बैठालांसो!

बड़ी प्यारी-सी जगह है यह। मानो टीका पहाड़ से उतर आई कोई सोलह साल की किशोरी हो।

इस जगह का पुराना नाम है वोथात लांसो।

वो – थात – लांसो ?

मुर्गा-काटी-निर्झरिणी ! भला इतना डरावना नाम क्यों ? टीका के वनांचल से निकल आई इस सुंदर-सी निर्झरिणी के शरीर पर किसने यह कलंक लगा दिया ? तो क्या टीका पहाड़ के वे भूत-प्रेत इसी निर्झरिणी को पकड़े उतर आए थे, जिनसे कि 'काजिर वेपी' तक डरता था !

कौन जाने, हो भी सकता है ।

टीका सारपो की महिमा अपार है । ऐसा कौन-सा काम है, जो उससे किया न जा सके ? मुर्गा-पक्षी तो कारबी का रक्षा-कवच है । कारबी लोगों की यह प्राचीन प्रथा है कि किसी संकट में पड़ने पर एक मुर्गे की बलि देकर उससे बचाव की कोशिश करते हैं । कहा जाता है कि मुर्गे का ताजा खून उन देवताओं की अतृप्त क्षुधा मिटाया करता था । झिर-झिर बहती यह छोटी-सी निर्झरिणी मानो देवता और मानव के मिलन की चिरंतन गवाही आज तक देती आ रही है । इस परम पवित्र जल-धारा के पास बैठकर कारबी लोग मुर्गा चढ़ाकर बलि देने का कार्य संपन्न करते थे, इसी कारण इस धारा का नाम पड़ गया 'वोथात लांसो' ।

घाटी और पहाड़ के सम्मिश्रण की मिलन-भूमि यह 'बैठालांसो' एक नए युग का मूल्यांकन है ।

बरापानी के पूरब की समतल भूमि पर से बहती आकर 'वोथात लांसो' की धारा कारबी लांपी में गिरती है । इस धारा के किनारे उत्तराभिमुख बनाए गए तीन घर हैं । घर की छतें टिन की हैं और उन्हें लंबाई में बनाया गया है । गोदामघर-जैसा । काठ की तख्तियों से दीवारें बनी हैं । उन टिन-घरों के सिरे पर से टीका-पहाड़ जाने का एक संकरा-सा रास्ता है । ये घर राम-धन 'केञा'[1] का है । केञा-दुकान से थोड़ी ही दूर फूस की छत वाली एक दुकान है । यह मुनीन्द्र की दुकान है । उस बूढ़े दुकानदार का पूरा नाम मुनीन्द्र राय है । टीका-मिशन के आने के बहुत पहले ही मुनीन्द्र ने यहां आकर दुकान लगाई थी । मुनीन्द्र की दुकान की बीड़ी न पी हो, भला इस अंचल से ऐसा कौन कारबी नौजवान है ? उसकी दुकान को लेकर ही गीत बन गया था–

कें सां मनि आदुकान
बिरि मंरा सांसिनां ।

(यानी – मनि की दुकान खुल गई । अब हमें चलकर बीड़ी पीनी है ।)

क्षण-भर विश्राम लेने के बहाने मुनीन्द्र की दुकान की बीड़ी पीना नौजवान लोग भूलते न थे । उसके साथ ही मुनी की दुकान का मीठा गुड़ 'नकलां' देकर अपनी प्रेमिका की मनोभावना जांचना भी वे भूलते न थे । दिल लेने-देने का वह मीठा आकर्षण देखकर मुनीन्द्र भी हंसा करता और मुट्ठी-भर गुड़ ज्यादा देकर उनके दिलों को और ज्यादा मीठा बना देता ।

पहाड़ से उतर आए किशोर-किशोरियों के दिल लेने-देने की आसान राह से उसने भी पहाड़ की लाख, कपास और तिल से दिल जोड़ लिया था । वह सब समय पर आकर उसकी

---

1. बाहरी दुकानदार या व्यापारियों के लिए प्रयुक्त शब्द, जिसमें तिरस्कार की झलक है । 'काइयां' के अर्थ में प्राय: प्रयुक्त होता है । काइया — केञा ।

दुकान में इकट्ठे हो जाते जिन्हें वह नावों में लाद-लाद कर कामपुर भेजा करता। पर मिशनरी के आने के साथ साथ केञा महाजन भी आकर वहां बस गया। अब तो मुनीन्द्र राय के व्यापार का रुख भी बदल गया। नमक, कपड़े आदि के साथ 'केञा महाजन' ने काली अफीम लाकर पहाड़-भर में फैला दी। उस अफीम के माया-जाल में फंसकर पहाड़ के लाख, कपास आदि भी रामधन केञा के गोदाम में भरने लगे। उस काले व्यापार के साथ होड़ में मुनीन्द्र की दुकान को हार माननी पड़ी। हालांकि व्यापार में गिरावट आने पर भी मुनीन्द्र कारबी लोगों की नजर में पहले जैसा ही मुनीन्द्र बना रहा।

इन्हीं दुकानों को लेकर बैठालांसो में एक अलग वातावरण बन गया था। कुछ और भले ही न हो, वहां हर मंगलवार को एक हाट-बाजार लगने लगा था। यह साप्ताहिक बाजार असल में सारमुं बासिको के अच्छे विचार का नतीजा था। उस हाट-बाजार की घाटी के साथ वहां के निवासियों का जल-मार्ग द्वारा सुनिश्चित रूप से संबंध जुड़ गया। इसी हाट-बाजार के जरिये घाटी और पहाड़ के बीच भावनाओं के आदान-प्रदान में भी आसानी हो गई। व्यापार-वाणिज्य विचित्र-विचित्र लोगों से संबंध जोड़ देता है। बैठालांसो के पुराने रूप के साथ-साथ उस हाट ने लोगों के मन भी बदल डाले।

सूने-से बैठालांसो घाट पर सुबह का कुहरा चीरती हुई तीन नावें आकर रुक गईं। उस निर्जन घाट पर किसी की आहट पाकर कुछ कौवे 'कां-कां' की आवाज में चीख उठे। नाव से तट पर उतारे गए सामानों की 'टुं-टां' की आवाजों से नदी-घाट मुखरित हो उठा।

सूरज के दो बांस ऊपर चढ़ते ही पहाड़ पर से हाट-बाजार में आने वाले लोगों के झुंड उतरने लगे। लाख, कपास, तिल से लेकर कच्चू, बैंगन, मिर्च आदि तक को पीठ पर बांधे लोग बेचने के लिए ला रहे थे। इनके बदले वे नमक और सूखी मछलियों के साथ कुछ जरूरत की चीजें खरीदेंगे। दूर के सोच्छें, रंमांदु, उमतिली आदि गांवों से भी कारबी लोग सामान बेचने के लिए बैठालांसो आया करते हैं। सामान खरीद-फरोख्त करते हुए लोग सुख-दुख के समाचार भी ले आते हैं और वहां से लौटते हुए बाहरी दुनिया के समाचार भी ले जाते हैं। इसी तरह वे पहाड़ी अंचल घाटी के साथ संपर्क बनाए रखते हैं। हाट-बाजार में मिले विचित्र लोगों के सम्मिश्रण, मेल-मिलाप से कारबी लोगों को एक विशाल देश के बारे में जानने में, अनुभव करने में मदद मिलती है।

सारइक भी हाट-बाजार में आया था।

बैठालांसो जाने की उनकी पगडंडी संकरी और टेढ़ी-मेढ़ी थी। वोथात लांसो की धारा का पिंडलियों तक का पानी पार कर वह मुनीन्द्र राय की दुकान के सामने पहुंचा। रामधन केञा बाहर बैठा कपास तौलने का निरीक्षण कर रहा था। सारइक को देखकर उसने पुकारा – "राम राम, दादू! जरा बातें करनी हैं; इधर आ जाना।"

केञा की बात सुनकर सारइक ने मुड़कर देखा। 'कुछ देर बाद आऊंगा', हाथ से ऐसा इशारा कर वह मुनीन्द्र की दुकान में गया। मचान पर बैठा मुनीन्द्र कुछ हिसाब कर रहा था, सारइक को आते देखकर उसने आवाज दी – "कारदम, दादू! कैसे हैं?"

"अच्छा ही हूं।" कहता हुआ सारइक दुकान की मचान पर ही आ बैठा। हिसाब की बही को एक ओर रखकर मुनी ने एक बीड़ी बढ़ाते हुए पूछा – "मैंने फेरांके के जरिये एक खबर भिजवाई थी, मिली है न ?"

"हां, मिली है। मेरे लड़के ने कौन-सी खबर भेजी है ?"

"कामपुर बाजार में आपके लड़के से मुलाकात हुई थी। कह रहा था कि परीक्षा नजदीक आ गई है, इसलिए वह घर नहीं आएगा। कुछ खर्च-वर्च भेजने को कहा है। पर दादू, सच मानो, आपका लड़का एक इंसान बनेगा। वह अब पहले का हेमाइ नहीं रहा। काफी बदल चुका है।"

"उसकी किस्मत में क्या है, मुझे तो पता नहीं। मगर आप क्या इस बीच कामपुर जाएंगे ?" बीड़ी का कश लेते हुए सारइक ने पूछा।

"हां, मुझे परसों जाना है। आप मेरे ही हाथ भेज सकते हैं। जाते वक्त ले जा सकता हूं।"

"ठीक है। अभी मुझे भी कुछ बाजार करना है। अभी उठता हूं।" कहता हुआ सारइक उठ पड़ा।

तभी मुनीन्द्र ने पुकारा – "दादू, मैंने एक बात सुनी है, क्या वह सच है ?"

"कौन-सी बात ?" चलने को तैयार सारइक ने उसके चेहरे की ओर देखते हुए पूछा।

"सुना है, आप पर कोई दोष लगाकर 'बरहाबाइ' ने विचार बैठाया था, कोई सजा दी है ? भला, वह बात क्या है ?"

"बात तो मुझे भी पता नहीं, मुनी बाबू ! पर अब तो सिंनत ही हमारे गांव का मुखिया है।"

"ओ, ऐसी बात है ? इसीलिए तो आजकल उसे बरहाबाइ के साथ घूमते-फिरते देखता हूं। मगर बरहाबाइ ने तो यह अच्छा काम नहीं किया। मुझे पता है कि उसने आजकल नेपालियों से हाथ मिलाया है। अब तो वह मेरी दुकान में भी नहीं आता। उस केञा के यहां ही उसे प्राय: बैठे देखता हूं। लगता है, केञा से मिलकर वह कोई जाल फैला रहा है। मुझे देखते ही मुंह मोड़ लेता है। ठीक है, भगवान तो है न ! अस, अस, लोग भला कौन-सा काम नहीं कर सकते ? हुंह !"

"अच्छा, मुनी बाबू, अब चलूं। लड़के के लिए कल भेज दूंगा।"

"ठीक है, ठीक है। मास्टर का घर पहचानता हूं, सामान वहां पहुंचा दूंगा। आपको चिंता करने की जरूरत नहीं।"

मुनी बाबू को धन्यवाद देकर सारइक धीरे-धीरे निकल आया। रामधन केञा की दुकान में घुसने की उसकी इच्छा नहीं थी, पर मुनीन्द्र के यहां से निकलते ही उसकी नजर उस पर पड़ गई और वह रामधन केञा के पास बढ़ गया। पास पहुंचने पर रामधन ने मजाक करते हुए पूछा – "मुखिया, क्या मुनीन्द्र की 'नकलां' गुड़-मिठाई ही ज्यादा मीठी है ?"

सारइक को रामधन केञा की बातों का लहजा समझ में आ गया। कोई जवाब दिए बगैर

वह 'लाख' तौलने की तराजू की ओर देखने लगा। दस सेर[1] के बटखरे के साथ अपना पैर भी तराजू पर रखे उसका नौकर 'लाख' तौल रहा था। वह घटना देख सारइक का दिमाग गर्म हो उठा। पर सारइक की उपस्थिति से उस 'केञा' के मन में किसी तरह की प्रतिक्रिया नहीं हुई। एक दां लाख केञा की तराजू पर कैसे सिर्फ दस सेर हो गई, लाख लाने वाला इससे बिल्कुल दंग रह गया। उसके चेहरे पर संदेह का भाव जगते ही रामधन केञा ने उसे टूटी-फूटी कारबी भाषा में समझाया – "ताहाके ओजन आवे। ओजन के हक लो। आदरता आवे। एदां सिका इंकाय।" (यानी, लाख का वजन घट जाता है। तौलने में कोई गलती नहीं हुई। इस साल लाख की कीमत भी बहुत कम हो गई है। एक दां की कीमत बीस रुपए ही है।)

जो लाख सौ-डैढ़ सौ रुपए मन के हिसाब से बेचता आया था, वह आदमी उस दिन की कीमत सुनकर अचरज में पड़ गया था। लाख की कीमत इतनी गिर गई है, यह तो उसने सोचा ही न था। उस पर सामने ही तौलने में गड़बड़ी देखकर वह बोल उठा – "इस, माहाजन, सिका फोकेप ता आवे मा? ओजन भी करिबि। हिटो तोर कि निमिते ताते दिछे?" (यानी – ओह महाजन। कीमत इतनी कम हो गई? फिर तू वजन भी कम कर रहा है। वह पैर वहां किसलिए दे रहा है?)

अन्याय का विरोध करने के लिए उसकी जबान में भाषा नहीं थी। 'इस, आस' करते हुए ही उसने अपने मन के विद्रोह की घोषणा की। रामधन समझ गया कि तौल के बारे में उसे संदेह हो गया है। उसने एक बीड़ी आगे बढ़ाते हुए हंसकर उसे समझाया – "तार पाउ ठू ठीक दिसे। तार पाउ में पांच सेर आसे। तोमार लाहा सब मिल करि पोंधरो सेर हैसे। तोमार पोंधरी टका पाब। क्रेफो लंपो हे कांबुरा।" (यानी – उसने पैर तो ठीक ही रखा है। उसके पैर का वजन पांच सेर है। तुम्हारी 'लाख' सब मिलकर पांच सेर हुई है। तुम्हें पंद्रह रुपए मिलेंगे।"

रामधन ने यह कहते हुए लाख को गोदाम में ले जाने के लिए नौकर से कहा। बीड़ी का धुआं छोड़ता हुआ वह हें-हें कर हंसने लगा और पंद्रह रुपए निकालकर उसने उस आदमी के हाथ में दे दिया। उस आदमी ने रुपया ले या न ले, दुविधा में पड़कर आखिर ले लिया और पास खड़े सारइक की ओर देखकर बोल उठा – "वह लाख कभी आधे मन से कम तो हो ही नहीं सकती।"

सारइक ने कोई जवाब नहीं दिया। वह समझ रहा था – यह तो अन्याय की जीती-जागती घटना है। ये व्यापारी इसी तरह अन्याय करते हुए हमारा खून चूस रहे हैं। ये भी बी-हेनरू के उसी हाबेसिको के वंशज हैं। जब तक ऐसे लोग रहेंगे, तब तक क्या कभी हमारे समाज में नए युग की शुरुआत हो सकती है? शुरुआत होना संभव है?

"महाजन!" सारइक अपने को रोक न सका, बोला – "यह तो शायद अन्याय हुआ है। तराजू पर पैर रखकर सामान तौलना तो हमने कहीं देखा नहीं। आज ही देखा है। भला, यह कैसा तौला है सामान?"

---

1. पुराना भारतीय तोल।

रामधन केञा बोला, "आप नहीं समझेंगे मुखिया जी ! आप लोग तौलते हैं एक पल्ला। हम लोग तौलते हैं दो पल्ले। ये केञा लोगों का तौल है। मुनी बाबू भले ही भूल करे, हम तो जरा भी अन्याय नहीं करेंगे। 'बर हाबा' हमारा दोस्त है, 'जिरपो' बनाया है। 'ओरलें' लोगों को तो हम प्यार करते हैं। हम भला अन्याय क्यों करेंगे ?" साइक को समझाने के लहजे में रामधन केञा कहता जा रहा था। कहते कहते उसकी भौंहे-पलकें उठ-गिर रही थीं। कुछ देर रुककर उसने फिर कहा, "मुखिया जी, आप सरसों हमें देना। हम आप को टाउन की दर देंगे। मुनी बाबू वह दर नहीं दे सकेगा। ओ, वह लिंदक कैसा है ? वह हमें सदा सरसों देता रहा है। क्या वह बाजार में आने वाला है ?"

साइक को मन-ही-मन गुस्सा आ गया। सरसों की कीमत यह टाउन के भाव पर देगा ? शैतानी बुद्धि तो इसकी है। फिर यह लिंदक की खबर पूछ रहा है। हमेशा इसे सरसों देता रहा है। असल में लिंदक का असली यम तो यही रामधन केञा है। अफीम की जहर खिला-खिलाकर उसकी जिंदगी को तो इसी ने छीज डाला है। लिंदक और कितने दिन जिंदा रहेगा, क्या इसे कुछ पता है ? रामधन की बातें सुनता हुआ साइक यही सोचता रहा।

"हूं, लिंदक की हालत तो अच्छी नहीं है। काफी दिनों से वह बीमार पड़ा हुआ है।" केञा के मन की प्रतिक्रिया देखने के उद्देश्य से साइक ने लिंदक की बीमारी की खबर उसे सुना दी।

सुनते ही रामधन उदास हो गया। इंसान की जिंदगी की अपेक्षा मिलने वाली सरसों ही मानो उसकी नजर में ज्यादा कीमती हो। वह कुछ विचलित-सा हुआ। एक ही सांस में कह गया – "तो फिर, मुखिया जी, भला हमारा सरसों हमेशा कैसे मिलेगा ?"

"उसकी बीमारी अच्छी हो जाए, तो मिलेगी। ठीक है, मैं अब जाता हूं। मुझे बाजार में भी काम है।" कहकर उसने बाजार की ओर कदम बढ़ाए।

हाट-बाजार बरापानी के किनारे ही लगता है। साइक भी बाजार में घुस गया। अपनी आंखों के सामने अन्याय होते हुए देखने के बावजूद वह कोई प्रतिकार न कर सका, इस बात से जो मानसिक द्वंद्व उसे हुआ, उससे उसका शरीर जलने लगा था। ऐसे अन्याय, उत्पीड़न, शोषण से जर्जर आरलें जाति की किस्मत में भला मुक्ति का आनंद कब देखने को मिलेगा ? वह सोचता रहा। जब हाबेसिको उसकी मुट्ठी में है, तब रामधन के खिलाफ कुछ कहने से भला फायदा क्या होगा ? आदि-आदि बातें सोचते-सोचते वह मिट्टी के बर्तन बेचने की जगह तक कैसे पहुंच गया, पता ही न चला। उसने देखा, नदी के किनारे धरमतुल[1] से लाए गए मिट्टी के बर्तनों के साथ-साथ नए आए एल्युमिनियम के बर्तन सजाकर रखे हुए हैं। रंगीन काली मिट्टी की हांड़ियों के पास ही एल्युमिनियम के बर्तन भी धूप में चमक रहे थे। कुछ लोग उन नए बर्तनों का मोल-तोल कर रहे थे। साइक भी कुछ देर खड़ा रहकर उन्हें देखने लगा। एक

---

1. असम का एक शहर।

आदमी ने एक बर्तन उठाकर कीमत पूछी – "ओ महाजन, यह तो बिल्कुल हल्का है। कीमत कितनी है ?"

"हल्का नहीं है, ओ भैया ! यह नई चीज है; सिलवर का बर्तन। कीमत भी सस्ती है। क्या तुम्हें लेना है, भैया ?"

दूसरे आदमी ने कारबी बोली में उसे मना करते हुए कहा – "इं आर अं। मे सोप्लटजिवन। नाम नांने क कांबुरा।"

बात समझ न पाकर धरमतुल के उस महाजन ने पूछा – "क्या बात है, भैया, आखिर वह क्या कह रहा है ?"

"नहीं, ओ महाजन। यह कहता है – उस नई चीज को आग खा डालेगी। हल्का-हल्का है न, इसीलिए यह कह रहा है।"

उसकी बात सुनते ही महाजन ने हंसकर कहा – "मे नाखाय अ' ककाई। एइटो निबि। नतुन बस्तु। हरमु मेसेन।" (यानी – नहीं, नहीं, इसे आग नहीं खा सकती। इसे ले जाओ। नई चीज है। बड़ी अच्छी है।)

"नहीं चाहिए।" कहते हुए उन लोगों ने सिर हिलाया। 'नई चीज का कोई विश्वास नहीं', ऐसा सोचते हुए उन लोगों ने मिट्टी के ही बर्तन खरीदे। धरमतुल के हांड़ी आदि बर्तन तो अरसे से उनके जाने-पहचाने रहे हैं।' सारइक सोच रहा था – 'चमकीले एल्युमिनियम की ये हंडी आदि बर्तन खरीदने के मन की अभी इनमें कमी है।' उसने हाट के दूसरे सिरे पर की चाय की दुकान की ओर कदम बढ़ाए। पारंपरिक हाट-बाजार की अपेक्षा आज की हाट की इन नई चीजों ने लोगों में खलबली-सी मचा दी है। बैठालांसो बाजार के लिए यह चाय की दुकान भी एक नई बात ही है।

चाय-दुकान में बैठकर सारइक को एक कप चाय की जरूरत महसूस हुई। प्यास से मानो उसका कंठ सूखा जा रहा था। चाय के कई घूंट पीने के बाद उसे कुछ चैन आया। चाय-दुकान के पास ही कपड़ों की दो दुकानों में कपड़े बिक रहे थे। कपड़े दिखा-दिखाकर ग्राहकों को बुलाने वाले उन व्यापारियों की ओर सारइक बैठा देखता रहा।

"एइ क, कांबुरा। मेसें-मेसें पे आसे, लबि। आदरता मेसें आसे।" (यानी – अच्छे-अच्छे कपड़े हैं, ले लो। कीमत भी सस्ती है।)

दो बूढ़े-बूढ़ी चले जा रहे थे। एक दुकानदार ने उन्हें 'लं क्लाथ' का थान दिखलाते हुए पुकारा – "एइ फाले आहिबि ककाइ, थान आपे मेसेन आसे। नतुन-नतुन।" (यानी – दादा, इधर आओ। थान के कपड़े हैं। सस्ते हैं। नए-नए।)

वे दोनों उलझन में पड़कर उस दुकान में घुस गए। 'लं क्लाथ' देखकर उन दोनों ने कीमत पूछी – "थान आपे आदर को आन माहाजन ?" (यानी – महाजन, थान कपड़े की कीमत कितने आने हैं ?)

"गज इसी हिकी के थम।" (यानी – 'एक रुपए चार आने गज।)

"एके कत्ते हिकी केथम। नालाके, क, नंन।" (यानी – एक गज की एक रुपए चार आने। नहीं चाहिए।")

बूढ़े ने 'नहीं चाहिए' कहकर सिर हिलाया। उसके सिर हिलाते ही उसके कानों में पहने दोनों 'नोरिक'[1] भी हिल उठे।

"ऐ कांबुरा, कि मान दिबि ?" (तुम कितना दोगे ?)

"आर्दुलि इसी।" (एक अठन्नी, या आठ आने)।

कपड़े की ओर देखकर दुकानदार ने सोचा, आठ आने में बेचने पर भी प्रति गज दो आने का मुनाफा होता है। और दो आने पाने के इरादे से उसने कहा – "अस, दादा, नुकसान होगा। अच्छा ठीक है और दो आने दे देना। नए कपड़े आए हैं, इसीलिए कीमत घटा कर दे रहे हैं।"

बात कहते हुए उसने कपड़ा काटा और अच्छी तरह से तह कर बूढ़े के हाथ थमा दिया। बूढ़े ने कपड़े को सूंघा और हंस पड़ा। उसने कपड़े को बुढ़िया के हाथ थमा दिया। बुढ़िया ने भी सूंघकर देखा। उसके चेहरे पर गहरे संतोष का भाव खिल उठा। एक दुअन्नी और एक अठन्नी दुकानदार को थमाकर बूढ़े-बूढ़ी दोनों वहां से चले गए।

सारइक दुकान में बैठा चाय पी रहा था, तभी रंमांदु गांव का मेनमिजी उसके पास आ गया। सारइक को बैठा देख मानो उसे सांस लेने का मौका मिला हो। उसने जरा सांस लेकर कहा – "बा फू, मुखिया जी ! कारदम ! आप से मिल सका, बड़ा अच्छा हुआ। एक जरूरी खबर है। आप तो अच्छे हैं न ?"

"हां, अच्छा ही हूं। एक कप चाय पीजिए।" उसने मेनमिजी के लिए एक कप चाय मंगवाई। फिर जरूरी खबर जानने के इरादे से उससे पूछा – "भला, खबर कौन-सी है ?"

"हमारे गांव का रंपी-परिवार अगले सप्ताह आपके यहां जाने वाला है। जैसे भी हो यह खबर आप तक पहुंचाने के लिए उन्होंने मुझे कहला भेजा है।"

"हूं। मगर बात क्या है ?" सारइक ने एक तामोल चबाते हुए पूछा।

"सुना है, आप लोगों से वह विवाह-संबंध जोड़ना चाहता है।"

"हूं, यह तो अच्छी बात है। अगर वे आना चाहते हैं तो आवें। तीन पुश्तों से उनके साथ हमारा संबंध रहा है। हामरेन छोड़कर जब हम इधर आ गए, तभी तो आना-जाना घट गया है।"

"तो फिर रपी-परिवार को जाने के लिए कह दूगा, क्यों ?"

"अब वे लोग जो अच्छा समझें ? मैं क्या कहूं ?" उसे एक तामोल थमाते हुए सारइक ने कहा।

"अच्छा, ठीक है। मगर इधर एक बात सुनने में आई है।"

"कौन-सी बात ?"

---

1. कान में पहना जाने वाला पुरुषों का गहना।

"लोंरी के हाबे की ओर से आपको 'किदो' भेजा गया है ? भला यह कैसी बात है ?" तामोल चबाते हुए उसने घटना के बारे में जानना चाहा।

"पता नहीं, फू। मेरी समझ में भी बात नहीं आई है। हो सकता है, उसके हाथ में सत्ता है शक्ति है, इसलिए विचार-मुकदमा किया है, राय दी है। अब मेरे लिए भला अफसोस करने को क्या है ?" हंसते हुए सारइक ने कहा।

"ऊंह, यों ही जैसा-तैसा विचार-निर्णय करने से क्या अच्छा होने वाला है ? हाबेसिको पर अब तो अनेक लोगों का विश्वास नहीं रहा है।"

"किसलिए ?" सारइक ने पूछा।

"सुना है कि 'वोलो केटेर'[1] में उसने नियमानुसार कई वर्षों से सहयोग नहीं किया है। राजा लिंदकपो की आस्था उस पर नहीं रही है। काथार बूढ़े की जबान से राजा के असंतोष के बारे में सुना है। क्या यह सब समूची लोंरी के लिए ही अशुभ बात नहीं है ?"

उस छोटी-सी चाय-दुकान की बांस की फट्टियों से बनी मचान पर बैठे दोनों इसी तरह चर्चा कर ही रहे थे, तभी टीका के लारेंस हांसे, लांसिं बार के सारबासा, उमरू के रिसोबासा, फुं-आबी के सारबासा आदि आकर चाय-दुकान में घुसे। सारइक को देखकर लारेंस ने आवाज दी – "कारदम ! मे कांबुरा !"

"ओ, फू कांबुरा, आप ! कारदम !" उमरू के रिसोबासा ने सारइक की खबर ली। साथ ही दूसरे लोगों ने भी सारइक का कुशल-मंगल पूछा।

बैठालांसो बाजार की यही छोटी-सी चाय-दुकान समाचारों के आदान-प्रदान का केंद्र है। एक सिंगल चाय लेकर एक-दूसरे का समाचार लेने-देने की सुविधाजनक जगह यही चाय-दुकान है। सारइक के साथ लारेंस और दूसरे लोग भी आकर वहां बैठ गए। बातचीत में हाबेसिको का प्रसंग आ गया। बाहरी लोगों को जमीन पर बसा कर उसने लोंरी के लिए कैसा संकट खड़ा कर दिया है, उसी बारे में चर्चा होने लगी। उमरू के रिसोबासा ने कहा – "नेपालियों के गाय-भैंसों ने इस साल सरसों के खेतों को बिल्कुल बर्बाद कर दिया। फिर उनसे तो सीधे मुंह बात भी नहीं कर सकते, उलटे वे ही हम पर गरज उठते हैं, डांटते हैं। वे यही कहते हैं – 'यह जमीन हमारी है। बड़े हाबा ने दी है।' और यह भी सुनने में आया है कि उसने रंगा-गरा, लोंरे तक की जमीन पर दरं के नेपालियों को बुलाकर बसा दिया है।"

"हां, हमने भी सुना है। हमें तो पता नहीं कि वह हाबेसिको करना क्या चाहता है। वह क्या सोच रहा है ? लोंरी हाबे होने के कारण उसे तो सारी बात सोचनी-समझनी चाहिए थी।" लारेंस ने कहा।

"हां, उसे 'सोलांदो' के भविष्य के बारे में सोचना चाहिए था।" फू आंबी के सारबासा

---

1. बांग देने वाले दो लाल मुर्गों और एक सफेद मुर्गे के साथ बूढ़े काथार पुरोहित द्वारा किया जाने वाला एक वार्षिक पूजा-अनुष्ठान। हाबे, पिनपो आदि का मिलकर पृथ्वी पर अनाज का उत्पादन बढ़ाने हेतु वर्षा देवी का आह्वान करना ही इसका तात्पर्य होता है।

ने अपना मंतव्य दिया।

"क्यों ? कितना अन्याय कर उसने इन्हें सारबासा के पद से उतार दिया। देखा है न आप लोगों ने ?" लांसिंबार के सारबासा ने अपना मंतव्य देते हुए कहा।

"हां, फू कांबुरा को तो विचार-मंडली के बीच लाना ही नहीं चाहिए था। वह काम किसी तरह से युक्तिसंगत नहीं हुआ। यह तो साफ-साफ अन्याय हुआ है।" उमरू गांव के रिसोबासा ने कहा।

"हाबे लोगों को तो हमीं चुना करते हैं। तो फिर अत्याचारी हाबे को हम पद से उतार भी सकते हैं।" नाराजगी से लांसिंबार के सारबासा ने कहा।

वे लोग ऐसी चर्चा कर ही रहे थे, तभी देखा कि हाबेसिको कुछ नेपालियों के साथ चला आ रहा है। हाबेसिको के साथ रंमिली गांव का यह सिंनत तेरां भी है। जब उन सब ने देखा कि सारइक आदि चाय की दुकान पर बैठे हुए हैं तो वे वहां से कतराकर निकल गए। कुछ और प्रसंग पर लारेंस आदि हंस रहे थे। हाबेसिको को लगा कि वे उसी पर छींटाकशी कर रहे हैं और उन पर तिरछी नजर डाल वह वहां से हट आया। उसे देखकर लांसिंबार के सारबासा ने कहा – "देखा न, लोरी हाबे होकर भी उसने हमारी खबर भी नहीं ली। नेपाली ही अब उसके अपने हो गए हैं।"

लांसिंबार के सारबासा का मंतव्य सुनकर लारेंस आदि ने मुड़कर हाबेसिको की ओर देखा, जो बाजार में घुस रहा था। पूस महीने का सूरज ढलने लगा था, देखकर सारइक आदि बाजार करने के लिए उठ खड़े हुए। लारेंस ने खड़े होकर कहा – "मेहेइ ! एक बात है। सुना है कि कारबी दरबार अगली फरवरी के महीने में हाबाइपुर में होने वाला है। आपने सुना है क्या ?"

"कहां, मुझे तो कोई खबर नहीं मिली।" उद्विग्न चित्त से सारइक बोला।

"कारबी दरबार ? किसका दरबार ?" रंमांदु के मेनमिजी ने पूछा।

"क्यों, क्या तुम्हें कोई खबर नहीं मिली ? कारबी जिला बनाने के लिए 'दरबार' का गठन किया गया है।"

"उहूं। हमारे उधर तो उसकी कोई खबर ही नहीं पहुंची है।" रंमांदु के उस आदमी ने कहा।

"हां, खबर शायद उतनी भीतरी अंचल में नहीं पहुंची होगी। पर खबर जाएगी जरूर।" लारेंस बोला।

बात करते-करते वे आगे बढ़ रहे थे। लारेंस ने पूछा – "क्या दरबार के लिए रकम इकट्ठी हुई है ?"

"हां, लगान के साथ ही दे दी गई है।"

"अच्छी बात है। मगर मीटिंग के लिए आप लोग तैयार रहें। हां !" यह कहकर दोनों हाट की भीड़ में मिल गए।

पूस महीने का बाजार। सूरज जल्द ही ढल गया। अपने-अपने सामान सहेजने में व्यापारी लोग भी जुट गए। बाजार के एक कोने में एक खासिया व्यापारी कर्णफूल, अंगूठी, मणि, सूई आदि बेच रहा था। चांदी का कर्णफूल हाथ में लेकर अमफू ने पूछा – "कीमत कितनी है ?"

"पंद्रह रुपए।" व्यापारी ने कहा।

अमफू ने कादम को दिखाते हुए कहा – "ये फूल देखने में अच्छे लग रहे हैं। पर नें, कीमत ही ज्यादा बता रहा है।"

"हां, यह तुम पर फबेगा। मोल-तोल करें क्या, नें ?"

"हां, जरा तुम कहकर देखो न, यह कितने में दे सकता है ?"

कादम ने कहा – "महाजन, दस रुपए में दे दो !"

खासिया व्यापारी ने कुछ देर सोचकर और दो रुपए देने को कहा। कादम तैयार नहीं हुई तो अंत में व्यापारी दस रुपए में ही देने को तैयार हो गया। अमफू ने गिन-गिनकर दस रुपए थमा दिए। उसके बाद कादम ने नीले रंग की एक मणि उठाकर देखी। तभी कहीं से एक नौजवान ने पास आकर पूछा – "तुम कादम हो न ?"

"हां, मगर तुम कौन हो ?" कादम की आंखों में ऐसी भावना थी, मानो इसे कहीं देखा है। जाना-पहचाना है।

"मैं उमरू का सारथे हूं।" नौजवान ने अपना परिचय दिया।

"अस, मुझे तो बिल्कुल याद नहीं आ रहा था। कहां आए हो ? लंकाम जाना है ?" कादम ने मणि को हाथ से उलटते-पुलटते हुए पूछा।

"हां। तुम लोगों को मणियां खरीदते देख सोचा कि एक खबर देता जाऊं।" उस नौजवान की आंखों में खुशी की झलक थी।

"कौन-सी खबर है ?"

"अगले महीने हमारे यहां 'सोमांकान' होने वाला है। देखने के लिए क्या तुम लोग आओगी ?"

'सोमांकान होने की बात से कादम ने सहेली अमफू की ओर देखा।

अमफू बोली – "यह तो बड़ी अच्छी खबर है, नें। अब तो यह मणिमाला खरीद ही लेनी चाहिए।"

उन्हें देर करते देख खासिया व्यापारी ने कहा – "अगर खरीदनी है तो जल्दी करो।"

कादम ने व्यापारी को हाथ के इशारे से जरा रुकने को कहा। फिर उमरू के नौजवान की ओर मुड़कर उसने कहा – "ठीक है, हम आएंगे। यह खबर देने के लिए धन्यवाद !"

कुछ देर अमफू और कादम की ओर देखते रहकर नौजवान हट गया। मणिमाला कादम ने खरीद ली। गांव लौटते हुए उसने अमफू के गले में मणिमाला पहनाकर कहा – "बड़ी सुंदर लग रही है, नें ! सोमांकान में पहनकर जाना अच्छा रहेगा।"

हाट-बाजार में आए हुए लोग धीरे-धीरे पहाड़ की ओर चल पड़े। खासिया व्यापारी

घोड़ों की पीठ पर नमक के बोरे लादकर दूर के सीमावर्ती अंचलों में ले जाने लगे। उन दुर्गम पहाड़ी अंचलों से बरसात में इधर आना बड़ा कष्टदायक होता है। इसलिए लोग बरसात बीतते ही सूखे के महीनों में आकर इधर से नमक और सूखी मछलियां ले जाते हैं और जमा करके रखते हैं। बरसात में उन्हें बढ़ी कीमत पर बेचते हैं।

दूसरा महायुद्ध निकल गया, पर पहाड़ों में नमक की कमी पहले जैसी ही बनी रही। बैठालांसो के केजा महाजन से आठ-दस रुपए प्रति-सेर के हिसाब से नमक खरीद करके ले जाते और पहाड़ी अंचलों में बीस रुपए प्रति-सेर की दर से बेचा करते। नमक के साथ-साथ रामधन केजा महाजन की अफीम भी उस दुर्गम पहाड़ी अंचल में फैल गई। कारबी गांव भी उसकी चपेट में आ गए।

अब तक शोर-गुल से भरा बैठालांसो बाजार धीरे-धीरे सन्नाटे में डूब गया। रामधन केजा की टिन की छतों पर शाम की छाया आकर इकट्ठी हो गई। व्यस्त घाट भी चुपचाप सो गया।

28

पूस महीने की धूप ऐसी मीठी थी कि देर तक उससे ऊब नहीं होती थी।

घाट का बालूचर इन दिनों ज्यादा चौड़ा हो जाता है। उस पर पड़ी हुई धूप मानो और ज्यादा मीठी हो उठी थी।

पीठ पर धूप सेंकती हुई कपड़े थकचती अमफू एक-एक कर पिछले दिनों की बातें याद करने लगी।

उसे याद आया, उसके विवाह के बारे में बात तय करने के लिए वर-पक्ष के लोग आए थे। कल ही वे रंमांदु लौट गए हैं। उनके लाए हुए लाख-रंग के खूबसूरत लाओ (लौकी) के रंगीन पात्र से उनके बैठकखाने में मानो चमक आ गई थी। 'लाओ' पात्र को हाथों से छूकर भक्ति-भाव से पिता ने 'हेमफू' देवता का तर्पण किया था – वह दृश्य अमफू की आंखों के सामने तिरने लगा। लाओ पात्र को स्पर्श करने का मतलब ही होता है, कन्या-दान के लिए सहमत होना – अमफू मे सोचा। सोचते-सोचते उसे कुछ शर्म-सी होने लगी।

बैठकखाने में बैठे वर-पक्ष के लोगों को भात परोसते समय उसे बड़ी शर्म आ रही थी। वर-पक्ष के लोग उसकी ओर लगातार देख रहे थे। इससे वह और ज्यादा लज्जा महसूस कर रही थी। अमफू ने उस मंडली के लोगों के चेहरे याद करने की कोशिश की।

वे लोग सज्जन और अच्छी रुचि वाले थे। चेहरा-मोहरा भी अच्छा था। दूल्हे की बहन भी सुंदर, पुष्ट शरीर वाली और रूपसी थी। चेहरा भी बड़ा प्यारा था। आंखें न बड़ी न छोटी, मझोले आकार की थीं। बहन को देखकर दूल्हे के सामान्य स्वास्थ्य का अंदाजा लगाया जा

सकता था। उससे बातें कर अमफू को अच्छा ही लगा था। स्वभाव से वह कुछ हंसी-ठिठोली करने वाली थी। उससे बातें कर अमफू को पता चल गया था।

वह सोचने लगी – रंमांदु गांव में उसका विवाह कर देने का जो फैसला पिता ने किया है, क्या वह गलत है ? नहीं-नहीं, बापू ने शायद उचित समझ कर ही ऐसा किया होगा। वह कभी मां-बाप की बात टालती नहीं है। 'बापू का फैसला ही मेरे लिए सब कुछ है।' उसने सोचा।

तब फिर वह सें तेरन ?

उसके निष्कलुष प्यार की बात भी उसे याद आ गई। मुझे अपनाकर उसने एक नई जिंदगी बसाने का सपना देखा था। कल्पना की थी कि अफीम के जहर से बर्बाद हो चुके घर को फिर से हंसी-खुशी से भर देगा। मैंने भी तो उसे ऐसा ही आश्वासन दिया था। अफीम से काले हो चुके उस घर की कालिख धो-पोंछकर नया रंग भर देने की आशा बंधाई थी।

तब क्या मेरा वह आश्वासन सच न था ?

तो क्या मेरे उस आश्वासन की सचाई की अपेक्षा बापू के निर्णय की सचाई अधिक कीमती है ?

हो भी सकता है। मेरा वह आश्वासन आत्म-केंद्रित स्वार्थ पर आधारित था। पर बापू का निर्णय गांव के स्वार्थ के लिए, लोंरी के स्वार्थ के लिए है।

अमफू मन-ही-मन मकड़ी की भांति प्रश्नों का जाला बुनती वास्तविकता को समझने की कोशिश करने लगी – 'रंमांदु के लोग जिस दिन आए थे, सें तेरन भी उस दिन एक बार हमारे यहां आया था। मैंने देखा, उसके चेहरे पर अनंत वेदना की भावना छाई हुई है। हमारी सीढ़ियों से होकर जल्दी-जल्दी उतरकर जाते हुए भी मैंने उसे देखा था। यहां तक कि जाते समय वह मुझे आवाज तक नहीं दे गया। उसके वेदना-भरे चेहरे की ओर देखकर मैं अपने-आपको बड़ा अपराधी महसूस कर रही थी। शायद उसे पिता के फैसले की बात का पता चल गया था।

'मैं तो जरूर सें तेरन के साथ ही सुखी हो सकती थी। रंमिली के इस जाने-पहचाने आसमान के नीचे बहू की जिंदगी बिताने में मुझे कोई अड़चन नहीं होती।' वह सोच रही थी।

उसने सिर उठाकर दूसरी ओर के घाट पर नजर डाली। तीन बहुएं वहां अपने लांथे में पानी भर रही थीं। उन बहुओं की ओर देखने के बाद वह फिर कपड़े थकचने में जुट गई। अकेली अमफू के मन में फिर वही भावनाएं उठने लगीं।

पुरुष के रूप में तो सें तेरन किसी तरह से कमजोर नहीं है। उसके मन में साहस, हृदय में प्यार है और उसके पेट के लिए दो मुट्ठी अनाज जुटाने की ताकत की भी कोई कमी नहीं। तो फिर पिता जब रंमांदु से आए लाओ के उस पात्र को स्वीकार कर रहे थे, तो मैंने एतराज क्यों नहीं किया ? मैंने देखा है कि सें का बाप तपेदिक की बीमारी में पड़ा है। गांव के सभी लोगों ने देखा है कि उसकी बीमारी के साथ-साथ अफीम के प्रभाव से आंखों के सामने ही उसका

पूरा घर बर्बाद होकर उजड़ा जा रहा है। उस बर्बाद हुए घर में अगर फिर से जिंदगी, हंसी-खुशी लौंटा पाती तो मेरा प्यार-मुहब्बत जरूर सार्थक हो जाता। पर किसी एक घर को हंसाने-बसाने जाकर पिता के आदर्श के गांव में अशांति का बीज फैला देना क्या उचित होगा ? सें के प्यार को विसर्जित कर उसके अंतर में व्यर्थता की वेदना भर जाना मेरे लिए अवश्य ही उचित काम न होगा।

लेकिन मैं तो लाचार हूं।

तो क्या यह प्यार-मुहब्बत के नाम पर प्रवंचना नहीं है ? षड्यंत्र नहीं है ?

प्रवंचना का वीभत्स रूप इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ?

नहीं, मैं झूठी, धोखेबाज हूं – ऐसा परिचय रख जाना अनुचित होगा।

विवाह के पहलें मैं सें से मिलकर उसे यह समझाऊंगी कि मैं कभी उसे धोखा देकर नहीं जा रही। मैं रंमिली छोड़ने के लिए तैयार हुई हूं, एक बड़े स्वार्थ के लिए। यह बात मुझे सें को समझानी ही होगी, नहीं तो मुझे बड़ा पाप लगेगा।

पिता ने गलती नहीं की। उनकी विचार-बुद्धि में जरा भी त्रुटि नहीं है। पिता की आंखों के सामने सिर्फ रंमिली ही कौंधती रहती है, यह बात मैं अच्छी तरह जानती हूं। इस गांव के लिए बापू सब कुछ त्याग सकते हैं। उभरते किशोरों में जिस बात को लेकर आपसी विरोध फैला है, उसका कारण पिताजी को जरूर पता चल गया है।

क्लेंसारपो और क्लेंदुन – दोनों ही रंमिली के किशोर हैं। इस गांव की धरती को छोड़कर भला वोफं और सें और कहां जा सकते हैं ? मगर मेरी जैसी लड़कियां ?

कादम, कासां, काबिन आदि ?

हम सबको तो एक-न-एक दिन बहू बनकर गांव छोड़कर जाना ही पड़ेगा। हम लड़कियां अगर चली भी जाती हैं, तो गांव की नींव नहीं हिलेगी। बल्कि गांव और ज्यादा मजबूत ही होगा।

सें की कल्पनाओं को, मेरे आश्वासनों को कहीं वोफं की ईर्ष्या की आग जलाकर खाक न कर डाले, इसी आशंका से बापू ने मेरा विवाह रंमांदु गांव में कर देने का फैसला किया है।

तो फिर पिता के मन के आदर्श को विनष्ट कर देना जरूर मेरे लिए भी उचित न होगा। हेमाइ को तो हमेशा इसी गांव में रहना है। यहां का प्यार छोड़कर हेमाइ कहीं जा नहीं सकता। अगर गांव का आधार ही हिल जाए तो भला वह कहां रहेगा ? रंमिली के आकाश, हवा, नदी, पहाड़ आदि जैसे मेरे अपने हैं, हेमाइ के लिए भी ये उतने ही अपने हैं, उतने ही जाने-पहचाने हैं।

तो फिर, इस रंमिली की हंसी की अपेक्षा मेरे मन की वासना-कामना श्रेष्ठ नहीं हो सकती। सरसों के खेत में सही कहा था उस दिन कासां ने, उसे कासां की बातें याद आईं।

क्लेंसारपो की बेशर्मी से भरी घटनाएं अमफू की आंखों में नाच उठीं। उस दिन उसकी नजरों में प्रतिशोध, ईर्ष्या और कामुकता का जघन्यतम रूप प्रकट हो उठा था। उसके चरित्र के

बारे में सहेलियों ने जो कुछ बताया था, उसने अपने मन में फिर से उन पर विचार किया। उसकी नजरों में विनाश के भयंकर रूप उभर आए। सोचते-सोचते वह मानो चीख पड़ी – 'नहीं-नहीं, मुझे रंमांदु जाना ही उचित होगा। नहीं तो सें की जिंदगी में भी इसका जहरीला प्रभाव पड़ जाएगा। मैं चाहती हूं कि सें और वोफं दोनों ही एक ही गांव में हंसते-खेलते रहें।'

रंमिली और रंमांदु !

रंमांदु !

उसे लगा, यह नाम उसका बहुत ही जाना-पहचाना है।

अचानक उसका मन कल्पना में रंमांदु की ओर उड़ गया। सूरज की ओर देखते हुए उसने सोचा, रंमांदु के आकाश से ही सूरज उजाले की मधुर मस्ती बिखेर रहा है।

यही सोचती वह कपड़े धो रही थी, तभी कादम लांथे का बोझा लिए घाट पर उतर आई। घाट पर ही अमफू को देखकर उसने आवाज दी – "नें, तुम हो ! क्या यहां आए काफी देर हुई ?"

कादम की आवाज सुनकर अमफू ने मुड़कर देखा। पके अमरूद के रंग का अमफू का चेहरा धूप के उजाले में चमक उठा। उसकी आंखें भी मोहक ढंग से धूप में झिलमिलाने लगीं। चेहरे पर उभरी लालिमा ने उसके रूप को अनिर्वचनीय रूप से सुंदर बना डाला। अमफू का ऐसा रूप कादम ने पहले कभी नहीं देखा था। उसे एकटक देखते देख अमफू ने पूछा – "नें, भला तुम इस तरह से क्यों देख रही हो ?"

"चूंकि आज तुम्हें कुछ दूसरे ही रूप में देख रही हूं।"

"भला दूसरे किस रूप में देख रही हो ?"

"मुझे तो ऐसा लग रहा है, नें, तुम तो रंमांदु जाने के लिए ही कपड़े धो रही हो।"

"अस सां,[1] तुम भी कैसी बातें कहती हो।" अमफू कुछ शरमाने का भाव दिखाकर फिर कपड़े पटकने में जुट गई।

लांथे में पानी भरकर कादम ने उसे कगार से टिका दिया। नदी-घाट पर कपड़े पटकने की आवाज के सिवा और कोई आवाज नहीं हो रही थी। दोनों सहेलियां कुछ देर मौन रहीं। मानो वह अचानक शांत परिवेश में तूफान की ही तैयारी थी। कगार से टिकाए लांथे के चारों ओर फीते को लपेटती हुई सहेली की ओर देखे बगैर कादम ने पूछा – "नें, क्या तुमने विवाह में बैठना तय कर लिया ?"

"भला बापू के निश्चय में मैं किस बूते रुकावट डालती ?"

इंहिन आबी पहाड़ी के ऊपर एक चील चीं-चीं करती चक्कर लगा रही थी। अमफू उस चील की ओर नजर डाल कपड़े धोने में जुटी रही।

"मगर इससे सें भैया के मन को बड़ा दुख होगा।" कादम सिंनाम की रस्सी को मजबूती से खीचकर बांधती हुई बोली।

---

1. सखी, सहेली के लिए संबोधन।

कपड़ा पटकना बंद कर अमफू ने मुड़कर कादम की ओर देखा। उसकी आंखों में आंसू उतरने की झलक थी। आवेग-विह्वल होकर अमफू बोली – "ये बातें कहकर मेरे मन को चोट न पहुंचाओ, नें ! यह तो सिर्फ मैं ही जानती हूं कि मेरे मन को कितनी तकलीफ पहुंची है। यह घाट हमारा कितना प्यारा रहा है। बहू की जिंदगी में भी इसी घाट पर पानी भरने की भला किसकी इच्छा नहीं होती ? पर मैं तो लाचार हूं, नें !"

अमफू की बात सुनकर कादम की आंखें भी भर आईं। सहेली से जल्द ही बिछुड़ जाना पड़ेगा – यह संभावना अब उसके मन में जाग उठी। अब तक तो वह सिर्फ सें तेरन के बारे में ही सोच-विचार कर रही थी। अब वह खुद भी सहेली से बिछुड़ रही है – यह भावना जागते ही उसका मन हाहाकार कर उठा। पास आकर भरे गले से उसने कहा – "नें, यह असहनीय वेदना भला मैं कैसे सह सकूंगी ? तुम्हारे बगैर इस एकांत घाट पर मैं आगे कौन-सी उम्मीद लेकर आऊंगी, नें ?"

"हम तो लाचार हैं, नें ! हर नारी को अपने मां-बाप का घर छोड़कर बहू की जिंदगी बितानी पड़ती है। अपरिचित घर को अपना बनाने में ही तो घर छोड़ने का महिमामय रूप छिपा हुआ होता है, नें ! हमारी जिंदगी तो ऐसी ही है।"

सहेली ज्यादा अधीर न हो पड़े, इसके लिए अमफू ने उसे समझाने की कोशिश की। सें का प्यार ठुकराकर वह रंमांदु क्यों जा रही है, इसके कारण को उसने प्रकट नहीं किया। रंमिली गांव को त्याग देने में उसे जो निर्मल आनंद की अनुभूति हो रही थी, उसको समझाने की भाषा उसे नहीं मिल रही थी। सिर्फ उसकी झलक उसके मुखाकृति पर खिलने लगी।

अमफू से कुछ देर बातें करके कादम चलने को तैयार हुई। उसने लांथे को पीठ पर उठा लिया। अमफू ने पूछा – "नें, क्या तुम जा रही हो ?"

"हां, मां लोग बाट जोह रही हैं। बाद में तुमसे बातें करूंगी, नें !"

"ठीक है, जाओ।" मुझे तो अभी कुछ देर होगी।

कादम पानी ले घर की ओर चल पड़ी। नदी-घाट पर धीरे-धीरे शांति छाने लगी। अमफू कपड़े धोने लगी।

बहती धारा में एक नाव घाट की ओर चली आ रही थी। दूसरी ओर मुंह किए कपड़े धोने में लगी होने के कारण ही अमफू ने नाव को आते देखा न था। सें तेरन दूर से ही अमफू को पहचान गया था। अमफू के खुले शरीर की सुषमा धूप के प्रकाश में दमक रही थी। धारा के पानी के ऊपर उसके खुले पैरों पर मानो बिछली किरणें पड़ती थीं। पर अकेली सोलह साल की किशोरी अमफू के रूप में सें तेरन को आज कोई मस्ती, कोई आकर्षण दिखाई नहीं पड़ा। अमफू के उस रूप में उसे भारी निष्ठुरता की एक नारी-मूर्ति ही दिखाई पड़ी। उसने गुप्त रूप से चुपचाप वहां से हट जाना ही निरापद समझा। उसने धीरे से दूसरी ओर ले जाकर नाव को बांधा।

नाव से टकराकर लौटी लहरों ने अमफू के पैरों को छू लिया। अचानक पैरों में आ लगी लहरों से अमफू सजग हो उठी। 'मेठनी'[1] पर हाथ रखकर उसने पीछे मुड़कर देखा।

वह तो सें तेरन है।

सें तेरन को देखते ही उसका मन बरापानी की लहरों की भांति ही चंचल और अशांत हो उठा। उसने देखा, सें के चेहरे पर व्यथा की गहरी छाया है। मानो वह विषाद अभी-अभी आर्तनाद कर विद्रोह कर उठेगा। सें के हाथ की छोटी-सी पोटली पर उसकी नजर पड़ी।

'सें कहां गया था?' अमफू के मन में यह सवाल जाग उठा।

कपड़ा धोती हुई अमफू पर तिरछी निगाह डालकर सें घर की ओर चल पड़ा। अमफू को देखकर भी उससे कोई बात करने की उसकी इच्छा नहीं हुई। उसे लगा, अमफू से उसकी कोई जान-पहचान नहीं। वह अजनबी है।

कोई आवाज दिए बगैर जाते हुए सें को देखकर अमफू सोचने लगी – वह उसका मान-अभिमान भर ही है या कुछ और? सें को क्षण भर भी रुकते न देख अमफू ने पुकारा – "सें!"

मगर सें ने सुनकर भी अनसुने का भाव बनाए और तेजी से कदम बढ़ा दिए। रेत पर सें के पड़ते कदम ही मानो अमफू को जवाब दे रहे थे। अपने बिखरे बालों को हाथों से पीछे की ओर ले जाकर अमफू ने फिर पुकारा – "सें, क्या तुम एक बार मुझसे मिलोगे नहीं?"

अब सें तेरन ने मुड़कर देखा। खड़े-खड़े उसकी ओर देखती अमफू की आंखों में मानो कोई आवेश से भरा आकर्षण हो। मानो उसकी आंखें बहुत कुछ कहने के लिए ठहरी हों। सें नें देखा, अमफू की आंखों में वेदना और प्यार का अद्‌भुत सम्मिश्रण है। अब अमफू की नजरों से सें अपने को हटा नहीं सका। धीरे-धीरे मुड़कर वह अमफू के पास आ गया और उससे गंभीरतापूर्वक पूछा – "हां, किसलिए बुला रही हो?"

"तुम कहां से आ रहे हो, सें?"

"लंकाम गया था।"

"किसलिए?"

"बापू बहुत बीमार हैं, उनके लिए दवा लाने।"

"क्या ऐसी बात है? मैं तो खबर भी नहीं ले सकी।"

"अब तो खबर न लेने से भी चलेगा। जब रंमांदु जा रही हो, तब फिर हमारी खबर लेना अन्याय होगा।"

सें के लहजे में व्यंग्य था। अमफू का हृदय रो उठा। पानी निचोड़ा हुआ कपड़ा उसके हाथ से छूट कर धीरे-से पानी में गिर पड़ा।

"तुम भी क्या ऐसी बात सोचते हो, सें?"

---

1. छाती तक उठाकर बांधी गई मेखला।

"अब सें कहकर न पुकारो, अमफू ! तुम जैसी प्रवंचक लड़की हमारे इस अंचल-भर में नहीं है। तुम्हें देखकर अब मुझे घिन हो आती है।"

यह कहकर सें ने जाने के लिए कदम बढ़ा दिए। उसकी बात सुनकर अमफू की आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी। आवेग-विह्वल होकर उसने सें तेरन को बांहों में भर लिया। उसकी छाती पर सिर टिकाए वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसकी आंसुओं से सें की छाती भीग गई।

"भला ये आंसू किसके हैं ?"

"जल्द ही होने वाले अलगाव के, वियोग के आंसू हैं या रंमिली की एकता बनाए रखने के लिए आत्म-त्याग के आनंद के आंसू हैं !"

सें तेरन का कठोर हृदय भी पिघल गया। उसकी आंखों से भी लगातार आंसुओं की धारा बह चली। अमफू के ठंडे गालों पर उसके गर्म आंसू गिरने लगे। उनके स्पर्श से अमफू मानो सोते से जग पड़ी। उसने सिर उठाकर सें तेरन के चेहरे पर नजर डाली। यह क्या ? सें तो रो रहा है। आंसू-भरी उसकी सकरुण आंखों की ओर देखती हुई अमफू बोली – "तुम रो रहे हो, सें ?"

सें मौन था। धाराओं में बहते उसके आंसू ही मानो सब कुछ कहे जा रहे थे। ये आंसू शब्दों से भी ज्यादा सूक्ष्म, ज्यादा गहरे और ज्यादा कीमती हैं। ऐसे क्षण में क्या कुछ और कहने की जरूरत भी है ?

"रोओ सें ! जितना हो सके रो लो। तुम्हारे हृदय की यह अमफू अब आज से मर गई। रोने के अलावे और तुम क्या कर सकते हो ?"

आवेग-विह्वल अमफू कुछ संयत हुई और सें तेरन के पास से कुछ हट आई। नीचे पड़ा कपड़ा उसने पानी से खंगाला और उसे निचोड़ती हुई बोली – "शायद तुम्हें लग रहा है कि मुझे आनंद आ रहा है, शांति मिल रही है। किंतु यह तो सिर्फ मैं ही जानती हूं कि मेरे अंतर में कैसा दुख है। सें, जंगल की आग को तो सभी देख पाते हैं, पर मन की आग को कोई नहीं देख सकता।"

"अमफू ! तुम ऐसा धोखा दोगी, यह तो मैंने सोचा भी न था। तुम्हारे आश्वासन, तुम्हारे वचन, इन सबको रंमांदु के सोने-चांदी ने खरीद लिया, है न ? तुम्हारा रूप तो सरसों के फूल-जैसा सुंदर है, पर तुम्हारा दिल कोयले से भी ज्यादा काला है।"

"सें !" अमफू बीच में बोल पड़ी।

सें तेरन की बातों से उसका दिल फटा जा रहा था। हाथ का निचोड़ा कपड़ा रेत पर गिर पड़ा। स्तब्ध-सी वह सें के चेहरे की ओर एकटक देखती रही। ऊपरी होंठ को दांतों से दबाए रुआंसी होकर सें के पास आई और गहरे आवेग से बोली – "सें, तुम गलत न समझो। मेरे विचार से मेरे आश्वासनों की अपेक्षा बापू की दृष्टि कहीं ज्यादा उचित है, ज्यादा कीमती है। मैं तो अभागिन, किस्मत की मारी ठहरी। मैं इस रंमिली की धरती पर से हमेशा के लिए दूर चली

जाऊंगी। परंतु इससे तुम लोग क्लेंसारपो के साथ रंमिली की धरती पर चिरकाल तक आनंद से रह सकोगे। रंमिली के रंग दुगुने बढ़ाओगे। पर मैं शापित होकर रंमांदु में पड़ी रहूंगी। यह विच्छेद, यह अलगाव तो मौत से भी ज्यादा दर्दनाक है, ज्यादा वेदनादायक है। मैं तुम्हें कैसे समझाऊं, सें ?"

'क्लेंसारपो के साथ तुम लोग रंमिली की धरती पर चिरकाल तक आनंद से रह सकोगे।' इस बात में जो मर्मभेदी व्यंजना थी, सें तेरन उसे समझ गया। अमफू यहां से रंमांदु क्यों चली जा रही है, इसका उद्देश्य भी उसकी समझ में आ गया। उसने मुड़कर धुंधले पहाड़ की ओर नजर डाली। जिरसं के दृश्य उसकी नजरों के सामने तिरने लगे।

अचानक सें की आंखों से वेदना की निशानी मिट गई। धीरे-धीरे उसकी जगह एक सुकोमल ज्योति जाग उठी। उसे लगा, अपनी असली अमफू से आज ही उसकी पहली मुलाकात हो रही है। उसे समझ में आ गया, अमफू का रूप-सौंदर्य जैसा है, उसका आत्मिक सौंदर्य उससे कई गुना अधिक है। उसकी आंखों में आनंद की आभा खिल उठी। उसने अमफू का आदर करते हुए कहा – "अमफू, तुम जो सोच रही हो, वह बात सच है। अब तो तुम मेरी बहन से भी ज्यादा अपनी हो गई, अमफू !"

सें की जबान से यह बात सुनते ही अमफू ने उसे 'सें' कहकर बांहों में भर लिया और फिर फूट-फूटकर रो पड़ी। मगर यह रुलाई अब आनंद की रुलाई थी। आंखों से बहती आंसुओं की धारा वेदना की नहीं, आनंद की थी। अमफू के मन-प्राण मानो उन्मुक्त हो गए। उसका मन हुआ, एक बार दिल खोलकर हंसे। आज से उसका मन इस बरापानी नदी की भांति ही मुक्त और निर्मल है।

उसके आंसुओं ने सें तेरन के मन में बसे संदेह की गंदगी को धोकर साफ कर दिया। उसके लिए उसने एक नई राह दिखा दी। सें ने सूरज की ओर देखते हुए कहा – "अमफू, अब मैं चल रहा हूं। मेरे अंधेरे मन में तुमने रोशनी कर दी। अब तो मेरे अंतर में कोई दुख, कोई अफसोस नहीं रहा। तुम उस सूरज-जैसी ही महान हो। तुम हमारी इस रंमिली की देवी हो।"

उसने अपनी पोटली उठाकर घर की ओर कदम बढ़ा दिए। भीगी रेत पर 'खचक-खचक' करते कदम बढ़ाते सें की ओर अमफू कुछ देर एकटक देखती रही।

सें तेरन के ओझल होते ही अमफू ने भीगे कपड़ों को निचोड़कर 'खांग' में भर लिया और घर की ओर चल पड़ी। खांग-भर साफ कपड़े पीठ पर लिए आने वाली अमफू की मानो नई जिंदगी की तैयारी थी, शुरुआत थी। पेड़ पर बैठी एक पंडुक चिड़िया बोल रही थी। उसकी वह आवाज सुनकर मानो अमफू का मन सुदूर के रंमांदु की उस धरती की ओर उड़ गया, जिसे उसने पहले कभी देखा न था।

29

जाड़े का कुहरा टीका पहाड़ के पेड़ों-लताओं पर फैल कर उन्हें ढक चुका था। उस घने कुहरे का परदा फाड़कर बड़ी कठिनाई से सुबह की धूप आ सकी थी। लगातार बहती हुई हवाएं जाड़े को बहुत ज्यादा बढ़ाए दे रही थीं। मगर हड्डी तक को कंपाने वाले उस जाड़े की परवाह न करने वाले एक बूढ़े ने आकर गिरजे का घंटा बजा दिया।

'ढं-ढं-ढं-ढं...'

घंटे की आवाज से मानो मौन पड़ा पहाड़ जाग उठा। धर्मनिष्ठ ईसाई कारबी लोग नीचे के गिरजाघर में उतर आए।

आज क्रिसमस का दिन है।

पवित्र बड़े दिन का त्योहार।

भगवान ईसा मसीह के आविर्भाव का दिन। बड़े दिन में तो ऐसे ही आनंद का अंत नहीं होता,उस पर आज तो स्वर्ण-जयंती का अवसर है। टीका पहाड़ में मिशनरी-स्थापना के पचास वर्ष पूरे हो गए। आज तो महान आनंद का दिन है। पवित्र पोशाकें पहनकर कुहरे का मृदुल स्पर्श चेहरे पर लिए लोग गिरजाघर के आसनों पर आ बैठे। लड़के-लड़कियां किशोर-किशोरियां,बूढ़े-बूढ़ियां – सभी ईसा मसीह की आविर्भाव-तिथि पर इकट्ठे हो गए।

हाथ में बाइबल लिए बड़े दिन के प्रार्थना के संचालन हेतु टीका के सबसे प्रौढ़ सज्जन लारेंस हांसे आगे बढ़े। टीका-मिशन के इतिहास से जुड़े, अनेक अनुभवों की स्मृतियों से मंडित लारेंस से मंडली ने प्रार्थना-सभा के संचालन हेतु अनुरोध किया। बाइबल खोलकर लारेंस ने एक बार कारबी ईसाई लोगों पर नजर डाली। पुरुषों में तीन गैर-ईसाई लोगों को देखकर कुछ क्षण वह उनकी ओर देखता रहा। लारेंस उन्हें पहचान गया। उनमें दो बी-हेनरू गांव के, लंबर और जांफं सेनार और तीसरा था उमरू गांव का सारसिं रंपी। ईसाई जनों की तरफ से लारेंस ने उनका स्वागत किया और पवित्र बड़े दिन के त्योहार में भाग लेने के कारण प्रसन्नता प्रकट की। खासकर हाबेसिको गांव के लंबर और जांफं को प्रार्थना-सभा में देखकर लारेंस हांसे को कुछ गौरव की अनुभूति भी हुई। गंभीरतापूर्वक लारेंस ने दोनों हाथ बराबर ऊपर उठाकर प्रार्थना-गीत प्रारंभ किया –

"जो कांथिर इंसामरि
सिक्लोलोंस दाक तुरथा,
तेक्ला आतुम पेनपेनले
रेचो आफान लुन लोनां
ख्रीष्ट यीसू वांलो !

अंग्रेजी 'Silent night, Holy night', प्रार्थना-गीत का हाटन साहब का किया हुआ कारबी अनुवाद गाने के बाद टीका पहाड़ के काथारपी द्वारा अनूदित 'I have decided to follow Jesus.' गीत गाने का तय कर लारेंस ने लोगों को समझाते हुए कहा –

"आज विशेष कारण से हाटन साहब हमारे बीच उपस्थित नहीं हो सके। उनका स्नेह हमारे लिए चिरस्मरणीय बना रहेगा। कारबी भाषा में गीत-रचना कर उन्होंने हमें एक नई राह दिखाई है। उनके ही पदानुसरण करने वाली श्रीमती काथारपी ने एक और प्रार्थना-गीत लिखा है। वही गीत गाने के लिए मैं सबसे अनुरोध करता हूं। उसके पहले क्षण-भर खड़े होकर लोगों के सामने अपना परिचय देने के लिए मैं श्रीमती काथारपी से अनुरोध करता हूं।"

चुपचाप बैठी हुई एक महिला शरमाती-सी उठी और सबको नमस्कार किया। उसके चेहरे पर एक प्रशांत-भावना का भाव उभर आया। लारेंस के पीछे लगे सलीब को विनम्र भाव से नमस्कार कर वह बैठ गई।

श्रीमती काथारपी के प्रति लोगों ने प्रसन्नता की भावना प्रकट की और गीत गाना प्रारंभ किया —

"इं लं आरलकता यीसू आफि कि दुर्नाज ने
मिर नेम्प्रू कांथु लांसो केलिएत आजो
आलां जा आलिं ने दुनजि आफि,
सेर आफुतुप लंलेतिक आफि दुनजि।"

समवेत स्वर में गाए गए बड़े दिन के गीत की लहरों ने टीका के आकाश को कंपित कर दिया। जाड़े का कुहरा धीरे-धीरे छंट गया। गिरजे के पास के पेड़ों पर से तरह-तरह की चिड़ियों की चहचहाहट की मिली-जुली आवाजें तिरती आईं। सामूहिक प्रार्थना समाप्त कर लारेंस ने लोगों का बड़े दिन पर अभिनंदन करते हुए कहा –

"आज पवित्र बड़ा दिन है। आज के ही दिन मानव-जाति का उद्धार करने के लिए एक आत्मा ने इस धरती पर कदम रखा था। वह थे भगवान हेमफू यीसू। ईसा मसीह। आप लोगों को यह पता है कि आज से पचास साल पहले यीसू का पवित्र प्रकाश यहां तक पहुंचा और हमें भी उजाले की राह दिखाई। उस उजाले की मशाल ले आने वाले रेवरेंड मूर साहब और पत्नी के साथ पधारे रेवरेंड कारवेल साहब के यहां पदार्पण को पचास साल बीत गए। कारवेल का पवित्र शरीर अब भी हमारे बीच अनंत निद्रा में पड़ा हुआ है। उन लोगों के आत्म-त्याग ने हमें पवित्र यरुशलम जाने की राह दिखा दी है। आज हमारे लिए बड़े ही आनंद का दिन है। शुभ दिन है। इस पवित्र क्षण में हम उनकी पवित्र आत्माओं का पुनीत स्मरण कर रहे हैं। ओ स्वर्ग में रहने वाले पिता यीसू! तुम्हारा नाम पवित्र हो, चिर धन्य हो। जिन लोगों ने आज के इस पावन बड़े दिन की प्रार्थना-सभा में सम्मिलित होकर तुम्हारे गुणकीर्तन किए हैं, उन्हें तुम आशीर्वाद दो, जिससे तुम्हारी वाणी, तुम्हारे संदेश का प्रचार पहाड़ के कोने-कोने में हो सके। और जो लोग आज की सभा में आ नहीं पाए, उनके अंतर में भी सुख-शांति प्रदान करो।"

लारेंस के भाषण की समाप्ति पर सब ने आंखें मूंदकर मौन भाव से हेमफू यीसू की प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद 'आमेन' कहकर लारेंस ने प्रार्थना-सभा की समाप्ति की घोषणा की।

प्रार्थना के बाद गिरजाघर से कतार बनाकर सभी निकल गए। गिरजाघर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित कब्रगाह पर वे पहुंचे। उस समाधि-स्थल को अच्छी तरह से साफ-सुथरा कर रखा गया था। समाधि पर फूल चढ़ा, कंदील जलाकर लारेंस ने बाइबल का पाठ किया। वह सन् 1925 ई.में दिवंगत हुए रेवरेंड जे.एम.कारवेल की ही समाधि थी। उस पचासवें स्थापना-दिवस के साथ-साथ बड़े दिन के पवित्र दिवस के अवसर पर टीका की जनता ने फूलों की कोमलता, कंदील के उजाले और बाइबल की पवित्र वाणियों द्वारा उनका स्मरण किया। सुंदर, सत्य और जीवन-अभिव्यक्ति का मानो वह मूर्त प्रकाश था।

समाधि-स्थल से आकर गिरजाघर के सामने के खुले आंगन में आयोजित जलपान में सभी कतारों में बैठ गए। जाड़े की धूप पीठ पर लेते हुए लारेंस भी आ बैठा। बी-हेनरू और उमरू से आए अतिथियों को उसने अपने पास बिठा लिया। अतिथियों को सिगरेट देकर उनका स्वागत किया। लारेंस ने खुद भी एक सिगरेट जला ली। मुंह से धुआं छोड़ते हुए उसने कहा – "हमारे बड़े दिन के उत्सव में आप लोग सम्मिलत हुए इससे हम बड़े ही खुश हुए हैं। हेमफू यीसू के सामने कोई छोटा-बड़ा नहीं है। सभी बराबर हैं। संसारी दुनियादार हो, या 'सिकुर' विधर्मी हो; हम सभी उसी हेमफू यीसू की संतानें हैं।"

लंबर आदि सिर हिला-हिलाकर लारेंस की बातें सुनते रहे। सबके सामने भोज की पत्तलें लगाई गईं। बड़े दिन के भोज के उपलक्ष में एक मोटा-ताजा सूअर काटा गया था। उसी का रांधा हुआ मांस एक ओर से परोसा गया। लारेंस के सुझाव से अतिथियों की पत्तलों पर ज्यादा मांस दिया था। फिर अन्न (भात) परोसने के बाद सामूहिक प्रार्थना करने हेतु लारेंस ने लोगों से अनुरोध किया। सभी ने आंखें मूंदकर भगवान यीसू के नाम का स्मरण किया। लंबर और उसके साथियों को यह न सूझा कि वे कौन-सी प्रार्थना करें, इसलिए वे एक-दूसरे के चेहरे की ओर देखते रहे। और तो और, अपने हेमफू देवता के नाम पर भी तर्पण नहीं किया। प्रार्थना के बाद सब खाना खाने लगे। मांस का एक टुकड़ा मुंह में डाल लारेंस बोला – "हमने तो लोंरी हाबे को भी आमंत्रित किया था। मगर वह क्यों नहीं आया, पता नहीं।"

"हाबेसिको भला कहां आएगा? वह तो 'सिकुर' का नाम ही सुनना नहीं चाहता, भला वह बड़े दिन का भोज खाने आएगा?" मांस का टुकड़ा चबाते हुए लंबर ने हाबेसिको के न आने के कारण के बारे में बताते हुए कहा –

"आप लोगों के बड़े दिन में क्या 'अकजर'[1] नहीं होता?" उमरू के सारसिं रंपी ने पूछा।

उसके मुंह से अजीब-सा सवाल सुनकर पास के लोग धीमे-से हंस पड़े। लारेंस ने हंसते हुए कहा – "हमारे बड़े दिन में अकजर नहीं होता। हम एक ईश्वर की संतान हैं। इसलिए वोफू[2], अकजर, अक्के[3] आदि रखने का नियम नहीं है। हम सभी बराबर हैं और भोज भी

1. सूअर का चर्बीदार मांस।
2. चिड़िया का सिर। 3. सूअर की जांघ का टुकड़ा – यह विशिष्ट लोगों के लिए ही बनाया जाता है।

बराबर-बराबर ही खाते हैं।"

लारेंस की बात सुनकर बी-हेनरू के जांफं ने कहा – "यह तो बड़ी अच्छी बात है। मुसीबत तो बस हमारी ही है।"

"कैसे ?" खाने के लिए मांस का टुकड़ा हाथ में उठाए हुए लारेंस ने जांफं के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा।

"मुसीबत तो इसलिए है कि हाबेसिको के गांव में रहते हैं। कोई साधारण पूजा करने पर भी हाबेसिको के लिए मदिरा और मांस का एक हिस्सा तो चाहिए ही। भला यह कैसा विचार है ?"

"हां, हमने भी हाबेसिको के बारे में सुना है। ऐसा अन्याय करने पर तो लोंरी चलेगी नहीं।" लारेंस बोला।

"लोंरी चलेगी भी कैसे ? उसका तो अपना गांव ही चल नहीं रहा है। हम तो अंदर-अंदर आप लोगों का ही साथ लेना चाहते हैं।" गंभीर भाव से लंबर ने कहा।

"हां, इतने सारे देवताओं की पूजा करते-करते हम तो उजड़ ही गए, उस पर उन हाबे लोगों को 'भार-उपहार' देते-देते तो और पानी में डूब गए। हम लोग आप लोगों का साथ लेना चाहते हैं।" उमरू के सारसिं ने कहा।

लंबर और उसके साथी की बात लारेंस ने ध्यान से सुनी। उसे लगा, हाबेसिको के उत्पीड़न से लोग धीरे-धीरे तंग आ चुके हैं। उसे मन-ही-मन अच्छा लगा। लोरीं हाबे के उत्पीड़न के मारे कुछ हिंदू-कारबी विद्रोही बनकर ईसाई धर्म में दीक्षा ले रहे हैं। यह तो बड़ा शुभ समाचार है। उसने सोचा। लंबर के पास जाकर उसने कहा – "फू लंबर, आप लोगों के मन की बात सुनकर मैं बड़ा खुश हुआ हूं। मुझे पता है, हाबे लोगों में कोई-कोई कारबी लोगों का खून किस तरह से जोंक की भांति चूस रहे हैं। इन्हीं कारणों से उन दिनों मैं भी तंग आ गया था और कारबी नीति छोड़कर यीसू का पवित्र मार्ग अपना लिया था। अब हम सभी बराबर हैं। शोषण की कोई व्यवस्था हेमफू यीसू के धर्म में हो ही नहीं सकती। आप लोग आ जाइए। हेमफू यीसू का आशीर्वाद आप लोगों को जरूर मिल जाएगा।"

प्रार्थना, गीत, यीसू की अमर वाणी और प्रीति-भोज के आनंदमय परिवेश में बड़े दिन के उत्सव की समाप्ति हुई। लारेंस से विदा ले लंबर और उसके साथी भी चलने को तैयार हुए। लारेंस ने हर एक को सिगरेट बढ़ाई। वे बड़े खुश होकर सिगरेट का धुआं छोड़ने लगे। थैले से क्रिसमस-कार्ड और यीसू के संदेशों वाले कुछ प्रचार-पत्र उन्हें देकर लारेंस बोला – "यीसू के जन्म-दिवस के उपलक्ष में आप लोगों को ये उपहार दे रहा हूं। हम आप लोगों को 'बेप्टाइज' करने या दीक्षा देने का दिन मंडली में चर्चा के बाद ही तय करेंगे। और आप लोगों को सूचित करेंगे।"

कार्ड और प्रचार-पत्र लेकर लंबर बोला – "अच्छा, अब हम चलते हैं। मंडली के निर्णय की बात जल्द सूचित करें तो हमें खुशी होगी। कारदम !"

लारेंस के साथ दूसरे लोगों को भी 'कारदम' कर तीनों टीका पहाड़ से उतर आए। पहाड़

पर से लंबर ने नीचे देखा – टेढ़ी-मेढ़ी बहती बरापानी नदी बिल्कुल पतली लग रही थी। दूर समतल घाटी के सूखे धान-खेत के मैदान उसकी आंखों में साफ-साफ उभर उठे। 'टडन' नामक की जंगली झाड़ी से ढके अपने गांव को टीका पहाड़ पर से देखने की कोशिश में वह विफल रहा। निराश हो, नीचे उतरते समय उसने सारसिं से कहा – " 'लक', 'संसारी' (हिंदू) धर्म की अपेक्षा तो हम देखते है कि सिकुर (विधर्मी) का धर्म ही बहुत अच्छा है। देखा नहीं, सूअर का मांस कैसे सबको बराबर बांट कर दे रहे हैं। भोज खाकर बिल्कुल पेट भर गया है। सिर्फ मदिरा ही नहीं दी गई। मदिरा होती तो मांस चबाकर खाने में बड़ा ही मजा आता।"

"हां, मांस तो बड़ा अच्छा चर्बीवाला था। हमारे सोजुन के सूअर ऐसे मोटे-ताजे क्यों नहीं होते, बात मेरी समझ में नहीं आती। एक तो सूअर ही दुबले-पतले होते हैं, उस पर और कितने-कितने भाग-बंटवारे! सूअर के होंठ, टांगें, दुम, अकजर आदि खास-खास लोगों में बांटते-बांटते आम लोगों के लिए मांस की तो बात ही क्या, हड्डियों को लेकर भी खींच-तान मच जाती है। समझे न, सिकुर हो जाना ही अच्छा है।"

इसी तरह बातें करते हुए तीनों बैठालांसों की मैदानी घाटी में उतर आए। सारसिं रंपी ने कहा – "मुझे दुकान की ओर कुछ काम है।" और उधर ही चला गया।

लंबर, जांफ दोनों गांव में पहुंचे। अपने टूटे-फूटे मचान-घर में कुछ देर बैठने के बाद लंबर ने उन कार्डों पर नजर डाली। उसने देखा, कार्ड पर ईसा मसीह की तस्वीर है। तस्वीर की ओर क्षण-भर देखता हुआ वह बड़े-घर की ओर चला आया। उसके चेहरे पर एक दुश्चिंता की भावना उभर आई। यीसू की तस्वीर को उसने दरवाजे के ऊपर लगा दिया। दरवाजे के सामने बड़े जतन से रखे हुए हेमफू देवता के लौकी के बर्तन उतारकर धीमे-से पिछवाड़े की ओर फेंक दिए। मानसिक दुविधा में पड़कर वह कुछ बेचैन-सा हो उठा। उसने जो किया है, वह काम क्या अच्छा हुआ? एक मानसिक यंत्रणा से वह कांप उठा।

शाम के उस जाड़े के बावजूद उसका पूरा शरीर पसीने से तर हो गया।

30

अफीम से बर्बाद लिंदक तेरन का जराजीर्ण मचान-घर सन्नाटे में पड़ा रहा। अफीम के चंगुल में पड़ा लिंदक तेरन रंमिली की दुनिया से बिल्कुल मिट गया। अफीम का काला रंग उसके कोमल कलेजे से खून बनकर निकल आया था। लिंदक तेरन खुद तो खत्म हो ही गया, अपने भूख-प्यास से तड़पते लड़के-लड़कियों को भी अनाथ बना गया। घर का पूरा बोझ बड़े लड़के सें तेरन पर डालकर उसके चले जाने के बाद लगभग एक सप्ताह बीत गया।

असहाय सें तेरन की नजर एक सूखे पेड़ पर पड़ी। उसे अपने बाप का जिद्दी स्वभाव याद आ गया। तपेदिक की बीमारी होते ही सारइक ने आकर उसे समझाया था। सारइक के

समझाने के जवाब में लिंदक ने हंसते हुए जो कहा था, सें को उसकी याद हो आई। लिंदक कहा था – "अफीम देखने में काली होने पर भी, वह लच्छमी से भी ज्यादा गोरी होती है। मर जाने के बाद भी, अगले जनम में, मैं तो 'कानीया' अफीमची नाम ही लूंगा। रें-बंहम, हारबामन आदि के साथ मेरा कानीया अफीमची नाम भी हमारे समाज में सांझ के तारे की भांति चमकता रहे।"

सें तेरन भी पिता को समझा न सका। अफीम की अंतड़ी जला डालने वाली निर्ममता के बारे में बाप लिंदक को पता ही न था। उसके उड़ते सफेद धुएं में सपनों के रंगीन फूल देखकर वह सम्मोहित हो गया था। जिंदगी के सर्वोच्च मूल्यों के साथ-साथ घर की सारी संपदा उसने अफीम के धुएं के साथ उड़ा दी थी। अफीम के जहर से लिंदक को बचाने में असमर्थ होने पर सारइक को अफसोस हुआ था। लाचार होकर उसने लिंदक को समझाना ही छोड़ दिया था। पर उसकी जरूरत होते ही जहां तक हो सके, धान-चावल, पैसे-कौड़ी से उसके परिवार की मदद करता आया था। भोजन के अभाव से रंमिली गांव का कोई मचान-घर मरण-यंत्रणा से तड़पता रहे, तो भला गांव का सारबासा सारइक तेरां उसे कैसे देख सकता है? सारइक जानता था कि ऐसा दृश्य सारबासा के सम्मान पर ही चोट पहुंचाता है।

सें तेरन एक-एक कर सारी बातें सोचता रहा। उसके किशोर-मन को विषाद की छाया ने ढक लिया। अनजाने ही उसकी आंखें तर हो आईं। अमफू का चेहरा उसकी आंखों के सामने तिर उठा। उसका विवश मन फिर हाहाकार कर उठा। इतने सारे संकट उस पर एक साथ आ पड़ेंगे, ऐसा तो उसने कभी सोचा ही न था। मचान-घर से उतरकर सें घाट की तरफ आगे बढ़ गया।

उसकी नजर बालूचर पर बंधी नाव पर पड़ी। उसे लगा, नदी की धारा में बह जाने हेतु मानो नाव चुपचाप संघर्ष कर रही हो। आकर्षणहीन, जीवन-रहित उस घाट पर उतर जाने की उसकी इच्छा ही नहीं हुई। वह धीरे-धीरे इंहिन आबि की ओर चल पड़ा।

नदी की धारा की ओर मुंह किए इंहिन आबि की चट्टान पर सें तेरन बैठ गया। चुपचाप बहती बरापानी की अशांत लहरों की ओर देखते हुए उसने एक लंबी सांस ली। मानो बरापानी की छाती पर ही वह जिंदगी का मतलब समझने की कोशिश करने लगा।

नदी की छाती पर झिलमिलाते प्रकाश की छटा क्या नदी का अपना रूप है? तब तो देखा जाता है कि नदी भी झूठ ही कह रही है।

अमफू ने भी कहीं प्रवंचना तो नहीं की?

नारी का मन क्या पुरुष के जैसा ही नहीं होता?

अमफू ने रंमांदु जाने में अपनी सहमति क्यों दी?

उसने ऐसा क्यों सोच लिया कि उसके चले जाते ही रंमिली की हंसी बनी रहेगी?

नहीं, वह भी झूठ ही कह रही है। यह उसका छल ही है। उसके आंसू भी जहरीले हैं।

छि: ! तो फिर अमफू का रूप-सौंदर्य भी झूठे रंगों से भरा है।

"सें भाई, तुम यहां क्या कर रह हो ?"

सें तेरन चौंक पड़ा। उसने आंखें मलते हुए मुड़कर देखा, उसके पास कादम खड़ी है। अपने को संभालते हुए उसने कहा – "नहीं, कुछ भी कर नहीं रहा। यों ही बैठा हुआ हूं।"

"तुम्हें यहां यों अकेले बैठे देख तो मुझे डर लगने लगा था। समझे न, भैया !"

"क्यों, कहीं मैं आत्महत्या न कर लूं ? इसके लिए ?" विषाद-भरी हंसी हंसकर सें तेरन ने पूछा।

"अस, भैया भी ये कैसी-कैसी अशुभ बातें कहते हैं।"

"नहीं, कादम ! जिंदगी से मैं ऊब गया हूं। ऐसी प्रवंचना में पड़ना होगा इस जिंदगी में, ऐसा तो मैंने सोचा भी न था।" सें तेरन ने अफसोस से कहा।

कादम उसके पास आ गई। बोली – "क्यों, नें अमफू ने आपके प्रेम को ठुकरा दिया, क्या इसी कारण ?"

"उसने मेरे प्रेम को ठुकराया है या नहीं, यह तो मुझे पता नहीं, कादम ! हो सकता है कि गलती मेरी ही हो।"

"आपकी गलती कैसी ?"

"उसका मन समझ न पाने की गलती।" नदी के दूर जाते प्रवाह की ओर देखता हुआ सें बोला।

कादम ने अचरज से सें के चेहरे की ओर देखा। तो क्या सें भैया को अमफू के दिल की बात भी समझ में आ गई है ? उसके रंमिली छोड़ जाने का उद्देश्य भी क्या भैया समझ गए हैं ?

"भैया, नें अमफू हमारी अपेक्षा बहुत ज्यादा समझदार है। बहुत ज्यादा बातें समझती है।"

"मेरे मन में कोई अफसोस नहीं, कादम ! भला कारबी लांपी की जलधारा को बांधकर रखा जा सकता है ? अमफू को मैं भी रोक नहीं सकता। जान-बूझकर अपना अभिशाप अमफू की किस्मत में मैं कभी डाल नहीं सकता।"

"हूं, ताऊजी इतनी जल्द चल बसेंगे, हमने सोचा भी न था।"

"यह तो उनके अपने कर्मों का नतीजा है। उनकी मौत के लिए भी मुझे अफसोस नहीं। अब अपने उस उजड़े घर को बसा सकूं, तभी मुझे मुक्ति मिलेगी।"

"मन को छोटा न करना, भैया ! सुख-दुख तो इंसान की जिंदगी में आते ही रहते हैं। दुख को हंसी से ढके रखना ही अच्छा है। भैया, एक बात है, हम उमरू के 'सोमांकान' उत्सव में एक साथ चलेंगे।"

"ठीक है। कब होने वाला है ?"

"जब इस चांद के मर जाने पर नया चांद निकलेगा।"

तभी नदी-घाट पर किसी के कपड़े धोने की आवाज से वे दोनों सचेत हुए। घाट की ओर

नजर डालकर देखा, उनके गांव की ही औरत है। वह तल्लीन होकर कपड़े धोने में जुटी है। कादम ने सें से कहा – "सें भैया, अब मैं चलती हूं। अभी पानी भी भरना है। इस तरह अफसोस करते रहोगे तो मैं बुरा मान जाऊंगी, समझे ?"

सें तेरन जाती हुई कादम की ओर क्षण भर देखता रहा। कैसी लड़की है यह कादम ! हंसी और आनंद ही मानो उसकी जिंदगी है। वह सोचने लगा, सचमुच यह कादम अद्‌भुत लड़की है।

31

आधी रात बीत गई थी। सिंनत तेरां नशे में लड़खड़ाता-टटोलता घर पहुंचा। एक निष्कलुष बच्चे की भांति ही समूचा गांव गहरी नींद में पड़ा हुआ था। सिंनत के घर के लोग भी गहरी नींद में पड़े हुए थे। कुछ देर पहले ही सियारों ने हुंकारा दे दिया था। शायद वह आधी रात बीतने का संकेत था। जब से सिंनत तेरां हाबेसिको के बुरे षड्‌यंत्र में जुड़ गया था, तभी से उसके मन की शांति हवा हो गई थी। उसकी आंखों से किसी ने नींद ही चुरा ली थी। उसने पहले सोचा था – लोंरी, यानी समूचे अंचल का न्यायकर्ता है हाबेसिको, इसलिए उसकी बातें, उसके आदेश राजा के जैसे ही हैं। किदो यानी आदेश-पत्र की एक गांठ से ही हाबेसिको दुनिया को उलट-पलट सकता है।

परंतु रंमिली ने उसकी भाव-मूर्ति को म्लान कर डाला। एकजुट रहने वाली रंमिली की जनता ने लोंरी के न्यायकर्ता हाबेसिको के किदो की गांठें खोल डालीं। उन लोगों ने सिंनत तेरां को रंमिली के सारबासा के रूप में स्वीकार नहीं किया। अब तो सिंनत तेरां रंमिली की भीगी बिल्ली बन गया। बारिश में भीगे, डरे हुए कुत्ते-जैसा ही वह बदरंग हो गया।

और बी-हेनरू का वह हाबेसिको ?

वह भी ईर्ष्या के मारे दुगुना आगबबूला हो उठा। लोंरी के न्यायकर्ता के रूप में किदो की अवहेलना वह सहन नहीं कर सका। उसने मानो तय कर लिया, समूचे रंमिली गांव को वह पीसकर धूल में मिला देगा। पर उसके पहले उस सारइक को खत्म करना होगा। जब तक सारइक रहेगा, हाबेसिको की झूम खेती की जगह निरापद नहीं होगी। अपनी सुरक्षा के लिए उसे सहारा मिल गया, सिंनत तेरां !

हाबेसिको के यहां बैठकर दोनों ने एक निश्चित योजना बनाई। सिंनत ने हाबेसिको के सुझाव का समर्थन किया। सत्ता और संपदा-लोलुप सिंनत तेरां का मन नाच उठा। खुशी के मारे वह लगातार मदिरा पीता रहा। घर लौटते समय हाबेसिको ने उसके हाथ में कुछ क्रिसमस-कार्ड दिए। ये कार्ड उसे निश्चित संदेह से बचाए रखेंगे। यही हाबेसिको की गुप्त योजना थी।

अपने घर के अलाव के पास बैठकर सिंनत हाबेसिको की बातों की याद करने लगा। हाबेसिको ने तो सही कहा है। सैकड़ों मन धान पाकर सारइक की चर्बी बढ़ गई है। अपना चाचा है, तो क्या हुआ ? नाते के चाचा का आधिपत्य मुझे जरा भी सहन नहीं होता। अब लल्लो-चप्पो बातें कर वह मुझे भरमाने आया है। मेरे बाप की संपत्ति को हड़प कर अब वह भलामानस बना हुआ है। मानो हाकिम-साहब-मंडल-पटवारी को वही पहचानता हो। छिः! उसका चेहरा देखते ही मुझे घिन लगती है। दियासलाई की एक ही तीली से उसका सारा घमंड राख कर दे सकता हूं। और फिर वह रिसोबासा, फेरांके। सब-के-सब सूअर ठहरे। उनके दिमाग में क्या जरा भी बुद्धि है ? लिंदक मर गया, चलो अच्छा ही हुआ। लारेंस, वह विधर्मी सिकुर उसका दोस्त है ? वह दोस्ती और कितने दिन रहेगी ? दोस्ती के तालाब को ये चंद कागज के टुकड़े ही विषैला कर देंगे। बाते सोचते-सोचते सिंनत को हंसी आ गई।

नहीं, नहीं, और रुक नहीं सकते, यही तो अच्छा समय है, बढ़िया मौका है। उजाला होने के पहले ही काम खत्म करना होगा। उसने शरीर पर से चादर उतार दी। माघ महीने की हड्डी कंपाने वाली ठंडक में भी वह पसीने-पसीने हो गया। अंधेरे का फायदा उठाकर वह धीरे-धीरे सारइक के घर की ओर बढ़ गया। उस सन्नाटे में गांव को गड़हियों से लगातार मेंढकों की टर्रटर्र की आवाजें आ रही थीं। गांव के दो-एक कुत्तों के भौंकने की आवाज भी सुनाई दे रही थी। इधर-उधर उल्लुओं की विकट चीख-पुकार रात के उस परिवेश को और ज्यादा भयावना बना रही थी।

वह है सारइक तेरां का घर। रंमिली के सारबासा का घर। धीरे-धीरे सिंनत ने मचान के नीचे घुसकर आहट ली। क्या बैठकखाने में कोई है ? उसने पता लगाया। नहीं, बैठकखाने में तो कोई नहीं है। यहां तक कि उनका कुत्ता भी नहीं। सिंनत को बड़ी राहत महसूस हुई। उसने खड़े होकर देखा, जमीन पर से किसी भी तरह से वह छत को छू नहीं सकता। उसके शरीर में तब भी मदिरा की मस्ती मिटी न थी। कार्ड पास हैं या नहीं, उसने टटोल कर देखा। हाबेसिको के दिए सुझाव के मुताबिक उसने तय किया कि उन कार्डों को घाट पर जाने की राह में यहां-वहां बिखेर दे। लड़खड़ाते कदमों से वह कुछ दूर आगे गया और कार्डों को इधर-उधर बिखेर आया। उसका सिर कुछ भन्नाने-सा लगा था, इसलिए उसे एक बीड़ी पी लेने की इच्छा हुई। एक झाड़ी की ओट में खड़े होकर एक बीड़ी जलाने के बाद वह सोचने लगा – हाबेसिको ज्ञानी आदमी है। मेरे अंतर की वेदना का अनुभव एकमात्र वही कर पाया है। सिर्फ वही समझ सका है कि रंमिली गांव के सारथे का पद सिर्फ मुझे ही मिलना चाहिए। पराया आदमी तो समझ लेता है, पर मेरे अपने लोग ही मेरी वेदना का अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। हाबेसिको तो सज्जन ठहरा। उसने मुझे सही युक्ति ही बताई है। ये कागज के टुकड़े तो सिद्ध करेंगे कि ये क्रिस्तान लोग कैसा षड्यंत्र कर रहे हैं। और उसके बाद खोभार देखने में बड़ा मजा आएगा।

बीड़ी फेंककर उसने फिर सारइक के घर की ओर कदम बढ़ाए। उसने सोच लिया – बैठकखाने में आग लगाना अच्छा रहेगा। सीढ़ी पर कदम रखने के पहले उसने फिर एक बार बैठकखाने में नजर डाली। नहीं, बैठकखाने में कोई नहीं है। वह चुपचाप मचान पर चढ़ गया।

सूने बैठकखाने को देखकर उसका मन नाच उठा। बड़े घर से भी कोई आहट नहीं। सभी गहरी नींद में पड़े थे। निश्चिंत मन से सोए सारइक के परिवार पर उसको ईर्ष्या हुई। उसने मन-ही-मन सोचा – 'अब तुम लोगों की भी नींद हराम कर दूंगा।' यह सोचकर मुस्कराते हुए उसने जीभ से होंठ चाटे। दियासलाई की तीली जलाकर छप्पर की लटकती हुई सनई में धीरे-से लगा दी। कुहरे से छप्पर का ऊपरी हिस्सा भीगा होने के कारण आग धुंधुआती जलने लगी। सीढ़ियों से उतर आकर जैसे ही वह तेजी से भागने लगा, तभी सामने से आता हुआ सारइक 'कौन है, कौन है' कहता हुआ उसके पीछे दौड़ पड़ा और उसे पकड़ने की कोशिश की।

सारइक के पीछे-पीछे फेरांके एक मरा हिरण लिए आ रहा था। पीठ पर के हिरण को वहीं फेंक दिया और सिंनत के पीछे दौड़ा। उधर आग बढ़कर घर के सिरे तक पहुंच गई। सारइक ने पुकार कर अमफू और पत्नी को जगाया। गांव भर में शोर मच गया। किशोर लड़कों ने आकर बड़े घर को किसी तरह आग से बचाया। बड़ा-घर बैठकखाने से हटकर था, इसीसे निश्चित विनाश से बचा लिया गया। चैन की सांस लेकर रिसोबासा बोला – "शुक्र है कि बड़ा घर जलने से बच गया।"

"आखिर ईश्वर तो है न ! यह करतूत आखिर है किसकी ?" जाड़े से कंपता हुआ बूढ़े लंकिरी ने कहा।

"हे प्रभु, भला ऐसा भी कभी हो सकता है !" रिसोबासा की पत्नी ने कहा।

"जहां कोई आदमी न था, ऐसे बैठकखाने में भला आग कहां से आएगी ? यह जरूर किसी आदमी का ही काम है।" सिर पर हाथ रखे कासां ने कहा।

तभी घाट की ओर से किसी को घसीटकर लाते हुए देखकर सबने मुड़कर उस ओर देखा। वह तो फेरांके है। और उसके साथ वह कौन है ? सें, वोफं आदि उधर बढ़ गए। सिंनत तेरां ? सब उसे पकड़कर लोगों के सामने ले आए। दुख-दर्द, लाज-अपमान, पछतावे के कारण सिंनत तेरां सिर झुकाए रह गया। सब लोगों ने अचरज से उसे देखा। यह क्या ? यह सिंनत भी ऐसी करतूत कर सकता है ? सें समेत सभी ने मन का विक्षोभ प्रकट किया और उसे अच्छी पाठ पढ़ाने के लिए मारने-पीटने को तैयार हो गए।

सारइक ने कहा – "क्लेंदुन बेटे, यह तो यंत्र-भर है। यंत्री तो अपने घर में ही है। इसे मारने-पीटने से कोई फायदा नहीं। तुम लोग अधीर न होओ। सिंनत तो हमारे गांव का ही है न ! वह तो हमारे बेटे जैसा है।"

सारइक की बात सुनकर फेरांके गुस्से के मारे जल उठा। बोला – "इस सूअर को अभी गांव के परिसर से बाहर निकाल देना चाहिए। हमारे गांव के मान-सम्मान को इसने धूल में मिला दिया।"

बूढ़े लंकिरी ने सिंनत को समझाते हुए कहा – "सिंनत बेटे ! ऐसी दुश्मनी करने के लिए भला तुम्हें कुबुद्धि किसने दी ? तुम्हारे बाप के साथ-साथ मिलकर हमने हाथ से हाथ मिला, एक ही कटोरे में मदिरा-पीनी खा-पीकर इस रंमिली गांव को बसाया। तुम्हारे बाप ने मुंह भले

ही मोड़ लिया हो, तो भी तुम्हारे लिए यह करना क्या उचित है ? बेटे, आखिर ईश्वर हैं न ! अपने चाचा के खिलाफ तुम्हें ऐसा काम नहीं करना चाहिए था । सीढ़ी पर चढ़ना हो तो एक-एक कदम बढ़ाकर ही चढ़ सकते हो । सारबासा का मान तो तुम्हें बाद में भी मिल सकता है । तुम्हें ऐसे काम में लगकर आगे नहीं बढ़ना चाहिए था ।"

लंकिरी की बातें सुनकर पछतावे से जलता हुआ सिंनत तेरां हथेलियों से मुंह ढककर फूट-फूटकर रोने लगा । सारइक उसके पास जाकर बोला – "सिंनत, तुम ऐसा काम करोगे, यह तो हमने कभी सोचा न था । जो किया, तुमने ठीक ही किया । मेरे घर को आग से जलाकर शुद्ध ही कर दिया । हांबेसिको का वह किदो मेरे बैठकखाने में ही कालिख-मढ़ा होकर टंगा था । तुम्हारे जरिये उस किदो को जलाकर, किदो के न्याय-विचार के आगे उसने सिर झुका लिया । परंतु तुम तो रंमिली के सपूत होकर भी रंमिली के प्यार को समझ नहीं पाए । अपने घर में ही दुश्मन को जगह देकर ईश्वर का श्राप ही तुमने सिर पर ले लिया ।"

सिंनत तेरां फूट-फूटकर रोता हुआ सारइक के पैरों पर गिर पड़ा । रोते हुए उसने कहा – "काका, मुझसे बड़ी गलती हो गई । सत्ता पाने के लालच में मैं अंधा हो गया था । हाबेसिको की धोखाबाजी की बातों में आकर रंमिली के खिलाफ जाकर मैं ने यह महापाप किया है । रंमिली की यह धरती, यह जमीन, मेरी भी जमीन है । काका, मुझे भी आप लोग अपने साथ ही जीने-मरने दें ।"

पछतावे के मारे जलते हुए सिंनत तेरां की आंखों से बहती आंसुओं की धारा ने उसके अंतर के मैल को धोकर निर्मल कर दिया । रंमिली के आकाश के बादल जाड़े का कुहरा बन गए और ओस की बूंदें मोतियों-जैसी बनकर पेड़ की पत्तियों से झड़ने लगीं ।

नए सूरज के आगमन की तैयारी में रंमिली के पूरब का आकाश लाल गलीचा-जैसा बन गया । पौ फटने के साथ ही लोगों ने देखा कि सारइक का शिकार कर लाया गया वह सुनहला हिरण घास पर पड़ा दमक रहा है ।

दुख-दर्द से भरी काल-रात्रि के अंत में रंमिली गांव फिर नए रूप में मुस्करा उठा ।

32

धुंधुआरे पहाड़ों की छाती पर से ढोलों की आवाजें तिरती आ रही थीं । मानो बरापानी की मृदुल लहरें उन आवाजों को सुदूर के रंमिली गांव तक ले आ रही थीं –

'क्रुं - क्रुं - क्रुं - च्रक
क्रुं - क्रुं - क्रुं - च्रक
क्रुर - च्रक क्रां क्रां क्रां
च्रक क्रेत च्रक क्रां - क्रां - क्रां ।'

वह उमरू के 'सोमांकान' उत्सव के ढोलों की धुन है।

बैठालांसो से कुछ ऊपरी ओर का उमरू, एक और कारबी गांव है। उस गांव की दक्षिण-पूरब दिशाएं ऊंचे-नाटे पहाड़ों से घिरी हैं। उसके उत्तरी ओर से बरापानी की जलधारा बहती जा रही है।

आज 'कानपी' सामूहिक नृत्य का आयोजन है। दूर-दूर के गांवों से पहाड़ों में से होकर झुंडों में लोग सौहार्द्रपूर्ण धुनें बजाते हुए छोटे-से उमरू गांव में चले आ रहे थे। किशोर-किशोरी सभी रंग-बिरंगे, विचित्र पोशाक-पहनावों में सजे-धजे थे। सबके शरीर पर तरह-तरह के आभूषण भी सुसज्जित थे। किशोरों के सिरों पर के जूड़ों पर सजे 'वोजारू' चिड़िया के लंबे पर हिल-हिलकर मानो नृत्य कर रहे थे। 'सोइक'[1] से रंगे दांतों वाली किशोरियों के चमकीले दांतों-होठों पर मधुर मुस्कान चमक रही थी। जवानी की उम्र में अपने प्रियजन के साथ मिलकर नृत्य करने का मौका मिलना परम सौभाग्य की बात है। यही तो ऐसी उम्र है, जिसमें नाच-नाचकर, गीत गा-गाकर कभी थकान महसूस ही नहीं होती। सोमांकान उत्सव का आंगन ही तो यौवन की ऐसी मस्ती ला सकता है। खुले आकाश के तले किशोर-किशोरियों को जिंदगी के उन्मुक्त स्वर का अंदाजा मिल जाता है। किशोरी की छाती की मधुर उष्मा पाने का, अपने मन की भावनाएं प्रकट करने का किशोरों के लिए यही तो सुनहरा मौका होता है। ऐसे उत्सव में भाग लेने के लिए लोगों के झुंड मानो पहाड़ों पर से छलांगें भरते चले आ रहे हैं।

उमरू के आस-पास के पहाड़ मानो ढोलों की धुनों से गूंज उठे। गांव से ही दिखाई पड़ने लगा था कि पहाड़ों के चारों ओर से अंधेरे को चीरती हुई मशालें उतरी आ रही हैं। सन्नाटे-भरे पहाड़ों की छाती पर टेढ़ी-मेढ़ी राहों से आती मशालों का गति-सौंदर्य अत्यंत आकर्षक दीख रहा था। ये सब दूर-दूर के गांवों में रहने वाले लोगों की मंडलियां हैं।

रंमिली गांव भी उस सोमांकान उत्सव में भाग लेने आया था।

वोफं, सें, लांबिरी आदि ने बूटेदार 'पोहो' कपड़े से सिर पर कारबी ढंग की पगड़ी लगाकर वोजारू चिड़िया के पर खोंस लिए थे। बूटेदार 'रिकं'[2] के साथ शरीर पर 'सइ इकपो'[3] कमीज पहने वे लोग तुरही-सींगा बाजे बजाते हुए 'रं केतं' के कार्यक्रम में भाग लेने का इंतजार करने लगे।

अमफू के साथ कादम और कई सहेलियां भी उमरू के उस 'सोमांकान' उत्सव में भाग लेने आई थीं। उन सबने नए-नए रंग-बिरंगे कपड़े पहने थे। उनके गले में विचित्र रंग-बिरंगी मणि-मालाएं चमक रही थीं। कानों में चांदी के झिलमिलाते कर्णफूल, हाथों की कलाइयों पर चांदी के कड़े, चूड़ियां और पतली उंगलियों में चवन्नी-जड़ी-अंगूठियां। 'सीबू' से रंगे 'पीनी' पर घुटने तक की 'पे जांफं' बांधे; उन सबने वहां अपने रंमिली के सौंदर्य को बढ़ा दिया था।

---

1. एक तरह का छोटा पेड़, जिसे जलाने पर एक तरह का गोंद निकलता है, जिससे कारबी औरतें अपने दांतो को काले रंग से रंगती हैं।
2. कारबी पुरुषों का 'कौपीन' पहनावा।
3. काले रंग की एक तरह की कारबी कमीज।

सोमांकान उत्सव में एक तरह के विशेष प्रतीक-चिह्न का व्यवहार किया जाता है जिसे 'जांबिली आथन' कहते हैं। यह प्रतीक कारबी जाति की परंपरा और उसके पारंपरिक वर्गों की निशानी होता है। कारबी गोष्ठी की मुख्य पांच शाखाएं हैं, उसी तरह उनके देश या लोंरी भी पांच हैं। जांबिली आथन में उनके प्रतीक के रूप में पांच 'भीमराज' पक्षी बनाए रहते हैं। उसमें मणि-मुक्ता भी जड़े जाते हैं।

कुछ क्षण में ढोल बज उठे। क्लेंसारपो के हाथ में प्रतीक-चिह्न जांबिली आथन भी उस ताल के साथ-साथ नाचने लगा। जांबिली आथन के कारण रंमिली की मंडली का गौरव निर्विवाद रूप से बढ़ गया।

वैसे हाबेसिको का गांव होने के नाते दूसरी मंडलियों की अपेक्षा बी-हेनरू गांव को जगह तो अगली कतार में मिली थी, पर बी-हेनरू का 'जांबिली आथन' सारी मंडलियों में बिल्कुल उबाऊ हो गया। उन लोगों के उजड्ड आचरण से सभी विक्षुब्ध हो उठे।

लंरे, पुंजा, लांचिंबार, उमउत, लांसोमेपी आदि अंचलों से आए सारबासा लोगों ने लोंरी हाबे की कड़वी समालोचना की। वे कहने लगे – "भला बी-हेनरू गांव इतना विश्रृंखल क्यों है?"

"उस पर हाबेसिको ने अपनी घरेलू मंडली का स्वागत सबसे पहले करने को कहा है। क्या यह सत्ता का दुरुपयोग नहीं है?"

बी-हेनरू के लड़कों को यह अधिकार किसने दिया कि वे खुलेआम अश्लील भंगिमा दिखा-दिखाकर दूसरे गांवों की किशोरियों को शर्मिंदा करें?

हाबेसिको पर सभी नाराज हो उठे। शुक्ल पंचमी का तिरछा चांद हंस रहा था। किशोर-किशोरियों के नृत्य देखने की विफल प्रतीक्षा में चांद मानो गहरी निराशा में थक-सा जाने लगा। उमरू के लोगों ने हाथों में मशाल लिए आने वाली सभी अतिथि-मंडलियों का स्वागत किया। डूबते चांद की धूमिल चांदनी में उमरू स्पंदित हो उठा। नाचने-गाने के लिए बाट जोहते किशोर-किशोरियां खुशियों के मारे झूम उठे। आनंद की लहरें फैल गईं। ढोल, पेंपा यानी तुरही, गगना यानी सींगे के मनोरम स्वर-लय से उमरू का धरती-आसमान नाच उठा। ढोलों की धुन पर सबके जांबिली आथन भी नाच उठे। उनके साथ ही किशोरों के हाथों की ढाल-तलवारें भी नाचने लगीं। एक के बाद एक मंडली नियमबद्ध रूप से नाचती हुई सोमांकान के प्रांगण की ओर आगे बढ़ गई।

स्वागतानुष्ठान 'रंकेतं' समाप्त होते-होते काफी रात हो गई। बहुचर्चित रंमिली की मंडली को उमरू की किशोर-मंडली ने आकर उनका सम्मान-पुरस्कार प्रदान किया। चूंकि सम्मान-पुरस्कार के बारे में कुछ लोगों ने बहुत विरोध करते हुए बहसबाजी की थी, इसलिए रिसोबासा ने सम्मान-पुरस्कार ग्रहण किए बगैर ही लौट जाने का फैसला किया था। सारइक ने उन्हें समझाते हुए कहा – "उमरू के लोग तो सही माने में उदार और निष्पक्ष और तटस्थ रहे हैं। ये सारी करतूतें तो हाबेसिको की रही हैं। उस एक आदमी के कारण क्या उमरू के आनंद को बर्बाद होने देना उचित होगा? हमारे लिए तो यह भी एक सत्य की अग्नि-परीक्षा

ही है। इसलिए उमरू का सम्मान-पुरस्कार ग्रहण किया जाए।"

सारइक की बात पर किसी ने एतराज नहीं किया। सारइक की तरफ से रिसोबासा ने आगे बढ़कर सम्मान-पुरस्कार ग्रहण किया। मशालों के उजाले में रंमिली का जांबिली आथन नाच उठा। ढोल की धुन पर ढाल-तलवार लिए नृत्य करते क्लेंदुन-क्लेंसारपो मंडली को आगे बढ़ा ले गए। बारलन के हाथ में जांबली आथन एक मनोरम भंगिमा में नाचते हुए आगे बढ़ता गया। लांबिरिक की तुरही ने उमरू के आकाश में एक नए स्वर की धुन जगा दी। हेमाइ के साथी लंकिरी आदि ने भी नाच-नाचकर सींगा-गगना बजाते हुए मंडली को रंगीन कर दिया। सारइक, रिसोबासा आदि मंडली का नेतृत्व कर रहे थे। होठों पर मुस्कान लिए अमफू, कादम आदि किशोर-मंडली के पीछे-पीछे चल पड़ीं।

इसी समय सोमांकान का प्रांगण विभिन्न अंचलों के किशोरों की मंडलियों के नृत्य-गीतों से मुखरित हो रहा था। कतारों में गड़े विभिन्न अंचलों के जांबिली आथनों के साथ रंमिली का जांबिली आथन गड़ जाने पर कतार पूरी हो गई। स्वागतानुष्ठान रं केतं समाप्त होते ही पूरे जोर-शोर से सोमांकान का नृत्य-गीत आरंभ हो गया। रंमिली के क्लेंदुन-क्लेंसारपो ने वृत्ताकार में 'ढाल-तलवार' नृत्य लोगों के सामने प्रदर्शित किया। रुपहली तलवारें और काले रंग की ढालों के बीच के रुपहले तारे मशालों के उजाले में दमक उठे। ढाल-संचालन की उनकी अद्‌भुत निपुणता को देखकर सोमांकान में उपस्थित जनता विस्मित हो उठी। रंमिली के ढाल-नृत्य की तेज-गति देखकर ऐसा लग रहा था, मानो सोमांकान के प्रांगण में 'तेल-टुपी' चिड़िया का वर्षा-नृत्य उतर आया हो। थकावट का नाम नहीं, ऐसी तेज-गति के नृत्य में बजते ढोल का डंडा भी ढोल-वादक के हाथ में तेज-गति से नाच रहा था। मानो किसी विशेष शक्ति और आनंद ने रंमिली के नौजवानों को अनुप्राणित कर डाला था। बड़े-बूढ़े कहने लगे – "ऐसा नृत्य तो उमरू की क्या-बात, इस समूची लोंरी में इसके पहले कभी देखा हो, ऐसा याद नहीं आता।" यहां तक कि हाबेसिको भी तिरछी निगाह से रंमिली का नृत्य एक बार देख जाने को विवश हो गया था।

बारह लोंरी के लोग उस नृत्य को देखकर संतुष्ट हुए और उस मंडली के लिए विशेष सम्मान का पुरस्कार देने की घोषणा की गई। लौकी के पात्र समेत एक बड़े 'बटे' में भरकर पान-तामोल उमरू की किशोर-मंडली ने रंमिली के क्लेंसारपो के हाथ थमा दिया। क्लेंसारपो ने सम्मान के उस अमूल्य पुरस्कार को हंसते हुए ग्रहण किया। यह देख बी-हेनरू की किशोर-मंडली ने अपने को पराजित-अपमानित महसूस किया और शर्म के मारे वे किशोर दूसरी ओर हट गए। हाबेसिको को भी बुरा लगा। मदिरा का कटोरा अपने सामने लिए वह यही बात सोचता रहा कि किस तरीके से रंमिली को सोमांकान के प्रांगण से निकाल बाहर कर सकते हैं।

ढाल-तलवार नृत्य समाप्त होने पर किशोर-किशोरियों का नृत्य आरंभ हो गया। जांबिली आथन के चारों ओर वृत्ताकार होकर एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले किशोर नृत्य करने लगे। झुंडों में खड़ी किशोरियां किशोरों के नृत्य-गीत देखने लगी। ढोल-तुरही-सींगा-गगना की

गूंजते धुनों से सोमांकान का प्रांगण फिर आनंद-मुखरित हो उठा।

चांद डूब चुका था। चांदनी-रहित आकाश से तारे बार-बार आंखें मारने लगे। लाल-नीले रंगों के प्रकाश वाली दियासलाई की तीलियां जलाकर किशोर अंधेरे में छिपे किशोरियों के चेहरे झांक-झांककर उल्लास से शोर मचाने लगे। तीलियों के लाल-नीले प्रकाश से किशोरियां अचानक उलझन में पड़ गई थीं। लड़कों के अश्लील-से गीत-बात सुनकर लड़कियां अंधेरे में मुंह छिपाए शर्म ढकने की कोशिश करने लगीं।

नृत्य करते किशोरों ने थिरकते हुए गीत गाना शुरू किया —

"ओ पेइया हेमो
सू आरलें लिलो।
है लांसाम ओ - है
है लां साम ओ - है।"

ढोलों की धुन पर किशोरियों के आह्वान का स्वागत-नृत्य – 'मिमसो केरूं' शुरू हो गया। नृत्य-गीतों के जरिये किशोरों ने किशोरियों को नृत्य में भाग लेने का आह्वान किया। किशोरियां भी छाती पर 'जिरोइक' पहनकर नृत्य के लिए तैयार हुईं। प्रौढ़ महिलाएं अपनी-अपनी मंडली की किशोरियों को नृत्य के आभूषणों और पोशाकों की वेश-भूषा से सजा-धजा देने में जुट गईं।

रंमिली की अमफू और उसकी सहेलियां भी सज-धज कर निकलीं। इसी बीच दूसरे गांवों की किशोरियां किशोरों की बांहों में जाकर नृत्य करने लगी थीं। 'जिरोइक' के आंचल में बंधी कौड़ियां निकालकर अपनी छाती पर बांध अमफू आदि ने नृत्य करते किशोरों पर नजरें डालीं। मशालों के उजाले में सोमांकान का प्रांगण उद्‌भाषित हो उठा था। धीर-स्थिर भाव से नृत्य करते क्लेंदुन-क्लेंसारपो की ओर देखकर अमफू को गौरव अनुभव हुआ। अमफू ने समझ लिया कि अब सें तेरन के मन में किसी तरह का विषाद नहीं है। उसने सोचा – 'अगर सें के मन में कोई दुख-वेदना होती तो वह कभी दिल खोलकर ऐसे प्राण-विभोर करने वाला नृत्य नहीं कर सकता था।'

उसके विवाह का दिन भी तो करीब है। विवाह के पहले ही उमरू में सोमांकान-उत्सव आयोजित हुआ – यह भी मानो ईश्वर का आशीष-प्रसाद है। विवाह के पहले सें तेरन के साथ एक बार नाच पाना परम सौभाग्य की बात है। अमफू के मन में आनंद हिलोरें लेने लगा। सोचते-सोचते वह काजिर बेपी के पास गई और उससे अपने मन की बात बता दी।

"नीं, मैं सें के साथ नाचना चाहती हूं। मुझे उसी के पास ले चलो।"

अमफू की बात सुनकर काजिर कुछ देर उसके चेहरे की ओर देखती रही। उसके चेहरे पर बेचैनी का भाव देखकर अमफू भी अचरज में पड़ गई। काजिर ने अमफू को अपने पास खींच लिया और बोली – "बेटी, एक बात है। तुम्हें नाचने की जरूरत नहीं।"

"क्यों?" मानो हजारों सवाल जाग उठे।"

"तुम्हारी अम्मा ने मुझसे मना करने को कहा है।"

"मना करने को कहा है ? मगर क्यों ?" रुआंसी होकर अमफू ने पूछा। और अपनी वेश-भूषा उतारने लगी।

"क्या हो गया, नें ?" उसे वेश-भूषा उतारते देख कादम ने पूछा।

"मैं नहीं नाचूंगी।" गंभीर होकर अमफू बोली।

"अचानक तुम्हें क्या हो गया ? क्या तबीयत अच्छी नहीं ?" कादम ने पास आकर फिर पूछा।

"तुम्हीं लोग नाचो; मैं अलग रहकर देखती रहूंगी।" झूम-झूमकर नाचते-गाते किशोर-किशोरियों की ओर देखती हुई अमफू बोली।

"तो फिर मैं भी नहीं नाचूंगी।" कादम ने भी हठ ठान ली।

सहेली कादम को हठ ठानते देखकर अमफू कुछ चिंतित हो उठी। उसने सहज होकर सहेली के कंधे पर हाथ रखकर कहा – "नें कादम, भला तुम्हीं नहीं नाचोगी तो हमारे रंमिली गांव का सम्मान और गौरव कहां रह पाएगा ?"

"तो फिर तुम्हारे न नाचने का कारण क्या है ?"

"तुम नीं काजिर से पूछ लो। वही जानती हैं।"

"क्या बात है, पी नू ?" चाची काजिर रेपी से कादम ने पूछा।

"नें बासापी ने मना किया है।" गंभीर होकर काजिर ने कहा।

"नीं बासापी ने मना किया है ? मगर किसलिए ?"

"मुझे तो पता नहीं, कादम ! इसके अलावा मुझसे तो उसने और कुछ भी नहीं बताया। भला बासापी की बात मैं कभी ठुकरा सकती हूं ?"

अमफू सोमांकान की नृत्य-भंगिमा देखने में तल्लीन थी। काजिर की जबान से वह बात सुनकर कादम ने सहेली के वेदना-भरे चेहरे की ओर मुड़कर देखा। उस बात का मतलब समझ न पाकर उसने दूर आसमान की ओर नजर डाली। शायद वह, समय कितना हो गया, यही जानना चाहती थी। पंचमी का चांद तो कभी का डूब चुका था। आसमान में हजारों तारे जगमगा रहे थे। उनकी जगमगाहट उसकी आंखों में झलकने लगी। कादम के मन के आसमान में भी तारों की ही भांति तरह-तरह के सवाल उठने-मिटने लगे। उसने बात पर विचार कर देखा। उसे समझ में आ गया। नी बासापी ने तो सही बात ही सोची है। बी-हेनरू के लोग न कर सकें, ऐसा कोई भी काम है नहीं। अमफू को किशोरों के साथ नृत्य करते देख हो सकता है कि वे रंमांदु के लोगों से जाकर अंट-शंट बातें लगाएं, और झूठा कलंक लगाकर अमफू के विवाह को तोड़ने के लिए जहर फैलाएं। बात तो सही है। एक रात के आनंद के लिए पूरी जिंदगी पर झूठ-मूठ क्यों कलंक-कालिमा लगाई जाए ? ऐसी स्थिति में, उसे नृत्य करने के लिए प्रलोभन न दिखाना ही मेरे लिए भी अच्छा होगा।

उसने अमफू के पास जाकर उसे बांहों में भर लिया और बड़े प्यार और आवेग-भरे स्वर

में कहा – "ठीक है, नें, तुम्हें नाचने की जरूरत नहीं ! तुम्हारी ओर से मैं ही नाचूंगी ।"

कैसा अपूर्व रूप है कादम का ! उसके गले की मणिमाला में गुंथी चांदी की चवन्नियां मशालों के उजाले में चमक रही हैं । उसकी नृत्य-भंगिमा के साथ-साथ कानों के कर्णफूल 'नोथेंपी' भी बड़े मोहक ढंग से झूल रहे हैं । उसके काले रंग की पीनी में मानो रात का अंधेरा ही इकट्ठा हो आया है । सहेली को देखकर अमफू को यही महसूस होता रहा ।

नृत्य-गीत की मधुर गूंज से सोमांकान के प्रांगण में मानो सपना उतर आया । कादम और दूसरी किशोरियों के सहयोग से मानो रंमिली का सौष्ठव बढ़ गया । उधर बी-हेनरू के लड़के रंमिली को नीचा दिखाने की भावना प्रदर्शित करते हुए गीत गा रहे थे । उस गीत का जवाब सें तेरन ने गीतों के ही जरिये दिया –

"रंमिली आहमफा तांते
थारे आं ताकतो आंसे !
आंता कपो के पु नांने
थारे कांतांराक साइसे !
ओ - लांसाम ओ - है
ओ - लांसाम ओ - है ।"

(मतलब – रंमिली के हम किशोरों को नन्हा-बच्चा न समझना । हमारे शरीर में भी यौवन की शक्ति भरी है ।)

सें तेरन के जवाब को काट न पाने के कारण बी-हेनरू के लड़कों ने किशोरियों पर छींटाकशी करते हुए व्यंग्य किया । उसके जवाब में लांबिरी गा उठा –

"रंमिली आहामफां तांते ।
सामी आंताकसो आंसे !
आंताकसो के पु नांने
सामी मानाइ प्लें साइसे
ओ - लांसाम ओ - है
ओ - लांसाम ओ है !"

(यानी – सच तो यह है कि रंमिली की किशोरियां पूर्णिमा के चांद-जैसी ही रूपवती, सलोनी, पूर्णयौवना हैं ।)

इसी तरह जैसे को तैसा जवाब देकर उन किशोरों ने बी-हेनरू की मंडली की जबान बंद कर दी ।

लांबिरी के व्यंजनापूर्ण गीत से निरुत्तर वे लड़के नाचना छोड़ कादम और उसके संगी-साथियों के नृत्य देखने लगे । सोमांकान का प्रांगण इसी भांति नृत्य-गीत से उद्वेलित हो उठा । अमफू को दूर खड़े देख सें तेरन ने कादम से पूछा – "अमफू नृत्य में सम्मिलित क्यों नहीं हो रही ?"

"नी बासापी ने उसे मना किया है।" दूसरी ओर वोफं की बांहों के घर्षण से कादम ने शर्म से होंठ चबाते हुए कहा।

"बासापी ने मना किया है। मगर क्यों?" कादम की ओर देखते हुए सें ने फिर पूछा।

"यह तो पता नहीं। कहते हैं कि बहुत-सी बातें हैं।" वोफं ने उसे अपने शरीर के पास खींच लिया था, इसलिए कादम की आवाज कांप उठी थी।

सें तेरन और ज्यादा पूछ-ताछ किए बगैर अनुशासन मानते हुए नृत्य करता रहा। उसके मन को संदेह के कुहरे ने ढक लिया। मन के उस कुहरे को चीरकर वह यह पता लगाने में असमर्थ रहा कि आखिर कारण क्या है अमफू के इस नृत्य में सम्मिलित न होने का? उदास भाव से वह नृत्य करता रहा। धीरे-धीरे उसके मन का उत्साह ठंडा पड़ता गया।

कादम के कोमल शरीर के घर्षण से वाफं की उत्तेजना बढ़ गई थी। किशोरी देह की सजीव उष्मा पाते ही वह मानो पागल हो उठता था। और तब वह जिरसं का क्लेंसारपो हो जाता था। नाचते-नाचते वोफं का हाथ कादम की कमर तक चला गया।

पौ फटने के पहले ही 'कानपी' नृत्य समाप्त हो जाना चाहिए। आकाश के तारे भी एक-एक कर मिटते चले जा रहे थे। समाप्ति के पहले नृत्य-गीत अधिक उत्तेजनापूर्ण हो उठने लगे। ऐसे क्षणों में वोफं की उत्तेजना अदम्य होकर ज्यादा बढ़ गई। अंधेरे का फायदा उठाते हुए उसने कादम की उभरती छाती से अपना सिर लगा दिया। अस्फुट आवाज से कादम ने उसे मना किया। उसकी लज्जा को अंधेरे ने ढक दिया। यौवन के ज्वार ने उसके शरीर में भी एक अनजाने आनंद की सिहरन जगा दी। उसे लगा, वोफं का हाथ क्रमशः उसकी कमर से ऊपर छाती की ओर सरकता आ रहा है। उत्तेजना के मारे वह भी बेचैन-सी होने लगी। सें तेरन की शिथिलता का फायदा उठाकर जैसे ही वोफं ने उसे जोर से खींचकर ले जाना चाहा, तभी अचानक सोमांकान नृत्य की समाप्ति हो गई। कुहरे से ढके उमरू के आकाश पर सूरज की कोमल किरणें खिल उठीं।

सहयोगी मंडलियों को चाय-जलपान खिलाकर सोमांकान के आयोजक परिवार ने सबका सुबह का स्वागत-अभिनंदन किया। उत्सव-घर से अब 'ओच्छेपी' के करुण-गीत की गूंज सुनाई देने लगी।

यही तो सोमांकान है!

यह तो सिर्फ किशोर-किशोरियों के यौवन का उन्मादक नृत्य-भर नहीं है। हास और वेदना के सम्मिश्रण से खिला हुआ यह भी मानो एक कपौफूल[1] है।

यह सोमांकान पूर्वजों की स्वर्गीय आत्मा की मुक्ति का मूलमंत्र है। इसी कारण व्यक्ति-जीवन की घटनाओं की याद करते हुए उस अवसर पर गाए जाने वाले 'ओच्छेपी' गीत इतने करुण और मर्मस्पर्शी होते हैं।

---

1. एक तरह का लंबा गुच्छेदार परजीवी फूल, जिसे रंगाली बिहू के अवसर पर लड़कियां जूड़े में बांधती हैं।

ओच्छेपी गीतों की धुन और अर्थ-व्यंजना सोमांकान के प्रांगण में आंसुओं की धारा बहा देती हैं। उसका तात्पर्य भी यही है।

हास और आंसू – ये ही तो मानव-जीवन के चिर-सत्य-रूप हैं। सोमांकान भी मानव-जीवन की एक जीवंत तस्वीर ही है।

इसी कारण तो सोमांकान अनिवार्य रूप से कारबी जीवन में बस गया है।

सुबह का सूरज धीरे-धीरे पहाड़ के ऊपर पहुंच गया। जगमगाते जांबिली के पास ढोल-वादन प्रतियोगिता शुरू हो गई। दो-दो के हिसाब से कतारों में ढोल-वादक प्रतियोगिता के प्रांगण में उतर पड़े। रंमिली के 'दुहुइदी' ने ढोलों की जोड़ी को हाथ से सहलाकर देखा। हां, ठीक ही है। उसने मन-ही-मन सोचा।

उमरू की धरती पर पंद्रह जोड़े ढोल एक साथ बज उठे। सन्नाटा-भरा आकाश मानो अचानक फिर कंपकंपा उठा। उमरू का दुहुइदी प्रतियोगिता में श्रेष्ठ ढोल-वादक के चुनाव में जुट गया। वह बार-बार रंमिली के ढोलों की जोड़ी पर कान लगाता रहा। ऐसा लग रहा था, मानो रंमिली के ढोलों की जोड़ी दूसरे चौदहों मंडलियों के ढोलों की आवाजों को खींचे लिए जा रही है। दूसरी मंडलियों के ढोलों की आवाजें धीरे-धीरे निस्तेज-सी होती गईं। रंमिली के ढोल-वादक को ज्यादा महत्व देने के कारण बी-हेनरू के दो ढोल-वादक एतराज करने लगे। उनका मन विक्षुब्ध हो जाने के कारण ढोल-वादन का ताल टूटने लगा। वह देखकर दूसरे ढोल-वादक मुंह फेरकर हंसने लगे। नतीजा यह हुआ कि बी-हेनरू के ढोल-वादकों का स्तर और ज्यादा गिर गया। आखिर बारह लोंरी के सामने दुहुइदी को यह घोषणा करनी पड़ी कि रंमिली के ढोल ही सर्वश्रेष्ठ हैं। सोमांकान के बैठकखाने में बैठकर मंडलियों के सारबासा लोगों के साथ हाबेसिको फिर उस बात की चर्चा में जुट गया।

"ढोल-वादन का श्रेष्ठ पुरस्कार रंमिली को देना, हमारे विचार से, युक्ति संगत हुआ है।" लोंरी के सारबासा ने कहा। उसकी बात सुनते ही हाबेसिको गुस्से के मारे चीख उठा। मदिरा के नशे में डूबा हुआ वह बोल उठा – "यह तो हो ही नहीं सकता। हाबेसिको के ढोल क्या ढोल नहीं? लोंरी के न्यायकर्ता के ढोलों के रहते 'सोलांदो' के ढोल कभी श्रेष्ठ हो ही नहीं सकते।" 'सोलांदो' यानी आम जनता, हाबे-पिनपो के अधीन रहने वाले सामान्य प्रजाजन।

"मगर ढोल तो वही कहते हैं। अब चाहें आप लोग भले ही उन्हें पुरस्कार दें या न दें।" विरक्त-से उमरू के दुहुइदी ने कहा।

"तुम उपदेश देने वाले कौन होते हो? यह मेरी लोंरी है। इसका न्यायकर्ता मैं हूं। अपनी लोंरी में मैं ऐसा कभी होने नहीं दूंगा। लोंरी हाबे की मंडली के रहते 'सोंलादो' की मंडली को श्रेष्ठ पुरस्कार मिलना बेतुकी बात है। रंमिली का सारबासा कौन है? जिस गांव में कोई सारबासा न हो, उसे तो सोमांकान की सीमा में घुसने देना ही अपराध और असंगत हुआ है। खैर, उस दोष को मैं माफ करता हूं। पर अब श्रेष्ठ पुरस्कार उस गांव को देने की बात मैं कभी मान नहीं सकता।"

हाबेसिको का बिल्कुल बाहियात तर्क सुनकर बैठकखाने में स्तब्धता छा गई। सोमांकान का प्रांगण भी निष्प्राण हो गया। पहाड़ की सख्त चट्टानों से टकराकर तुरही, गगना-सींगा की धुनें भी मानो चुप हो गईं। अपनी मूंछे ऐंठते हुए हाबेसिको बोला – "हां, इसका एक उपाय हो सकता है।"

सिर झुकाए बैठकखाने के लोग हाबेसिको की इस बात से चौंक पड़े। सबकी आंखों में एक सवाल तिर आया – 'कौन-सा उपाय?'

बैठकखाने के दूसरे सिरे पर सारइक विक्षुब्ध मन से बैठा था। उसकी ओर देखते हुए हाबेसिको ने हंसकर कहा – "सारइक अगर दो ढाल जुर्माने की रकम देकर मेरे पैरों पर सिर झुकाए, तो यह श्रेष्ठ सम्मान उसे दिया जा सकता है।"

हाबेसिको की बात सुनकर सारइक तेरां चौंक पड़ा। बैठक में उपस्थित लोग भी अचरज से लोंरी हाबे के चेहरे की ओर देखने लगे। सब के मन में उद्विग्नता के सवाल उठने लगे – 'भला यह कैसा प्रस्ताव है? लोंरी हाबे कहीं पागल तो नहीं हो गया?'

यह मदिरा के नशे में कही हुई बात है या लोंरी हाबे के अधिकार का दुरुपयोग?

सारइक तेरां जहां तक हो सके, मन को संयम में रखे हुए था। पर हाबेसिको की उस बात से उसकी व्यक्ति-स्वतंत्रता पर ही मानो कुठाराघात हो गया। सामान्य-जनों, सोलांदो की शक्ति को कुचलकर चूर-चूर कर डालने की ही उसकी यह विकृत चेष्टा है। सारइक ने सोच लिया, आज इस सोमांकान के प्रांगण में ही उसे खुले आम चुनौती देनी होगी। यही उसका कर्तव्य है। उसने जरा भी विचलित हुए बगैर कहा –

"लोंरी हाबे की बात सुनकर हमें खुशी हुई है। लोंरी के न्यायकर्ता का न्याय-विचार ऐसा ही होना चाहिए। सारबासा का पद सोलांदो के हाथ से जबरन छीनने के उस आदेश-पत्र किदो को तो खुद हाबेसिको ने ही आग में जलाकर खाक कर दिया। उसका न्याय-विचार तो मैंने नहीं किया, अग्नि ने ही कर दिया। हम यहां सम्मान का पुरस्कार मांगने नहीं आए। सोलांदो का प्यार, आदर पाकर ही आए हैं। हमें मालूम है कि सोलांदो से, आम जनता से लोंरी हाबे कभी श्रेष्ठ नहीं हो सकता। सोलांदो की घोषणा ही हमारे लिए श्रेष्ठ पुरस्कार है। ऐसे पुरस्कार की कीमत किसी तराजू से तोली नहीं जा सकती। अब हम लोग इस सोमांकान का प्रांगण छोड़ रहे हैं। सोलांदो की, आम जनता की जय हो।"

कहकर अपनी मंडली ले सारइक तेरां सोमांकान से चल पड़ा। उत्सव-मुखरित सोमांकान अचानक ठंडा पड़ गया। सुबह का कुहरा भी मटमैला हो गया। पहाड़ की चट्टानें भी गर्म हो आईं। उमरू की प्रकृति मानो क्रोधित हो उठी। कटोरे की मदिरा एक ही घूंट में पीकर हाबेसिको ने विकट ठहाका लगाकर कहा – "हाबेसिको से होड़ करने आता है? गुलेल की एक ही गोली से फुर्र-फुर्र कर उड़ भागे। टुनी, फुरगुद्दी चिड़ियों के झुंड कहीं के! हुंह।"

33

कल 'थिमित' है, उमबासू गांव में लगने वाले हाट-बाजार का दिन।

खासी लोगों का एक छोटा-सा गांव है उमबासू।

रंखां के दक्षिणी अंचल का एक प्रमुख व्यापारिक स्थान है यह उमबासू।

कारबी और खासी लोगों का संयुक्त बाजार है यह उमबासू। दूसरे अर्थ में, उमबासू इन दोनों जनगोष्ठियों की एक सांस्कृतिक मिलन-भूमि है।

सूरज उगते ही उम्लारं के हाबे को साथ ले हाबेपी का हाबे दुर्गम पहाड़ी मार्ग से सुदूर राजधानी रंहारंबं की ओर चल पड़ा। दोनों की उम्र पचास साल से ज्यादा हो चुकी थी। दोनों हाबे के हाथ 'राइडां' की लाठी थी।

लाठी के सहारे दोनों उमतिली के ऊंचे पहाड़ पर धीरे-धीरे चढ़ने लगे। उन लोगों के साथ आ रहे बुरतिमेन, फेरांके आदि पीठ पर सामान लादे धीमे कदमों से दोनों हाबे के पीछे-पीछे चल रहे थे।

ओस से भीगकर पहाड़ी पगडंडी फिसलनदार हो चुकी थी। अचानक हाबेपी के हाबे का दायां पैर फिसल गया। पास के एक छोटे-से पेड़ की डाली पकड़कर ही गिरने से बचा। उसके पीछे-पीछे आ रहे उमलारं के हाबे ने आवाज दी – "देखना, राह बड़ी फिसलनदार हो गई है। जहां धूप नहीं पड़ती, वहां पड़ी हुई ओस देर से सूखती है। कदम संभालकर रखिएगा। बहुत खड़ा पहाड़ है।"

"हां, हां, अभी तो किसी तरह गिरने से बच गया। ओह!" लंबी सांस लेकर हाबे ने कहा।

"पिनपो लोगों के 'किदो' देकर जाने को करीब दो सप्ताह तो हुए होंगे न?"

"हां, वे उस चांद के मरने के[1] पहले ही आए थें न?"

"हां, हां।" उमलारं के हाबे ने हामी भरी।

"इस उम्र में तो पहाड़ चढ़ने में बड़ी तकलीफ होती है। मगर करें क्या? 'वोलोकेतर' पूजा में न जाएं तो भी पिनपो लोग हम पर दोष मढ़ेंगे।"

"हां।"

"क्या झींगा मछली और काउरी-करेला लाए हो?"

"हां, जितना मिल सका, खोज-ढूंढ़कर जुटा लाया हूं।"

"खैर, अच्छा ही किया है। आजकल तो हमारे नदी-नालों में झींगा मछली मिलना भी

1. अमावस को चांद का मरना कहते हैं।

दूभर हो गया है। काउरी-करेला भी जंगल में खत्म ही हो गए हैं। खोज-ढूंढ़कर किसी तरह एक चौंगा ही मिला।"

"देवता के नाम पर वही काफी है। देवता का काम पूरा होते ही हमारी भी मुक्ति है।"

"हां। मदिरा तो सौ बोतल लाए ही होगे?" सामने की बड़ी चट्टान पर बाएं हाथ से टिक कर हाबेपी के हाबे ने पूछा।

"हां, बड़े घड़े से एक घड़ा भरकर ले आया हूं। शायद उतने से हो जाएगी। पर मुर्गे सिर्फ तीन ही हैं। कारबी 'रेसो' को पसंद आएं या नहीं, पता नहीं।"

"अरे, हो जाएगा। आजकल भला मुर्गे मिलते कितने हैं? सिर्फ टांगें पीली नहीं होनी चाहिए, बस। हमारे लोगों की हालत भी तो अब पहले जैसी नहीं रही है। समझे न?"

हाबेपी के हाबे की बात सुनकर उमलारं के हाबे को बी-हेनरू के हाबे की याद आ गई। बगैर राजा की ओर से पदवी दिए, अपने को हाबेसिको के रूप में जाहिर करने वाले शिकारी तेरन के बारे में हाबे-श्रेष्ठ का विचार जानने की उसकी उत्सुकता हुई। उसने मुड़कर नीचे की ओर नजर डाली। फेरांके आदि धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ते आ रहे हैं। खां में भरकर लाए गए मुर्गे हिलने के धक्के से डरकर चीखते-फड़फड़ाते थे।

वह हाबे के पास पहुंचकर बोला – "हां, लोगों की हालत तो दिनों-दिन बदतर होती जा रही है। बी-हेनरू का हाबे भी इसका फायदा उठाकर लोगों के शोषण में जुट गया है। उसी के कारण हमारी लोंरी में दिनों-दिन विदेशी लोग आकर भरते जा रहे हैं।"

"हां, मैंने उस शिकारी हाबे के बारे में सुना है। उमरू के सोमांकान में सुना है कि उसने सोलांदो से भी अन्यायी बर्ताव किया था। अब तो राजा से सलाह लेकर उसे हाबे के पद से हटा ही देना चाहिए। आज दो-तीन वर्षों से तो उसने वोलोकेतेर में एक पैसा भी चंदा नहीं दिया है। इस साल के लिए उसने क्या तुम्हें कुछ दिया है?"

"नहीं दिया। पर सुना है, वह पूजा के नाम पर हर साल जनता से पैसे उगाहता रहता है।"

"यह तो साफ-साफ बेईमानी है। लोंरी का सुधार करना, उसकी हालत बदलने की कोशिश करना तो दूर, उल्टे उसने हमारे सम्मान को भी गिराया है। यह बात राजा के कान में डाल देनी चाहिए।"

हाबेपी के हाबे की बात सुनकर उमलारं के हाबे ने चैन की सांस ली। धीरे-धीरे दोनों पहाड़ की ऊंची चोटी पर पहुंच गए। वहां जरा समतल जगह पर दोनों ने कुछ क्षण विश्राम किया। तब तक सामान लेकर आने वाले फेरांके आदि पहुंचे न थे। उमलारं के हाबे ने नीचे नजर डाली। उन्हें आते देखकर वह फिर आकर हाबेपी के हाबे के पास बैठ गया। उसे लगा, हाबेपी का हाबे काफी थक गया है।

पेड़-पौधे-रहित उस पहाड़ की चोटी पर बैठकर ही चारों ओर के दृश्य दूर-दूर तक अच्छी तरह दिखाई पड़ रहे थे। उमलारं के हाबे ने दूर के पहाड़ों पर नजर डाली। ऊंचे-नीचे पहाड़ सूरज की किरणों से चमक रहे थे। दक्षिणी ओर का सोच्छें पहाड़ मानो काला रंग पोतकर

चुपचाप पड़ा हुआ था। जैसे कारबी समाज-संस्कृति की महिमा, वहम करने से वंचित होकर प्राचीन कारबी राजधानी का वह पहाड़ वेदना से भाय़ाक्रांत हो पूरब के रंहारंबं शहर की ओर चुपचाप देख रहा है।

उसे एकटक देखते देख हाबेपी के हाबे ने पूछा – "क्या देख रहे हो ?"

"वह पहाड़ सोच्छें है न ?"

"हां। अगर राजधानी वहां होती तब तो हमारा बंटाधार ही हो जाता। देखूं जरा, एक बीड़ी इधर दो।"

थैले से बीड़ी निकालकर दोनों ने जलाई। इसी बीच बुरतिमेन, फेरांके आदि भी पहुंचे। उन सबने पीठ पर से बोझ को उतारकर नीचे रखा। उन्हें भी एक-एक बीड़ी देकर उमलारं के हाबे ने हंसी-मजाक करने के इरादे से कहा – "हमने सुना था कि हमारा फेरांके 'हलिमन' (हनुमान) की भांति छलांग मारकर पहाड़ पार कर जा सकता है। पर यहां तो देख रहे हैं कि इस उमतिली का पहाड़ चढ़ने में ही अब वह कमर सीधी नहीं कर पा रहा है।"

हाबे की बात पर सभी हो-हो कर हंस पड़े।

"खैर, मेरी बात छोड़िए। जरा हाबेपी के फेरांके की हालत क्यों नहीं देखते ?" उमलारं के फेरांके ने कहा।

"क्यों, क्या हो गया उसे ?" दोनों हाबे ने अचरज से पूछा।

"चट्टान कड़ी है, या उसकी टांगें कड़ी हैं, इसका प्रमाण देखने के लिए उसने अपनी टांग को ही क्षत-विक्षत कर लिया।"

"अस अस ! हमारे फेरांके को शायद यह बात याद ही नहीं रही कि यह उमतिली पहाड़ है।" हाबेपी के हाबे ने हंसते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर फिर वहां हंसी की लहर दौड़ गई। हाबेपी के हाबे ने कुछ गंभीर होकर कहा – "अब उठें। वह पहाड़ पार करते ही आमलं नदी मिलेगी। अब अपने पैर पर कपड़ा बांध लो।" कहता हुआ वह उठा और आकाश के सूरज की ओर देखते हुए समय का अंदाजा लगाया। फिर दोनों हाबे धीमे कदमों से ढलान की पगडंडी से होकर नीचे उतरने लगे।

पूरी मंडली आमलं नदी के पश्चिमी किनारे पहुंचकर कुछ आराम करने लगी। दोनों हाबे ने नदी के ठंडे पानी में नहा-धोकर जिरइ अंचल के देवता के नाम मदिरा चढ़ाई। देवता को चढ़ाने का काम पूरा कर वे नदी पार हुए और राजधानी की पवित्र धरती पर कदम रखा। हाबेपी के हाबे ने पश्चिमी आकाश की ओर देखते हुए कहा – "सूरज अभी एक 'डांर'[1] है, इसलिए हम शाम होने के पहले ही राजधानी पहुंच सकेंगे।"

उमलारं के हाबे ने पूछा – "कल तो 'थिमित' का दिन है न ?"

"हां, होना तो चाहिए। परसों जैसा कि उस खासिया व्यापारी ने बताया था, उसके अनुसार

---

1. बांस का आठ-दस हाथ लंबा नल।

तो थिमित का दिन कल ही है। हमारे वोथातलांसो के बाजार-हाट के दिन से उमबासू के हाट-बाजार के दिन मिलते नहीं। यहां तो हर सप्ताह दिन बदलते रहते हैं।"

"हूं, इसीलिए तो मेरी तिथि-वार की गिनती में हमेशा उलझन हो जाती है।" उमलारं वे हाबे ने कहा।

यों तरह-तरह की बातें करते हुए जिरइ अंचल के प्रतिनिधि वे दोनों हाबे राजधानी पहुंचे और अपने अंचल के पिनपो के यहां रात-भर के लिए विश्राम किया। रंहारंबं की धरती पर सांझ की सपनीली मुस्ती धीरे-धीरे उतर आई और कारबी राजधानी गहरी शांति में सो गई।

उसके पहले दिन ही थिमित यानी हाट-बाजार लग चुका था और उसी रात को वोलोकेतेर पूजा को 'से-सादी' यानी 'उरुका'[1] का उद्‌बोधन कार्य राजा के प्रांगण में संपन्न किया जा चुका था। राजा के फेरांके ने 'रंफार सिनत' के घर के पास के तेरां पेड़ के तले खड़े हो इस राज-निर्देश की घोषणा की थी जिसे हाबे लोगों ने भी सुना था –

"राजधानी की सभी माताओ और बहनो, कल राजपुरोहित पवित्र जल-स्नान करेंगे। उनके स्नान के पहले जैसे कोई भी गलती से भी राजघाट के पानी का स्पर्श न करें। यह हमारे महान राजा लिंदकपो की निर्देश-वाणी है।"

आज 'खिरला' यानी कारबी राजा की राजधानी रंहारंबं के हाट-बाजार का दिन है। आज फागुन शुक्ल अष्टमी तिथि है। अत्यंत शुभ दिन। इसी तिथि को कारबी राजा लिंदकपो हर साल वोलोकेतेर यानी राजकीय 'रंकेर' पूजा करते आए हैं। इस पूजा का मूल उद्देश्य है – समग्र लोंरी की मंगलकामा करना।

राजधानी का पूरब का आकाश उगते हुए सूरज की उज्ज्वल आभा से उद्‌भाषित हो उठा। राजपुरोहित 'काथार बूढ़ा' झलमल करती बहती पवित्र उमरासी के पानी में स्नान करने उतर गया। उमरासी के पवित्र-सलिल में स्नान करते समय काथार बूढ़े को गरिमा से मंडित इस उमरासी की कथा याद हो आई। उसके मानस में यह बात जाग उठी – दूसरी ओर की चट्टान पर देवी 'हाईमू' के चरण-चिह्न पड़े हैं, जिसे पवित्र उमरासी की जलधारा आज भी धोती रहती है। उसे मानवी हाईमू के 'वर्षा देवी' में रूपांतरित हो जाने की अमर-गाथा की भी याद हो आई। स्नान करते-करते ही उसने सोचा, 'उसी महीयसी देवी का 'बोधन-कार्य' आज मेरे ही हाथों संपन्न होगा। मेरी जबान से उच्चरित मंत्र-शक्ति और गीत की मूर्च्छना कारबी लोंरी के वक्ष पर वर्षा देवी की अमृत-स्पर्शी शीतल बूंदों को उतार लाएगी।' उसने मन-ही-मन प्रार्थना की – 'ओ पूत-सलिला उमरासी, कारबी-लोंरी में तुम चिर-महीयसी बनी रहो।'

प्रार्थना के साथ ही उगते सूरज की भांति काथार बूढ़े का मुख-मंडल भी प्रफुल्लित हो उठा। स्नान-कार्य संपन्न कर काथार बूढ़ा धीरे-धीरे ऊपर आ गया और उसने राज-भवन में प्रवेश किया। मोटी-मोटी घनी मूंछों वाले चमकीले चेहरे का काथार बूढ़ा राजा की दाहिनी ओर बैठ गया। राजमंत्री दिली राजा की बाईं ओर बैठा। राज-दरबार में कतारों में बैठे

---

1. 'से-सादी' या 'उरुका' – मूल पूजा के त्योहार के प्रारंभ होने का पहला दिन। उस दिन कुछ अनुसंगिक कार्य किए जाते हैं।

हाबे-पिनपो लोगों की सफेद पगड़ियों के बीच काथार बूढ़े की बूटेदार रंगीन पगड़ी सबको आकर्षित कर रही थी।

पूत-मंत्र उच्चारण करते हुए काथार बूढ़े ने दिन के शुभ-कार्य का उद्यापन आरंभ किया। राजा लिंदकपो, दिली, बरसिंनत, बरमिणि, पिनपो और हाबे – इन सबके साथ काथार बूढ़ा सरकारी राजपुरोहित काथाररिसो को साथ लेकर पूजा-स्थली की ओर चल पड़ा। पूजा-स्थली राजधानी से कुछ हटकर बनाई गई थी। कुछ दूर जाने पर सब ने निर्जन जंगल में खड़े उस अकेले पेड़ की ओर नजर डाली।

वह लोंरी पेड़ है।

यह पवित्र खार-पेड़ सैकड़ों वर्षों से कारबी लोंरी के भाग्य-निर्णायक के रूप में चुपचाप खड़ा है। यह पेड़ चिरकाल अक्षुण्ण, चिर-अक्षत रूप में स्थित रहा है। इसकी एक भी पत्ती तोड़ने का मतलब है मौत को गले लगाना। यहां तक कि किसी आंधी-तूफान ने भी इसकी कोई डाली नष्ट की हो, ऐसा कारबी लोगों को याद नहीं।

उस पेड़ का निरीक्षण कर मंडली आगे बढ़ी। डालियों-पत्तियों से काफी दूर तक फैले इस विशाल पेड़ ने धीरे-धीरे सूरज को ओझल कर दिया। सब लोग जाकर उस पेड़-तले आराम करने लगे। उमलारं का हाबे अपनी पीठ पर जो 'हरहाक' का खां ले आया था, उसे उसने ले जाकर पेड़ के नीचे रख दिया।

राजपुरोहित के सहायक 'बरवा' ने लोंरी पेड़ के तले तीन वेदियां बनाईं। दाहिनी ओर की वेदी 'हेमफू' देवता की थी, उसके पास की 'मुक्रां' देवता की वेदी थी, पेड़ के तने के पास देवी 'रासिंजा' की वेदी बनी थी। महाकाल रुपिणी देवी का ही दूसरा नाम 'रासिंजा' है। यह बहुरूप देवी 'रासिंजा' कारबी लोंरी में शुरू से ही अधिष्ठात्री देवी के रूप में पूजी जाती रही है। देवी-स्थान के सिरे पर दो त्रिशूल खड़े कर पुरोहित ने पूजा-वेदी बनाई। उनमें एक त्रिशूल ऊपर की ओर मुंह किए दो शूलों को मानो काट रहा था; मुख्य डंडे से दो शूल नीचे मुंह किए हुए थे। कारबी लोगों के जाने-पहचाने त्रिशूल का नाम है रक राक।

राजपुरोहित, काथार बूढ़े ने दो देवताओं के बोधन-मंत्र का उच्चारण करते हुए उन्हें वेदियों पर प्रतिष्ठापित किया। हेमफू और मुक्रां – दो देवताओं के नाम लाल परों वाले दो मुर्गों को उत्सर्ग किया। उन मुर्गों ने यह प्रदर्शित किया कि लोंरी का मंगल होगा। उद्विग्न चित्त से पूजा निरीक्षण करते राजा लिंदक के होठों पर आनंद की हंसी खिल उठी। अब सभी इसी का इंतजार करने लगे कि महाकाल रुपिणी रासिंजा देवी राजा का पवित्र प्रसाद किस रूप में ग्रहण करती है।

बांग देने वाले सफेद परों वाले मुर्गे के गले को पूजा के खास दाब से रेतते हुए उसे काथार बूढ़े ने ऐसे दबाए रखा जिससे कि वह हिल-डुल न सके। राजा ने गौर किया, राजपुरोहित के तो दोनों हाथ कांप रहे हैं। काथार बूढ़े ने उद्विग्न चित्त से देखा कि मुर्गे के पंख भी कांप रहे हैं। किसी तरह की अधीरता प्रकट किए बगैर राजपुरोहित कहने लगा – "लोंरी के देवतागण! आप लोग देवी के संकेत की ओर ध्यान दें। पंख भी जोरों से कांप रहे हैं। मैं अपने पूरे शरीर

में कंपन का अनुभव कर रहा हूं।"

काथार बूढ़े का आह्वान सुनकर सभी मुर्गे के पंखों की ओर झांककर देखने लगे। राबा लिंदकपो की चमकीली आंखें मुर्गे पर से वेदी पर, फिर वहां से लोंरी पेड़ पर जा पड़ीं। राजा ने देखा, तेजी से बहती हवा से लोंरी पेड़ से दो-एक पत्तियां टूटकर नीचे गिर रही हैं। राजा का चेहरा गमगीन हो उठा।

राजा ने फिर मुर्गे पर नजर डाली। मुर्गे की ओर एकटक देखते समय पेड़ की एक हरी पत्ती टूटकर धीरे से राजा के सिर पर आ पड़ी। पास खड़े बर सिंनत ने पत्ती को धीमे से राजा के सिर पर से उतार सहेजकर रखा। सबने राजा के गंभीर चेहरे को देखा। सबका मुंह जैसे एक दमघोंटू स्थिति में आतंकग्रस्त हो पड़ा। राजा ने गंभीर भाव से कहा – "इतने वर्षों तक तो देवी के पवित्र मुर्गे के पंखों में कभी कंपन उठते नहीं देखा था। यह तो जरूर राजतंत्र के पतन की निशानी है।"

"किसके पतन की बात कहते हैं, प्रभु?" उद्विग्नता से राजा के चेहरे की ओर देखते हुए राजमंत्री ने पूछा।

"किसी राजा का पतन होने वाला है, ऐसा लग रहा है। उस पतन के फलस्वरूप देश में कुछ अशांति भी हो सकती है। मगर वह हमारी लोंरी को स्पर्श नहीं कर पाएगी। हेमफू और मुक्रां – दोनों देवता हमारी रक्षा कर रहे हैं। पुरोहित जी, आपका विचार क्या है?"

वेदी के पास मुर्गे को रखकर उसकी अंतड़ी-नाड़ी की जांच में लगे काथार बूढ़े ने राजा के चेहरे की ओर देखा। दिली के साथ दूसरे लोग भी पुरोहित के चेहरे की ओर देखते रहे। काथार बूढ़े ने कहा – "जी हां, प्रभु! आपके उत्तम विचार के साथ हमारे मन का भाव भी हू-ब-हू मिल रहा है।"

"हमें तो आशंका हो रही है, प्रभु! कारबी-लोंरी में कहीं अशांति न हो जाए।" लंबी सांस लेकर हाबेपी के हाबे ने कहा।

"आशंका की बात नहीं। देवी तो चिरकाल, हमारे मंगल की बात ही कहती आई हैं। लोंरी देवता ने हमारे महान राजा के सिर पर जो पत्ती दी है, उसका मूल तात्पर्य भी वही है।" बर सिंनत ने प्रसन्न मन से यह बात कही।

"हां, वह पत्ती देवी के आशीर्वाद का निर्माल्य है, प्रसाद है।" राजमंत्री दिली ने मंतव्य दिया।

देवी को प्रसाद चढ़ाने का काम पूरा कर सभी अपने-अपने आसन पर आकर बैठ गए और पूजा के बारे में कुछ चर्चा करने लगे। सूरज के पूरब आकाश में रहते समय ही काथार बूढ़े ने पूजा-कार्य सम्पन्न किया। पूरब का सूरज धीरे-धीरे पश्चिम की ओर ढलने लगा था। इसी बीच अन्न-भोजन की पूरी तैयारी हो चुकी थी। राजा, राजपुरोहित और दिली को दोनों हाबे ने नियमानुसार मान आगे बढ़ाकर सिर टेककर प्रणाम किया। हर आदमी के सामने केले-पत्ते की पत्तलें लगा दी गईं। फेरांके ने राजा की पत्तल को ठीक तरीके से लगा दिया। स्वादिष्ट 'सुबक' धान के चावल से बना भात राजा की पत्तल पर परोसा गया। राजा को परोसने

के बाद दूसरे लोगों की पत्तलों पर भी भात परोसा जाने लगा। मांस परोसते समय हेमफू देवता को चढ़ाए मुर्गे का सिर राजा की पत्तल की दाहिनी ओर धीमे से रख दिया गया। मुक्रां देवता के मुर्गे का सिर राजमंत्री दिली की पत्तल पर परोसा गया। 'रांसिंजा' देवी के मुर्गे का सिर राजपुरोहित काथार की पत्तल पर दिया गया। विशेष सम्मान के लिए लाए गए मुर्गे की दो जांघों में से एक जांघ बरवा की पत्तल पर दी गई। दूसरी जांघ, 'जिरइ' के सोलांदो के नाम पर लोरी श्रेष्ठ लबेपी के हाबे की पत्तल पर परोसी गई। कारबी, समाजतंत्र में हाबेपी और उमलारं दोनों भाई हैं। इसी कारण वोलोकेतेर अनुष्ठान में राजा और दूसरे पार्षदों के सामने बराबर बांटकर खाने का नियम आज तक चलता आया है। हाबेपी के हाबे ने मुर्गे की जांघ को बराबर फाड़कर एक हिस्सा उमलारं के हाबे को दे दिया। जिरइ के दोनों हाबे सूखी झींगा मछली और काउरी-करेला बराबर-बराबर साथ ले गए थे। झींगा मछली की तरकारी और काउरी-करेले की तरकारी की पोटलियां दोनों ने खोल दीं। उमलारं के हाबे की पत्तल पर ये दोनों तरह की तरकारियां थीं, पर कम होने का बहाना बनाकर उसने हाबेपी के हाबे से कुछ और देने की मांग की।

यही भाईचारे का प्यार-भरा सौहार्द है। ऐसे ही सौहार्द का प्रदर्शन इस पूजा की एक और विशिष्टता है। कारबी समाज के इतिहास का यह भी निश्चय ही एक अविस्मरणीय अध्याय है। आखिर वोलोकेतेर अनुष्ठान के नियमों का पालन करते हुए देवताओं के नाम पर अन्न-तर्पण किया गया, और रंसोपी-जिरइ सभी ने मिलकर महामिलन का अन्न-भोजन आरंभ किया।

तपता हुआ सूरज धीरे-धीरे पास के सोच्छें पहाड़ में छिप गया। पूजा का समापन करने हेतु काथार बूढ़े ने राजाज्ञा मांगी। राजाज्ञा मिल जाने पर हेमफू-मुक्रां देवताओं के पास से विदाई ली। रासिंजा देवी की वेदी पर से सामान्य त्रिशूल को उठाकर उसने काथाररिसो के हाथ में दे दिया। दूसरे त्रिशूल को उसी लोरीं पेड़ पर खोंस दिया और देवी को विदा दी। उसके बाद वर्षा देवी को संबोधित करते हुए ऋतु-परिवर्तन का गीत गाने लगा –

"सी - सी - मा नें नें
सी - सी नांहांजें
बां बर रुवे हां जें।"

(यानी – ओ वर्षा देवी के संदेशवाहक जुगनूगण ! तुम लोग वर्षा देवी का सादर स्वागत करते हुए लोंरी के शस्यों को सजीव करो।)

इस गीत के बाद सभी राजधानी की ओर चल पड़े। राह में रुककर काथार बूढ़े ने कुलगुरु को तर्पण देकर दूसरा गीत गाया –

"क्रकचुर मा क्रक चुर
क्रकचुर नां केकुर,
बां बतर नांसिथुर
बर रुवे नांकुर !"

(यानी – ओ नए मौसम के शुभ क्रकचुर[1] पक्षी ! अपने अमृत-भरे स्वर से धरती पर वर्षा देवी को स्वागत कर ले आओ ।)

दिनमणि सूरज अब डूबने ही वाला था। राजधानी के प्रमुख प्रवेश-द्वार पर लिंदकपो लोग उपविष्ट हुए। पूजा-स्थली से ले आए पानी और मदिरा-भरे दो लांथे काथार बूढ़े के सामने खड़े करके रखे गए। यहां भी गुरुकुल का तर्पण करते हुए उसने वर्षा देवी की गीत गाया–

"खकसो मा खकसो
खकसो नांहांजो
वां बतर सारपो
राम नं आपर लो ।
दो रानाम फारो
पिनी रानी फो
दान-दि पिएत लो ।
लोति आंर्देसो (सि)
सेर लांथे वाकपो !
सेर लांथे मे सो (सि)
फो तुं फयां सो
नां आपुन केसक सो (सि)
नां सेर लांथे मान लो !
लां लांथे मे फो,
हर लांथे मे फो
ने सारति मेसो पेन,
सेर लांथे वाक पो !
जादि पिनिं निंक्रान फो
जादि नांने लो ते
सेर माचर नांलो
नांक्लो पारए फो ।"

(यानी – ओ मेढक राज ! तुम लोग सादर आह्वान कर वर्षा देवी को इस धरती पर ले आओ। अब तो शास्यों के बीज डालने का मौसम आ गया। लोंरी के सहस्रों देवता तुम्हें दान-तर्पण आदि समर्पित कर रहे हैं। इस पवित्र लांथे की मदिरा और पानी से अपने कंठों को तर कर लो। ओ अंकुर-जात बांस देवता ! तुम महान और शुभाकांक्षी हो। अगर तुम्हारे विचार से कारबी जनों का मंगल होगा तो इस पवित्र अवसर पर सहस्रों देवताओं के समक्ष अपना

1.बरसात की एक तरह की निशाचर चिड़ियां. इस चिड़िया की लगातार पुकार धरती पर जोंक उतार लाती है – कारबी लोगों का ऐसा विश्वास है।

मंगल-चिह्न प्रदर्शित करो ।)

यह गीत गाने के बाद काथार बूढ़े ने हाथ के दाब से दोनों लांथे से एक-एक टुकड़ा काटकर धरती पर गिराया । कटे टुकड़े छिटककर एक के ऊपर एक गिरे । यह शुभ सगुन है । राजा लिंदकपो समेत सबके चेहरे पर आनंद का भाव खिल उठा । इस बीच सूरज डूब चुका था । पश्चिम आकाश लाल हो उठा था । रंहारंबं के आम-कटहल आदि के पेड़ भी तरह-तरह की चिड़ियों की चहचहाट से गूंज उठे । जमाने के पुराने काले-काले पेड़ देखने में भयावने लगने लगे । आतंक और आनंद के समन्वय से मानो रंहारंबं का वातावरण गंभीर हो आया ।

वे लोग राजभवन आकर बैठकखाने में आसनों पर बैठ गए । राजा, पुरोहित और दिली – तीनों के साथ दोनों हाबे भी बड़े घर के 'नक्सेक्'[1] कमरे में जाकर बैठ गए । पूजा-स्थली से लाए गए त्रिशूल, बलि देने वाले दाब या खड्ग और पूजा की दूसरी सामग्रियों को भक्ति-भावना से काथार बूढ़े ने यथा स्थान रख दिया । दोनों हाबे ने मदिरा आगे बढ़ाकर दिन-भर भर के कार्यक्रम का समापन करते हुए 'हाईमू' का गीत गाने का अनुरोध किया । काथार बूढ़े ने नियम मानकर हाईमू गीत का तात्पर्य-सूचक गीत ही गाकर सुनाया —

"हाई मू मांदुं
नां जिरइ दो आतुम
लुनरि पो आतुम !
सोच्छें दो आतुम !
बां रामनं आलतुन
आसेक सेक सि लुन !
बां रुवे कुर आलुन
इजिर पेत नांलुन
सेंपि मारेंखुं !
जिरणि नांकेलुन
सेर माहुन थुरलुन ।
जिरथम पाचक दुन
बर रुवे थक दुन ।"

(यानी – ओ जिरइ-निवासी लोगो ! तुम लोग 'हाई' का गीत न गाना । यह गीत सिर्फ सोच्छेंवासियों के लिए ही बना है । काथार बूढ़े द्वारा वर्षा देवी के आह्वान का है यह गीत । इस गीत का तात्पर्य अत्यंत महान है । इस गीत की एक कड़ी गाते ही आकाश में गरज होने लगती है, दो कड़ियां गाने पर आकाश में बादल उमड़ आते हैं और तीसरी कड़ी गाते ही वर्षा देवी आंसुओं की धारा लिए धरती पर उतर आती है ।)

---

1. कारबी लोगों के बड़े घर के 'कुत' नाम के कमरे में घुसने के दरवाजे के कोने का नाम । उसी जगह पुराने जमाने में कारबी ढाल-तलवार आदि हथियार रखे जाते थे । पूजा के साजो-सामान भी यहीं रखे जाते हैं ।

इसी तरह वोलोकेतेर पूजा का समापन कर काथार बूढ़े को साल-भर के लिए छुटकारा मिल गया। बैठकखाने के अलाव के पास बैठकर अब राजा रंहां लिंदक ने लोंरी का समाचार जानने के इरादे से दोनों हाबे से पूछा – "हाबेगण, लोंरी का समाचार ठीक है न, कुशल है न ?"

"प्रभु, हम जिरइ के रहने वाले तो बड़े सुखी हैं। आपकी सुदृष्टि के कारण कोई अशुभ, अमंगल नहीं हुआ है। सिर्फ उमलारं लोंरी के बी-हेनरू गांव का शिकारी तेरन सुनते हैं कि प्रजाजनों पर बड़ा उत्पीड़न-अत्याचार चला रहा है।"

"हां, मैंने भी सुना है। वोलोकेतेर के लिए क्या उसने चंदा दिया है ?" राजा ने उमलारं के हाबे से पूछा।

"जी नहीं, प्रभु ! आज तीन साल से उसने एक पैसा भी नहीं दिया है।"

"भला आप के रहते हुए वह सोलांदो पर राज कैसे चला पा रहा है ? उमलारं के हाबे, आप ही बताइए तो ?"

"प्रभु ! खुद कोई न सुधरे तो भला किसी को कोई कैसे सुधार सकता है ? यह सब तो हाबेसिको के अपने कर्मों से संघटित होता है। हमारो लोंरी सब से बड़ी है। इसे चलाने में अड़चन हो रही थी, इसी कारण उसे हाबे बना दिया था। पर वह बुरे षड्यंत्रों द्वारा दूसरों की बात ही क्या, हाबे लोगों का भी उत्पीड़न करने लगा है। यह सच है।"

"तब तो उसे हाबे पद से तुरंत उतार देना ही चाहिए। बर दिली और वर सिनत, तुम लोग इस बात का ध्यान रखना और इसी सप्ताह के अंदर किदो भेजकर उसे हाबे पद से उतार देना।"

"जो आज्ञा, प्रभु ! चांद के परिपुष्ट हो जाने के पहले ही हम किदो भेज देंगे।" बर दिली ने विनम्रता से कहा।

यों ही देर रात तक चर्चा होती रही। रात के भोजन के बाद कारबी राजधानी पर धीरे-धीरे सन्नाटा उतर आया। लेकिन हवाओं की हरहराहट क्रमशः ज्यादा होने लगी। गहरी प्रशांति में डूबे राजधानी रंहारंबं के पेड़-पौधों को शुक्ल अष्टमी के चांद ने और ज्यादा उज्ज्वल बना दिया।

34

फागुन की एक और शाम !

पतझड़ में पेड़ बिल्कुल ठूंठों-जैसे हो गए थे। सूरज के प्रकाश में वे बिल्कुल साफ दिखाई दे रहे थे। उधर पूरब की ओर कतारों में खड़े पहाड़ों की हरियाली बहुत पहले ही खो चुकी थी। हाबेसिको सीढ़ी पर चढ़कर उन ठूंठ-जैसे पेड़ों की ओर देखने लगा। शीत के मौसम में जाड़े को भी अंगूठा दिखाते हुए चिर-वसंत बनने की व्यर्थ कोशिश में जुटे पेड़ों का खुले ठूंठ-सा रूप देखकर हाबेसिको का अंतर भी कांप उठा। समय से पराभूत प्रकृति का रूप

देखकर उसका कलेजा काला पड़ गया। प्रकृति के इस निर्मम रूप में त्याग की जो महिमा छिपी हुई है,उसका अनुभव वह जरा भी कर नहीं पाया था। प्रकृति का बदला हुआ रूप मानो उसे अपनी आंखों से आज ही दिखाई पड़ रहा है।

पहाड़ों की छाती पर से अपनी नजर हटाकर अब उसने अपने गांव के चारों ओर नजर डाली।

यह उसे क्या दिखाई दे रहा है ?

यह उसी का गांव है न ?

पर यहां इतने सारे टडन पौधों की झाड़ियां कहां से आ गईं ?

या मुझे कोई भ्रांति ही दिखाई पड़ रही है ?

यह बी-हेनरू गांव ही है क्या ? यह सब सोचते हुए उसे लगा कि उसका सिर चकरा रहा है। वह गांव पर नजर डाले नहीं रह सका। उसे लगा कि उसका गांव झूम खेती का ऐसा एक उजाड़ पहाड़ है जिसे बहुत समय पहले परती छोड़ दिया गया। उसने अपनी आंखें मूंद लीं। वह जिस खंभे को पकड़े हुए था, धीमे से आंखें खोलकर उसकी ओर देखने लगा।

खंभा धूप-बारिश में सड़-गल गया है। यह रूप देखकर उसके मन में संदेह हुआ, क्या यह खंभा है ?

यह मेरा ही घर है न ?

हाबेसिको का घर ?

उसे लगा, उसके पैरों के तले का मचान-घर अचानक डोल रहा है। उसे महसूस हुआ, वह खुद बहुत ज्यादा थका हुआ है। उसने खंभे को मजबूती से पकड़ लिया। 'ठनर' से खंभा टूट गया तो वह चौंक उठा। उसने सन्नाटे-भरे बैठकखाने की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ा दिए।

बैठकखाने में बैठकर उसने एक लंबी सांस ली। उसे लगा, उसका गला सूख गया है। उसने पास के लोटे से धीरे से एक कटोरा पानी उड़ेल लिया। पानी पीने के बाद ही उसे कुछ चैन मिला। घर के किसी को पुकारने की उसकी इच्छा नहीं हुई। बीड़ी जलाकर उसने ढेर-सा धुआं छोड़ दिया। घुमावदार कुंडली बनाकर उड़ते हुए धुएं की ओर देखते हुए उसे दीवार पर टंगा किदो दिखाई पड़ा। उसकी आंखें एकटक उधर लगी रहीं। सिर पर की सफेद पगड़ी की पेंच अपने-आप ढीली हो आई। खुलकर गिरती-सी पगड़ी को उसने पकड़े रखने का कोई प्रयास नहीं किया।

बंधी हुई किदो की गांठें भला क्या कह रही हैं ? सोलांदो यानी सामान्य जन पगड़ी की पेंच भी खोल सकते हैं। किदो लेकर आने वाले कारबी राजा रंहालिंदक के फेरांके (दूत) का चेहरा उसकी आंखों में उभर आया। उसे इतना डर क्यों लग रहा है, खुद ही सोच-समझ नहीं सका।

वोलोकेतेर अनुष्ठान की अवहेलना कर डालना मेरा अपराध था। सोलांदो या प्रजाजनों पर न्यायदंड का दुरुपयोग भी जरूर हुआ है।

लेकिन तब फिर लोंरी के हाबेगण इतने दिनों तक चुप क्यों रहे ? विरोध क्यों नहीं कि[redacted] था ?

नहीं, वे लोग तो सही राह पर थे ! यह तो मेरी ही दुर्मति का कुफल है । नजरें घुमाकर उसने खुले आकाश की ओर देखा । टंगे हुए 'किदो' की गांठें मानो उसकी ओर देखती हुई हंस-हंसकर कह रही हैं – 'आज से तुम अब 'बरहाब' नहीं रहे । शिकारी तेरन ही हो ।'

उसके अपने कुकृत्य उसकी आंखों के सामने कौंधने लगे ।

सारइक तेरां का चेहरा चमक उठा ।

'सत्ता की डोरी से उसे नचाना चाहा था । पर नचा न सका । मैंने तो चाहा था कि रंमिली गांव बर्बाद हो जाए, पर बदले में मेरा गांव ही टडन की झाड़ियों से भर गया । क्रिस्तानों से नफरत करने गए मेरे अपने गांव के ही लंबर आदि ने टीका के गिरजे में जाकर 'शरण' ले ली । सारइक का घर जलाकर खाक कर देना चाहा था, पर उसका फल उलटा हो गया । जलकर खाक हो गया वही किदो क्या फिर से जन्म लेकर यहां लौट आया है और मेरे बैठकखाने में नफरत की हंसी हंस रहा है ?'

'हां, गलती तो मुझसे हुई थी । सत्ता का दुरुपयोग भी मेरे हाथों हुआ था । सारइक ने ठीक ही कहा था – "सोलांदों की अपेक्षा लोंरी हाबे बड़ा नहीं हो सकता ।" शाश्वत सत्य को सत्ता के पैरों तले कुचल रखने के चक्कर में मैं तो खुद ही उखड़ गया ।'

"मुखिया जी, क्या कर रहे हैं ?"

मानसिक आघात से दुर्बल होकर पड़ा हुआ, कभी का 'हाबेसिको' दिलबहादुर की आवाज सुनकर डर-सा गया । बुझी हुई बीड़ी की बात तो अब तक उसे याद ही नहीं थी । अब तक गिरी हुई पगड़ी को सहेज कर उसने कहा – "आइए, और क्या करेंगे, दाजू ! बैठे हैं । कांखन (गांव) गरीब होता जा रहा है, इसीलिए जरा सोच रहे हैं ।"

"हां, ठीक सोच रहे हैं । आपकी बस्ती के धान-सरसों सब कुछ तो रामधन हड़प रहा था । तब फिर बस्ती कहां अच्छी होगी ?" यह बात कहकर दिलबहादुर उसके पास बैठ गया । एक सिगरेट आगे बढ़ाकर उसने फिर कहना शुरू किया – "संसार में भगवान है, न्याय है, मुखिया जी ! समझे न ! इसी कारण तो रामधन केञा की यह हालत हुई ।"

पदच्युत हाबेसिको को लगा कि दिलबहादुर उसी के उद्देश्य से ये बातें कह रहा है । उसे लगने लगा कि छाती के किसी कोने में दर्द हो रहा है । सिगरेट का धुआं छोड़ते हुए हाबेसिको ने पूछा – "आखिर क्या हो गया रामधन महाजन का ?"

"क्यों, क्या आपने सुना नहीं ?"

"ऊं हूं । हमको तो कोई खबर नहीं मिली, बहादुर !"

जल्दी-जल्दी सिगरेट के कुछ कश लेकर दिलबहादुर बोला – "नाव पर सरसों लादकर वह यहां से चापरमुख ले जा रहा था । रात को कपिली की धारा में नाव भी डूब गई । रामधन का भी कोई पता न चला । कपिली मैया ने उसे हजम कर लिया ।"

"हश, क्या ऐसी बात है, दाजू ? अच्छा, मर गया, उसकी किस्मत है । पर आप किसलिए आए ?"

"मुखिया जी ! कहते हुए शर्म भी आती है, बिना कहे काम भी नहीं चलता । आप हमारे राजा हैं । इस बी-वोकेक पहाड़ का क्या होगा ? आपको रुपए भी काफी दे दिए । कम-से-कम पांच सौ रुपए दिए होंगे । पर जमीन का दखल नहीं मिला ।"

बी-वोकेक की जमीन की बात सुनते ही उसका सिर चकरा-सा गया । अब तो वह 'बरहाबा' भी नहीं रहा । इच्छा होने पर ही भला जमीन किस तरह से दे सकता है ? जमीन देने की बात कहकर उसने दिलबहादुर से भी काफी रकम ले ली । अब तो जमीन दे सकेगा, इसकी कोई निश्चितता नहीं रही । इस बीच रंमिली के लोगों ने उस जमीन को आबाद कर लिया है । वहां वे खेती-बारी करने लगे हैं । अब भला वह दिलबहादुर को जमीन कहां से दे ?

विमूढ़-सा होकर उसने कहा – "ठीक है, हो जाएगा । बी-वोकेक की जमीन न होने पर भी अपनी सरसों-खेती की जमीन ही दे दूंगा । वोथात लांसो बाजार में हम मिलेंगे । अब जाओ, दाजू ! जरा मुझे पूजा करनी है । क्या तुम्हें बुरा लगा ?"

"नहीं, नहीं, मुखिया जी ! बुरा क्यों लगेगा ? तो फिर बाजार में ही मिलेंगे । राम-राम !"

देलबहादुर उतर गया । टडन की झाड़ियों से घिरी पगडंडी में दिलबहादुर ओझल हो गया । सीढ़ी के मुहाने तक आकर दिलबहादुर को देखने में दूर के लाल सूरज पर उसकी नजर पड़ी । धीरे-धीरे सूरज 'पुंजा' पहाड़ में ओझल हो गया । पहले स्थिर-से लगने वाले सूरज की गति पर उसकी नजर पड़ी । वह सोचने लगा – तब तो समय की भी गति जरूर है । छिपे हुए फागुन के सूरज ने भी पैर लंबे फैला दिए हैं । पास के बांसों की झुरमुटों में 'मैनी' चिड़ियां चहचहाने लगीं । हाथ में जलती लकड़ी लिए पत्नी बाहर निकली । पति को दरवाजे के पास सीढ़ी के मुहाने पर खड़ा देख उसने कहा – "अब मदिरा पीकर मतवालापन दिखाने से काम नहीं चलेगा । जो हो गया सो हो गया । अब अपने घर की ओर देखना सीखिए ।" कहकर वह बैठकखाने में गई और वहां उसने अलाव जला दिया । हाबेसिको गंभीर कदमों से बैठकखाने में घुसा और टंगा हुआ किदो खींचकर आग में डाल दिया । पाटी पर बैठकर उसने कहा – "अब तो बहुत देर हो गई । हमारा समय बीत गया । समय के चक्र ने हमें पीस डाला । अब नए जमाने के लोग ही गांव को सुधारें । सत्ता और अधिकार ने मुझे अंधा कर डाला था । अब इस दुनिया का, इस पृथ्वी का रूप मुझे दिखाई पड़ रहा है । पगड़ी की पेंचों में जो गंदगी भरी थी, वह अब जाकर सामने आ पाई है । कल तुम इसे ले जाकर कारबी-लांपी के पानी में धो देना । मरते वक्त कम-से-कम इसे साथ ले जा सकूंगा ।"

35

अमफू का विवाह हुए एक सप्ताह हो गया। कल ही सारइक उसे रंमांदु पहुंचाकर लौटा है। आरलसो आरलें का वह खड़ा पहाड़ पार कर रंमांदु जाना कोई कम तकलीफदेह काम नहीं है। बैठकखाने में बैठा सारइक सोच रहा था। पूरे सप्ताह के दुख-कष्ट और थकान ने मानो आज ही दबोच लिया है। अमफू के बगैर वह घर बड़ा सूना-सूना लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो अमफू के न रहने पर रंमिली के रंग बहुत कुछ प्रभाहीन हो गए हैं। धूमिल हो गए हैं। उसके मचान-घर का सौंदर्य भी खो गया है। फागुनी हवा से पेड़ों से एक-दो झड़ते हुए पत्ते भी मानो अमफू की वियोग-वेदना ही प्रकट कर रहे हैं। पलाश-मदार के लाल रंग भी मानो आज बड़े मटमैले-से हो गए हैं।

छप्पर के नीचे से दूर के मटमैले पहाड़ दिखाई पड़ रहे थे। दिन ढले का सूरज उस मटमैलेपन को ज्यादा घना बनाने में मानो हाथ बंटा रहा था। सारइक ने एक बीड़ी जला ली। एक-आध कश लेकर लाख के रंग वाली अपनी पगड़ी सिर पर लगा ली। पत्नी को एक बार आवाज देने की इच्छा होने के बावजूद वह चुप ही रहा। उसने सोचा – ऐसे समय में अकेले बैठे रहकर ही आराम मिलता है। ढेर-सा धुआं मुंह से छोड़ते हुए वह सोचने लगा।

अच्छा ही हुआ अमफू का विवाह रंमांदु में हुआ, संबंधी जितनी दूर रहते हैं, संबंधों की मधुरता और मिठास उतनी ही ज्यादा बनी रहती है। गांव भी अब अशांत न रहा। सिंनत भी अपना अपराध स्वीकार कर रंमिली की सीमाओं के अंदर ही रह गया। बी-हेनरू के हाबेसिको ने तो सोचा था, लोंरी हाबे के अधिकार के बल पर वह गांव को नेस्तनाबूद कर देगा। मगर अब तो जमाना बदल गया।

शायद उसे पता न था, सोलांदो का दमन और शोषण करने के दिन अब बीत चुके हैं। सोलांदो का मतलब ही है 'आरनाम फारो' – सहस्र देवताओं की शक्ति। जनता की शक्ति के बल पर ही सुना है कि गांधी जी भी ब्रिटिश सरकार जैसी ताकत को भी भय से कंपा दे रहे हैं। क्या हाबेसिको ने यह सब नहीं सुना है? अगर सुना है तो भी उसने उसके महत्व को अनुभव करने का प्रयास नहीं किया है। कारबी-दरबार में भला धर्म का संघात किसलिए घुसा देना चाहिए? अगर कारबी लोगों का अपना एक जिला हो तो बुरा क्या है? मौजादार दूसरों की भांति उसका अधिकार भी कहीं छीन न ले, शायद उसे इसी बात की आशंका हो रही थी।

लारेंस के साथ जोड़कर मुझ पर झूठा कलंक लगाने से भला उसे फायदा क्या हुआ? उसके अपने ही गांव के ज्यादातर लोगों ने धर्म-परिवर्तन कर लिया। अगर आदमी का मन बड़ा न हो, तो उसे सहानुभूति भला कैसे मिल सकती है? विधर्मी 'सिकुर' कहकर नफरत से

थूकने-भर से क्या होगा ? 'कारबी-रेसो' का भेजा हुआ किदो का सिकुर लारेंस का था ? चाहे सिकुर-विधर्मी हो, चाहे संसारी-स्वधर्मी हो, सब लोग एकजुट होकर रहेंगे, तभी तो 'कारबी आंलं' बनेगा – कारबी दरबार भी जिंदा रहेगा।

एकांत में बैठे सारइक के मन में एक के बाद एक, अनेक भावनाएं आ-आकर उसे दबोचने लगीं।

"मे कांबुरा, घर में हैं क्या ?"

लारेंस की आवाज सुनकर वह सचेत हुआ। हाथ की बुझी हुई बीड़ी को फिर से जलाकर उसने कहा – "हूं। आ जाइए।"

"घर में सन्नाटा है, इसलिए लगा था कि अंदर कोई नहीं है।"

"अब जाएंगे भी कहां ? रंमांदु जाने-आने की थकान ही अब तक नहीं मिटी। मगर इस शाम को भला कहां से आ गए ?"

अलाव के पास की एक छोटी-सी पाटी बढ़ाकर सारइक ने उसे बैठने को कहा। पाटी पर बैठते हुए लारेंस ने कहा – "फूं आबी के सारसिं हाबे के यहां गया था। लौटते समय आपको आवाज देकर जाने के इरादे से ही आपके यहां आया। विवाह का समाचार भी मिला था, पर हाबाइपुर में दरबार का आयोजन था, इसी कारण खबर नहीं ले सका। विवाह तो सकुशल संपन्न हो गया न ?"

"हां, विवाह तो आप लोगों के आशीर्वाद से हो गया। उस विवाह में फंसे रहने के कारण मैं कारबी दरबार भी देखने न जा सका। इससे मन में बड़ा बुरा लग रहा है। दरबार में किन-किन बातों पर चर्चा हुई, अंहेइ (मामा) ?"

"चर्चा का मुख्य विषय था, दरबार का संगठन, इसके अलावा सीमा-निर्धारित करते हुए एक अलग जिला बनाना। बहुत अधिक लोग जुटे थे। कारबी लोगों का ऐकांतिक उत्साह और समर्थन अभूतपूर्व था। मैंने ऐसा और कहीं नहीं देखा था।"

"ओ, सचमुच ऐसी बात है ? तब तो यह हमारी जाति के लिए बड़ा ही शुभ लक्षण है। और कौन-कौन आए थे ?"

"और बहुत-से लोग थे। उनमें हमारे मेंबर खरसिं तेरां भी थे। नगांव के कुछ विशिष्ट असमिया लोगों ने भी आकर हमें उत्साहित किया था, प्रेरणा दी थी। और एक बात थी, जानते हो, मेहेइ (भगिना) ?"

"कौन-सी बात ? बताइए न ?"

"सिर पर पगड़ी बांधे एक खूबसूरत असमिया सज्जन कोई गोस्वामी या ऐसे ही, मैं नाम भूल रहा हूं, वे ही दरबार के सभापति बने थे। कारबी लोगों की दुर्दशा देखकर वे भी बड़ा अफसोस करते हुए भाषण दे रहे थे।"

"हूं, तब तो असमिया लोग भी अब हमारी दुर्दशा समझने लगे हैं। है न, अंहेइ ?"

"हां। इसके अलावा गोलाघाट से आए सं-बे नाम के सज्जन ने, कुछ बड़ी यथार्थ बातें सभा में उठाई थीं।"

"बताइए न ! कौन-सी बातें ?"

"उन्होंने इस विषय का एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था कि कारबी लोगों में अफीम का प्रचलन तुरंत बंद करना चाहिए। साथ ही, सभा का नाम 'कारबी-आ-दरबार' होना चाहिए – इसके लिए युक्ति दर्शाई थी।"

"हां, उन्होंने उचित बात ही सोची है। अफीम ने हमारी शक्ति किस तरह से खत्म कर डाली है, यह तो आप देख ही रहे हैं। अगर अफीम का प्रचलन बंद न किया गया तो फिर जिला मिलने पर भी फायदा क्या होगा ? हां, क्या उनका प्रस्ताव सभा में गृहीत हुआ ?"

"हां, अफीम की बुराई को महसूस करते हुए सभा ने प्रस्ताव को ग्रहण किया और सभा का नाम भी 'कारबी-आ-दरबार' रखा।"

"बड़ा सुंदर नाम है। कारबी जनता की ऐतिहासिक परंपरा की रक्षा करने के कारण सचमुच मुझे बड़ी खुशी हो रही है। और हमारे मेंबर तेरां का विचार कैसा था, अंहेइ ?"

"लोगों के कामों से वे भी संतुष्ट हैं। खुश हुए हैं। उनके विचार से अगर कारबी जन एकजुट होकर काम करें तो जिला मिलना आसान होगा। उन्होंने कहा है कि दरबार को मजबूत बनना चाहिए। सभा ने एक नए सभापति का चुनाव भी किया।"

"किसे ?" बड़ी उत्सुकता से सारइक ने पूछा।

"हमारे फूं आबी के लांकू हाबे सारसिं तेरन को।"

"ओ ! बड़ी अच्छी बात है। हमारे इन जे हाबे को सभापति बनाना बड़ा उपयुक्त हुआ है। हमारी इस लोंरी में सबसे उपयुक्त आदमी वे ही हैं।" एक बीड़ी आगे बढ़ाते हुए सारइक ने अपना मंतव्य दिया।

दोनों ने बीड़ियां जला लीं। "फू सेमसन आए थे या नहीं ?" बीड़ी पीते हुए सारइक ने फिर पूछा।

"आए थे। वे बहुत अच्छी-अच्छी बातें कर रहे थे। जानते हैं, उनका भाषण सुनकर लोग तल्लीन हो गए थे। उन्हें ही दरबार के सेक्रेटरी का पद सौंपा गया। अलग जिला बनाने का प्रस्ताव लेकर वे हाल ही में दिल्ली भी जाएंगे और लाट साहब को प्रस्ताव दे आएंगे। सुना है, इस विषय पर विलायत में भी चर्चा हुई है।"

"क्या कहा, अंहेइ ?" लारेंस की बात समझ में न आने के कारण उसने पूछा।

"कहते हैं कि विलायत में कोई मीटिंग बुलाई गई थी। सुना है, इस देश को हमारे हाथ सौंपकर सारे साहब अपने देश वापस चले जाएंगे। तब तो हमें भी जिला मिल जाने की पूरी उम्मीद है। अपने लोग ही राजा बनें तो जिला की मांग करना भी आसान हो जाएगा।"

"बात तो सही है। आखिर अपना ही आदमी अपने लोगों का दुख-कष्ट देख-समझ

सकता है।"

"हां, इसीलिए तो सेमसन अपनी ओर से तकलीफ झेलकर भी दिल्ली जाने को तैयार हुए हैं।"

"कहां ? दिल्ली जाएंगे ?"

"हां, दिल्ली ही जाएंगे।"

"खैर, जो लोग अपनी आंखों से हमारी दुख-दुर्दशा देख रहे हैं, अगर वे ही, दुख-कष्ट उठाकर, हमारे लिए जिले का गठन न करें तो और कौन करेगा ? खासिया, गारो, इनके अपने-अपने जिले हैं। नागा लोगों का भी जिला है। क्या हम कारबी लोगों के लिए भी एक जिला नहीं चाहिए ? दरबार जरूर हमारी चेतना को जगा देगा।"

"कारबी जनों के दुख जरूर मिटेंगे। यहां की जनता के ऐकांतिक प्रयास की उपेक्षा सरकार भी नहीं करेगी, वह भी समर्थन देगी, ऐसा हमारा विश्वास है।"

बैठकखाने में सारइक किसी से बातें कर रहा है, सुनकर अंदर से कासां भी निकल आई। लारेंस को बैठे देख उसने कहा – "ओ, दादा जी आप ? कहां से आ रहे हैं ? मैं सोच रही थी, इस समय बैठकखाने में भला कौन बातें कर रहा है ?"

"और मैं भी तो वैसा ही भुलक्कड़ ठहरा। कोई मेहमान आया और मैं उसकी खबर देना भी भूल गया। हमारे अं कांबुरा जबकि मदिरा-वदिरा पीते ही नहीं, लाल चाय की कटोरी भर दे जाओ।"

कासां अंदर चली गई। दोनों बीड़ी पीते हुए फिर बातें करने लगे।

"इधर सुना है कि उस शिकारी तेरन को हाबेसिको पद से उतार दिया है।"

"हूं, अपने को सोलांदो से श्रेष्ठ बताने जाकर अब खुद टूटकर नीचे गिरा।"

"हां, मेहेइ, आपने सच कहा। यह बात सुनकर मुझे भी अच्छा लगा है। ऐसे अविवेकी, सत्तालोभी आदमी को लोर्रि-हाबे के आसन पर बैठने ही नहीं देना चाहिए। हमारी आंखों के सामने ही उसने क्या-क्या जुल्म नहीं ढाए हैं।"

"हां, अब खुद उसका नतीजा भुगत रहा है, अंहेइ ! भला कारबी रेसो रंहा लिंदक की आंखों में वह कितने दिन धूल झोंकता रह सकता था ?" सारइक बोला।

तभी अमफू की मां दो कटोरी चाय ले आई। तामोल काटते हुए उसने कहा – "बिटिया अमफू को तो दूर भेज दिया। अब तो घर बिल्कुल सूना हो गया। अब खुद न बनाऊं तो चाय मिलना भी दूभर हो गया। तुम्हारे मेहेइ से कहा कि चूंकि छोटा जमाई ठहरा, कुछ साल 'गभिया' (घर-जमाई) रहे। पर मेरी बात नहीं मानी। अब तो मैं घर में अकेली पड़ गई।"

"मेहेइ ने तो कोई बुरा काम नहीं किया। लड़की का विवाह हो गया, अब उसका आज जाना भी जाना है, कल जाना भी जाना है। जल्द-से-जल्द बाहर कर अलग होने का दुख कम करना ही अच्छा है।" चाय के कटोरे को उठाते हुए लारेंस बोला।

"यह तो मेरी बात समझती ही नहीं ! समझे न !" सारइक ने कहा।

तभी खप-खप करते हुए हेमाइ मचान पर चढ़ आया। वह हाफ पैंट और हाफ शर्ट पहने हुए था। उसके बाल भी खूबसूरती से संवारे हुए थे। चेहरा भी देखने में सुंदर हो उठा था। मां के पास आकर उसने कहा, "मां, मैं जरा लंकिरी के घर से हो आता हूं।"

"अभी जाने की जरूरत नहीं बेटे, शाम हो आई है।"

"नहीं मां, मैं तुरंत लौट आऊंगा।"

"हेमाइ, ये कौन हैं ! तू पहचान पाया है या नहीं इन्हें ?"

"जी, नहीं। पहचान नहीं पाया।"

"ये अं लारेंस हैं। इन्हें 'कारदम' कर, बेटे !"

हेमाइ ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। उसके चेहरे की ओर देखते हुए लारेंस ने पूछा – "तुम किस स्कूल में पढ़ते हो ?"

"कामपुर लोअर मिडिल स्कूल में।"

"वाह ! अच्छी तरह से पढ़ो-लिखो ! तुम्हें इस गांव का आदर्श बनना है, समझे न ? तभी मैं तुम्हें मिठाई खिलाऊंगा।"

"मुझे मिठाई की जरूरत नहीं।" गंभीरता से हेमाइ बोला।

"तब फिर क्या चाहिए तुम्हें ?" लारेंस ने हंसते हुए पूछा।

"मुझे एक फाउंटेन पेन ही चाहिए।"

हेमाइ की बात सुनकर लारेंस को अचरज हुआ। वह सोचने लगा, इस नन्हे बच्चे के भाव तो बहुत ऊंचे हैं। उसने जेब से पांच रुपए निकाल उसे थमाते हुए कहा – "बेटा, ये रुपए लो, कामपुर जाकर इनसे फाउंटेन पेन खरीद लेना। तुम्हारी बातों से मैं बड़ा ही खुश हुआ हूं।"

हेमाइ ने विनम्रता से रुपए ले लिए और पिता के हाथ दे दिए। फिर वह नीचे उतर गया। लारेंस ने भी आंगन की ओर नजर डालकर सोचा, काफी देर हो गई।

इसी बीच फागुन का आकाश मटमैला हो आया। एक तामोल मुंह में डालकर लारेंस ने सारइक से विदा ली।

रंमिली की छाती पर धीरे-धीरे शाम उतर आई। बांसों की झुरमुटों को तरह-तरह की चिड़ियां अपनी चहचहाहट से मुखरित करने लगीं। कुछ ही दूर से झुंडों में आ रही भैसों के गलों में बंधी घंटियों की टन-टन की आवाज़े गूंजने लगीं। गांव की औरतों के द्वारा सूअरों-मुर्गों आदि को खोभारों, दड़बों में बंद करने की समवेत आवाजें चारों ओर फैलने लगीं। पीठ पर लांथे के बोझ लिए किशोरियां अपनी खुली हंसी के साथ घर लौटने लगीं। पलाश, सेमल और मंदार के लाल फूलों पर शाम की कोमल शिथिलता उतर आई।

सारइक तेरॉ ने भी धीरे-धीरे गांव के ऊपरी ओर जाने के लिए कदम बढ़ाए। अपने शरीर पर एक 'पे सारपी' डाले कासां रंहांपी उस ओर देखती रही, जिधर सारइक जा रहा था। उसे वह क्या दिख रहा था ? पति के सिर पर लाल लाख के रंग वाली बूटेदार पगड़ी में उसे वह क्यों दिख रहा था ? उसे लग रहा था, मानो रंमिली की हंसी के टुकड़े उस पगड़ी के बेल-बूटों

में आ बसे हैं और वे उसके पति की मस्तक-मणि की शोभा बढ़ा रहे हैं। उस बूटेदार पगड़ी के बेल-बूटे उसी के हाथों से उभरे थे, जब वह सोलह साल की थी। यह बात याद आने के कारण उसने बड़े गौरव के प्रेममय स्पंदन का अनुभव किया।

उसे मानो यह भी दिखाई पड़ा कि मटमैला-सा हो आया शुक्ल चतुर्दशी का चांद क्रमशः ज्यादा चमकदार बनकर उसके पति सारइक के सिर पर आ ठहरा है। वह मानो हेमफू देवता का आशीष-निर्माल्य है।

सारइक तेरां तो उसके अपने प्राणों का 'सारथे' है – वह रंमिली गांव का भी 'सारथे' है।